कैप्टन साहेबक शर्ट



डॉ. रंगनाथ दिवाकर

कैप्टन साहेबक शर्ट

कैप्टन साहेबक शर्ट

(मैथिली कथा-संग्रह)

डॉ. रंगनाथ दिवाकर



जय-राम शोध संस्थान, सुलतानपुरक तत्त्वावधानमे मनोलिता प्रकाशन प्रस्तुत करैत अछि मैथिली कथा-संग्रह

कैप्टन साहेबक शर्ट

अनुप्रास हार्डबैक्स

ISBN 978-93-91371-66-1



प्रकाशक : अनुप्रास प्रकाशन
'**धनेश्वरीधाम**' इन्द्र परिसर, लहेरियागंज,
मिथिला, मधुबनी (बिहार) 847 211
वेबसाइट : www.anuprasprakashan.com
ईमेल : anuprasprakashansamuh@gmail.com
मोबाइल : +91 8862977228

कैप्टन साहेबक शर्ट

पहिल संस्करण : 2026
मूल्य : ₹ 500

आवरण : अनुप्रास इंडिजाइन
केंसिंग्टन प्रेस, भारत द्वारा मुद्रित।

CAPTAIN SAHEBAK SHIRT
A Collection of Maithili Stories By
Dr. Rang Nath Divakar
Published by ANUPRAS PRAKASHAN
First Edition : 2026
Price : ₹ 500

समर्पण

ओहि नर-केहरि सभकेँ–
जे देशक आन-बान-शान लेल
सीनापर गोली खएलनि
मुदा जे देशक माटि नहि देलनि!
खसए नहि देलनि जे देशक मान
धन्य करैत निज कुल आ माएक कोखिकेँ
देशक लेल देलनि जे सर्वोच्च बलिदान।
ओहि नर-पुंगव सभक पावन स्मृति-चरणमे
हमर ई सारस्वत तर्पण-पुष्प
श्रद्धा आ सम्मान सहित सादर समर्पित!

रंगनाथ दिवाकर
(रंगनाथ दिवाकर)

कथा-क्रम

कहबाक अछि जे ...

24 अप्रैल 2015कें पूज्य पिताक प्रथम पुण्यतिथिपर हमर प्रथम मैथिली कथा-संग्रह 'भखरैत नील रंग' केर लोकार्पण भेल छल। एहि संकलनक किछु कथाकें कल्पनातीत मान भेटल रहए। पाठक लोकनिक प्रतिक्रिया गद्-गद् करैत छल। अखनो दूरभाषिक आ पत्र माध्यमे एहि कथा सभक प्रशंसा प्राप्त होइत अछि तऽ मोन पुलकित भऽ जाइत अछि। ई कथा-संग्रह मैथिल समाज, रहिका द्वारा किरण पुरस्कार आ भारतीय साहित्यककार संसद, समस्तीपुर द्वारा मणिपद्म साहित्य शिखर सम्मानसँ अलंकृत भेल छल। खेद अछि जे एक दशकसँ बेसी समय बादे हमर दोसर कथा-संग्रह 'कैप्टन साहेबक शर्ट' अपने सभक समक्ष आबि रहल अछि।

सर्वप्रथम हम एहि कथा-संग्रहमे संकलित कथा सभक पात्रकें स्मरण करए चाहब। पात्र सभटा काल्पनिक छथि ई कहबाक दुस्साहस हम नहि करब। अधिकांश पात्र वास्तविक छथि। नहि किछु तऽ थोड़बो थोड़! ई एकदम सत्य अछि। सभटा पात्र अपन समकालीन समाजेसँ उद्भूत छथि। हमसब जे देखि रहल छी आ जे भोगि रहल छी ओहि अनुभव सभक एक अभिव्यक्तिक प्रयास थिक एहि संग्रहक कथा! ओहिनो मानल जाइत छै जे साहित्य समाजक दर्पण थिक। अएनाक आगू जे आओत ओकरे प्रतिबिंब ने ओहिमे देखा सकत! स्वयंकें एहने अएनाक सोझाँ ठाढ़ पबैत छी। स्वयंकें आ समाजकें एहि दृष्टिसँ देखबाक एक प्रयत्न थिक ई कथा-संग्रह। तथापि ई कहबामे कोनो संकोच नहि अछि जे कथा सभक विन्यास काल्पनिक अछि। संभव जे कथाक कोनो सूत्र, घटना, कोनो परिवेश वा कोनो संवाद किनको अपन भोगल यथार्थ लागए, एहन कोनो संयोग सभक लेल हम हुनका सभसँ क्षमायाचने कऽ सकैत छी। एकरा अन्यथा नहि लेल जाए से हमर विनम्र निवेदन। सुप्रसिद्ध शायर साहिर लुधियानवीक 'तल्खियाँ'क एक शे'र फेर मोन पड़ैत अछि–

दुनिया ने तजरबात-ओ-हवादिस की शक्ल में
जो कुछ मुझे दिया है वो लौटा रहा हूँ मैं।

जेहने देखलहुँ तेहने ने आपस करब! एहि तथ्य संग इहो सत्य अछि जे एहिमे 'जस के तस धरि दीनी चदरिया' वला हाल नहि अछि। जँ ई होएत तखन ई तऽ सत्यकथा वा रिपोर्ताज बनिकेँ रहि जएतए। हम समाजसँ किछु कथा-सूत्र सभक साक्षात्कार कएलहुँ फेर अपन मस्तिष्कक टकसालमे ओकर परिष्कार कएलहुँ, शोधसँ संबलित परिदृश्य आ परिवेशसँ एकाकार कएलहुँ, भावनाक रंग-रोगनसँ एकर श्रृंगार कएलहुँ आ हितक उद्देश्यसँ अपेक्षित सुधार कएलहुँ तखन आइ ई कथा-संग्रह अपने सभक समक्ष साकार रूपमे उपस्थित भेल अछि। एहि संपूर्ण सर्जनात्मक प्रक्रियामे कहाँ धरि सफल भेलहुँ एकर निर्णय सुधी पाठके करताह। कथाक विषयमे हम किछु नहि कहि सकब। जे कहबाक हेतै से कथा अपने कहत। ओना अधिकांश कथाक मूल स्वर प्रेम अछि। प्रेम शाश्वत होइत छै आ एकरे विभिन्न दृष्टिकोणसँ देखबाक एक प्रयत्न थिक ई कथा-संग्रह!

आब किछु शब्द एहि कथा सभक शिल्पपर। कथा शिल्प प्रत्येक कथाकारक अपन निजी विशेषता। छोट सन कथ्यकेँ शिल्पक माध्यमसँ विराट् कथा रूपमे नमरा देनिहार कुशल शिल्पी हम नहि छी। हमर मानब अछि जे जँ शिल्पपर बहुत अधिक काज करब तखन कथ्य कमजोर होएत आ भविष्यमे कथाक वैह हश्र होएत जे कालांतरमे कविताक भेलै। आमजनसँ कथा कविते जकाँ दूर हुअए ई हम कहियो नहि चाहब! कथामे जिज्ञासा बनल रहए आ सहज प्रवाह गतिमान रहए यैह हमर अभिप्रेत। एहि संकलनक किछु कथा विवरणात्मक, किछु विवेचनात्मक, किछु विश्लेषणात्मक तऽ किछु आत्म-कथ्य रूपमे कहल गेल अछि। एहिमे कथोपकथन, रिपोर्ताज, चाक्षुष आ प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष पात्र द्वारा कथा कहबाक शैली केर उपयोग भेल अछि। मिश्रित वा एकाधिक शैली सेहो भेटत।

एहि कथा-संग्रहमे किछु प्रत्यक्ष आ एकटा परोक्ष युद्धकथा संकलित भेल अछि। एहि सभ कथामे पात्र सभक नाम, घटित घटना, संदर्भित परिवेश आ शीर्ष इत्यादि ओहिना अछि जेना यथार्थमे भेल रहए। 'थारो बीरा' कथा एक सत्य घटनाक कल्पनासँ प्रसूत प्रस्तुति अछि। युद्ध कथामे पात्र वा हुनकर इष्ट-मित्रक मोनमे चलि रहल आंतरिक द्वंद्वपर विशद् ध्यान नहि देल गेल अछि। युद्धभूमिमे

क्षण-प्रतिक्षण बदलैत परिस्थितिक कारणेँ आंतरिक द्वंद्वात्मक मनोभाव गौण पड़ि जाएत छैक आ एकमात्र लक्ष्य आत्मरक्षा आ विजय रहैत छैक। यत्र-तत्र युद्धक भयावह परिणाम आ एकर निर्रथकताक चर्च आ चित्रण भेल अछि। युद्ध कथा पढ़ब वा सुनब सभकेँ नीक लगैत छै, आत्म-गौरवक अनुभूति अवश्य होइत छैक मुदा एकरा प्रत्यक्ष भोगब वा एहि संग जियब अत्यंत दुष्कर आ कष्टदायी! एहि भावकेँ स्वर देबाक प्रयास भेल अछि।

ई संग्रह भारतवर्षक माटि आ एकर आन-बान-शान लेल अपन प्राणक सर्वोच्च बलिदान देनिहार नर-पुंगव सभकेँ समर्पित अछि। ब्रिगेडियर उस्मानक चरित्र हमरा बहुत अधिक प्रभावित कएने रहए। साहेबजादा यूनुस अली खानक आदर्श नायक रूपमे ब्रिगेडियर उस्मानक कथा सेहो कहल गेल अछि। युद्ध कथाकार लोकनिक वर्ण्य विषय ओना कम्मे बनैत अछि तथापि भावी पीढ़ीमे चरित्र निर्माण आ देशक लेल जाति-धर्मसँ ऊपर उठबाक भावनाक निमित्ते एकर सार्थकता तऽ अछिए।

एहि संग्रहक तैयारीक क्रममे डॉ. महेन्द्र नारायण राम सूचना देलनि जे ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगाक एक शोध-प्रज्ञा श्रीमती सोनी कुमारी (पैट क्रमांक- 2023080049) हमर इतिहास-बोध विषयक पी-एच. डी. उपाधि लेल शोध-प्रारूप जमा करओलनि। हुनक विषय अछि- डॉ. रंगनाथ दिवाकरक साहित्यमे इतिहास-बोधक विश्लेषणात्मक अध्ययन आ शोध-निर्देशक छथिन्ह- डॉ. अरुण कुमार ठाकुर, विभागाध्यक्ष, मैथिली विभाग, जगदीश-नंदन महाविद्यालय, मधुबनी। अपन एहि शोध-प्रारूपमे शोध-प्रज्ञा सोनी एक अध्याय रखने छथि– डॉ. रंगनाथ दिवाकरक कथा साहित्यमे इतिहास-बोध। कथाक रचना कालमे इतिहास-बोध दिशि ध्यान कहाँ जाइत छै! एहनमे कतहु कोनो घटना इतिहासक दृष्टिसँ आगू-पाछू तऽ नहि भेल अछि। एहि नजरियासँ जखन कथा सभपर एक विहंगम दृष्टि देलहुँ तखन आत्म-तोष भेल जे हमरा कोनो व्यतिक्रम नहि भेटल। ओना संभव अछि जे एहन व्यतिक्रम हो।

हमर प्रयत्न रहए जे एक कथाक छुति दोसर कथामे नहि आबए। एहि लेल सचेष्ट सेहो रही। विद्यालय जीवनपर तैयार एक कथा एहि कारणेँ हटा देलहुँ किएक तऽ एहि भाव-भित्तिपर एक कथा 'संतुलन बदलि रहल अछि' पहिनेसँ आबि गेल रहए। मुदा 2024क नवंबर-दिसंबरमे अमृतसर गेल रही। अटारी-बाघा सीमापर भव्य बीटिंग रिट्रीट सेरेमनी परेड देखने रही। जलियाँवाला बागमे निर्मित

संग्रहालयमे सरदार उधम सिंहक अस्थि-कलशपर माथा टेकबाक सौभाग्य भेटल रहए। स्वर्ण मंदिरक दर्शन कएने रही। ओहि ठाम अमृतसरक विभाजन संग्रहालय देखि मोन अत्यंत उद्विग्न आ उद्वेलित भेल छल। हमर मानस-पटलपर एकर कल्पनातीत प्रभाव पड़ल छल। तेँ एकसँ बेसी कथामे भारत विभाजनक त्रासदी अभरल अछि। ओना प्रयास भेल अछि जे एक वर्णनक छुति दोसरमे नहि पड़ए तथापि एक विषयपर दू वर्णनमे किछु समता तऽ रहबे करत। एहि विभाजन संग्रहालय (Partition Museum)क स्थापना तत्कालीन नगर भवन, अमृतसरमे 2017 ई.मे भेल छल। आब 1978मे अमृतसर आएल रॉफेल जॉनक पुत्री एस्टिला ओ संग्रहालय कोना देखि सकैत छलीह! तेँ 'आँगनमे ढोल बाजल' कथामे जखन एस्टिला अमृतसरक किछु स्थान सभक भ्रमण करैत छथि तखन मात्र टाउन हॉलक चर्च करैत आगू बढ़ल गेल। एहि संग्रहालयक नाम नहि आएल। ई एकटा उदाहरण मात्र अछि। एहन अनेकश: प्रसंग अछि। प्रयत्न भेल अछि जे सर्वत्र इतिहास-बोध अक्षुण्ण रहए। सूक्ष्म रूपसँ सेहो!

हमरा एहि बातक प्रसन्नता अछि जे सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. नरेश कुमार 'विकल'क अध्यक्षतामे आयोजित एहि बेर सद्‌गृहस्थ संत जगन्नाथ चौधरी पुण्य-पर्व समारोहमे एहि पोथीक लोकार्पण साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ अलंकृत कथाकार श्री प्रदीप बिहारीक कर-कमलसँ भऽ रहल अछि। आगत समस्त महानुभाव लोकनिक अभ्यर्थना करैत छी, वंदना करैत छी। एहि बेरक सद्‌गृहस्थ संत जगन्नाथ चौधरी शोध सम्मान मँगरौनीक शोध मर्मज्ञ आ साहित्यकार पं. विनयानन्द झाजीकेँ आ वासुदेव-गोविन्द काव्य शिरोमणि सम्मान मैथिली दोहा आ गीतक सिद्ध सुकवि श्री सुरेन्द्र शैलजीकेँ समर्पित कएल जा रहल अछि। पूर्वमे सद्‌गृहस्थ संत जगन्नाथ चौधरी शोध सम्मान डॉ. नरेश कुमार 'विकल' (2018), श्री भैरव लाल दास (2019), डॉ. महेन्द्र नारायण राम (2022), डॉ. रामानन्द झा 'रमण' (2023), प्रो. रामावतार यादव (2024) आ पं. भवनाथ झाजी (2025)केँ प्रदान कएल गेल अछि। वर्ष 2024सँ शुरू भेल वासुदेव-गोविन्द काव्य शिरोमणि सम्मान श्री शंकर मधुपांश (2024) आ डॉ. चन्द्रमणि झा (2025)केँ प्रदान कएल गेल अछि।

एहि कथा-संग्रहक निर्माणमे श्री श्यामानन्द चौधरी (बेरि) आ श्री सुरेन्द्र शैल (भदहर)क जे सहयोग भेटल ओ हमर एहि यात्राक सारस्वत पाथेय बनल। दुनू अग्रजक श्रीचरणमे प्रणाम निवेदित करैत छिएनि। डॉ. नरेश कुमार 'विकल'

महमदा (समस्तीपुर)क लाल ले. अमित सिंह विषयक जनतब देने छलाह जे कथा 'हमर बेटा गाम घुरि आएल'क आधार-सामग्री बनल। विकलजीक पोथी विषयक सुझाओ आ बेर-बेर चरिआबैत पुछारी करब एहि संग्रहक लेल उपयोगी भेल। हम हुनका प्रणाम करैत हुनक स्वस्थ जीवनक कामना करैत छिएनि।

श्री दीप नारायण दत्त-चित्तसँ पोथीक शृंगार कएलनि, एकर कलेवर आ मुखपृष्ठकेँ मोनहरू रूप देलनि एहि लेल हुनका मोनसँ आशीर्वाद दैत छिएनि।

श्रीमती रेखा चौधरीक मौन मुदा महत्त्वपूर्ण सहयोग बिनु एहि पोथीक प्रकाशन कठिन छल। पारिवारिक समस्या सभक समाधानक झंझटसँ मुक्त राखि हमरा एकांत आ निर्बाध साधना लेल स्थान आ समय उपलब्ध करओलनि। स्थान-स्थानपर अभरल मैथिल विधि-व्यवहारक समुचित जानकारी सेहो देलनि।

हम अपन प्रथम पाठक सहित ओहि समस्त महानुभावक प्रति श्रद्धावनत छी जनिकर लिखित-मौखिक, पुस्तकीय वा अन्तर्जालपर उपलब्ध कोनो सामग्रीक उपयोग हम अपन जानकारी वा एहि पोथीक श्रीवृद्धि लेल कएलहुँ।

कोनो अशुद्धि वा कमीक लेल क्षमाप्रार्थी छी। अपेक्षित सुधारक लेल कएल गेल संकेत सभक प्रतीक्षा रहत। सादर!

(डॉ. रंगनाथ दिवाकर)

सद्गृहस्थ संत जगन्नाथ चौधरी महाप्रयाण दिवस, 2026
24 अप्रैल 2026
जय-राम, सुलतानपुर

कैप्टन साहेबक शर्ट

अहाँक प्रतिरूप चाही

राजेश कक्षसँ जखन बाहर भेलाह तखन ओहि विधवाकेँ फेर देखि थकमका गेलाह। गार्ड ओकरा काल्हि अएबाक लेल कहैत धकिया रहल छल। राजेश गार्डकेँ मना करैत पुछलनि–

"अहाँक काज नहि भेल की? हम तऽ तखने फोनपर दरोगाजीकेँ आदेश कऽ देने रही।"

अझक्के ओ विधवा राजेशक पयरपर खसि पड़लीह।

"युग-युग जीबी अहाँ! दरोगाजी अपने सोझाँ हमर घरक नेओँ धरा देलनि। अहाँक कृपासँ घर बनब हमर शुरू भऽ गेल। जे सब तंग करैत छल ओ सभ सकदम्म रहल। यैह कहबाक लेल आएल रही जे अहाँक विषयमे वंदना मैम जे कहने छलीह ओ सत्य छल।" ठाढ़ होइत बजलीह।

"ई वंदना मैम के छथि?"

"कल्हि कहने रही ने जे पतिक मृत्युक बाद हमरा जाहि विद्यालयमे अनुकंपापर अनुसेविकाक पद भेटल छल ओहिमे ओ शिक्षिका छथि। पड़ोसी सभ हमरा घर बनबऽ नहि दैत छल। सभ प्रयास जखन व्यर्थ भेल तखन वैह एक दिन कहने छलीह जे अहाँ लऽग जाए। ओ कहने छलीह जे ओ बहुत नीक छथि।"

"ओ हमरा कोना जनैत छथि? हम तऽ नहि जनैत छी हुनका।"

"से हम नहि कहब मुदा ओ अहाँकेँ खूब नीकसँ जनैत छथि। ई दू टुक सुपारी अहाँक लेल अनने छी। मना नहि करब। ई राखि लेल जाए।" कहैत एक खूट बान्हल रूमाल ओ देबऽ चाहलनि।

"नहि नहि।" कहैत राजेश हाथ जोड़ि लेलनि।

"हम जनैत छी जे अहाँ किनकोसँ किछु नहि लैत छी। मुदा ई लेबऽ पड़त। अहाँक कृपासँ कतेक बरख बाद हमर घर शुरू भेल। एकर गृहप्रवेशमे

अहाँकेँ आबए सेहो पड़त। एहि विधवापर एतेक कृपा अवश्य कएल जाए आ ई राखि लेल जाए न्यौंत मानैत।" आँचर हाथमे धएने कलपैत विधवा रूपाक हाथसँ राजेश रुमाल लऽ लेलनि आ गाड़ीमे बैसि विदा भऽ गेलाह। ओ ओहिना दुनू हाथसँ आँचर धरने कऽल जोड़ने ठाढ़े छलीह।

राजेश गाड़ीमे रुमालक खूट खोललनि तऽ दू टुक सुपारी, दू टा दक्षिणी, दू टा लौंग आ दू दाना मिसरी एकटा जनेऊमे लपटल छल। ड्राइवर, गार्ड, आदेशपाल सभकेँ बाँटि मिसरीक एक दाना मुहमे लेलनि। पता नहि किएक एकर स्वाद अपूर्व लागल। ओ वंदना नामक जतेक परिचित छथि ओहि सभमे के मैम छथि से स्मरण करऽ लागल छलाह।

दिसंबर मास। साँझुक समय। जाड़ खसि गेल छल तथापि एकाएक पूरा देह जेना घामेघाम भऽ गेल हो! कानमे बाइस-तेइस बरख पूर्व सुनल स्वर गूँजि रहल छल– वंदना नै छै! वंदना नै छै!! वंदना नै छै!!!

हाथमे पड़ल रुमालसँ मुह पोछलनि। गाड़ी बँगलाक पोर्टिकोमे ठाढ़ छल। चुपचाप उतरि अपन शयनकक्षमे चलि गेलाह। एना कहियो नहि भेल छल।

एसकर होइते जेना अतीत आँखिक सोझाँ सिनेमाक रील जकाँ चलि रहल छल।

दुनू परिवारमे नीक संबंध छलै। राजेशक माए आ वंदनाक माए पूर्व परिचित आ मातृक दिशिसँ बहुत दूरक संबंधी सेहो। अबरजात छलै। वंदनाक माएक कहलापर राजेश सेहो ओकर डेरापर जा अपन नोट्स ओकरा दैत छल आ एम ए परीक्षाक तैयारीमे सहायता करैत छल। एहि कारणेँ एम एमे ओकरो प्रथम वर्ग भेटल छलै। राजेश टॉप कएने छलाह। जाहि दिन राजेशक कथा स्थिर भऽ गेल छलै ओहि दिन वंदना बहुत गंभीर छलीह। भेंट भेलापर कहने छलीह– अहाँ संग एकटा विचित्र जुड़ाओ महसूस करैत छी। आइ एसकर होएबाक एहसास अछि। बस!

दोसर दिन वंदनाक जन्म-दिन छलै– 16 अप्रैल। ओ डेरापर गेल छल। बहुत देर धरि कोइ नहि आएल। ओहि कोठरीमे दू टा गेट छलै। दुनूपर परदा लागल। दोसर गेट आँगन दिशि खुजैत छल। एहि कोठरीमे एकसर बैसल जखन किछु देर भेलै तखन एक-दू बेर आवाज देलक– वंदना! वंदना!! दोसर बेर भितरिया परदापर एक आकृति अभरल आ आवाज आएल– वंदना नै छै! ओ हतप्रभ विदा भऽ गेल। मोन ई मानबाक लेल तैयार नहि छल जे वंदना एना बाजि सकैत छथि। स्वर तऽ वैह लगैत छल। फेर मोन कहैत छल संभव जे ओकर

छोट बहिन चंदनाक स्वर हो। जार्ज बर्नार्ड शॉ केर पिगमैलियन फेरसँ मोन पड़ि गेलनि। फूल बेचनिहारि अपरिष्कृत एलिजा मोन पड़लीह आ फेर हिगिंस केर भाग्य। मनुक्खक स्वभाव, सेहंता आ सामाजिक परिस्थितिमे पड़ल मानसिक द्वंद्व मोन पड़ल। फेर जिज्ञासा मोन पड़ल जे वंदना नै छै केर स्वर ककर छल! आइ धरि ई जिज्ञासा ओहिना अछि। सुखद दाम्पत्य जीवनमे जे प्रश्न भुतिआ गेल छल से आइ फेर पहिने जकाँ ठाढ़ भऽ गेल छल।

खानसामाँ प्लेटमे पकौड़ी आ चाय राखि गेल छल। बहुत देर बाद भोजन लेल आबिकेँ देखलक तऽ दुनू प्लेट सराएल ओहिना पड़ल छल। दू तीन बेर सर-सर कहि आवाज देलक तखन राजेश हड़बड़ाकेँ उठलाह जेना नीनसँ जागल होथि।

अनुमंडल पदाधिकारीक पैघ दायित्व! संचिका सभक अंबार, कोर्टमे ओकिल साहेब सभक जिरह, विधि व्यवस्था, जन समस्याक निदान आदिक बोझ तऽर दबि राजेशक साहित्यिक मोन मरि गेल छलनि। आइ ओहि संवेदनशील मोनकेँ लिखबाक-पढ़बाक सेहंता आ भावना जेना फेरसँ जागि गेल हो। ओ धर्मवीर भारतीजीक 'गुनाहों का देवता' उपन्यास फेरसँ पढ़ब शुरू कएलनि आ राति भरि जागिकेँ पूरा पढ़ि लेलनि। साँचे प्रेममे बड़ शक्ति होइ छै।

चारि मास बाद ओ रूपा फेर आएल छलीह।

"अहाँक कृपासँ हमर घर बनि गेल। आइ गृहप्रवेश करब। अपन चरण-रजसँ ओकरा पवित्र कऽ देल जाए। अहाँक अइँठ खसत तखने हमर मोन जुड़ाएत। साँझमे अवश्य अबियौ। हम पैघ भोज-भात नहि कऽ सकैत छी। बहुत कम लोक रहत। अहाँक ड्राइवर साहेबकेँ अपन पता कहि देने छी। हम अहाँक बाट निहारैत रहब। अवश्य एबै अपने।" कहैत आँचर हाथमे नेने कऽल जोड़ने ओ विदा भऽ गेलीह।

राजेश गुनधुनमे छलाह। फेर वंदनाक ध्यान आएल। कदाचित् ओ वैह छथि। एहि बाइस-तेइस बरखमे एको बेर भेंट नहि, कोनो खोज-खबरि नहि। कोनो सम्पर्क नहि। कोनो हाल-चाल नहि। जेना धरतीसँ उपटि गेल हो! वैह छथि वा कोइ आन। हमरा जएबाक चाही। केहन मात्सर्यसँ आँचर धएने कलपैत छलीह ओ विधवा। बड़का लोक ओतऽ तऽ सभ जाइते अछि। गरीब-गुरबा लोक ओतऽ जाएब तखन ने हुनकर मान बढ़त। जँ वैह वंदना भेलीह तऽ कमसँ कम एहि प्रश्नक उत्तर तऽ भेटत जे फेर चारि माससँ हमरा मथि रहल अछि।

गाड़ी रुकल तऽ रूपा एकसरे रोडपर ठाढ़ि छलीह। धन्य भाग्य करैत आदरसँ भीतर लऽ गेलीह। छोट-छीन घर छल। रँगल– पोतल। देबालपर मिथिला पेंटिंग सुशोभित। नीक लगैत छल। रूपा घर देखा एक कोठरीमे हिनका बैसा सोर पाड़लनि– “वंदना मैम! अहाँ किछु काल हिनका संग रहू। हम भोजनक इंतजाम करैत छी। कने देरी लागत। भगवाने ने आएल छथि शबरी ओतऽ।” वंदनाकेँ अबैत देखि कहलनि आ बहरा गेलीह।

वंदना लजबिज्जीक पात जकाँ घोकचाइत अएलीह। दुनू हाथ जोड़ने, भूमि दिशि तकैत, आँखिमे पानि।

“अहाँ एतऽ ! “आश्चर्यचकित राजेशक स्वर।

“हम हिनके स्कूलमे ने शिक्षिका छी।” मुड़ी ओहिना गोँतल।

“मारिकेँ भगबाक नहि ने अछि जे ठाढ़े छी। बैसू।” हाथसँ सेहो बैसबाक अनुरोध भेल। मुस्की संग अनुरोध स्वीकार भेल।

“अहाँमे कोनो परिवर्तन नहि आएल अछि। ओहिना छी।”

“अहाँ कने मोटा गेल छी।”

“माँ-पापा?”

“बेमार रहैत छथि। भाए पवन सेंट्रल सेक्रेट्रिएटमे सेक्शन ऑफिसर भेल अछि। ओकरे लऽग अखन दिल्लीमे छथि।”

“परिवार? अहाँक धिया-पुता?”

“विवाहमे देरी भेल। पति प्राइवेट कॉलेजमे छलाह मुदा जीनियस। फिजिक्समे एहन ट्यूशन चलैत नहि देखने-सुनने रही। शुरूमे किछु दिक्कत छलै मुदा... अहाँक कारणेँ एम एमे भेटल फर्स्ट क्लास काज आएल। एहि आधारपर बी एडमे प्रवेश भेटि गेल आ बादमे एहि हाइ स्कूलमे नोकरी सेहो।”

“संतान?”

“बस एकटा बेटी। भावना...”

“तेँ अखनो देहयष्टि ओहिना अछि सुडौल, सुरेबगर, सुंदर...”

“बस-बस! से नहि। बस माएक काइँत छै!”

“हैप्पी बर्थ डे! जन्म दिनपर अहाँ भेंट भेल छी। बहुत रास बधाइ!”

“अँय! आइ सोलह अप्रैल अछि? ओह! हमरा मोने नहि रहल। अहाँकेँ कोना अखनो मोन अछि?”

"एकाएक मोन पड़ि गेल। ओना ओ दिन बिसरिओ नहि सकैत छी।"

"हँऽ, हमरा माफ कऽ देल जाए !" ओ फेर कऽल जोड़ि लेलनि।

"नहि! माफी हमरे मँगबाक चाही जे अहाँक भावना नहि बुझि सकल रही।" राजेश सेहो हाथ जोड़ि देलनि।

"खाली गप्पे-सप्प हेतै वा किछु खुएबो करबनि? हम ड्राइवर, गार्ड, ऑर्डरली सभकेँ खुआ देलहुँ। साहेबक भोजन चलू अहीँ परोसिकेँ आनी।" अबैत रूपा बजलीह। फेर दुनू गोटे विदा भऽ गेलीह। किछु कालमे पूर्ण मैथिल विन्यासमे सजल थारी सब लऽ आपस अएलीह।

पहिने खीरक प्रसाद, करमी साग फेर भात, दालि, पाँचटा तरकारी, खमरुआ-तिलकोर सहित पाँच प्रकारक तरुआ, पापड़-तिलौड़ी, ओलक चोखा संग तीन प्रकारक चटनी, बड़-बड़ी, सकरौड़ी, दही आ ओहिपरसँ मधुर। टेबुल भरि गेल तऽ दुनू हाथमे रखने आर प्लेट सभ।

एहन दृश्य देखिते राजेशकेँ हँसी आबि गेलनि।

"ई सचार एक बेरक भोजन केर अछि की हफ्ता भरिक?" कहैत प्रसादवला प्लेट हाथमे लेलनि। सभटा सामग्रीसँ एक-एक चम्मच अपन प्लेटमे लेलनि।

"हम अपन लऽ लेल। अनुरोध जे अहूँ सभ एतहि हमरा सोझाँमे खा लियऽ। किछु अइँठ नहि कएलहुँ।"

"वंदना मैम! अहाँ संग दियौन। हमरा अखन दिक्कत छै।" रूपाक स्वर छल।

वंदना सेहो एक थारीमे सभमेसँ किछु-किछु लेलनि। भोजन समाप्त भेले छल तखने धड़फड़ाइत भावना माँ-माँ करैत आबि गेलीह।

"जल्दी चलही ! मामा दिल्लीसँ फोनपर छथुन्ह। आइ तोहर रियल बर्थ डे छौ आ कहबो नहि केलही। हमरा सभकेँ तऽ 5 मार्च बूझल अछि।" घरमे राजेशकेँ देखि ओ थकमका गेलीह।

"अच्छा पहिने हिनका गोर लाग। फेर जो आ मामाकेँ कह जे हम किछु कालमे फोन करबै।"

भावना गोर लागि चलि गेलीह। तखन राजेश रूपासँ खा लेबाक फेर आग्रह कएलनि। संभवत: वंदनासँ किछु आओर गप्प करबाक लेल अवसर हेतु।

ओ चलि गेलीह तखन राजेश पुछलनि– "भावना तऽ अनमन अहीँ सन अछि। एकदम प्रतिरूप! अहाँक घर लऽगे अछि की?"

"हँ, एकदम सटले। ओ हमरे घर अछि।" घर दिशि संकेत कएलनि।

"हमसभ पहिलुक जीवनकेँ बिसारि अपन-अपन पारिवारिक जीवनमे संतुष्ट छलहुँ वा कहू जे सुखी छी। शांत आ सुखद जीवनक झीलमे कोनो पाथर खसिकेँ एकरा तरंगित नहि करए सैह इच्छा रहत। तथापि एकटा प्रश्न हमरा ठीक तेइस बरख पूर्व अझुके दिन शूल जकाँ गड़ल रहए जे अखनो पीड़ा दैत अछि। ओकर उत्तर दऽ सकब की?"

"प्रश्न यैह ने अछि जे ओहि दिन परदाक पाछूसँ वंदना नै छै केर स्वर ककर छल?"

"अँय! प्रश्न यैह हेतै से अहाँ कोना अकानि लेल? घोर आश्चर्यजनक!"

"कोनो आश्चर्यजनक नहि! जे स्त्री पुरुषक मनोभाव नहि अकानि सकय ओ पूर्ण नारी नहि भऽ सकैछ। प्रेममे ई शक्ति तऽ रहबे करैछ जे एक-दोसराक मनोभाव जानि सकए। हम इहो जनैत छी जे अहाँ कदाचित् एहि प्रश्न केर उत्तरक उदेसमे एतऽ धरि आएल छी।"

राजेश स्वीकार करैत मुड़ी डोला देलनि। वंदनाक स्वर निर्बाध छल–

"ई सत्य जे ओहि दिन अहाँक हृदयपर जे चोट लागल सैह हमर शांत भावी जीवन केर पाथेय बनल। वैह ठेस छल जे अहाँकेँ कहियो हमर खोज-खबरि नहि लेबए देलक। हम सुखी छी वा दुखी छी, जिअत छी वा माहुर खा लेलहुँ कोनो मतलब नहि।"

"सत्य अछि। तथापि आइ उत्तराकांक्षी छी हम।"

"उत्तर अवश्य देब हम। नहि जानि फेर तेइस बरख बादे हमरा सभक भेंट हो। एतेक दिन मोनमे किछु हौँड़ेत रहए तखन मनोरोगी भऽ जाइत अछि लोक। हम होइत-होइत बचलहुँ। हमरो मोनमे प्रश्न छल।"

"की?"

"अंतिम भेंटसँ एक दिन पूर्व हम कहने रही जे अहाँसँ एक विशेष आ विचित्र जुड़ाओ महसूस करैत छी। तखन अहाँ चुप किएक रहलहुँ?"

"हम अहाँक ओहि मनोभावकेँ चिन्हि नहि सकलहुँ। हम अहाँकेँ सभ दिन एक परिचित आ संबंधी रूपमे जे शुरूसँ देखैत रही ओही रूपमे देखलहुँ। क्षमा करब।"

"हम जनैत रही अपन प्रश्नक उत्तर। मुदा की करी हमही हृदय हारि गेल रही। प्रेम आ स्नेहक मध्य केर सूक्ष्म पार्थक्यकेँ हम नहि अकानि सकल

रही। आब अहाँक प्रश्नक उत्तर। ओ स्वर हमरे छल। हँऽ, मुदा ओ शब्द हमर परिवारक छलैक। हमरासँ कहाओल गेल छल। अहाँ अकानि नहि सकैत छी जे ओकर बाद हमर की दशा भेल होएत। अपन सिरजनहारक अनादर कएने रही हम। खूब कानल रही। दाँती लागि गेल तखन बेहोश भेल तीन दिन अस्पतालमे भर्ती रही। ओह! अहाँ कल्पना नहि कऽ सकैत छी जे एक अविवाहित युवती जँ तीन दिन अस्पतालमे रहि जाए ओकर की अर्थ होइत अछि! ओह केहन दिन छल ओ! मुदा आइ हमरो मोनपर पड़ल पाथर जेना पसीझ गेल हो। दुनू गोटे एक-दोसराकेँ माफ कऽ दी यैह उचित। शांत जीवनक झीलमे पाथर नहि पड़ऽ देल जाए। हम अहाँकेँ आइ माफ कऽ देल। अपने सेहो हमरा माफ कऽ देल जाए।"

दुनू हाथ जोड़ने वंदना ठाढ़ि छलीह। आँखिसँ नोर बहि रहल छलनि। राजेश ठाढ़ होइत हुनकर दुनू हाथ अपन दुनू हाथमे लैत कहलनि–

"एना नहि! एहिना कतहु क्षमादान भेटए! चलू अहाँ ओतऽ चलैत छी। प्रोफेसर साहेबसँ भेंट करब।"

रूपा आबि गेल छलीह। राजेश एकटा लिफाफ रूपाकेँ हाथमे देलनि। फेर तीनू गोटे वंदना ओतऽ आबि गेलाह। प्रोफेसर साहेब आ भावना पहिनेहिए भोजन कऽ आबि गेल छलीह। दुनू टीभी देखैत छल। नमस्कार आ परिचय-पात भेलाक बाद राजेश सोफापर बैसि गेलाह। भावना उठिकेँ भीतर जाए लगलीह तऽ राजेश रोकि देलनि। पुछलनि– कोन कॉलेजमे पढ़ै छी? जवाब भेटल डीएमसी सेकंड एमबीबीएसमे। राजेशकेँ अनचोकेमे अपन बेटा मोन पड़ि गेलनि। फेर प्रोफेसर साहेबसँ बजलाह–

"आइ हिनकर जन्मदिन अछि। आजुक दिन लोक उपहार दै छै मुदा हम माँगब आइ। देबै ने सर?" राजेशक प्रश्न।

"आदेश कएल जाए सर!" चकित प्रोफेसर साहेबक उत्तर।

"अहाँ निराश नहि करब वंदना। हमर बेटा पीएमसीएच फाइनल इयरमे अछि। हम अहाँसँ अहाँक प्रतिरूपकेँ अपन प्रतिरूप लेल माँगि रहल छी। नहि नहि कहब से हमर अनुरोध।"

रूपा खुशीमे थपड़ी पाड़ए लगलीह। वंदना आ प्रोफेसर साहेबकेँ अपन कानपर विश्वास नहि होइत छलनि।

"ई तऽ हमरा सभक सौभाग्य!" एकहि संगे दुनू स्वर आएल।

"काल्हि अपने सभ गोटे हमरा ओतऽ रातुक भोजनपर सादर निमंत्रित

छी। हमरो परिवार आ बेटा आएल छथि। दुनूक परिचय रहत तऽ नीक रहतै। हम गाड़ी पठा देब। रूपाजीकेँ सेहो लऽ लेबनि।" कहैत राजेश उठि गेलाह।

सुनिते भावना लाजे लाल होइत पड़ा गेलीह भीतर।

नमस्कार करैत राजेश गाड़ीमे बैसि गेलाह। गाड़ी लऽग अरिआतऽ सब आएल छल। गाड़ी स्टार्ट भेलै आ बेकॉन लाइट नाचऽ लागल। ओकर पीयर रोशनीक नचैत दीर्घ वृत्तमे जेना वंदनाक सभटा सुप्त भेल अरमान नाचि रहल हो। एतेक दिनक समस्त दुख-दर्द, टीस-संत्रास आ कचोट-कसक जेना ओहि रंगीन वृत्तमे विलीन भऽ गेल हो आ ओकर सपनाक इंद्रधनुषमे जेना सातू रंग फेरसँ जगमगा गेल हो। ओ ताधरि ओहि दीर्घ वृत्तकेँ अपलक निहारैत रहलीह जाधरि ओ देखाइत रहल। फेर अपन घरमे प्रवेश कऽ गेलीह।



('सगर राति दीप जरए' केर 108म समारोह, मधुरा, झंझारपुरमे दि. 26 मार्च 2022केँ पठित। समीक्षक श्री अरविन्द प्रसाद)

भैया! हम आबि रहल छी

डॉ. प्रवीण अन्ततः नहि माननलनि। लंदन केर आकर्षण छल, अपने तत्-मत् करैत छलाह जे जाए वा नहि। भैया सेहो मना कएने छलाह। केहन नीक सरकारी डॉक्टर छी, कतेक जमि गेल अछि प्रैक्टिस। सर-समाजमे मान अछि। एतऽ पद, प्रतिष्ठा, पाइ सभटा अछि। लोक आदर दैत अछि। ओतऽ लंदनमे के पुछत? आ पुछबे करत तऽ ओकर कोन मोल! जंगलमे मोर नाचा किसने देखा!

तथापि नवविवाहिता पत्नीकेँ मोन छलनि जे विदेश घुमि आबी। अंतमे हुनके इच्छासँ लंदन जएबाक निर्णय लेलनि। आइ अँधराठाढ़ीक सरकारी अस्पतालमे एकटा छोट-छीन विदाइ समारोह राखल गेल छल। एहिमे स्थानीय पदाधिकारीगण आ परोपट्टाक प्रतिष्ठित लोक सभ रहथि आ रस्ता कातमे कऽल जोड़ने चुपचाप ठाढ़ आमजन! मात्र अढ़ाइ बरखक एतऽ केर सेवा छलनि। अस्पतालसँ बाहर देखलापर लोक फीसो दैते छल, कखनो कोनो गरीब-गुरबा नेहोरा करैत छल तेकरा छोड़ियो दैत छलाह। ओकरा सभकेँ फिजिशियन सैम्पल वला दबाइ ओहिना दऽ दैत छलाह। लोक सभसँ कोनो निमंत्रण भेटलापर जाइत छलथि।

फुटबॉल मैच आयोजित भेल छल आ प्रमुखजी आयोजन समितिक अध्यक्ष हिनके बना देने छलाह। आयोजन सफल भेल छल। अपन नोकरी आ साँझमे प्रैक्टिस करिते छलाह। वेतन आ फीस भेटिते छलनि तेकर बादो बजैत काल बेसी लोक राति-बिराति भेल उपकारक चर्च करैत भावुक भेल रहए। प्रवीण स्वयं बजैत काल भावुक भेल रहथि। भावनाक अतिरेकमे बजा गेलनि जे एमआरसीपी कऽ, प्रशिक्षण लऽ हम फेर आपस एतहि आबि जाएब। विदाइमे कपड़ा, मिथिला पेंटिंगसँ सुशोभित पाग आ डोपटा भेटलनि। पता नहि जे एहि खर्च सभक इंतजाम कोना भेल होयत। गाड़ीमे किछु आम स्त्रीगण बिनु कोनो नामोल्लेख वला सीकी-मौनीसँ बनल किछु सामान राखि देने छलीह। उद्गार

प्रकट करबाक ई केहन कला छल जे अबैत काल प्रवीणक कोँढ़ फाटि गेलनि आ हाथ जोड़ा गेल छलनि।

प्रवीण लंदन अएलाह तखन किछु दिन अजीब लागल। अपन परिचित कोइ नहि आ अनभुआर जगह। ओह! फेर कोर्स, कॉलेज आ अस्पतालमे रमि गेलाह। पूजाक पत्र आबए तऽ एकमात्र नेहोरा आ जिद जे जल्दीसँ आबि हमरो लऽ चलू। छओ मासपर भारत अएलाह। लोककेँ लंदन विषयक बहुत जिज्ञासा छल। ओ लंदनक बहुत रास कथा सेहो कहलनि। तखने भैया पुछि देलनि, "कॉक्सटन हॉल केहन छैक?"

"पता नहि! की छै ओतए"? ओ अनभुआर छलाह।

"ओतहि ने 13 मार्च 1940केँ सरदार उधम सिंह माइकेल ओडायरकेँ मारि अंग्रेज सभसँ 13 अप्रैल 1919केँ भेल जलियाँवाला बाग कांडक प्रतिशोध नेने छलाह।"

"ओह! नहि पता रहए। पुलिस हेडक्वार्टरक लग हेतै। एक बेर ओम्हर गेलो रही मुदा कोनो निशानी वा बोर्ड सब नहि छैक तेँ किछु थाह नहि लागल।"

"ओ स्थल भारतीय गौरव केर प्रतिनिधित्व करैत अछि। ओतऽ अवश्य जाउ। ओतए जाएब तऽ नीक लागत आ आत्म-गौरवक बोध होएत।"

"अवश्य जाएब हम।"

एहि बेर पत्नी संगे आएल छलीह। कतेक जोगारक बाद तऽ हुनक पासपोर्ट-वीसा भेटल छल। बकिंघम पैलेस, बिग बेन, संसद भवन, टॉवर ब्रीज, वेस्टमिनिस्टर एबे, टेम्स नदी आ ओकर नीचा पातालमे बनल सुरंग, पार्क, होटल, नाइट क्लब आदि केर आकर्षण कम्मे नहि होइत छल जे गाम-समाजक सुरता अबैत। मोबाइलक युग नहि छल आ ट्रंक कॉल बड़ मँहग। चिट्ठी-पतरीक सिलसिला सेहो शनैः शनैः कम भऽ गेल। नंदा भैया आ भौजीक पत्रसँ दू चारि मासपर हाल-चाल जानि लेथि। लंदन केर जीवनमे दुनू प्राणी रितिआ गेल छलाह। सब महत्त्वपूर्ण स्थल देखि लेलनि। कॉक्सटन केर ध्यान नहि रहल। एहिनामे एक दिन...

दुनू गोटे एक नाइट क्लबमे कोनो पार्टीमे मगन छलथि। एक अंग्रेज अपन चढ़ल आँखि गुराड़िकेँ पूजा दिशि लगातार ताकि रहल छल। सहसा ओ आएल आ 'ओ इंडियन ब्यूटी ! लेट अस डांस' (ए भारतीय सुंदरी! चलू हमसब नृत्य करी) कहैत पूजाक डाँरमे हाथ दऽ देलक। पूजा ओकर हाथ झटकारि देलनि। ओ निसाँमे छल। हाथ झटकारलासँ ओ तमसा गेल, "आइ विल किश

यू नाउ। दिस इज आवर राइट सिन्स ब्रिटिश पीरियड इन इंडिया। वी वेयर रुलर्स!" (आब हम अहाँक चुंबन लेब। ई भारतमे ब्रिटिश शासन कालेसँ हमरा सभक अधिकार अछि। हमसब शासक छलहुँ।) कहैत पूजाक माथ पकड़ि चुम्मा लेबाक प्रयास कएलक। ओकर तलमलाइत हाथसँ पूजाक खोपा खुजि गेलै। पीठपर करिया नागिन जकाँ जुट्टी केर स्पर्श पूजाकेँ नागिन बना देलकै। ओ ओकर हाथ झटकारि कॉलर धरैत फुफकारलनि, "एंड दिस इज इंडियन वीमेंस राइट!" (आ ई भारतीय स्त्रीक अधिकार छियै।) प्रवीण हतप्रभ छलाह। लोक सभ थोर-थाम करैत ओहि अंग्रेजकेँ कात कएलक। ओ अंत धरि बड़बड़ाइते रहल– "वी वेएर रूलर्स! दिस इज ऑवर राइट!..." (हमसब शासक छलहुँ! ई हमरा सभक अधिकार अछि।)

दुनू प्राणी चुपचाप अपन घर आबि गेलाह। प्रवीणकेँ पहिल बेर लंदन असभ्य आ बेकार लागल छल। दोयम दर्जाक नागरिक होएबाक भाव अभरल। मोनमे कचोट रहि गेलनि जे ओहि दुष्ट अंग्रेजक कॉलर धरबाक काज हम किएक नहि कएलहुँ। एहन आत्महीनता! ओह! आँखिसँ पूजाक माथ पकड़ने चुंबनातुर ओहि अंग्रेजक चेहरा हटिए नहि रहल छल। कानमे ओकरे स्वर– वी वेयर रूलर्स! दिस इज ऑवर राइट!गूँजि रहल छल। अपमानित! पददलित! पूजा आरामसँ सुतल छलीह मुदा प्रवीणक आँखिमे नीन नहि, वैह दृश्य अबैत-जाइत रहल। कछ-मछ करैत कहुना भोर भेल। अनायासे नंदा भैयाक स्वर ध्यानमे आएल– ओतए आत्म-गौरव केर बोध होएत! पूजाकेँ सुतले छोड़ि बाहरेसँ गेट लॉक कऽ ओ गाड़ी निकालि विदा भऽ गेलाह। पुटनेसँ आगाँ बढ़ि विक्टोरिया स्ट्रीटसँ ब्राडवे पकड़ि कॉक्सटन स्ट्रीट। फेर एहिमे पामर स्ट्रीट जतए मिलैत अछि ओहि कार्नरपर अवस्थित कॉक्सटन हॉल मात्र बीस मिनटमे आबि गेलाह। भोरे-भोर ओतए के भेटैत? एकदम सून-मसान लगैत छल। ओ एक कात गाड़ी पार्क कएलनि आ कखनो एहि गाछक जड़िमे बैसथि कखनो ओहि गाछ तऽर, कखनो टहलि जाथि। सरदार उधम सिंहक विषयमे सोचलासँ रतुका टीसक सांद्र भाव जेना पतरा रहल हो। किछु काल बाद एकटा सफाइकर्मी मेन गेट खोलि साफ-सफाइमे लागल देखाओल। प्रवीणक अनुरोधपर ओ हॉल देखा देलक। एतहि सरदार उधम सिंह पंजाबसँ हजारो किलोमीटर दूर लंदन आबि गवर्नर ओडायरकेँ मारि जलियाँवाला बाग नरसंहारक प्रतिशोध नेने छलाह। पता नहि की भेलनि जे सहसा डॉ. प्रवीण ठेहुनपर बैसि ओहि स्थलकेँ प्रणाम कएलनि। रतुका अपमान

दू ठोप बनि टघरि गेल आ निरभ्र भेल मोन गर्वसँ भरि उठल। नंदा भैया ठीके कहने छलाह– ओतए आत्म-गौरवक बोध होएत! जखन आपस अएलाह तखनो पूजा सुतले छलीह। प्रवीण पूजाक माथ हँसोथैत कहलनि– "उठू हे हमर उधम सिंह!" पूजा विहुँसैत उठि अगड़ाइत दुलार कएलनि। ओहिना ऊर्जासँ भरल आ प्रफुल्लित! रतुका घटना, ग्लानि, अपमान सभक कोनो छुति नहि छल।

जिम्मीक जन्म भेल तखन प्रवीण नंदा भैयाकेँ पत्र लिखने छलाह। एकरो बरख दिन भऽ गेलै। एक बेर सासुरमे बियाह छलनि ओहिमे आएल छलाह तखने दादी अपन पोता जिम्मीक मुह देखलनि। आब तऽ दोसरो आबि गेल छल। बहुत दिन भऽ गेल छल एम्हर भारतवर्ष नहि आबि सकलाह। माँ दोसर पोताक मुह देखएबाक लेल कतेक कलपिकेँ कहने रहथि फोनपर।

प्रवीण एमआरसीपी कऽ किछु दिन रॉयल अस्पतालमे काज कएलनि फेर एकटा छोट-छीन नर्सिंग होम पुटनेमे शुरू कएलनि। किछु ओल्ड एज होम सभक पे रॉलपर छलाह। ओहि सभमे पलखति कतऽ! समय अपन चालिसँ चलि रहल छल। दुनू बेटा कोना समर्थ भऽ गेल किछु पता नहि चलल। छोटका पोता जॉनीक मुह देखबाक सेहंता नेने पितामह चलि गेलाह। प्रवीण ओहिमे भारत आबियो नहि सकल छलाह। पाइ पठा देने रहथि। छओ मास पहिने भतीजीक बियाहमे गेले छलाह। दू बरख बाद माए बीमार अछि से फोन आएल छलनि। मुदा जाबत सभकेँ लैत पटना अएलाह ताबत माएक वाक् हरण भऽ गेल छलनि। कोमामे चलि गेल रहथि। आँखि तकैत छलीह मुदा आर कोनो स्पंदन नहि।

प्रवीण गोर लगैत बजलाह– "देख! यैह छियौ छोटका पोता जॉनी!" माएक आँखिक डिम्मा कने घुमल आ धीरे-धीरे पथरा गेल। मुनल आँखिसँ नोर टघरि गेलै जेना पोतेकेँ देखबाक आशमे प्राण लटकल हो।

प्रवीण नंदा भैयाकेँ कहने रहथि– हमरा सभक पढ़ाइ-लिखाइ, बियाह-दान, श्राद्ध, सर-कुटुम्ब, नोँत-पिहानी सब दिन अहीँ केलियै! एहि बेर माएक श्राद्ध हमरे करऽ दियऽ। ओहिनो अहाँ उत्तरीय लेब। कतहु जा नहि सकब। हम सब सम्हारि लेब। भैयाक आँखिक नोर माथपर खसैत एकरा स्वीकार कएलक। बहुत नीकसँ सब काज संपन्न भेलै। पंद्रहम दिन फेर प्रवीण परिवारक संग लंदन विदा भऽ गेलाह।

भारतसँ आपस भेना अखन मासो दिन नहि भेल छलनि कि एक दिन मि. फ्रेडरिक हिनका ओतऽ अएलाह। हुनका अपन पत्नीक बेमारीक मादे किछु

जिज्ञासा छलनि। ओ विदा भेलाह तखन प्रवीण अपन बालकोनीसँ हुनका जाइत देखि रहल छलाह। फर्स्ट फ्लोरसँ उतरि जखन ओ रोडक कातमे लागल अपन कार लऽग पहुँचैत रहथि तखने ओ तलमलाइत खसि पड़लाह। प्रवीण सीढ़ी फनैत हुनका अपनेसँ उठा अपन नर्सिंग होम आनि उपचार कएलनि। मायोकार्डियल इनफारक्शन (हृदयाघात) छल जे क्विक मेडिकल इंटरवेंशनसँ ठीक भऽ गेल। मि. फ्रेडरिक कृतज्ञता व्यक्त कएलनि। फेर मिसेज फ्रेडरिक सेहो अएलीह। ओ सेहो प्रसन्न होइत घर गेलीह।

समय नीकसँ व्यतीत भऽ रहल छल। नर्सिंग होम चलि गेल छल। एकर सामने स्ट्रीटक दोसर कात एकटा बड़का कोन्डो हाउस प्रवीण किनलनि। सब इच्छा पूर्ण भेलनि मुदा एक मिनट केर फुर्सत नहि।

एहिनामे एक दिन बड़का आ छोटका घरमे एकहि बेर बम फोड़लक जे हमसब अगिला मास 4 तारीखकेँ चर्चमे विवाह करब। पूजा किछु बजती ओहिसँ पहिने जॉनी बाजल, "वी आर एडल्ट नाउ मॉम। यू नीड नोट टू इंटरफेयर इन ऑवर पर्सनल लाइफ।" (हमसब आब बालिग भऽ गेल छी मम्मी! हमरा सभक व्यक्तिगत जीवनमे हस्तक्षेप करबाक कोनो आवश्यकता नहि।)

पूजा सकदम्म रहि गेलीह। प्रवीणकेँ कहलनि। किछु क्षणक लेल ओ बौक भऽ गेलाह, माथ पकड़ि बैसि गेलाह। फेर किछु काल बाद प्रकृतस्थ होइत एतबे कहलनि– "जखन कहने रही जे एकरा सभक संग मैथिलीए बाजू तखन हमरा कोना भँभोरने रही जे बच्चा सब जल्दी अंग्रेजी बाजि सकए तेँ अपनो सब आब अंग्रेजीए बाजी। आब बजैत रहू धुरझार अंग्रेजी! अखन की भेल! आब देखू ने जे की-की होइए!!... खैर, चलू चर्चेमे अपनो सब आशीर्वाद दऽ देबै। जेहने देश तेहने भेष!"

एकरो अवसर नीकसँ नहि भेटलनि। 4 ता.केँ दुनू भाए भोरमे बिनु किछु कहने कखन घरसँ बहरा गेल से पता नहि चलल। तथापि पूजा जतनपूर्वक दुनूक रूमकेँ गेंदा, गुलाब आ रजनीगंधाक लड़ी सभसँ सजा देलनि। द्वारपर दू टा पितरिया कलशमे प्रस्फुटित कमल रखलनि। आरतीक थारी सजबैत रहथि तखने एसएमएस आएल– सेंट मैरी चर्च, 11 A.M. समय देखलनि तऽ साढ़े दस बाजि गेल अछि। धड़फड़ाइत विदा भेलथि दुनू प्राणी। गिरिजाघरमे जिम्मी वाउ (प्रतिज्ञा पत्र) पढ़ि रहल छल। भाव छल जे जीवन भरि सदा-सर्वदा अहाँक संग रहब! अहाँ हमर जान छी, सपनोमे अहाँक कष्ट नहि देब...। फेर पंजीपर

हस्ताक्षर भेल, एक-दोसराकेँ औंठी पहिरओलक, फर्स्ट किश भेल। पादरीक प्रार्थना आ प्रवचन भेल। इयूकेरिस्टमे प्रवीण आ पूजा दुनू नहि गेलाह। पता छलनि जे एहिमे मात्र कैथोलिक जाइत अछि। नॉन कैथोलिक छातीपर अपन दुनू हाथसँ क्रास बना आशीर्वाद लऽ सकैत छथि। पूजाकेँ अपन बियाहक घोल-फचक्का, लोक सभक जुटान आ विधि-व्यवहार, भोज-भात सब मोन पड़ि रहल छल। ओ ओहि स्मृतिमे मुदित छलीह मुदा प्रवीणक मोन तमसा रहल छल। एहन कतहु बियाह हो! बियाह छल वा नाटक! तथापि दुनू प्राणीकेँ ई नीक लागल छल जे चारू गोटे वाउमे मात्र एहि जन्मक गप्प कएने छल हमरा सभ जकाँ सात जन्मक कोनो बात नहि कएलक।

पूजा छोटकी पुतोहु ग्रेसकेँ अपन दुनू कंगन आ बड़की लुसीकेँ अपन हार उतारिकेँ पहिरा देलनि। प्रवीण ओहि ठामक परंपरानुसार पहिल समधिन आ दोसर समधिकेँ औंठीक दाम केर चेक काटिकेँ दऽ देलनि। ओ दुनू सेहो एम्हरका औंठीक दाम देबऽ चाहलनि मुदा प्रवीण मना कऽ देलनि।

विवाहक बाद दुनू भाए घर कहाँ आएल! पूजा द्वारा सजाओल गेल फूल सब प्रतीक्षे करैत रहि गेल आ दुनू भाए पहिनेसँ आरक्षित कराओल द सैंडरसन होटल चलि गेल। ओतहि छोट-छीन पार्टी छल। प्रवीण सैंडरसन होटलसँ अबैत काल ओकर हिसाब कएलनि। हुनकर मोन तऽ छल जे हनीमूनमे ई सब भारते जाथि। सिरागूमे गोर लागि फेर कश्मीर जाथि। मुदा ओ सब स्विट्जरलैंड चलि गेल। प्रवीणे सब व्यवस्था कऽ देने छलाह।

हिनका सभक सौभाग्य रहल जे बियाहक बादो बहुत कहला– सुनलापर दुनू बेटा घरमे रहबाक लेल तैयार भऽ गेल। एतऽ तऽ बियाहक पहिने बेटा बापसँ भीन भऽ जाइत छै।

समय बिति रहल छल। एहिनामे साल भरिक बाद एक दिन पूजा बेहोश भेलीह आ फेर चटपटमे अपने नर्सिंग होमसँ विदा भऽ गेलीह। दुनू भाए कहुना डेनहम विद्युत शवदाह गृह जएबाक लेल तैयार भेल छल। कोनो छुतका नहि मानलक आ दोसरे दिन नहा-धुआ अपन उऋणताक घोषणा कऽ देने छल। विमान, कठिहारी, मुखाग्नि, पंचकठिया, तेराति, डाबा टाँगब, कर्म, अरघासन, एकादशा-द्वादशा श्राद्धक भोज, शैय्या दान आदि पूजाक भाग्यमे नहि लिखल छलनि। किछु कहब उचित नहि यैह मानि प्रवीण एकदम मौन भऽ गेल छलाह। हारल-थाकल प्रवीण जेना जीवनसँ निराश भऽ गेल होथि। बेसी काल

अस्पतालक भार दोसरेपर रहैत छल। रहथि अस्पतालेमे मुदा एकदम शांत, कोनो उहि नहि, कोनो उत्साह नहि, एकदम निस्तेज! जाहि बेडपर पूजाक प्राण छुटल छल ओकर चद्दरि रोज अपने हाथसँ बदलि दैत छलाह मुदा पता नहि किएक कोनो आन पेशेंटकेँ ओहिपर जाए नहि दैत छलाह। भरि-भरि दिन ओहि बेडकेँ गुमसुम निहारैत रहैत छलाह।

ग्रेसकेँ अपन स्कॉटलैंडक सभ्यता-संस्कृतिपर कनी बेसिए गुमान छलै। भारतीय सभ्यता-संस्कृति हुनक दृष्टिमे बेकार आ अप्रासंगिक छलै। ओ डॉ. प्रवीणकेँ सेहो कंट्री बंपकिन वा देहाती भुच्चर मानैत छलीह। सदिखन व्यंग्य बाण संधान करैत छलीह। बेटासँ होइत भारी डिस्कशन देखि-सुनि प्रवीण असहज भऽ जाइत छलाह। मुदा ग्रेसक बहसल ठोरक लेहाजसँ गुम्मी लाधि लैत छलाह। ओहिनो एकहि घरमे रहितो ससुरकेँ देखना कतेक दिन भऽ जाइत छल। बात-चीत भेना तऽ किछु मास भऽ गेल होएत। लुसी संग एहन बात नहि छल। ओ ससुरक ध्यान रखैत छलीह। सासुक गेलाक बाद कने बेसिए, आब ओ आर सेवाभावी भऽ गेल छलीह। जखन-जखन प्रवीण अपसेट होइत छलाह ओ पूजा द्वारा देल गेल हार आनि प्रवीणकेँ देखबैत छलीह– "प्योर गोल्ड! सो हैवी नेकलेस! प्लीज टच एण्ड फील द मेमोरी ऑफ माइ मदर-इन लॉ!" (शुद्ध सोना! कतेक भारी हार! कृपया एकर स्पर्श करू आ हमर सासु माँक स्मृति सभक अनुभव करू।) प्रवीण देखैत छलाह, हारकेँ छुबैत छलाह आ भावुक होइत छलाह। तथापि ई हुनका नीक लगैत छल। लुसीकेँ मोनसँ आशीर्वाद दैत छलाह। ओह! एकहि स्कॉटलैंडक दू बेटी! दुनूमे कतेक फर्क छैक!

लुसीकेँ फैशनपर आइएफएमे एक पेपर पढ़बाक छल। दुनू प्राणी पेरिस गेल छल। घरपर ग्रेस रहथि। ओ एकटा कुतिया सायना पोसने छलीह। सटले घरमे मि. बायरन सेहो एकटा कुकुर पोसने छलाह। ओहि दिन मिसेज बायरन कोनो काजसँ ग्रेससँ भेंट करए अएलीह। गेटेपर दुनू गोटे गप्प करैत छलीह तखने मि. बायरन केर कुकुर पता नहि कोना एहि घरमे ससरि गेल। ग्रेस घर अएलीह तऽ देखैत छथि जे ओ कुकुर सायनाकेँ लंघन दऽ रहल अछि। अपरतीब लागल। ग्रेस पेपरवेट उठा तामसमे जोरसँ मारलनि। कुकुरक पछिला एक पयरक नह थकुचा जकाँ गेलै, कने खून अभरि गेलै। प्रवीण बिटाडीनसँ खून साफ करैत रहथि। कुकुर कैं-कैं किकिया रहल छल। पता नहि पुलिस आ एनिमल वेल्फेयरवला सब कोना पहुँचि गेल। ग्रेसकेँ संग लऽ गेल। डॉ. प्रवीण दौगैत थाना पहुँचि गछि लेलनि जे पेपरवेट

हम फेकने रही ग्रेस नहि। ग्रेस आश्चर्यचकित छलीह। एहनो कोइ कऽ सकैत अछि से हुनका विश्वास नहि छलनि। ओ सकदम्म छलीह! किछु फुरा नहि रहल छल। एसएचओक कहलापर ग्रेस डेरा आबि गेलीह। द एनिमल प्रोटेक्शन एक्ट 2006सँ छओ मासक जहल भऽ सकैत छल। घरक इज्जतक कारणेँ प्रवीण ग्रेसक कएल अपराधक दंड स्वयं भोगबाक लेल तैयार भऽ सब अपराध अपना सिर लऽ लेलनि।

कोर्टमे मि. फ्रेडरिक ई मामला देखलनि। ओ प्रवीणकेँ चिन्हि लेलनि। ओ मानबाक लेल तैयारे नहि छलाह जे डॉ. प्रवीण कोनो जीवपर प्रहार कऽ सकैत छथि। जे व्यक्ति कोनो अनजान आदमीकेँ खसैत देखि सीढ़ी फानि लऽग आबि अपने हाथमे उठा नर्सिंग होम आनि ओकर जान बचा सकैत अछि ओ कोनो जीवकेँ चोट कोनो हालतमे नहि पहुँचा सकैत अछि। चेतौनी आ किछु जुर्माना-बॉण्ड भरलाक बाद प्रवीणकेँ छोड़ि देल गेलनि। कोनो दिनक कएल परोपकार आइ काज आबि गेल छलनि।

ओहि राति आठ बजे मि. फ्रेडरिक प्रवीणक कोण्डो हाउस आबि गेलथि। प्रवीणकेँ सकुचाइत देखि ओ अंग्रेजीमे आश्वस्त कएलनि जे फैसला आब पलटि नहि सकैत अछि। आब अहाँ पूर्णरूपेण मुक्त छी। हमरा अखनो विश्वास नहि अछि जे अहाँ कुकुरकेँ मारने होएब। हमसब भरि दिन लोकक मनोविज्ञाने पढ़ैत छी। सत्य की अछि से कहि दियऽ। बहुत आग्रहपर प्रवीण अंग्रेजीएमे सत्य कहि देलनि जे परिवारक प्रतिष्ठाक लेल ई सब कएल। घरक स्त्रीगण हमरा सभक लक्ष्मी, हमरा सभक मान-प्रतिष्ठा! हुनका जहल जाइत कोना देखि सकैत छलहुँ!

“ओ! माय सरमाइज वाज राइट। यू आर रियली ए जेम ऑफ ह्युमिनेटी डॉ. प्रवीण!” (ओह! हमर अनुमान एकदम सही छल। डॉ. प्रवीण! अहाँ मानवताक रत्न छी!) कहैत मि. फ्रेडरिक ग्रेससँ भेंट करबाक इच्छा प्रकट कएलनि। ग्रेसकेँ कक्षमे अबिते कॉफी छोड़ि ठाढ़ होइत ओ कहलनि, “दिस जेंटलमेन वाज रेडी फॉर ए प्रिजन ऑफ सिक्स मंथ्स बट नोट रेडी फार ह्यूमिलेशन ऑफ हिज डॉटर-इन लॉ। रियली ए रेयर एक्शन। ऑनली ए रियल इंडियन कैन थिंक लाइक दिस। प्लीज हैभ इम्पेथी टुवाड्र्स हिम एंड एक्नॉलेज हिज सेक्रीफाइस।” (ई महानुभाव छओ मासक जहल काटबाक लेल तैयार छलाह मुदा पुतोहुकेँ जहल जएबाक बेइज्जती नहि सहि सकैत छलाह। वास्तविक रूपसँ एक विरल कृत्य! मात्र एक सुच्चा भारतीय एहन सोचि सकैत अछि। हिनक संवेदनाक ध्यान राखू आ हिनक त्यागक सम्मान करू।)

मि. फ्रेडरिक केर बातक प्रभाव ग्रेसपर किछु मास रहल। एकर बाद हुनका कल्याणक योग्यता भेलनि। फेर मि. फ्रेडरिक केर बात बिसरा गेलनि। वैह दिनचर्या, वैह बात-बातपर तामस, वैह श्रेष्ठताक मिथ्या दंभ, ओहने हॉट डिस्कशन...

अस्पतालसँ पोताक संग अएलीह आ रूमक आगू 'नो इन्ट्री'क एकटा बोर्ड टँगि गेल। डॉ. प्रवीण स्वयं चिकित्सक छथि, सदिखन संक्रमण सभक प्रति अत्यंत सचेष्ट रहथि। पोताकेँ देखबाक सेहंता छलनि मुदा सख्त मनाही छल ओहि रूम जाएसँ। विकल भऽकेँ रहि जाथि। अनायासे पिताक स्मरण भेलनि। आइ पिताक ओहि भावनाक मोल बुझलनि जे कोना ओ छोटका पोताकेँ देखबाक लेल छटपटाइत रहल होएताह। आइ ओहि विकलताक सांद्रत्वकेँ अनुभव कएलनि। गुड़क मारि धोकरे जनैत छैक! एक दू बेर रौदमे दैत काल दूरेसँ अझक्के देखने छलाह। चिल्का बेटा जॉनी सन लागल। भरि पोख देखि नहि सकैत छी। कोरा नहि लऽ सकैत छी। स्पर्श नहि करबाक स्पष्ट फरमान छल। आइ अपन स्थितिसँ पिताक ओहि व्यग्रता केर गांभीर्यक भान भेलनि। ओहि संत्रासक अनुभव कएलनि जे पिता भोगने रहथि। ओ जॉनीकेँ देखबाक सेहंता नेने चलि गेलाह। फेर मोनमे भेलनि जे ओ तऽ सात समंदर पार छलाह तेँ सन्तोष कऽ नेने होएताह! हम तऽ एतहि छी, सातो फीटपर नहि छी। मात्र एक देबाल आ ओहिमे लागल दरवज्जा! तथापि हमर हाल जे पोताक मात्र चिहुँ-चिहुँ कानब सुनि सकैत छी, ने देखि सकैत छी आ ने कोरामे लऽ सकैत छी। यैह हमर नियति। हम की कएलहुँ जीवनमे! पाइ तऽ एतऽ बड़ कमएलहुँ। बड़का घर, कूक, मेड, गाड़ी, शोफर, बैंक बैलेंस... संसारक समस्त सुख-सुविधा उपलब्ध अछि। मुदा की हम अपन जीवनकेँ सफल कहि सकैत छी? नहि ! आब ने अपन अस्पताल बंद कऽ देलहुँ पहिनेहिए कोन एतऽ केर लोक मोजर दैत छल! अँधराठाढ़ीसँ अबैत कालक दृश्य मोन पड़ि गेलनि जे लोक सभ कोना तरहत्थीपर रखने छल। कोना विदा कएलनि! एतऽ सेहो वैह इलाजे करैत छी मुदा एतऽ केर लोक सभक लेल धनिसन! बाहर भेटलापर कोनो भाव नहि। कतबो करी, किछुओ करी सम्मानक ओहि दृष्टिसँ कहाँ देखैत अछि लोक! एतऽ बी ग्रेड सिटीजन मानैत अछि। ओतऽ अत्यंत महत्त्वपूर्ण व्यक्ति छलहुँ। ओह! जनिकर इच्छाक सम्मान करैत अपन देश छोड़ि एतऽ अएलहुँ आ एतहि रहि गेलहुँ वैह हमरा एहि विदेशमे एसकर औनाइत छोड़िकेँ चलि गेलीह। हाय रे हमर भाग्य!

चिल्का चिहुँ-चिहुँ चिचिया रहल छल आ जॉनी-ग्रेसमे वाद-विवाद बजरल छल। एक दू बेर आवाज देलनि– "जॉनी! ग्रेस! बेबी इज क्राइंग। लूक एट हिम!" (जॉनी! ग्रेस!! बच्चा कानि रहल अछि। ओकरा देखू!)

दुनूक वाद-विवाद बढ़िए रहल छल। ग्रेस स्कॉटलैंडक संप्रभुताक पक्षधर छलीह आ जॉनी ग्रेटब्रिटेनक संग स्कॉटलैंडकेँ रहबाक हिमायती। स्कॉटलैंडक स्वतंत्रता आंदोलन आ ग्रेटब्रिटेनक इतिहासक नव-नव पृष्ठ खुजि रहल छल मुदा निष्कर्षपर मतांतर छल। ओम्हर पोता चिचिया रहल छल एम्हर बेटा-पुतोहु दुनू देशक इतिहासपर बहस करैत छल। प्रवीणक आवाजक कोनो प्रभाव दुनूपर नहि पड़ल। एक-दू बेर फेर आवाज देलनि मुदा परिणाम वैह। पोताक लगातार क्रंदन जखन कानमे पसीझल गरम शीशा जकाँ लागए लागल तखन प्रवीण यंत्रवत् हाथ सेनिटाइज कएलनि आ नो इन्ट्रीक साटल बोर्ड हटबैत घरमे प्रवेश कऽ गेलाह। कनैत-कनैत चिल्का बेहाल भेल छल। मुह एकदम लाल भऽ गेल छलै। प्रवीण आइ दू मास बाद पहिल बेर पोताकेँ एतेक लऽगसँ देखलनि। सहसा चौंकि गेलाह। अँय, ई तऽ अनमन हमरे जकाँ अछि। हमर बच्चावला फोटो एकदम एकरे सन अछि। प्रवीण अत्यंत सावधानीपूर्वक पोताकेँ क्रेडलसँ उठा अपन छातीमे सटा लेलनि। दुलारसँ पीठपर थपकी देलनि। मानव देहक अनुभूतिसँ ओ चुप भऽ गेल। टुकुर-टुकुर अपन पितामहकेँ देखऽ लागल। नहुँ-नहुँ मुस्की देबऽ लागल। प्रवीण नेहाल भऽ गेलाह। अपन प्रतिरूपकेँ देखि जीवन केर सार्थकताक एहसास भेलनि। पूजाक गेलाक बाद आइ पहिल बेर मोन आनंदित भेल छलनि। आइ पूजा रहितथि तखन कतेक नीक लगैत! नेनाक कानब बंद भेलापर ग्रेसकेँ शंका भेलनि। ओ नेनाकेँ देखबाक लेल अपन बैठकासँ उठि जहाँ क्रेडल लऽग अएलीह कि ससुरक कोरामे नेनाकेँ देखिते चिचिया उठलीह, "हाउ डेयर यू कम टू दिस रूम! टचिंग माइ बेबी वाज स्ट्रिक्टली प्रोहिबिटेड फॉर यू बट यू इडिएट इंडियंस नेभर फॉलो एनी रूल्स एंड एटिकेट! नॉनसेंस!!" (एहि कक्षमे प्रवेश करबाक अहाँक हिम्मत कोना भेल? हमर नेनाकेँ छुअएसँ अहाँकेँ सख्त मनाही छल एकर बादो अहाँ बेवकूफ भारतीय कोनो नियम आ शिष्टाचार नहि मानैत छी। मूर्ख नहितन!) अवाक् भेल ससुरक हाथसँ एक झटकामे ओ नेनाकेँ छीनि लेलनि। झिका-तिर्रीसँ ओ फेर चिचिआए लागल। जॉनी ग्रेसकेँ समझएबाक प्रयास कएलक तऽ ग्रेस ओकरो डपटि देलनि– "यू शट अप!" (चुप रहू अहाँ) जॉनी बापकेँ कहलक– "ओह... पापा! यू शूडोन्ट हैभ इन्टर्ड दिस रूम ह्वेन

इट वाज फॉरबिडेन। वी वेएर डिस्कशिंग द फेट ऑफ स्कॉटलैंड एंड जीबी! वी केयर फॉर ऑवर कंट्रीज... !" (ओह पापा! अहाँकेँ एहि कक्षमे एकदम नहि अएबाक चाही किएक तऽ मनाही कएल गेल छल। ग्रेस आ हम स्कॉटलैंड आ ग्रेटब्रिटेनक भविष्यपर विमर्श करैत रही। अपन-अपन देशक चिंता...)

प्रवीण अकचका गेलाह। मि. फ्रेडरिक केर इजलासमे कऽल जोड़ने ठाढ़ अपन रूप मोन पड़लनि। एहने नट्टिनक लेल जहल जाइत छलहुँ। हे भगवान्! केहन सरियत देलक ई जोधिन! ओह! तामस चढ़ि गेलनि। एक क्षणमे निर्णय लैत चिचिया उठलाह, "येस माइ सन! यू केयर फॉर योर जीबी एंड शी केयर्स फॉर स्कॉटलैंड! ओके! ओके!! नाउ आइ विल केयर फॉर माइ मदरलैंड, माइ मिथिला एण्ड माय इंडिया! हीयर मी! आइएम लीविंग लंदन फॉर एभर राइट नाउ!" (हँ, बेटा हमर! अहाँ अपन ग्रेटब्रिटेनक चिंता करैत छी आ ओ स्कॉटलैंडक विषयमे सोचैत छथि। ठीक छै। तखन आब सुनि लियऽ! आब हम सेहो अपन मातृभूमि, अपन मिथिला आ अपन भारतवर्षक लेल सोचब। हम अखन तुरंतसँ लंदन सदा-सर्वदाक लेल छोड़ि रहल छी!)

"नो पापा! यू केन्नोट डू दिस। वी बेग योर पैरडन। काइंडली फॉरगिभ अस।" (नहि पापा! अहाँ एना नहि कऽ सकैत छी। हमसब अहाँसँ क्षमा-याचना करैत छी। कृपया हमरा सभकेँ क्षमादान देल जाए।) लुसीक शब्द कानमे पड़ल।

लुसी आ जिम्मी तखने अपन कक्षसँ दौगल। लुसी एतऽ केर हाल जानि पघीलि गेल छलीह। कानए लगलीह, "डू यू नो माइ बायोलिजिकल फादर डेसर्टेड माइ मदर ह्वेन आइ वाज ऑनली थ्री इयर्स ओल्ड? सिन्स देन आइ वाज इयरनिंग फॉर दिस लव। यू ऑनली मेड मी रियलाइज द एफेक्सनेट लव ऑफ ए फादर। प्लीज डोन्ट गो। वी लभ यू पापा!" (की अहाँ जनैत छी जे हमर जैविक पिता ओहि समय हमर माएकेँ त्यागि देने रहथि जखन हम मात्र तीन वर्षक रही? तहियासँ हम बापक दुलार लेल बेकल रही। ई मात्र अपने छी जे एक बापक दुलार-प्यार की होइ छै तेकर एहसास हमरा कराओल। कृपया नहि जाउ। हमसब अहाँकेँ बहुत मानैत छी पापा!) लुसी विह्वल भऽ गेल छलीह।

"स्टिल आइ लव यू माइ सन! यू विल आलवेज रिसीभ वार्म वेलकम इन इंडिया। यू कैन कम ह्वेनएभर यू लाइक। आइ विल वेलकम यू इन पूजा मेमोरियल हास्पिटल इन माइ विलेज।" (बेटा! हम अखनो अहाँ सभकेँ मानैत छी। अहाँक जहिया मोन हुअए अहाँ आबि सकैत छी। हम अपन गाममे पूजा मेमोरियल अस्पतालमे

अहाँक स्वागत करब।) कहैत प्रवीण कनैत लुसीकेँ छातीसँ लगा आशीर्वाद देलनि–"गॉड ब्लेश यू माइ सन!" (भगवान् अहाँपर सदा सहाय रहथि।)

पोतामे अपन प्रतिरूप देखि आनंदक जे भाव अभरल छल से तिरोहित भऽ गेल। मोनमे लंदनक प्रति वितृष्णा भरि गेल छल। रूमसँ बाहर आबि ह्वाट्स एप्प कॉल पटना नंदा भैयाकेँ लगा देलनि। तखन एतऽ साँझ छल मुदा पटनामे रातिक साढ़े एगारह बजैत छल। नंदा भैयाकेँ डर भेलनि जे एतेक रातिकेँ फोन किएक आएल! उहो पूजाक मृत्युक कतेक दिनक बाद केर पहिल फोन। अदंक पैसि गेल छलनि कहुना 'हैलो' कहलनि आ स्पीकर ऑन कऽ देलनि जे रिंगटोन सुनि लऽगमे आएल बेटा आ बिछान लऽग ठाढ़ि पत्नी सेहो सुनि सकथि। ओम्हरसँ प्रवीणक भावुक भेल स्वर छल–

"भैया! हम एतऽ बहुत कमएलहुँ, खूब अरजलहुँ। मुदा लोक मात्र पाइ लेल नहि जिबैत अछि। एक सीमाक बाद ई अर्थहीन भऽ जाइत छै। हम एतए केर सब अरजल संपत्ति छोड़ि-छाड़ि अपन देश घुरि रहल छी। गामक धरती बजा लेलनि हमरा! गाममे छोट-छीन अस्पताल शुरू करब आ ओतहि रहि गामक सेवा करब। एक दू मास जाबत सब तैयार होयत ताबत अहीँ लग पटनेमे रहब। अपन धरती अपन लोक अपने होइ छै। ई विदेश हमरा नहि धारलक। बी ग्रेड सिटीजन बना अस्तित्वहीन कऽ देलक। गाममे फेरसँ अपन दोसर पारी शुरू करब। अहाँक आ भौजीक आशीर्वाद भेटैत रहत तखन हमर ई जीवन सफल भऽ जाएत। हँ, एकर ध्यान राखब जे जहिया कहियो हम मरी, हमरा मुखाग्नि अवश्य देल जाए। दू-दू बेटाक अछैत पूजाकेँ ई भाग्यमे नहि छलनि। राकेश कतहु रहथि आबिकेँ मुखाग्नि हमरा अवश्य देथि। बेटा आ भातिजमे कोन फर्क! भोज-भात भले नहि हो मुदा संस्कार अपन देश अपन माटिपर अवश्य हो। ई दुनू भाए तऽ आब घुरिकेँ भारत कहियो अएबो नहि करत। दुनूकेँ ई लंदन नगरी पचा लेलकै। आधुनिकताक टेम्स नदीक धारमे बहि गेल दुनू। संभव जे बड़की पुतोहु लुसी कहियो आबथि। छोटकी ग्रेस तऽ आइ...। ओह! हम परसू पटना पहुँचि जाएब। फेर सब कोइ गाम चलब। भैया! हम आबि रहल छी..." कनैत छोट भाएक स्वर नंदाकेँ विह्वल कऽ देने छल। हुनको आँखिसँ दहो-बहो नोर बहि रहल छल। लगमे ठाढ़ बेटा राकेश भावुक भऽ गेल छल आ ओकर माए सेहो साड़ीक आँचरसँ अपन आँखि पोछि रहल छलीह।



[अनुप्रास, वर्ष 03, अंक 05-06, 2022]

पाँच बरखक कथा

अन्हार गुज्ज जाड़क राति। कुहेस एहन जे ककरो किछु देखाइत नहि छल। आकाशमे ने एक्कोटा तारा आ ने चंद्रमा। निसबद भेल बथनाहा गाम। कुकुर सभ धानक बोझमे नुकाएल। कखनो नवजात पिल्ला-पिल्लीक कोकिएबाक हल्लुक स्वर। चिड़ै-चुनमुनी सभ सेहो शांत। तखने हरखू मुखियाक घरसँ सोरहा भेल– पुनीता घरमे नहि अछि। आइ मुआ देबै प्रेमाकेँ। ताक कतऽ छौ दुनू कलंकी। जाग भऽ गेल तखन घरेसँ बाजल रामजी मुखिया– किछु काल पहिने पछुआरमे लग्घी करैत रही तऽ लागल जे कोइ इस्कूल दिशि जा रहल अछि। लोक सब पेना, फठ्ठा, सहथ, हाँसू आदि लैत विदा भेल इस्कूल दिशि। आवाज़ अबैत रहल– दुनू कंठ ठेका देलक। भरि-भरि राति मोबाइलपर गप्प करैत छल। सीरक तऽरमे मोबाइल चलबैत छल। माए पुछै तऽ कहैत छल जे पढ़ाइ करैत छी। आइ सरबाकेँ सब पढ़ाइ घोसारि देबै। गामकेँ गाम नहि रहए देलक ई छौंड़ा। आइ नओ-छओ कऽ देबै। कत्ता नेने एक गोटे बाजल नौ-छौ नञ भाइ, आइ छौ इंच छोट कऽ देबै। एक गोटे सभकेँ सावधान करैत बाजल– गुम्मी लाधने चल। आवाज सुनि भागि जेतौ। दोसर बाजल– भागत कोना? इस्कूलक पाछू तऽ नागफेनी काँटक जंगल छै आ ओकर लगले जीबछ नदी। कतऽ जेतै? हमर हाथ कतेक दिनसँ लुसफुसा रहल छल। आइ अवसर भेटल। सारक देह ततारि देबै आइ।

इस्कूलक एक कोठरीक केबाड़मे सीकरी नहि छलैक। दुनू गोटे केबाड़ भिड़का देलक मुदा खिड़कीमे पल्ला नहि छल तेँ अबैत कनकनीसँ दुनू थरथरा रहल छल। अबैत हाड़ गलबैवला बसातकेँ दुनू अपन-अपन मुहसँ भाप निकालि एक-दोसराकेँ गरमएबाक प्रयास कऽ रहल छल। आइ कतेक प्लानिंगक बाद एहि मोबाइलक कारणेँ एहन मिलनक अवसर भेटल छल। दुनू एक दोसरे दुनियामे छल। लगैत छल जे पूरा घरमे बेला-जूही-चमेली गमकि रहल हो, ई कनकनी वासंती बयार बनि गेल हो। संपूर्ण संसारक सौंदर्य जेना एहि कक्षमे सन्हिआ गेल

हो। तखने पुनीताकेँ लागल जे किछु लोक एम्हर आबि रहल अछि। सावधान होइत जाबत कपड़ा सम्हारए ताबत केबाड़पर धक्का पड़ि गेलै। भिड़काओल केबाड़क दुनू पल्ला दू दिशि भऽ गेलै। दुनूकेँ लोक पकड़ि सकए एहिसँ पूर्व पता नहि दुनूकेँ की फुराएल आ दुनूमे कोन शक्ति आबि गेलै जे दुनू एक-दोसराकेँ सम्हारैत एकहि फानमे खिड़कीसँ नीचाँ नागफेनी-कैक्टस आ केवड़ाक जंगलमे खसल आ दोसर फानमे सीधे नदीमे कुदि गेल। नछोर आ चिछाँस खूब लागल। काँट सेहो बहुत भोकाएल मुदा दुनूक जान बचि गेलै। नदीक ठऽरल सर्द पानिमे कुदबाक साहस किनको नहि भेलनि आ ओ दुनू हेलैत नदी पार कऽ गेल। लोक सब एहि कातसँ दुनूकेँ गरिया रहल छल– जाए दही सारकेँ। ठऽरल पानिमे कलंकसँ डुबि मरल हेतै दुनू। आ जँ बचि गेल हेतै तखन तऽ काल्हि गाम एबे करतै। गाम टपिते दुनूकेँ खुंडी-खुंडी काटि देबै।

दुनू एहिपार नड़ाँच दिशि आबि तऽ गेल मुदा दुनूक हालत खराब छल। दुनूक वस्त्र भिजल छल मात्र पुनीताक शॉल सुखाएल बाँचल छल जाहिमे दुनू मोबाइल आ मनीबैग लपेटि हेलैत काल प्रेमा एक हाथमे पानिक ऊपर रखने रहए। ओहि पार अबिते दुनू किछु निश्चिंत भेल मुदा क्षणमे भेल छनाकसँ दुनू अपस्याँत छल। भिजले वस्त्रमे दुनू एक दोसराकेँ अंकपाशमे भरि लेलक। पता नहि किएक पुनीता पुक्की पारि कानए लगलीह। दुनूक आँखिसँ नोर बहि रहल छल। की करी की नहि से फुरा नहि रहल छल। गाम घुरबाक साहस नहि भेलै फेर दुनू उत्तर मुहे तेजीसँ बढ़ि गेल। मोहिम– भदहर पार करैत अढ़ाइ घंटामे दुनू सोनपुर आबि गेल। दुनूक वस्त्र देहेमे सुखा जकाँ गेल। रातिक कारणेँ एकरा सभकेँ कोइ देखलक नहि।

जखन सोनपुर पहुँचल तखन पौने पाँच भऽ गेल छल। अखनो अन्हारे छल। पटनाक लेल पचबजिया एकटा बस खुजैत छलै। दुनू यंत्रवत् बसमे बैसि गेल। जे टाका-पैसा रहए से बसक भाड़ामे लागि गेलै। साढ़े दस बजे पटना उतरल तखन पैदले दुनू महावीर मंदिर आएल। पुनीता मंदिरमे भगवानक आगू बाटीमे राखल घोरुआ सिंदूरक टीका प्रेमाकेँ कएलनि आ प्रेमा बाटीमे राखल सभटा सिंदूर हसोथि-पसोथि पुनीताक माँगमे भरि देलक। पुजेगरी भगवानपरसँ माला उतारि दुनूकेँ एक-एकटा माला पहिरऽ लेल देलनि जे दुनू एक-दोसराकेँ पहिरा देलक। गेनाक साधारण माला दुनूकेँ आइ झमटगर वरमालसँ बेसी सुंदर लगैत छल। दुनू बजरंगबलीकेँ प्रणाम करैत मंदिरक ओसारापर बैसल सोचि रहल

छल जे पटनामे जाइ तऽ कतऽ जाइ। ई विकट प्रश्न छल। भूखसँ मोन व्याकुल छलै। चुटकी भरि प्रसादसँ की होएत! भगवानक सीढ़ीपर बैसल सोचि रहल छल तखन ध्यान आएल जे गामक एक संगी जीवन सिंह महेन्द्रूमे एक लॉजमे रहि प्रतियोगिता परीक्षाक तैयारी करैत अछि। दुनू महावीर मंदिरसँ पैदले महेन्द्रू आएल। जीवन दुनूकेँ देखि आश्चर्यचकित भेल। तीन बाजि गेल छल। दुनूक मुहमे प्रसादक अतिरिक्त एक दाना नहि गेल छलै। जीवन गामसँ आनल तिलबा, लाइ आ चुड़लाइ देलक। दुनू खाइते छल कि जीवनकेँ गामसँ पित्ती फोन कऽ एकरा सभक खेरहा सुना देलनि। इहो कहलनि जे जीबछ नदीमे दुनू कठुआकेँ मरि गेल हेतै। जँ जीवित अछि तखन कतऽ निपत्ता भेल तेकर पता नहि छै। ओ सख्त हिदायत देलनि जे जँ ओ सभ पटना जाए तखन तुरंत गाम खबरि करब आ ओकरा सभकेँ कोनो हालतमे एको क्षण अपन बासामे नहि रहए देब। सौंसे गाम तमसाएल अछि। पुनीताक भाए सब आबि प्रेमाक परिवारमे उधम मचा देलक। गारा-गंजन, थुक्कम-फज्झति आ लप्पड़-थप्पड़ सब कऽ देलक। बदनामीक डरसँ पुनीताक बाबू केस नहि कएलक। कहैत रहए जे पुनीता अपन इज्जतक लेल नदीमे डुबिकेँ मरि गेल। कहू तऽ कोसिकन्हाक मल्लाहक बेटी कतहु डुबिकेँ मरए! प्रेमाक बाप औनाइत छै आ माए पेटकान देने छै। पुनीताक माए बेमार भऽ गेल छै। भीतरे-भीतर मल्लाह आ राजपूत सभमे भारी तनाओ छैक। जे हो हमरा तोरा एहि सभसँ कोन मतलब! तथापि बचिकेँ रहब। गौंआ रहबाक कारणेँ दुनू तोहर डेरा जा सकैत अछि मुदा ओकरा सभकेँ जँ राखब तखन भारी अनिष्ट होयत।

जीवन किछु बाजल नहि। प्रेमा ओकर संगी छलै आ पुनीताक भैया ओकर मीत। भारी फेरामे पड़ल छल जीवन। एहि धर्मसंकटसँ मुक्तिक एक मार्ग पुनीते देखओलक– जीवू भाइजी! हमरा सभक पटना अएबाक बात कक्काकेँ नहि कहि अहाँ हमरा सभपर उपकार कएलहुँ मुदा हमसभ अहाँपर भार नहि बनब। कोनो संकटमे अहाँ नहि पड़ी सैह चाहब। हमरा लग एकटा सोनाक हनुमानी अछि। मातृकमे बड़का मामा देने छलाह। माछक व्यापारमे ओहि बेर बहुत आमदनी भेल छलनि। एहि हनुमानीकेँ भरना, बन्हकी वा बेचि एकटा शतरंजी-कंबल आ हमरा सभक लेल किछु जरूरी कपड़ा आनि दियऽ। कतहु रहबाक केहनो ठेकाना बता दियऽ। हमसब कोनो काज कऽ लेब। कहुना रहि लेब मुदा आब फेर घुरिकेँ गाम नहि जाएब। एतहि जियब एतहि मरब। गामक लोक हमरा सभकेँ मारए चाहैत छल तखन हमरो सभक लेल आब गाम मरिए गेल अछि। पुनीता गरासँ निकालि हनुमानी बढ़ा देलक।

जीवन आ प्रेमा हनुमानी लैत विदा भेल। सोनार सभ चोरीक माल कहि औने-पौने दाम लगबैत छल। एक सोनारकेँ प्रेमा सब कथा कहि देलक तखन ओ पसीझल आ दू हजार टाका देलक। ओ पूरा नाम-पता लिखा लेलक। दुनू फुटपाथपर बिकाइत साड़ी– सलवार-कुर्ती, पैंट-टीशर्ट, गंजी, बाल्टी-मग-गिलास आदि किनलक फेर ल्हासा मार्केटसँ शतरंजी-कंबल कीनि लेलक। ओतहि प्लास्टिक केर दसटकिया तीनटा शीट लेलक। गांधी मैदान लऽग एक रैन बसेरा सेहो दुनू देखने रहए मुदा जीवन रातिमे ओतऽ जाएब उचित नहि कहि दुनूकेँ अपने बासापर रोकि लेलक। रातिमे पुनीता खाना बनएलनि आ तीनू गोटे भोजन कएलक। जीवन अपन बिछानपर पुनीताकेँ सुता देलक आ नीचामे प्लास्टिक शीटपर शतरंजी बिछा अपने आ प्रेमा पड़ि रहल। कंबल ओढ़ि लेलक। भरि राति तीनू योजना बनबैत रहल। पुनीता जीवन केर रैकमे लागल पोथीसभ उनटाबैत आ परीक्षा सभक विषयमे जानकारी लैत रहलीह। प्रेमा आ जीवन काल्हि की कएल जाए एहिपर सोचि रहल छल। जीवनमे आभासी दुनिया आ वास्तविक जिनगीक अंतरपर दुनू गमर्धन करैत रहल। भिनसरबामे कखन आँखि लागि गेल से नहि पता। भोरमे जखन जीवनक नीन खुजल ताधरि पुनीता भोजन बना देने रहथि। ओ आ प्रेमा तैयार भेल बैसल छल। किछु काल बाद तीनू भोजन कएलक फेर बाल्टी कंबल आदि नेने प्रेमा विदा भऽ गेल। जीवनक मोन होइत छल जे रोकि ली मुदा कानमे कक्काक कथन जोर-जोरसँ गूँजि रहल छल आ ओ चुपचाप दुनूकेँ जाइत देखैत रहल।

एगारह बजे धरि दू-तीनटा रैन बसेरा घुमलाक बाद एकटा कने ठीक लागल तऽ प्रेमा शतरंजी बिछा पुनीताकेँ ओतहि बैसा अपने बाहर चलि गेल जे कोनो काज देखैत छी। पुनीता मात्सर्य भावेँ ओकरा जाइत देखलनि। किछुए आगू एक बड़का ट्रकसँ किछु गोटे सिमटीक बोरा उतारि गोदाममे राखि रहल छल। ट्रकसँ धरती धरि लोहाक रैम्प जकाँ बनल छल। प्रेमा अकानि रहल छल जे बोरा माथपर राखि रैम्पसँ उतरब कठिन अछि। बहुत बेसी संतुलन केर आवश्यकता छैक। ओ सोचि रहल छल जे ई काज ओकरासँ होएत वा नहि। माथपर रखबाक लेल कोनो कपड़ो नहि छलै तथापि ओ बिनु ककरो किछु कहने अझक्केमे रैम्पपर चढ़ि गेल। बोरा लादि गोदाममे राखि आएल। दू खेप भेल होएत की मुंशी टोकि देलक। परिचय पुछलक। ई कहलक सभकेँ जे देब ओहिसँ एक टाका हमरा कम्मे देब। सभकेँ चारि टके बोरा भेटैत छल। मुंशी सोचलक जे एक टाका हमरे बाँचत।

पुनीता एम्हरे तकैत छलीह। किछु काल बाद लागल जे रैम्पपरसँ बोरा नेने प्रेमा उतरि रहल अछि। मोन व्याकुल भऽ गेल। रैम्पपर चढ़ैत काल घामे-घाम भेल प्रेमाकेँ देखथि आ माथपर बोरा नेने रैम्पसँ उतरैत देखथि। ओ व्याकुल भऽ गेलीह। सोचैत छलीह जे हमरे कारण आइ ई दिन देखऽ पड़ल हिनका। मातवर तऽ नहि मुदा सुखितगर घर तऽ अवस्से छल। कहियो कोनो मोटा अपन हाथसँ नहि उठएलनि। आइ हमरा लेल सिमटीक बोरा माथपर उठा रहल छथि। ई केहन विधान विधाता रचलनि। एम्हर ध्यान गेल जे एकटा हवलदार बेर-बेर ओकरा दिशि ताकि रहल अछि। ओ लऽग आबि एतऽसँ जएबाक लेल सेहो कहलक। पुनीता अंठिया देने छल। ओ बेर-बेर आबि मना करैत छल। ओकर लक्षण ठीक नहि बुझा रहल छल। तथापि पुनीताक ध्यान रैम्पपर चढ़ैत-उतरैत प्रेमेपर छल। मुदा आब ओ देखा नहि रहल छल। कतऽ चलि गेल? उतरैत काल संतुलन तऽ नहि बिगड़ि गेलै। खसल आ घेँटपर वा छातीपर सिमटीक बोरा तऽ नहि खसि पड़लै? हे कमला माइ रक्षा करू। एहि गुनधुनमे मोने-मोन बाबा कुशेश्वरक गोहारि करैत छलीह तखने सहसा प्रेमा पाछूसँ आबि डेढ़ सै टाका ओकर तरहत्थीपर राखि देलक। पुलकित पुनीता अपन माथसँ टाका सटा लेलनि। एहि भयंकर जाड़मे प्रेमा घामे-घाम भेल छल। एक सफल श्रमिक! प्रेमाक सौँसे देहपर सिमटीक जेना भभूत लागल हो आ माथसँ चलल घामक टेघार जेना मउरीक लड़ी बनि सुशोभित हो। पुनीताकेँ अपन हीरोपर गुमान भेलै। आत्म-तोष भेलै।

साँझमे दुनू फुटपाथक कातमे पन्नी टाँगि बनाओल गेल ढाबानुमा भोजनालयमे भोजन कएलक। एतऽ स्त्री भोजन बनबैत छलीह आ पुरुष सभकेँ खुआ पाइ लैत रहथि। एहि दुनू प्राणीकेँ संगे काज करैत देखि पता नहि किएक पुनीता हँसि देलक। जरूर इहो सब भागिएकेँ गामसँ पटना आएल होएत। आब दुनू संगे काज कऽ जीवन चला रहल तऽ छथि। कोनो कुपथपर तऽ नहि गेल। एहिसँ ओकरा बहुत मानसिक संबल भेटल आ लगैत छल जे हाथमे राखल डेढ़ सै टाका आइ ओकरा जेना लखपति बना देने हो।

रातिमे दुनू बैसल छल तखने एक कुष्ठरोगी आबि हल्ला करए लागल जे हमर जगह किएक हड़पलहुँ। कतेक कहला-सुनलापर ओ कुष्ठी मानल। ओकरा देखि पुनीताकेँ घिन आबि रहल छल तथापि कने घुसकि गेल तऽ विवाद सलटि गेलै। पुनीताक मोन ओहि कुष्ठीक प्रति आक्रोशित छल।

राति वैह हवलदार फेर आएल। एहि बेर प्रेमाकेँ हड़काबैत ओकरा दूर ठाढ़ जिप्सीमे साहेबसँ भेंट करबाक लेल पठा देलक आ अपने पुनीताकेँ अपना

संगे चलऽ कहलक। मेसमे खाना बनाओ आ आराम से रहो। कोई तकलीफ नहीं। पैसा का पैसा और मौज का मौज! ओ छू-छाप सेहो शुरू कऽ देने छल। पुनीताक प्राण अवग्रहमे छलै। तखने ओ कुष्ठी गरजल– लाज नै होइ छौ तोरा! तोहर बेटीक बतारी हेतौ। जाइ छियौ बड़ाबाबूकेँ कहऽ। हवलदार कने सकपकाएल मुदा फेर ओकर बदमासी चालू भऽ गेल– अरे चलो! कोई दिक्कत नहीं है। हमलोग मात्र तीन लोग हैं। सब मिल कर रहेंगे और सुख-मौज करेंगे।

कुष्ठी चिचिया उठल– एकदम नहि जो। रंडी बनाकेँ छोड़तौ ई पपियाहा। किछु दिन पहिने एक भिखमँगनीकेँ लऽ गेल रहै। रंडीओसँ बत्तर हाल केलकै जे ओ बताहि भऽ गेलै। एकटा एहने लड़कीकेँ एहन हाल केलकै जे ओ गंगाजीमे डुबि मरल। कुष्ठी हवलदारकेँ कहलक जे तोँ भाग एतऽ सँ नहि तऽ अखने तोरा देहमे सटि जेबौ फेर तोरो हाथ-पयर हमरे सन गलि जेतौ। भाग रे पापी! ओ अपन बैसाखी सम्हारऽ लागल तखन हवलदार ससरि गेल। प्रेमा आबिकेँ कहलक जे पूरा तकलहुँ मुदा कोनो पुलिसक जिप्सी नहि भेटल। कुष्ठी भभाकऽ हँसि पड़ल– ओकर तऽ ई चालि छलै तोरा एतऽसँ हटएबाक लेल। एहन जाड़मे रोडपर के रहत? जो आब आराम कर।

पुनीताक मोनमे जे ओहि कुष्ठीक लेल घृणा आ आक्रोशक भाव छल से आब आदर आ स्नेहमे बदलि गेल छल।

अगिला दिन तऽ ओहिना बितल। आइ दिनमे फेर प्रेमा सिमटीक बोरा उतारलक। सब ठीक छलै मुदा रातिमे वैह हवलदार तीनटा रंगरूटक संग आबि गेल। गाड़ी लगा पुनीताकेँ जबर्दस्ती गाड़ीपर बैसबैत छल– रात में यहाँ महिलाओं का रहना एलाउड नहीं है। चलो सुबह फिर यहीं पहुँचा देंगे। पैसा भी देंगे। जे छौंरा जबरदस्ती पुनीताकेँ गाड़ीमे चढ़बैत छल ओकरासँ प्रेमा भिड़ गेल। कुष्ठी सेहो अपन बैसाखी हवलदारपर चला देलक। घिचा-तिर्रीमे प्रेमाक आँगुर मोचरा गेलै। तखने एलफिंस्टन हॉलसँ रतुका शो देखि बहराएल किछु कॉलेजिया लड़का सभ ओतऽ जुमि गेल। ओ सब लफुआ सभकेँ हड़का देलक। ओकरा सभक उग्र तेवर देखि हवलदार गाड़ी स्टार्ट कऽ तीनूक संग पड़ा गेल। आजुक राति बड़ भारी रहए। पुनीता प्रेमाक मोचराएल आँगुर अपन मुहमे राखि ओकरा सेदऽ लगलीह। कुष्ठी कहलक जे आब पुनीताकेँ एतऽ रहब उचित नहि होएत। वैह कहलक जे जगदेव पथ लऽग ओकर एक कुष्ठी पित्ती रहैत अछि। ओकरा बड़का नालापर टीन आ प्लास्टिकसँ बनल एकटा खोपड़ी छैक। काकीक मृत्युक बाद ओ एसकरे

काहि काटैत अछि। जँ आइ राति भगवान् रक्ष रखलनि आ बचि जाइ आ तोरा सभक विचार होउ तऽ भोरमे हमरा संगे चल आ ओतहि रहि जो। एहि ठाम आब इज्जत नहि बचि सकैत अछि। यैह पुलिसे सभ लफुआ सभक मेलमे एहन लाचार छौंड़ी-मौगी सभकेँ नीक कपड़ा-लत्ता पहिरा होटल सभमे पठबैत अछि। एकरे सभसँ बसमे पॉकेटमारी करबैत अछि। कोन कुकर्म ई सब नहि करैत अछि! कहुना राति बितल आ भोरे ओहि कुष्ठीक गाड़ी घिचैत दुनू जगदेव पथ आबि गेल।

खोपड़ी अनसर्ध छल मुदा कुष्ठरोगी किशना नीक बुझाएल। खोपड़ीसँ सटले नाला रहैक। अन्हरिए राति उठि नालेमे दिशा-मैदान करू फेर आगू लागल नलमे स्नान-ध्यान करैत अपन काजपर जाउ। दिनचर्या यैह बनि गेल। एतऽसँ गांधी मैदान लऽग रैकपर जा सिमटीक बोरा उघबाक काज आब भारी लगैत छल। पैदल ओतेक दूर जाएब आ हाड़तोड़ मेहनति कएलाक बाद फेर पैदल आएब पार नहि लागल। जगदेव पथ लऽग भोरकेँ खूब भीड़ लगैत देखि प्रेमाकेँ जिज्ञासा भेलैक। पता लागल जे ई सब मजूरीक लेल जुमैत अछि। ठेकेदार वा जनिका जतेक जऽनक काज रहैत अछि से ततेक लोककेँ काजपर लऽ जाइत अछि। प्रेमाकेँ ई सुविधाजनक लागल। घरक लऽगे अछि। किशना शनि दिन अपन गाड़ी गुड़काबैत अगल-बगल बसि रहल मोहल्ला सभमे भीख माँगए निकलि जाइत छल। एम्हर बहुत रास अपार्टमेंट बनि रहल छल। प्रेमाकेँ सेहो काज भेटिए जाइत छल। गैसवला एक चुल्हिया आ किछु बर्तन-बासन किनलक। घरक भोजनसँ मोन तिरपित रहैत छलै। एहनेमे एक दिन लिट्टी बनओलक जे किशना कक्काकेँ बड़ नीक लगलै। ओ कहलक जे मजदूरी छोड़ आ एकटा ठेलापर लिट्टी बनएबाक सरंजाम कर। साँचे मजदूरी करब प्रेमाक हाड़ हिला दैत छल। पुनीताकेँ सेहो ई विचार नीक लागल। एकटा पुरान-धुरान ठेला लेलक। ओकरा ठीक-ठाक कऽ ओहिपर लिट्टी बनएबाक चुल्हिआ लेलक। गहूम आ बूट कीनि नीकसँ फटकि मीलपर पिसा चिक्कस आ सतुआ तैयार कएलक। प्रेमा अपन ठेलापर एकटा फ्लैक्स बोर्ड लगा देलक– पुनीता लिट्टी कार्नर। बोर्ड देखि पुनीताक मोन जुड़ा गेल रहैक। प्रेमा भोरे-भोर अपन ठेला जगदेव पथ केर आगू फ्लाइओभरक नीचाँ लगा देलक आ दुनू प्राणी लिट्टी तैयार करऽ लागल। नीक सामग्री रहबाक कारणेँ उपस्थित मजदूर सभमे एकर स्वादिष्ट लिट्टी लोकप्रिय भऽ गेलै। दोकान चलि गेलै। बारह-एक बजैत-बजैत एकर सभटा सामग्री ओरा जाइत छल। लिट्टी बनएबाक क्षमता बढ़बैत गेल आ दोकानक विस्तार होइत गेलैक। प्रेमा एक दिन जीवनकेँ एतऽ आबि ओकर लिट्टी खएबाक आग्रह कएने छल। बाहरोसँ लोक एकर लिट्टीक

आनंद लेबाक लेल अबैत छल। सदिखन भीड़ लगले रहैत छल। एकर दोकानक चलती बढ़लै तखन पहिनेसँ जे दोसर दोकान ओहि पुल तऽर छल ओकर मालिक षड्यंत्र कएलक। सात-आठ मास भेल हेतै कि एक दिन पुलिस आ निगमकर्मी सब आबि एकर ठेला, चुल्हा आ बर्तन-बासन फोड़ि-फाड़ि देलक। ठेलाक रक्षामे पुनीता एक सिपाहीकेँ जखने मना कएलनि तखने ओ सिपाही ओकरा विचित्र जकाँ धऽ लेलक। ओ पुनीताक गाल, छाती आ देहपर अपन हाथ फेरऽ लागल। अभियानमे लागल डीएसपी साहेब ओकरा छोड़ाकेँ सिपाहीकेँ डँटलनि– यही तरीका है स्त्रियों के साथ व्यवहार करने का! अभी तुमको लाइन हाजिर करते हैं। तुम्ही जैसे लफंगों के कारण विभाग की बदनामी होती है।

किछुए कालमे पूरा इलाका खाली भऽ गेलै। षड्यंत्रकारीक दोकान सेहो हटा देल गेल। अतिक्रमण हटाओ अभियानमे एकरा सभक सभटा सपना सुड्डाह भऽ गेलै। पुनीता नेहोरा करैत रहलीह आ प्रेमा कनैत रहि गेल मुदा ट्रकपर लादि एकरा सभक ठेला सहित सब सामान हटा देल गेल। दुनू पुलक तऽरमे ओहि जगहपर ओँघराइत अहुरिया कटैत रहल जतऽ ओकर ठेला ठाढ़ रहैत छल। जे एकरा सभक एकमात्र सम्पत्ति छल, जीवनक आधार छल, भविष्यक आश छल। बहुत देर बाद दुनू कनैत खाली हाथ अपन मड़ैया आबि गेल। किशना समझा-बुझा दुनूकेँ कहुना चुप करओलक। उद्यमीसँ दुनू एक बेर फेर मजदूर भऽ गेल छल। विपत्ति जेना एकरे सभक पछोड़ धएने हो!

एहने विपत्तिक समय जीवन फोन कएने छल जे हमर एक परीक्षाक सेंटर ओम्हरे अछि। परीक्षा भऽ गेल अछि आ हम लिट्टी खएबाक लेल आबि रहल छी। प्रेमाक कोँढ़ फाटि गेलै। ओ जीवनकेँ आबैसँ मना करैत ओहिसँ पूर्व पुनीता अपन खोइँछा उझिलि देलनि। एहिमे पाँच-सातटा सिझल लिट्टी छल जे निगमकर्मी सभ द्वारा छिड़िया देल गेल रहए आ प्रेमा बिछि नेने रहथि। जीवन आएल तऽ एकरा सभक स्थिति देखि गुम्म पड़ि गेल। ओहिनो कुष्ठरोगीक घर जाएब ओकरा उचित नहि लगैत छल, मोन बहुत डेराएल छल। पुनीता कहलक जे रोज दबाइ खाइत छथि। आशा दीदी प्रत्येक मास आबि दबाइ दैत छथिन। आब हिनक बेमारी संक्रामक नहि रहि गेल अछि नहि तऽ हमरो सभकेँ भऽ जएतै ने। कतेक कहला-सुनलापर ओ दूटा सुखा लिट्टी बिनु कोनो चटनीकेँ खा सकल। लिट्टीक स्वादक विषयमे किछु बाजि नहि सकल। परीक्षा सभक विषयमे पुनीता जीवनसँ बहुत रास गप्प कएलनि। ओ कहलक जे तोँ आइ ए पास छेँ। नालंदा

खुला विश्वविद्यालयसँ बीए कऽ ले फेर परीक्षा सभ दे। तोरा तऽ रिजर्वेशन सेहो भेटतौ। हम सभटा प्रमाणपत्र बनबा देबौ। किछु काल बाद बोल-भरोस दैत जीवन चलि गेल। पुनीताकेँ लागल जे आजुक एहन विपत्तिक समय साक्षात् बाबा कुशेश्वर जीवनक रूपमे आबि एकटा नव रस्ता देखा देलनि।

भोरमे प्रेमा पुल तऽर फेर मजूर सभक हेँजमे गेल। ओकरा लेल मजूर सभक मोनमे सहानुभूति छल। काज भेटि गेलै आ ओ कामपर चलि गेल। यद्यपि ओकरा मोनमे एकर कचोट रहल जे किछुए दिनमे फेर सभटा दोकान ओहिना लागि गेलै। षड्यंत्रकारीक दोकान सेहो फेर सजि गेल मुदा प्रेमाकेँ हिम्मत नहि भेलै जे फेर ठेला लगाबी। जखन-जखन ओ एहन सोचैत छल जे फेरसँ ठेला लगाबी तखन-तखन ओहि सिपाहीक चाँगुरमे छटपटाइत पुनीताक चेहरा आँखिक सोझाँ आबि जाइत छल।

एक दिन साँझमे पुनीता नलपर हाथ-पयर धोइत छलीह तखन टहलैत एक अधवयसू टोकलनि– अहीँ ने पहिने लिट्टी बनबैत छलहुँ? अखन हमर बेटी-जमाय सब आएल छथि। एक दिन आबिकेँ लिट्टी बना ओकरा सभकेँ खुआ दियौ। वैह हमर घर अछि। ओ अपन घर दिशि इशारा कएलनि। हुनकर वाणीमे आपेकता छल। यंत्रवत् पुनीता हुनकर पाछू चलि देलक। मेन गेट केर एक दिशि किरण शंकर, आइएएस (आरटीडी) आ दोसर दिशि प्रभात शंकर, आइपीएस लिखल छलै। सजल-धजल बड़का-बड़का रूम। सब घरमे कालीन, परदा आ पलंगपर सुंदर बिछान लागल। ओकर मोन चदराक घरमे गर्मीसँ औनाइत छल तेँ नलपर गेल रहए। एतऽ तऽ सब ठाम एसीक हवा वातावरणकेँ शीतल कएने छल। पुनीताक प्रति सभक स्नेहपूर्ण व्यवहार छल। ओ किचेनमे जा लिट्टी बनओलक। किरणजीक बेटी सेहो जिज्ञासावश संग देलनि। लिट्टी-चोखाक खूब प्रशंसा भेल। अबैत काल मेमसाब एकटा नमरी देलनि आ कहलनि जे हमसब बाहर जा रहल छी। किछु दिन बाद घुरब तखन अहाँ चाहब तऽ हमरा ओतऽ भोजन बना सकैत छी। पुनीता हुलसैत अपन मड़ैया आबि गेलीह। पहिल कमाइ जखन ओ किशना कक्काक हाथमे देलनि तखन बुढ़बाक आँखि भरि गेलै। सब कथा सुनि प्रेमा सेहो मुदित भेल।

दुख भरल दिन हो वा सुख केर दिन हो समय बितैत अवश्य अछि। एकरा सभक गाड़ी कहुना टुकदुम-टुकदुम करैत चलिए रहल छल। जीवन एक दिन पुनीताक सभटा प्रमाणपत्र बनवाकेँ दऽ गेल छल। बीएमे बैसबाक लेल फार्म सब भरा देलक। किछु अपन आ एलफिंस्टन हॉल लऽगसँ किछु सेकेंडहैंड पोथी

सेहो आनि देने छल। जाहि मोबाइल बिना एक क्षण नहि रहि सकैत छलीह से पुनीता गामसँ अएलाक आठ मास बाद आइ पहिल बेर अपन मोबाइलकेँ चार्ज आ रिचार्ज करओलनि। फुर्सतिमे नेटपर मनोविज्ञान आ प्रतियोगिता परीक्षा सभक तैयारी शुरू कएलनि।

जाहि दिन बीए परीक्षाक परिणाम आएल ओहि दिन स्थिति बेसी खराब छल। जेबीमे कैँचा नहि आ पुनीता दर्दसँ छटपटा रहल छलीह। हुनक साड़ी खूनसँ भीजि गेल छल। आशा दीदी सेहो नहि छलीह कतहु गेल छलीह। प्रेमा छट-पट करैत विकल भेल छल। अपन लोककेँ तकलीफमे रहलापर अर्थ केर अभावमे इलाज नहि करा सकबाक अनर्थ होइत देखि लोक की सोचैत अछि ई कोनो भुक्तभोगीसँ बेसी कोइ नहि कहि सकैत अछि। विधाताक प्रहार, पराजय बारम्बार, दुख-दर्द अपार, भविष्य अन्हार, हृदयगति बेसम्हार ! पता नहि कखन बैसि जाए! किछु कालमे आशा दीदी आबि गेलीह आ फेर टूटल-टाटल एहि मड़ैयामे पहिल बेर चेहों-चेहों केर ध्वनि पसरि गेल। आशा दीदी कपड़ा मँगलनि। घरमे तऽ नहि रहए। ई सुनि किशना प्रेमाकेँ अपना संग चलबाक लेल कहलक। ओ काठक छोट-छोट पहियावला गाड़ी घिचैत छल आ किशना एकदम करुण स्वरमे लोक सभसँ माँगि रहल छल– मेरी बहू को बेटा हुआ है एक पुरानी साड़ी दे दो माई। ...मेरी बहू को बेटा हुआ है। पुरानी साड़ी दे दो माई। प्रेमा कहियो किशनाकेँ एहन मार्मिक स्वरमे बजैत सुनने नहि छल। ओ आश्चर्यचकित छल मुदा ओकरा ओहूसँ बेसी आश्चर्य भेल बहू शब्दपर। ओ सेहो भावुक भऽ रहल छल। किशना ओकर कोइ नहि, ने जाति आ ने टोल-पड़ोसक कोइ। मुदा प्रेमा आइ पहिल बेर किशनामे अपन बापक छवि देखलक। ओकरो आँखि नोरा गेल छल। किशनाक करुण पुकार सुनि फ्लैटमे रहएवाली स्त्रीगण भावुक भेलीह। राजनाथमे दू, अनंत विकासमे तीन, जगमानोश्रीमे तीन आ श्यामा अपार्टमेंटमे दूटा साड़ी भेटल। टाका-पैसा से भेटल।

साड़ी मँगबाक ई मार्मिक पुकार जेना हृदयसँ भेल हो आ शब्द जेना सभक हृदयमे पैसि गेल हो। भाव केर एहन संप्रेषण आ परिणाम प्रेमा पहिल बेर देखि रहल छल। दुनू जखन मड़ैया आएल तखन किरण शंकरजी मधुर नेने ठाढ़ छलाह।

कनी ठीक भेलापर पुनीता उगरल साड़ी सभसँ मड़ैयाकेँ सजा देलक। रंग-बिरंगक साड़ी सभकेँ डिजाइनमे काटि ओकर सुरुचिपूर्ण रंग-संयोजनसँ एहि मड़ैयाकेँ तेना सजा देलनि जे आब ई कोनो भव्य ड्राइंग रूमक स्टेज लगैत छल। पुनीता आब किरण बाबू ओतऽ भोजन बनबऽ लगलीह। हुनका ओतऽ सिविल सर्विस

परीक्षाक लेल बहुत रास पोथी छल। अखबार अबैत छल। पुनीता ओ सब उनटाबैत-पुनटाबैत छलीह। दू गोटेक भोजन तैयार करएमे कोनो समय कहाँ लगैत अछि! चारि चुल्हिआ बहुत नीक होइत छै। सभटा एक्के बेर चढ़ा दियऽ। पुनीताक समय बचैत छल जेकर सार्थक उपयोग करैत छलीह। परीक्षा सब दैत छलीह। असफलता भेटैत छल मुदा ओ पस्त नहि भेलीह। लागल रहलीह। बीपीएससीक इंटरव्यू देने छलीह मुदा उमेद नहि छल। फेर तैयारी करैत छलीह। एहनामे एक दिन बिहार लोक सेवा आयोगक परीक्षाक परिणाम आएल। रैंक अपेक्षित नहि रहल तथापि राजस्व सेवा भेटि गेलै। जेना कोनो तपस्या पूर भेल हो, कोनो सपना साकार भेल हो।

सांस्थिक प्रशिक्षण कालमे जखन पहिल दरमाहा भेटल तऽ पुनीता किशना कक्काक एक पक्का घर आ शौचालय शुरू कएलनि। हुनकासँ बेसी शौचालय केर खगता के जानि सकैत छल? समय बदलि गेल छल। बाबा कुशेश्वर सहाए भेल रहथि।

प्रशिक्षण सभक समाप्तिक बाद पहिल पदस्थापन बेनीपट्टी अंचलमे अंचल अधिकारी रूपमे भेलनि। बेनीपट्टीक कटैया गाममे ओकर ममहर छल। कतेक बेर ममहर आएल रहए। उच्चैठ भगवतीक दर्शन कएने छलीह, कालिदास डीहक माटि माथमे लगओने छलीह।

मामाक किछु फरीक हुनकर गृहनिर्माण होमऽ नहि दैत छल। अंचल, थाना, एसडीएम आ डीएम ओतऽ दौगैत रहलाह मुदा फरीक सब बलधकेली करैत छल। पुनीताकेँ अंचलाधिकारी रूपमे एतहि अएबाक बात हुनका ज्ञात छलनि मुदा मामकेँ पुनीतासँ भेंट करबाक साहस नहि होइत छलनि। एहि पाँच वर्षमे कहियो कोनो खोज नहि! जखन ओकर गामे ओकरा बिसरा देने छल तऽ ममहर की करैत! पुनीता जिबैत अछि वा ओकर मृत्यु भऽ गेलै। ककरो कोनो मतलब नहि। दुनू ठाम कलंकीसँ पिंड छूटल यैह भाव रहए। एहि पाँच वर्षमे भगिनीकेँ कुल कलंकी मानि पुनीतासँ कोनो मतलब नहि रखने छलाह। मुदा आइ जखन संकट पड़ल तखन जेना पुनीता कुल तारनि रूपमे हमरे लेल साक्षात् उच्चैठ भगवती बनि बेनीपट्टी आएल छथि। पाँच वर्ष पूर्व केर कलंकी आइ भगिनी भगवती बनल छथि! ओह! ई पाँचम वर्ष! आइ जखन लठधर फरीक नेओँ रखैत काल मारि-पीटपर उतारु भेल तखन पुनीताक मामी ठेलि-ठालिकेँ मामाकेँ बेनीपट्टी पठओलनि। पश्चात्ताप करैत बड़का माम पुनीतासँ भेंट कएलनि आ किनको पठा काज सलटा देबाक याचना कएलनि। पाँच वर्ष बादे आइ पुनीताक

समक्ष कोइ अपन संबंधी खोज करैत ठाढ़ छल। एक मोन भेलनि जे पाँच वर्ष धरि कोनो मतलब नहि रखलनि आब काज पड़लनि तऽ हम भगिनी छिएनि! ओह! मठिया दैत छी! फेर पाँच वर्षक अपन संघर्ष मोन पड़लनि। आवश्यकता भेलापर अगुताएल मनोदशा केहन व्यग्र रहैत छै एहिपर सोचलनि। फेर ई ध्यानमे आएल जे लोकक काज आबि सकी एहि योग्य बनबाक लेले ने लोक संघर्ष करैत अछि। पाँच वर्षक संघर्षक परिणामे ने आइ ई अवसर देलक अछि जे आइ ममहरमे सब हमर काज आ हमर पावर देखत।

पुनीता अमीन, कर्मचारी आ अंचलगार्डकेँ संग लऽ स्वयं कटैया आबि गेलीह। सब थकथका गेल। फरीक सकदम्म रहथि। पुनीता अमीन-कर्मचारीसँ घरारीक नापि-जोखि करा खुट्टा-खुट्टी गड़ा देलनि आ फरीक सभसँ लिखा देलनि जे हिनकर गृहनिर्माणमे हमरा सभक कोनो आपत्ति नहि अछि। मामाक फरीक सभकेँ तेहन ने पाठ पढ़ओलनि जे ओ सब कखनो सर-सर आ कखनो मैडम-मैडम करैत छल। किछु काल पूर्व जे मारि करएपर बिर्त छल से अपनेसँ आब राजमिस्त्रीकेँ बाउल-सिमटीक तगार पहुँचा रहल छल। पुनीताक मामकेँ भैया-भैया कऽ रहल छल।

सब काज जखन सलटि गेलै तखन पुनीता कहलक जे आब जाइत छी। बच्चा कनैत होएत। हिनका तंग करैत हेतै। कऽल जोड़ने बड़का माम एतबे बाजि सकलाह– अँगना नहि जेबही बुच्ची? तोहर माए-बाबू सेहो उच्चैठ भगवतीक दर्शन लेल अखन एतहि आएल छथि।

अपना लेल 'बुच्ची' शब्द सुनिते पुनीता विह्वल भऽ गेलीह। हाकिमीयत पता नहि कतऽ बिला गेल आ पुनीता अपन माम केर पहिलुक बुच्ची बनि दौगैत आँगन आबि गेलीह। माएकेँ भरि पाँजमे पकड़ि पुनीता कानऽ लगलीह। माए से लगातार कानि रहल छलीह। कोनो शब्दक उच्चारण नहि होइत छल मुदा भाव केर अनंत गाथा लिखा गेल। पाँच बरखक कथा आँखिसँ बहि रहल छल। आँखि केर कथा कहबाक कला सरिपहुँ अद्‌भुत होइत अछि। सब चुप छल। किछु काल बाद मामी बजलीह– खाली कनबे करथिन कि बुच्चीकेँ किछु खुएबो-पिएबो करथिन? पुनीताक बाबू गमछासँ आँखि पोछैत बजलाह– पाँच बरखसँ जमल बर्फ पघीलि रहल छै। एकरा नै रोकियौ, बहऽ दियौ। बुच्ची आइ अहाँ सभक संग हमरो सभकेँ गौरव देलक।

माएक छातीमे माथ रखने पुनीता नेना जकाँ कानि रहल छलीह।



[समदिया मिथिला, पटना दि. 13 जनवरी 2024]

अपन-अपन विश्वास

बबनकेँ जहिया पहिल बेर कुकुर हबकि नेने रहए ओहि दिनसँ हमरा कुकुरसभपर भारी तामस अछि। आइ एकटा कुतिया अपन नवजात बच्चा संग जाइत छल। बबन ओकर नाँगरि छुबि देलक। चोट्टहि पिलिया हबकि लेलकै। आब फेर चौदहटा सुइया लेबऽ पड़तै। मोन घोर भेल छल। तामसमे एकटा ढेपा उठा चला देलहुँ। संयोगसँ ओ ढेपा पिलियाकेँ नहि लागि संग चलैत ओकर पिल्लाकेँ लागल छल। ओ पिल्ला किकिआए लागल। ओकरा किकिआइत देखि हमरा किछु संतोष भेल। हमर बबन कनैत छल तऽ ओकरो बेटाकेँ कना देने रही। ओइलि सधि गेल रहए। कुकुर सभकेँ देखऽ नहि चाहैत छलहुँ हम।

हरियाणाक एकटा छोट शहर इंदरी। हमरा सभक पारंपरिक निवास। एहि नगरक नामे मात्र भगवान् इंद्रसँ जुड़ल। इंद्रासन सन कोनो सुविधा नहि। हँ, एहि नगरक आत्मा दिव्य! वैसाखीमे एतऽ केर भँगड़ा नामी छल तऽ दुर्गापूजाक उत्सव सेहो इलाका भरिमे प्रसिद्ध। आपसी सौहार्दक नगरी इंदरी अंचल स्तरक एक छोट शहर अछि। हमर दारजी पाँच भाएमे सभसँ छोट। सभकेँ कोनो-कोनो वस्तुजात सभक दोकान। हमरो एकटा छोट-छीन दबाइक दोकान। यैह हमरा सभक जीवनाधार। दू प्राणी हमसभ, बेटा बबन आ बेटी ज्योति कुल चारि गोटेक छोट आश्रम। छोट परिवारक कारणेँ कहुना जीवन ससरि रहल छल। एहिपर एक बेर फेर 14 सुइयाक खर्चा। मार बाढ़नि एहि कुकुर सभकेँ!

एक राति दोकान बढ़ाकेँ अबैत काल दारजी संग एकटा पिल्ला घरक अंदर आबि गेल। देखिते तामस चढ़ि गेल। कतबो भगबैत रहलहुँ मुदा ओ बेर-बेर आबि पयर सुँघैत रहल, अपन छोट-छोट अगिला पयर उठा दुलार करैत रहल। भागल नहि। दिसंबर केर अंतिम सप्ताहक जाड़क राति रहए। बहुत प्रयासक बादो ओकरा बइला नहि सकलहुँ। रातिमे खाइ लेल देबऽ पड़ल। भोरमे बइला

देब सैह सोचने रही। भोरमे जखन बबन केर सकूल जाइत रही तखन देखलहुँ जे एकटा पिलियाक मुहेपर कोइ गाड़ी चढ़ा देने रहए। मुह थकुचा गेल छल। सड़कपर शोणित पसरल छल मुदा ओकर दूटा नेना एहि सभसँ बेफिक्र ओकर छातीसँ दूध पिबाक प्रयास करैत रहए। कारी पिचपर पसरल लाल शोणित। मुइल माएक छातीसँ दूध पिबाक प्रयास करैत नेना! ओ दृश्य अत्यन्त कारुणिक आ अनसर्ध छल। मोन भिनभिना गेल रहए। सकूल गेलहुँ तखन ज्ञात भेल जे बबन अपन सातम वर्गमे प्रथम आएल अछि। बबन संगे हमरो सम्मान भेटल। पहिने चारिम-पाँचम स्थानपर रहैत छल। मोनमे भेल जे राति कुकुरक बच्चाकेँ नहि भगएलहुँ, भोजन करएलहुँ, एहि कारणेँ आइ ई खुशखबरी भेटल अछि। दोसर मोन कहैत छल जे दू बेर बबनकेँ कुकुर काटने अछि। ई सब दुष्ट होइत अछि। सकूलसँ बहराइत रही तऽ देखैत छी जे रतुका पिल्ला फेर पयरपर आबि सुँघि रहल अछि। बबनकेँ प्रथम अएबाक कारणेँ हमर मोन हर्षित छल। ओ पछोड़ धएने आबि रहल छल से पता नहि चलल। घर अएलापर हम ओकरा भगा नहि सकलहुँ। ओ घर आबि गेल। घरपर सभकेँ आश्चर्य भेल जे कुकुर सभसँ एतेक घृणा करएवाली हम कोना एकरा घर आनि लेलहुँ।

सचमे हमरा आँखिक सोझाँसँ खून-खुनामय भेल मुइल पिलियाक छातीमे मुह लगा दूध पिबाक प्रयास करैत दुनू पिल्लाक दृश्य हटिते नहि रहए। गुरुद्वारामे चलैत शबद कीर्त्तनमे रागीजीक व्याख्या मोन कचोटैत रहए जे हाथक बदला हाथ, आँखिक बदला आँखि आ जानक बदला जानसँ लेल जाएत तखन एक दिन पूरा संसार लूल्ह आ आन्हर होयत, धरती शमशान भऽ जाएत। बबनकेँ कनबै केर ओइलि पिलियाक नेनाकेँ कनाकेँ सधेने रही से आब कचोटि रहल छल। एहि घटनाक बाद हमर सोच एकदम बदलि गेल रहए। रोटी बना अनेरुआ कुकुर सभकेँ देनाए शुरू भऽ गेल। हमर भापाजी अत्यन्त दयालु छलाह। नैहरमे हुनका जखन चुट्टी-पिपरी सभकेँ चीनी, गाए सभकेँ रोटी, कौआ-बगड़ाकेँ रोटीक छोट-छोट टुकड़ा दैत आ अपना लेल परसल थारीसँ घीउ लागल रोटी-भात उठा दलानपर जा गाए सभकेँ दैत देखैत छलहुँ वा बड़का गिलासमे भरल लस्सीसँ किछु जमीनपर खसा देलाक बादे लस्सी पिबैत देखैत छलहुँ तखन आश्चर्य लगैत छल। कखनो-कखनो हुनकापर तामस सेहो उठैत रहए जे अभावक कारणेँ कहियो मात्र हुनके थारीमे घीउ पड़ैत छल आ ओ घीउ देल भात वा घीउ चोपरल रोटी लऽ जा कुकुर-बिलारिकेँ दऽ अबैत छलाह। हमसब

टुकुर-टुकुर तकैत छलहुँ। हुनकर अपन विश्वास रहए। ओ विश्वास जे कहियो हमरा हुनक बतहपनी लगैत छल आब वाहे गुरुक कृपा लगैत अछि।

वाहे गुरुक कृपासँ सब नीक होइत गेल। बबन जखन दसममे पूरा जिलामे फर्स्ट आएल छल तखन अमृतसर जा अरदास कएने छलहुँ, मत्था टेकलहुँ, सेवा कएलहुँ। इंदरीक देवी मंदिरमे जा भगवान् सभकेँ प्रसाद चढ़ओलहुँ। एहि देवी मंदिरक पुजेगरी परमेश्वर झा किछु पुश्त पहिने बिहारक दरभंगासँ आबि एतहि बसि गेल छथि। हमरा सभसँ स्नेह आ आपेकता रखने छथि। हिनके परिवारक साहचर्यसँ हम मैथिली सीखि गेलहुँ। ओ सदिखन कहैत छथि जे भुखाएल जीवकेँ जिमेलासँ बड़ पुण्य होइत छैक। तृप्त आत्मासँ आएल दुआ सभकेँ भगवान् अवश्य सुनैत छथि। हुनक बातसँ हमर विश्वास आर दृढ़ होइत रहल। शनैः शनैः हमर मोन एहि सभमे रमि गेल छल। ज्योतिक मोन शुरूमे ओतेक नीक नहि रहैत छल। एक बेर गुरुसँ ओकर स्वास्थ्यक लेल अरदास कएने रही तखन ग्रंथीजी कहलनि जे अपन मुंडाकेँ मेडिकल कोचिंग लेल कोटा पठा दे। हमर देहपर तऽ जेना नओ मन पानि पड़ि गेल हो। छोट-छीन घर आ दोकानक अतिरिक्त कोनो सम्पत्ति नहि। खेतीक लेल एक इंच जमीन नहि। साल भरि बेसाहे लगैत छल। आमदनीक कोनो आर उपाय नहि। एहनमे बबनकेँ कोटा कोना पठाउ! एकमात्र दोकानक आसरा रहए। दारजीक स्वास्थ्य से ओतेक ठीक नहि रहैत छल। ठेहुनमे दर्द रहैत छलनि आ दोकानपर बेसी काल ठाढ़े रहए पड़ैत छल। भारी संकट केर स्थिति! लोकसब अक्सर टोकैत छलनि जे जँ पार नहि लगैत अछि तखन दोकान बेचि लियऽ। किछु फुरा नहि रहल छल। दारजीक पैघ अरमान छल जे एक दिन बेटा डाक्टर हुअए आ हमरा एहि काजसँ मुक्त करा अपन अस्पताल आ डिस्पेंसरी शुरू करए। गुनधुनमे लागल रही कि एहिनामे एक दिन निर्णय लऽ लेलहुँ जे बबनकेँ हर हालमे डाक्टर बनएबाक अछि। ओ चंसगर अछि। ई नहि रहए जे हम गोइठामे घीउ ढारैत रही। बबन तेज अछि ओ अवश्य हमरा सभक सपना पूर करत। हमरा ग्रंथीजीक बातपर अटल विश्वास रहए मुदा लोकसभ डेरबैत छल। कुलवंतक बेटा कोटा जा दारू शुरू कऽ देलक। दरबाराक बेटा कोटा जा ड्रग एडिक्ट भऽ गेल। महीपक मुंडाकेँ जखन तेसर बेर मेडिकलमे नहि भेलै तखन ओ होस्टलक छतसँ कुदि आत्महत्या कएलक। तनेजाक मुटिआर लगातार भेटैत असफलतापर दुपट्टा पंखामे बान्हि लटकि गेलीह। कोटा आब सपना साकार करबाक शहर नहि रहल, आत्महत्याक रजधानी भऽ गेल अछि।

बीस-बीस लाख बच्चामेसँ किछु सए बच्चाक चयन सरकारी मेडिकल कॉलेजमे होइत अछि। दोकान बेचि कोटा पठायब आ जँ एहिमे नहि भेलै तखन...! हाथो तऽरक गेल आ लातो तऽरक गेल। कटोरा लऽकेँ रोडपर भीख माँगब की? प्रश्न तऽ साँचे गंभीर छल मुदा हमरा वाहेगुरुक सोझाँमे कहल ग्रंथीजीक बातपर अटूट विश्वास रहए। हम पहिने प्रयास कएलहुँ जे अपन सगा-संबंधीसँ किछु पाइ भेटि जाए। बादमे हम आपस कऽ देबै। सभकेँ कहबो कएलहुँ मुदा कोनो लाभ नहि भेल। एकमात्र ताया बबनकेँ बजा पुछने रहथि जे कोटाक कोचिंगमे कतेक पाइ लागत। बबन दू-अढ़ाइ लाख कहने छल। सवा लाख एक बरखक फीस आ एक-सवा लाख होस्टलक खर्चा। चारि दिन धरि ओम्हरसँ कोनो संकेत नहि भेटल आ पाँचम दिन तायाजीक मोन खराब भऽ गेलनि। हुनका करनाल केर सदर अस्पतालमे भर्ती कराओल गेल छल। बबनक पिउजी डॉ. मोहिंदर सिंह ओतऽ सेहो गेल छलाह जनिकर पुर्जा दोकानमे अबैत छल आ प्रत्येक सात दिनपर हुनक हिसाब कऽ दोकानसँ कमीशन जाइत छलनि। ओ दारजीक विचार सुनि किछु काल गुम्मी लधने रहलाह फेर कहलनि जे हमर बेटा तीन सालसँ कोटे रहैत अछि। अखन धरि किछु नहि भेल। मेडिकल कोचिंगमे बड़का रिस्क अछि। रिजर्वेशन से मारि करैत छैक। आब सामान्य वर्गक मुंडा सभक लेल मेडिकल केर पढ़ाइ कठिन भऽ गेल छै। ई छोट जगह छैक। एहि ठामक लोक केर सपनो छोट अछि। पैघ सपनाक एहन जुआ खेलाएब उचित नहि। प्राइवेट मेडिकल कॉलेजमे जखन हम अपन बेटाकेँ पढ़ा नहि सकैत छी तखन अहाँ अपन ओकाति सोचि लियऽ।

सब द्वार जखन बंद भऽ गेल तखन बहुत सोचि-विचारि हम ग्रंथीजीक बातपर विश्वास करैत अपन दोकान बेचि देलहुँ। तीस लाख भेटल। बैंकमे बीस लाख फिक्स्ड डिपॉजिट कएलहुँ जे किछु आमदनी होइत रहए आ घर चलैत रहए। छओ-सात लाख घरमे लागल आ तीन रूमक ठीक-ठाक घर तैयार भऽ गेल। बबनकेँ एलेन कोटामे प्रवेश करा देलहुँ। एकटा नीक पीजी ताकि सब व्यवस्था ठीक कऽ दू-तीन दिन बाद हमसब कोटासँ आपस आबि गेलहुँ।

बबनक लानेदार ओहि दबाइ दोकानक हिसाब-किताब देखैवला काज शुरू कएलनि जे कहियो अपने छल।

अड़ोस-पड़ोसक लोकसब हमरा लेल नीक भाव नहि रखैत छल। एक तऽ जाहि गाएकेँ रोटी दैत छलहुँ से परकि गेल रहए। ओ बेसी काल गलीमे

गोबर कऽ दैत छल। कहियो ओतहि बैसि रहैत छल। गलीक अनेरुआ कुकुर सब एम्हरे परकल छल। ओ सब ताधरि नहि हटैत छल जाधरि ओकरा सभकेँ दू दूटा रोटी नहि भेटए। हमरा घरमे से चारिटा कुकुर रहैत छल। ककर दिन छल जे कोइ एहिना एम्हर आबि जाए। बबन कोचिंग पूरा कऽ परीक्षा देबाक लेल आपस आबि गेल छल। जिमी सदिखन चुपचाप ओकर रूमक आगू बैसल रहैत छल। की मजाल जे ओहि रूममे कोइ बाहरी जा गप्प-सरक्कामे लगा ओकर समय बर्बाद कऽ सकए। लोक सभकेँ परेशानी रहए आ ओ सब एहि सभक लेल हमरा पूर्ण रूपसँ कसूरवार मानैत छल। एक दिन तऽ गाएक गोबर करबाक कारणेँ पड़ोसी हमरासँ खूब झगड़ा कएलक– सब फसाद की जड़ है ये। रोज गाय को रोटी खिलाती है। सांडी गलीमे गाय आती है, गोबर करती हैं। हमलोगों का चलना दूभर है। दिमाग खराब हो गया है इसका। कमला गई है बबन की माँ। सुनि हम कहलियै– गाय तो सबकी माता है। ओ खिसिया गेलीह– अबे वो तेरी बेबे होगी मेरी नहीं।

हमरो तामस चढ़ल– वो तेरी और मेरी सबकी माता है। तुम भी खिलाओ रोटी। मैं बुलाने थोड़े जाती हूँ। आती है तो खिला देती हूँ। ओ हाथ चमका चिचिआए लागलि– गाय सांडी गली में बैठी रहती है जिस कारण बच्चों की बाइक नहीं निकल पाती। गोबर करती है इससे फिसलने का डर रहता है। सुन लो अब जब भी गाय गली में गोबर करेगी तो तुमसे ही गली को साफ कराऊँगी। देख लेना तुम! तू तो एकदम सनकी है। भला जीने का एकमात्र सहारावाली दूकान बेचकर कोई बेटा को कोटा भेजता है! बबन बड़ा होता तो फिर उसी दूकान में अपने पापाका हाथ बँटाता। चारो भाइयों के बच्चों ने तो यही किया है। उसमें क्या सुरखाव के पर लगे हैं जो भेज दिया डाक्टर बनने कोटा। तेरा तो दिमाग ही फिर गया है। अपने लिए तो दो रोटी का ठेकाना नहीं है और चली है कुत्तों के लिए रोज बीस-पच्चीस रोटी बनाने, कुत्तों के लिए लंगर चलाने! हुँह! तू निश्चित रूप से एकदिन भूख से मरेगी। कुत्तों के लंगर की सनक तुझे एक दिन डुबा देगी। तू कटोरा लेकर रोड पर घूम-घूमकर भीख माँगेगी। कहे देती हूँ।

हम जानि गेल रही जे घाओ कतहु आ पऽह कतहु केर स्थिति अछि। ई सब जरैत अछि हमर बेटासँ। ककरो धिया-पुता ओरिआएल नहि। सब एहिना दिन भरि बापक कमाइपर फुटानी चुकबैत अछि। फुकरा जकाँ केशक कानी कटा कॉलर उठा बाइकपर बौआइत रहैत अछि। कखनो काल अपन बापक

दोकानपर बैसि सहायता करैत अछि। बबन राति-राति भरि पढ़ैत अछि, घुमबाक-फिरबाक अपन सब सऽख-सेहंता त्यागि हमरा सभक सपना साकार करबाक लेल भरि दिन तपस्या करैत अछि, से नहि सुझैत छैक एकरा सभकेँ!

हम चुप्पे रही मात्र एतबे कहलहुँ– मेरा दिमाग फिर गया है या ठीक हुआ है इसका पता तुझे कुछ साल बाद चलेगा। वाहे गुरुदी कृपा। जरूरत होगी तो गोबर साफ कर दूँगी। तुम टेंसन मत लो। भनभनाइत ओ चलि गेलीह। एहन स्थिति बेर-बेर अबैत छल। हम ओहिना गाए सभकेँ रोटी खुआबैत छलहुँ। कुकुर सभक भोजन बनबैत रहलहुँ। ओकरा सभक संख्या बढ़ि गेल छल। घरक अतिरिक्त बीसटा रोटी बनबैत छलहुँ तखन पार लगैत छल। एक दिन रोडपर एक कारवला एक कुकुरकेँ पीचि देलक। ओकरा किकिआइत आ तीन टाँगपर कहुना घिसिआइत चलैत देखि मोन विकल भऽ गेल। के देखत एकरा! सेप्टिक हेतै मरि जेतै। ओह! एहि इंदरीमे तऽ कोनो पशु चिकित्सक अछिए नहि। लऽकेँ करनाल गेलहुँ। अएलहुँ तखन घरमे कोइ किछु बाजल तऽ नहि मुदा हजार टाकाक व्यर्थ व्यय ज्योतिकेँ नीको नहि लागल। बीमार कुत्ता सुखल रोटी नहि खाइत छल। ओकरा मलाइ लगाकेँ देलहुँ तखन खाए लागल। एहिपर घरमे सब हँसैत रहए जे हमरा सभक लेल मलाइ नहि छै आब। जे छै से कुकुरे सभक लेल। हम कही जे तोरे सभक लेल ओकरा सभक आत्मा जुड़बैत छी। देखिहेँ सब नीक हेतौ। अपन-अपन विश्वास छलै।

ई विश्वास फलित भेल। पहिल बेरमे बबन केर एआइपीएमडीटी परीक्षामे सफलता भेटलै। काउंसिलिंगक बाद नीक सरकारी मेडिकल कॉलेजमे प्रवेश सुनिश्चित भऽ गेल छलै। ज्योतिकेँ सेहो टेंथमे नीक रिजल्ट भेलै। सब वाहे गुरुक कृपा। दुर्गा माताक महिमा। गुरुद्वारा आ देवी मंदिरमे भोग लगाओल गेल। लड्डू बाँटल जा रहल छल। पता नहि किएक बबन अपन बापकेँ दूटा लड्डू पैक कऽकेँ दैत कहलक जे डॉक्टर मोहिंदर अंकल ओतऽ लड्डू अवश्य दऽ देब। खुशीक माहौल छल। कुकुर सभकेँ सेहो नीक भोजन भेटल छल। आइ ओ सब सेहो खुशीमे सभक लऽग जा नाँगरि डोला रहल छल। बबनक रूमक आगू दिन-राति पड़ल रहए वला जिमी आइ सभकेँ ओहि रूममे जाए दऽ रहल छल। सभक देहमे सटि नाँगरि डोला खुशी प्रकट करैत छल। आनंदातिरेकमे ओ एक अजीब सन ध्वनि उत्पन्न करैत छल जेना पहिने जे ओहि रूममे नहि जाए दैत छल ओहि लेल माफी माँगि रहल हो आ कहि रहल हो जे आइ ओहने प्रयास सभसँ ई आनंदक दिन आएल अछि।

सरिपहुँ एहि सफलतासँ लोक सभक मुह बंद भऽ गेल छलै।

लोक सभक मुह तऽ बंद भेल मुदा घरेमे भारी बखेड़ा शुरू भऽ गेल। काउंसिलिंगक बाद बबनकेँ आइजीआइएमएस, पटनामे एमबीबीएस भेटलै। ओ कहि देलक जे हम एतेक दूर पटना साहिब नहि जाएब। फेरसँ परीक्षा देब। दिल्ली, हरियाणा वा पंजाबमे जतऽ नीक कॉलेज भेटत ओतहि एडमिशन लेब। भारी समस्या! कतबो बुझाबी ओ मानऽ लेल तैयारे नहि होइत छल। दोसर बेर परीक्षा देबाक बातपर अडिग छल। फेर हमर धर्मानुरागी पिता आबिकेँ समझेलनि। ओ अमृत चिखने छलाह आ पंज ककार– केश, कंघी, कड़ा, कच्छा आ कृपाण धारण करैत छलाह। बबन केर दादाजी सेहो दाढ़ी-केश-पगड़ी रखैत छलाह। बबन केर ताया अखनो केश-दाढ़ी रखने छथि। बादमे बहुत लोक केश कटा लेलनि। 1984क कलंकी दंगाक ई पार्श्व प्रभाव छल। पहिने तऽ एकहि परिवारमे एक भाए अमृत चखि सिक्ख होइत छल आ दोसर भाए पंजाबी हिंदू रहैत छल। दुनूमे कोनो भेद करब संभवे नहि रहए। कोनो द्वेष नहि। जहिना गुरुक लेल श्रद्धा तहिना शंकर, विष्णु, राम-कृष्ण, दुर्गा आदि देवी-देवतापर विश्वास! जहिना गुरुद्वारामे सेवा-अरदास तहिना मंदिरमे पूजा-पाठ। बबनक ताया आबि समझएलनि– पटना वाहेगुरु की धरती है। गुरु गोविंद सिंहजी का जन्मस्थान! हम सबों का महातीर्थ!! पहली बार में गुरु की कृपा से ही यह शुभ घड़ी आई है कि गुरु ने अपने पास बुला लिया है। हम वहाँ तीर्थ करने जाते हैं। हमारा यह सौभाग्य होगा कि तुमसे मिलने भी जायेंगे तब भी तीर्थाटन ही होगा। एक बार जाकर देख लो पुत्तर! जी नहीं लगे तो वापस आ जाना।

बहुत कहला-सुनलापर बबन तैयार भेल जे एक बेर पटना जा देखैत छी। हमसब पटना साहेब बाललीला गुरुद्वारा आबि गेलहुँ। बबन जखन पहिल बेर पटना सिटीक गुरु गोविंद सिंहक जन्मस्थल हरमंदिर साहेबक दर्शन कएलक तऽ एतऽ केर दिव्यत्व अपना दिशि आकर्षित कऽ लेलकै। एहि मंदिरमे मत्था टेकैत काल पता नहि ओकरापर कोन जादू-टोना भेलै जे जे बबन पटना आबए लेल तैयार नहि रहए से हरमंदिरसँ सीधा इंदिरा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान जा एडमिशनक पहिल दिन अपन प्रवेश लऽ लेलक। बबनकेँ नवनिर्मित एकटा होस्टल सेहो भेटि गेलै। हमसब बाललीला गुरुद्वारामे छकिकेँ लंगर खाइ आ सेवा करी। पटना घुमि-फिरि छठम दिन हमसब विदा भेलहुँ। बबन आर रहबाक लेल कहैत छल मुदा ओतऽ केर कुकुर सभक सभटा भार ज्योतिपर पड़ि गेल

छल। रोज अतिरिक्त बीसटा रोटी बना ओकरा सभकेँ खुआएब आसान नहि अछि। ज्योति कतेक करत! हमरा कुकुर सभक सुरता आबि गेल छल। रुकि नहि सकलहुँ। हमर दृढ़ विश्वास अछि जे घरक प्रगतिक मूलमे एहि मूक पशु सभक जुड़ाएल आत्माक आशीर्वादे अछि।

बबनक पढ़ाइ नीकसँ चलैत रहल। सेमेस्टर आ मेस सभक फीस जमा होइत रहल। किछु आगू-पाछू भेलापर पटनामे ओकर संगी सभक सहयोग सेहो भेटैत रहल। विपुल सिंहक विशेष योगदान रहैत छल। बादमे ओकरा सभक पाइ आपस होइत रहल। हमसब जखन पटना आबी तऽ सभकेँ बजा पंजाबी पराठा अवश्य खुआबैत रही। हमरो नीक लागए।

ज्योतिकेँ बारहममे नीक रिजल्ट भेल छल। सीए बनब ओकर सपना छल। ओ तैयारी शुरू कएलक। पहिल आ दोसर पार्ट अपने पास कएलक। तेसर पार्टमे लगैत छल जे कोचिंग करितहुँ तखन नीक रहैत। घरक स्थितिसँ वाकिफ छलीह। किछु बजलीह नहि मुदा हमरा एकर भान भऽ गेल। बबनक अंतिम परीक्षाक फार्म भरबाक रहए। हमरा पता छल जे सेमेस्टरक फीस चालीस हजार बबनक संगी विपुल सिंहक परिवार जमा करा देने छल। ओ पठाएब बाँकिए रहए। मेस चार्ज मात्र जमा भेल छल। परीक्षा फीस चारि हजार सेहो पठएबाक छल। हम ओहिना परेशान रही। फेर किछु सोचि हम एक दिन बन्हकीवला सोनार लऽग जा अपन दुनू कंगन बन्हकी राखि देलहुँ। बबनकेँ फाइनल सेमेस्टरक फीस आ परीक्षा फीस आदि लेल पचास हजार पठा देलहुँ आ पचास हजार ज्योतिकेँ कोचिंग लेल दऽ देलहुँ। ज्योति आश्चर्यचकित छल जे बिनु किछु कहने बेबे ई कोना बुझि गेल। माए-धीक ई संवेगात्मक जन्म-नाल संबंध अखन ओ बुझियो नहि सकैत अछि। ई तखने बुझि सकत जखन स्वयं माए बनत।

आमदनीक स्रोत मात्र एफडीक ब्याज आ दारजीकेँ अपने पूर्वक दोकानमे हिसाब-किताब करबाक दरमाहा रूपमे भेटैत एक छोट-छीन राशि। हम सिलाइ-कढ़ाइ केर काज सेहो करैत छलहुँ। एहिसँ ओतेक पाइ अवश्य भेटैत रहल जाहिसँ गाए आ कुकुर सभक लेल किछु रोटीक इंतजाम भऽ जाइत छल। ई किछु कठिन समय अवश्य छल मुदा हमरा गुरु, देवी-देवता आ अपन पशु परिवारक आँखिमे अभरल चमकीपर अखंड विश्वास छल। समय कहुना व्यतीत भऽ रहल छल।

इंटर्नशिपमे बबनकेँ संस्थानसँ साढ़े पचीस हजार भेटऽ लागल तखन हमरा सभक कष्ट घटए लागल। बबन पहिल काज कएलक जे बापकेँ हिसाब-

किताब करबाक काज छोड़ा देलक। कहियो केर दोकानक मालिक अपने दोकानमे आइ नोकरी करैत छथि ई बात ओकरा बड़ कचोटैत छल। ज्योतिक कोचिंगक खर्च ओ सम्हारि नेने छल। कोनो अज्ञात बेमारीसँ ज्योतिक मोन गड़बड़ा गेल रहए। कतहु बेमारीक सही डायग्नोसिस नहि भऽ पाबि रहल छल। एहि बेर हालत खराब भऽ गेलै। बबन तखन अपन सीनियरक माध्यमसँ मेदांता अस्पतालक कोनो पैघ डाक्टरसँ संपर्क कएलक। ऑटो इम्यून हिपेटाइटिस डिजीज डायग्नोज भेल। सही इलाज भेलै तखन कतेक बरखक बेमारीसँ ओकरा मुक्ति भेटलैक। रोगसँ मुक्त भेल आ पहिल बेरमे चार्टर्ड एकाउंटेंसीक अंतिम परीक्षा पास कऽ गेल। इंटर्नशिपक बाद बबन अपनहि संस्थानमे जूनियर रेजिडेंट रूपमे कार्डियोमे काज करए लागल। एहिमे सवा लाख दरमाहा भेटैत छल। दू मासपर जखन पहिल बेर दरमाहा भेटल तखन ओ इंदरी आएल। हमरा संग लऽ सोनार ओतऽ गेल। हिसाब-किताब कएलक आ डेढ़ लाख टाका दैत जखन ओ कंगन छोड़ा हमरा हाथमे देलक तखन अनायासे हमर दुनू आँखिसँ नोर बहए लागल। आँजुरमे राखल दुनू कंगन हमर नोरसँ भीजि रहल छल। सोनार हमरा भावुक होइत देखि कहलक– रो मत भैना! सोना तो दुख का आहार और सुख का शृंगार है। बबन को लायक बना दिया। अब ऐसे कितने कंगन तुम मुझसे खरीदेगी। मुझे पता है कि तुझे लावारिस कुत्तों और पशुओं को खाना देने और उनकी चिंता करने के कारण कई लोग सनकी कहते हैं, पागल समझते हैं। पर मैं मानता हूँ कि दुआओं में बड़ी शक्ति होती है। आज यह कहने में मुझे कोई हिचक नहीं है कि तुम्हारी तपस्या के पूरा होने में उन मूक पशुओं की अंतरात्मा से आयी दुआओं और आशीर्वादों का बहुत बड़ा योगदान है।

ओ बबनकेँ सेहो आशीर्वाद देलनि। हमसब प्रणाम कऽ बहराइत रही तखन ओ चानीक एकटा कलम बबनकेँ दैत कहलनि– अपनी बेबे और उनकी भावनाओं का ख्याल रखना पुत्तर! अपनी माँ की तरह सभी जीवों के प्रति सहानुभूति रखना, अपने पेशेंट्स का रोग के साथ उनकी मजबूरियों का भी ध्यान रखना। तुम एक दिन इस छोटे शहर का नाम अवश्य रोशन करोगे, बहुत बड़े डाक्टर बनोगे!

साल भरिक भीतर हमर घरक नक्शे बदलि गेल। सब रूममे एयर कंडीशनर लागल, नवका वाशिंग मशीन, बड़का फ्रीज, बड़का टीवी, डाइनिंग टेबुल, माइक्रोवेभ ओवेन आर नहि जानि की सब! ज्योति सेहो हिंदुस्तान पेट्रोलियममे

मैनेजर बनि गेलीह। मुंबईमे पहिल पोस्टिंग भेटल। मास दिन बाद कूरियरसँ तीनटा बड़का-बड़का पैकेटमे पैडेग्री आएल– कुकुर सभक भोजन। एकटा नोट छल– मम्मी! अब इनके लिए रोज बीस रोटियाँ बनाने की जरूरत नहीं है। यह खिलाती रहो ताकि उनका आशीर्वाद हम सबों पर बना रहे। मेरी रूममेट और मेरा खाना तो हमारी मेड बनाती है पर मैं अलग से यहाँ के दो लावारिस कुत्तों के लिए रोज चार रोटियाँ बनाती हूँ, उनमें मक्खन लगाती हूँ और उन्हें दे देती हूँ। खूब मन से खाते हैं दोनों। उनको रोटी खिलाते समय तुम्हारी बहुत याद आती है मम्मी! पता नहीं क्यों मुझे अब यह बहुत अच्छा लगने लगा है।

हमरो बहुत नीक लागल रहए। ओकर अपन खाना मेड बनबैत अछि आ ओ कुकुर सभक रोटी अपने बनबैत अछि! हमर विश्वास ओकरा धरि गेल ई जानि भावुक भेल रही। तखने बबन केर फोन आएल– मम्मी! मेरी जेआरशिप तो अब खत्म हो रही है पर तुम चिंता मत करना। तुम्हारे लिए एक और खुशखबरी है। पीजी वाली परीक्षामे मेरा एआइआर बहुत अच्छा आया है– 46 वाँ। मुझे एमडी मेडिसिन मिल जाएगा। स्टाइपेंड भी अच्छा है। बाद में मैं डीएम कार्डियो कर लूँगा। मम्मी! सच कहूँ तो यह सब तेरे विश्वास का ही परिणाम है। अपना एवं मेरे उन दोस्तों का ख्याल रखना जिनके मूक आशीर्वाद के ही कारण हम सब अब तक आगे बढ़े हैं। अच्छा, अब फोन रखो मम्मी! मैं विपुल के साथ हरमंदिर साहेब जा रहा हूँ मत्था टेकने। पटनदेवी में भी प्रसाद चढ़ाना है।

अपन विश्वासकेँ धिया-पुतामे स्थानांतरित होइत देखि मोन गद्गद भऽ गेल। आँखि नोरा गेल छल मुदा मोन आह्लादित रहए।



[समदिया मिथिला, पटना दि. 17 दिसंबर आ दि. 20 दिसंबर 2023]

खुट्टीपर टाँगल घुँघरू

ओना नाम रहए रामदेव खतबे मुदा सब कहैत छल रमदेवा। किएक नहि कहत? ओ कोनो काजक नहि। गोबरक चोँत! कोमल देह आ तन्नुक मोन। ककरो खवासी कहियो मंजूर नहि। जऽनमे सकैत नहि छल आ पढ़ल-लिखल साढ़े बाइस। तहिना मुहफट सेहो। अपन मर्जीक राजा आ अपन मोनक भिखारि। जे मोनमे आएत सैह करत। मोन हेतै तखन अहाँक लेल पहाड़ ढाहि देत बिनु किछु नेने आ नहि मोन हेतै तऽ किछुओ गछि लियौ वा दऽ दियौ, ओ एगो खऽर नहि उसकाओत। बोलीमे लसि नहि, आँखिमे ने लेहाज आ ने पानि, हाथमे सऽक नहि। काजो कोना भेटए! बापक नाम तऽ रहैक ज्ञानी मुदा लोक ओकरा गेनमा कहए। ओ पढ़ल-लिखल नहि रहए मुदा गीत-नाद, विद्यापतिक पदावली आ तुलसीक मानस केर पाँती सब मोन रहए। ओकरे मुइलाक बाद गाममे भोरका परातीक स्वर शेष भऽ गेलै। ज्ञानी किछुए दिनमे अकानि लेलक जे बेटा अपना मोनक राजा अछि। ओ नेनपनेसँ ओकरा गीत सभ रटबऽ लागल, सुर-लय-ताल-मात्रा समझाबए, राग-भास-मीँड आ आरोह-अवरोह सभक रहस्य बताबए। स्वरलिपि सिखबैत रहए। मुदा छौँड़ा रहए अलगटेँट! एक बेर बाप कहलकै जे घरमे किछु नहि छौ। हवेली जो आ बूढ़ी मलिकाइनसँ कह जे बाउ बेमार छै, किछु सिदहा मँगलक अछि। एकटा भजन सुना दिहै। ओ एतेक दऽ देथुन जे दस दिन अन्न नहि घटतौ। ओ अड़ि गेल जे हम भजन सुना देबै, अपना मोने जे देथिन से नेने आएब। करबो कएलक सैह। कनिञा काकीकेँ भजन सुना देलक। ओ अपने भोजन लेल जाइत रहथि। एकरो बैसाकेँ नीक-नुकुत भोजन करा देलनि। चारि छिम्मी पाकल केरा सेहो देलनि जे गेनमाकेँ दिहै। बस। रमदेवा जखन घुरिकेँ गामपर आएल तखन ओकरा ढकरैत देखि बाप पुछलकै। ओ कहि देलक जे हम मँगलियै किछु नहि। अपने मिसरजीकेँ कहलनि जे एकरा भरि पेट खुआ दियौ। बड़ नीक भजन गबैत अछि। मिसरजी सेहो भजन

सुनने रहथि। हमरा खूब खुआ-पिआ देलनि। राहरि दालिमे घीक एहन स्वाद नहि देखने रहियै कहियो। फेर अबैत काल यैह चारि छिम्मी केरा देलनि।

एड़ीसँ टीकासन धरि गेनमाक देह तामसे घोर भऽ गेलै। माथपर घामक चुहचुही देखा रहल छलै। ओ बेटापर खूब बिगड़ल– "जो रे करमजरुआ! अपने घी-मलीदा भकोसिकैँ आएल मुदा बाप भूखे टटा रहल अछि, माए भूखे लारू-बातू भेल पड़ल अछि आ दुनू बहिन भुखले सारुख आ भैँट लेल रने-वने छिछिआइत अछि से बाजल नहि भेलौ?" बापक एकहि चाटमे रमदेवाक कनपट्टी लाल भऽ गेलै। आँखिक सोझाँ चान-तरेगन देखा गेलै। दोसर चटकनसँ पहिने ओ पड़ा गेल। कतऽ गेलै तेकर कोनो ठेकान नहि। जखन मुनहारि साँझ भऽ गेलै आ बेटा नहि घूरल तखन ओकरा चिंता भेलै, बकोर धऽ लेलकै। जेना-जेना अन्हरिया पसरि रहल छलै गेनमाक हाथसँ जेना बेटा ससरि रहल हो। ओ बेकल भेल कनैत रहल। राति नहि आएल बेटा। भूख बहुत लागल छलै मुदा बेटाक शोग जेना भूखकैँ खा गेल हो। चारू छिम्मी केरा ओहिना टुटलाहा खाटपर रखले रहि गेलै। केओ ओकरा दिस नहि देखलक। बेकल भेल गेनमा पेटकान देने रहल, रमदेवाक माए कुहरैत रहलि। गेनमाक मोन होइ जे ओह बेकार हाथ उठा देलियै। पश्चात्तापमे रहि रहिकैँ अपन हाथ खटियापर पटकैत रहल। कतेक कबुला-पाती कएलक मुदा बेटा नहि घुरलै। भोरमे कहुना टौआइत हवेली गेल आ सब खेरहा बूढ़ी मलिकाइनकैँ सुना देलक। ओ बोल-भरोस देलनि। गेनमाकैँ खुआकैँ विदा कएलनि। चाउर पठा देलनि, बेटाक खोज करओलनि मुदा ओ नहि भेटल।

कोइ कहए चौबट्टी दिसन जाइत देखलहुँ तऽ कोइ कहए बसपर चढ़ैत देखलहुँ। मोरंग गेल, तऽ कलकत्ता गेल, तऽ दिल्ली-पेंजाब गेल आ कि गुदरिया बबाजी बनि गेल। पता नहि कतय चलि गेल रमदेवा! सब औनाइत रहल मुदा नहि घूरल रमदेवा।

बहुत दिनक बाद कुटमैतीमे नारायणपुर गेल सधुआ गाम आबि कहलक जे स्टेजपर नचैत नटुआक आवाज अनमन रमदेवे जकाँ लगैत छल। गेनमा ओकरा संग कऽ नारायणपुर गेल ताबत नाच पार्टी ओहि ठामसँ विदा भऽ गेल छल। गेनमा अकानि लेलक जे बेटा कोनो ने कोनो नाच पार्टीमे एम्हरे अछि। बाहर नहि गेल अछि। ओ दरभंगाक विभिन्न नाच पार्टी सभमे तकलक। विभूतिपुर (समस्तीपुर) क बहोरन डांस पार्टी, बटुकजीक पार्टी सभमे जाकैँ देखलक मुदा निराशा भेटल।

बखरी सलोनाक सुदामा गिरिक नृत्य दलमे सेहो खोज कएलक। अहियापुर (बछवाड़ा)क शिवदानी गिरिक पार्टीमे किछु संकेत भेटल जे एकटा एहन छड़ेछाँट आएल छल मुदा हम सब बापक संग अएबाक लेल कहि घुरा देने रही। करिहारा (उजियारपुर)क रास बिहारी/राम बिहारी एंड पार्टीमे पता चलल जे सरायरंजनक खजुरी गाममे अनूप सिंहक नाच पार्टीमे एकटा बारह-तेरह बरखक नटुआ आएल अछि ओ गजब अछि। गेनमा पहुँचल खजुरी। स्टेजपर रमदेवाकेँ नाच करैत देखलक मुदा ओ चिन्हि नहि सकल रहए। ओकर सिंगार-पटार, परिधान, भाव-भंगिमा आ नृत्य गजब छल। अनमन मधुबाला जकाँ लागै। मुदा जखन ओ गीत शुरू कएलक तखन गेनमाकेँ कोनो भाँगठ नहि रहल। दर्शक सभक भीड़केँ कहुना चीरैत गेनमा स्टेजक पाछू गेल आ पर्दा खसिते बेटाक सोझाँ आबिकेँ ठाढ़ भऽ गेल। गेनमा बेटाक पयर धऽ लेलक– 'चल रे बाउ। माए पेटकान देने छौ।' फेर बाप-बेटा एक दोसराकेँ पँजिएने कनैत रहल। मालिक ई दृश्य देखि तमसा गेलाह। खूब बतकुच्चन भेलै। मालिक छोड़बाक लेल तैयार नहि रहथि। कहथि जे एकरा रियाज करा तैयार करएमे जे समय, परिश्रम आ खर्चा लागल तकर की? डेढ़-दू साल भरिक बुतातक दाम दियऽ। कपड़ा-लत्ता, साज-शृंगार, दबाइ-दारूक दाम दियऽ तखने एकरा लऽ जा सकैत छी। तीन हजारपर अड़ल रहथि। इहो दुनू अड़ल रहल जे घरक काज, टहल-टिकोरा आ नाच कएलहुँ ओहिमे सधि गेल। खूब गमर्थन भेलै। अंतमे एकाएक गेनमा कलपैत अनूप सिंहक पयरपर खसि पड़ल– बेटा धन अछि, जाए दियौ। अनूप सिंह कलाकार आदमी! पघीलि गेलाह। एहि शर्त्तपर जाए देब गछलनि जे परोपट्टाक कोनो दोसर नाच पार्टीमे नहि जाएत, जखन पत्र वा फोन जेतै तखन आबए पड़तै। दुनू सब शर्त्त मानि लेलनि। कहुना खजुरीसँ पिंड छोड़ा गाम आबि गेल।

गाम घुरि तऽ गेल रामदेव मुदा ओकर मोन एतऽ नहि लागै। स्वभावमे ठेही ओहिना रहए। बोइनिपर काज करए जाइत नहि रहए। घरमे खर्चा घटले रहए। पेटेपर छोट-मोट काज करय। गाममे एक बेर नाटक भेलै जाहिमे ओ खूब सक्रिय रहल। गामक चौकीतोड़ नाचोमे भरि राति नाचए आ नाटक केर स्टेजपर नाच आ स्त्रीपात्रक तेहन जीवंत अभिनय करए जे सब एकर कला प्रदर्शनपर वाह-वाह करैत रहथि। आब आनो गाम सभसँ साटा भेटऽ लगलै। किछु-किछु आमदनी होमऽ लागल। बापकेँ कचोट रहए जे ओ बेटाकेँ लोकगायक बनबऽ चाहैत छल मुदा ओ नचनिया बनि गेल। तथापि ओ कहियो फेर एकरा किछु

कहलनि नहि। रामदेव जखन बाहरसँ नाचिकेँ आबए तऽ बापक सोझाँ बहुत रास कँचा-टाका उझिल दैत छल। बापक तामस बिला जाइ। पाइमे साँचे बड़ ताकत छै। पिताएल मोन हरियर कऽ दैत छैक।

कतेक बरख बिति गेलै। कनिञा काकीक गंगालाभक बाद हवेली सून भऽ गेलै। आब सब गोटे दरभंगे रहैत छथि। ओतहि राखि धिया-पुताकेँ पढ़ा रहल छथि। गेनमा सेहो एक दिन भिनसरबेमे प्राती गबिते-गबिते शांत भऽ गेलाह। रामदेव स्वयं पोता-पोतीवला भऽ गेलाह। पुतोहु आँगनबाड़ीमे सहायिका भऽ गेल छलीह। पोता-पोती आ हुनका ई अपरतीब लगैत छलनि जे रामदेव नटुआ छथि, साटापर आन गाम जाकेँ नचैत छथि। पुतोहु विरोध शुरू कएलनि। एक दिन बजलीह– "आब कोन कमी छनि जे साटापर अखनो नाच करैत छथि! बेटा श्रवण राजमिस्त्री रूपमे कमाइते छनि। इंदिरा आवाससँ भेटल घरकेँ कतेक सुंदर बना लेलनि! हमरो दरमाहा भेटिते अछि। किछु बाइलीयो होइते अछि तखन एहि पाकल उमेरमे ई साड़ी वा घघरा-चुन्नी पहिरि, मुर्दाशंख पोति, घुँघरू बान्हि जे नचैत छथिन से हमरा एको रत्ती सोहाइत नहि अछि। अनसोहाँत लगैत अछि। एतेक दिन जे केलनि से केलनि आब ई निषिद्ध काज नहि करथि। पोती स्कूलसँ आबि कहैत छनि जे सब बच्चा हमरा किचारैत अछि जे एकर बाबा नचनिया छैक। साड़ी पहिरि नचैत छैक।" रामदेव चुपचाप सुनि रहल छल। नाचकेँ जे निषिद्ध काज कहलनि से रामदेवकेँ नहि अरघल। किछु काल बाद बाजल– "कनिञा! संसारमे कोनो काज निषिद्ध नहि होइत छै। जे काज भूख-पिआससँ जीवन रक्षा लेल अन्नक इंतजाम करए ओ काज निषिद्ध कोना भऽ सकैछ? आ ताहूमे नाच! ओह! ई तऽ शुद्ध केर कला-प्रदर्शन अछि। साक्षात् सरस्वतीक वास आ भगवान् भोलेनाथक कृपा! आखिर एकरे बलेँ ने हम धिया-पुताकेँ पोसलहुँ। हँ, मुनियाँ हमरा सेहो कहैत अछि जे ओकरा स्कूलमे सब नटुआक पोती कहि किचारैत छै। हमरो कोनादन लागल। आब हम ओतेक सकबो नहि करैत छी। पचासम पार भऽ गेल छी। मुनियाँक बात मानि लेब। अहूँ हरदम कहबे करैत छी। तखन हम सोचि लेल जे आब फेर घुँघरू नहि पहिरब। लियऽ कनिञा हम सप्पत खा लेलहुँ जे आब फेर कहियो नहि नाचब।"

एतेक कहैत रामदेव अपन घुँघरूकेँ पोछि-पाछि माथसँ सटा फेर ओकरा देबालक खुट्टीपर टाँगि देलनि। श्रद्धापूर्वक अगरबत्ती देखा देलनि। आब तऽ एकरो बीस-बाइस बरख बिति गेलै। रामदेव बुलू बाबूक हवेली धऽ लेलनि।

हरबाही तऽ आब समाप्ते अछि। ट्रेक्टर चलैत अछि तथापि दलानक व्यवस्था आ टहल-टिकोरामे रमि गेलाह। रहलाह मुदा ओ ओहिना– बेछप, सुच्चा आ ईमानदार!

पूरा दुनिञामे कोरोना सन बेमारी पसरल। बहुत घर सून कऽ देलक। संबंध सभक माने आ परिभाषा बदलि देलक कोरोना। बहुत लोक मुइल। बड़का हवेलीक बड़का मालिकक सासुर बसैत बेटीकेँ पटनामे कोरोना भेलनि। माए छठिक घाटमे आँचरपर नटुआ नचएबाक कबुला कएलनि। बुच्चीकेँ डाग्दर पित्तीक इलाज बचओलक वा दिनकर दीनानाथक कबुला से कहब कठिन अवश्य अछि मुदा एहि बेर छठि घाटपर नटुआ अवश्य नाचत। गामेक एकटा नटुआ बिरिजभानकेँ कहल गेल। ओकर नीक चला-चलती रहए एहि लाइनमे। ओ गछि सेहो लेलक।

महापावनि छठि केर सँझुका अर्घ्य। बाड़ीसँ सटल पोखरिमे केराक थम्ब, चकमक पन्नी, भुकभुकिया छोट-छोट बल्ब आ फूलक मालासँ घाट सजाओल गेल। टोल भरिक लोक जूमल। धिया-पुता सब छुरछुड़ी, अनार, बम, फटक्का आ रॉकेट छोड़ि रहल छल। बड़की कनिञा अपन आँचरमे साड़ी बन्हने ओहि आँचरपर नचबाक लेल नटुआ बिरिजभानक प्रतीक्षा करैत छलीह। माटिक हाथीपर रखल कुरबारमे ठकुआ-भुसबा आ प्रसाद सभकेँ सैँति घइलक मुहमे आमक पल्लव सजा ओहिपर दीप जरा रहल छलीह। सँझुका अर्घ्य देल जा रहल छल। देरी होइत देखि बिरिजभानक खोज लेल लक्ष्मीकेँ पठाओल गेल। ओ आबिकेँ कहलक जे बिरिज दंडप्रणाम दैत पुरनी पोखरिक घाटपर पानिमे पैसल अछि। ई समाद सुनिते एहि घाटपर हड़कंप मचि गेल। व्रतमे सहल उपासल बड़की कनिञा कबुला अकारथ होइत देखि अनिष्टक आशंकासँ डरि गेलीह। विकट परिस्थिति भऽ गेल। आँचरमे बान्हल नवका नुआ जेना लोथे भारी भऽ गेल हो। आब अँचरापर नटुआ कोना नाचत! हमर कबुला अपूर्ण रहि गेल। कबुला कोना पूरत हे छठि मइया! हे दिनकर दीनानाथ! कहुना कबुला पार लगाउ! आब फेर उपास... अगिले साल... के देखलक... ओ कानए लगलीह। हुनका कनैत देखि हुलसिकेँ छठिमे नैहर आएल बेटी सेहो कानए लगलीह। कोरोना कालमे ओकरे जीवन रक्षा लेल ने छठि माएसँ कबुला भेल रहए। एहन विकट समय सहसा मँझिली कनिञा घाटपर लेटाइत आँचरपर नाचए लगलीह। हुनकर नहुँ-नहुँ स्वर अभरल– “हम किछु कऽ सकैत छिएनि। हमरा रहैत मोन छोट नहि करथु। हम कोन नटुआसँ कम?” एहिसँ बड़कीकेँ किछु तोष भेलनि।

वातावरण कने हल्लुक अवश्य भेल। मुदा कचोट रहबे करए। घाटपरसँ सब घुरि आएल। बड़की अबिते बिछानपर ओँघरा गेलीह। हुनक उपाससँ अशोथकित लटकल मुह देखिते मुनू बाबू अग्निश्च-वायुश्च भऽ गेलाह। बिरिजभानक घरपर जा ओकरा गंजन कएलनि। तेरहो दशा कएलनि। ओ मात्र कऽल जोड़ने ठाढ़ रहल। बाजल किछु नहि। की बजैत? सँझुका अर्घ्य केर सोह नहि रहलै।

दलानपर आबि मंत्रणा शुरू भेल। गाममे दोसर कोनो नटुआ उपलब्ध नहि। फोन-फान खूब भेलै मुदा कतहु सफलता नहि भेटल। अड़ोस-पड़ोस केर गामक सेहो एहने स्थिति। व्रतभंग केर पाप चढ़ल। ई उतरत तऽ आब अगिले साल!

एहि विचार-विमर्शमे बुलु बाबू कहलनि जे एक बेर रमदेवासँ कहल जाए। बूढ़ भऽ गेल अछि मुदा अखनो देहक काइँत ओहिना छै। फुर्तीमे जुआन सभक कान काटि लेत। मुनू बाबू अपने रामदेवक घरपर जा सभटा खेरहा सुना देलनि आ भुरूकबा तारा उगैसँ पहिने हवेली अएबाक लेल कहलनि। रामदेव मात्र एतबे बाजल जे 'बीस-बाइस बरख बिति गेलै सरकार! हम घुँघरू नहि पहिरलहुँ। आब सत्तरि सालमे की नाचब? पुतोहु कहने रहथि जे घुँघरू खुट्टी परसँ जखने उतारब तखने बारि देब। हमरा सभसँ सब संबंध समाप्त! हम सप्पत खा नेने छी। माफी सरकार!'

ओ अपन दुनू हाथ जोड़ि देलक। निराश मुनू बाबू विदा होइत एतबे कहलनि– "अहाँ स्वयं सुच्चा कलाकार छी, कने सोचब। आब बड़की भौजीक व्रतक पइत अहींक हाथ।" एतेक कहैत ओ दलानपर आबि गेलाह।

पूरा गाम निसभेर सुतल रहए मुदा रामदेवक आँखिमे नीन नहि रहए। ओकर आँखिक आगू अतीतक विभिन्न घटना साबुनक फेन जकाँ आबि-आबि बिला रहल छलै। भरल महफिलमे नचैत रामदेव! कानवला पितरिया थारीपर नचैत रामदेव, शीशाक गिलासपर पयरक कलाकारी देखबैत रामदेव, तरुआरिक धारपर नचैत रामदेव, हजारक हजार केर भीड़मे सीता बनल रामदेव! दीप जरा सीता पाताल-प्रवेशक दृश्य करैत खाधिमे खसैत काल चारू दिशिसँ भेल कैँचा-रुपैयाक बरखाक ओ अपूर्व दृश्य मोन पड़ि गेलै! ओह! बापक चाट खा गामसँ पड़ाइत कालक दृश्य मोन पड़लै! तखने सहसा बूढ़ी मलिकाइनकेँ सुनाओल भजन, राहरिक दालिमे घीक ओ स्वाद आ चारि छिम्मी केरा मोनमे अभरि गेलै। ओह! बड़की कनिञाक व्रतक पइत हमर हाथमे! आइ मुनू बाबू ई की कहि देलनि! सभदिन देनिहारक लेल आइ हम दाता! मुनू मालिक हमरा सुच्चा कलाकार कहलनि। कलाकारक की धर्म? दोसरक

मोनक कष्टकेँ अपन कलासँ रंजन करी आ हम कऽ की रहल छी! बड़की कनिञाक व्रत भंग भऽ जेतै। कतेक कलपतीह ओ! नहि! ई किन्हु सुच्चा कलाकारक धर्म नहि! आइ महापावनि छठि दिन कलाकारक धर्मक त्याग? नहि नहि!

कलाकारक धर्मक दहारमे हुनक घुँघरू नहि बान्हबाक सप्पत भासि गेलै। रामदेव उठि दिशा-मैदानसँ आबि स्नान कएलनि। खुट्टीपर टाँगल घुँघरू उठबैत छलाह तखने घाटपर पूजाक सरंजाम लेल जागलि पुतोहु केर तमसाइल स्वर अभरल– "ई की करैत छथिन?"

– "मात्र अपन धर्मक निर्वाह! मुनू मालिक अपनेसँ घरपर आबि कहने रहथि। हम जेबै।" ससुरक स्वर रहए।

– "आब कोइ मालिक-तालिक नहि होइ छै। गेलै जमाना! जे पाइ देलनि से घुरा देथिन। कहि दैत छिएनि हम भीन कऽ देबनि।"कनिञाक स्वर कड़गर छलै।

– "आब अहाँक जे फुराए से करू। एक छदाम नहि लेलहुँ मुदा हम अपन धर्मक निर्वाह अवश्य करब। श्रवणक माए चलिए गेलीह, आब एसकरुआ हम। जीबे कतेक करब? कहुना जीबि लेब। हँ, अहूँ सुनिए लियऽ। अहाँ किछु नहि कऽ सकबै। रोइञो भगन नहि हेतै। एहनो जमानामे सब भैयारी संगे छथि। बड़का मालिक आइ-काल्हि अहीँक विभागक डायरेक्टर छथि। अहाँकेँ अपन सहायिकागिरीक बड़ तुझकी अछि ने? एक मिनटमे अहाँक सहायिकागिरी निखत्तरमे चलि जाएत। तखन बारैत रहब हमरा!"

एतबा कहैत रामदेव घुँघरू उठा विदा भऽ गेलाह। दूरापर सूतल लक्ष्मीकेँ उठा साया-साड़ी-ब्लाउज आ क्रीम-पाउडर मँगा पूरा तैयार भऽ दुरूखापर ठाढ़। घाटपर जएबाक लेल दुरूखासँ बहराइत बड़की कनिञाकेँ प्रणाम करैत कहलनि– "मलिकाइन! जा नाचवला साड़ी किएक छोड़ि देलखिन? आँचरमे ओ साड़ी बान्हि लेथिन। अहाँक बुढ़बा नटुआ आँचरपर नचबाक लेल प्रस्तुत अछि।"

बड़की कनिञा हतप्रभ भेलीह। दोहाइ दिनकर दीनानाथ! हे छठि मइया! खुशीक मारे हुनक आँखि नोरा गेलनि। चोट्टहि घुरि साड़ी अपन आँचरमे बान्हलनि। आँचरपर नचैत रामदेव घाटपर आबि अद्‌भुत नृत्य कएलनि। डॉक्टर साहेब अपन तबला-डुग्गी आनि लेलनि। कन्हैया चौधरी हारमोनियम निकालि लेलनि। कलावंत सभक कला जमि गेल। शताधिक घुँघरूसँ मात्र एक घुँघरूक अबैत स्वरसँ लोक चकित भेल। तबला आ

घुँघरूक अद्भुत संगति देखि शहरुआ सभकेँ सेहो चकबिदोर लागि गेल जे एहन निछच्छ देहातमे सेहो एतेक स्तरीय संगति संभव अछि। गीत-नृत्य-संगीतक सरिता बहय लागल– श्रीरामचन्द्र कृपालु भजुमन हरण भव भय दारुणं... नीक इजोर भऽ गेल छल। प्राचीमे लाली पसरि रहल छल। भगवान् भास्कर हुलकी दऽ रहल छलाह। तखने घाटपर दंड प्रणाम करैत बिरिजभानक आगमन भेल। ओ पोखरिमे पैसि स्नान कऽ बाहर आबि चुपचाप पोखरिक कातमे ठाढ़ जामुनक गाछ तऽर बैसि गेल। ककरो ओम्हर ध्यान नहि गेलै। डगरा-सूप-कोनियाँ-कोसियामे राखल प्रसादपर दूधक ढारसँ अर्घ्य देलाक बाद मुनू बाबूक ध्यान ओम्हर गेलनि– "तोँ तऽ नाश कयलेँ। देखही बुढ़बा नटुआ कोना खुट्टीपर टाँगल घुँघरूसँ हमरा सभक इज्जत बचा देलनि।" बिरिजभान मुड़ी गोँतने रहल। तखने रामदेव अपन नाच रोकि ओकरा लऽग जा कहलनि– "देखै की छैँ? तुरंत तैयार हो आ आबि जो!"

बिरिजभानक माए ओकर झोरा नेने ठाढ़ि छलीह। ओ अऽढ़मे तैयार होइत रहए। तखने मुनू बाबूकेँ पिताइल ओम्हर बढ़ैत देखि बड़की भौजी बाजि उठलीह– "ओ सेहो व्रत केने छै। नचैत छै तऽ ओकरो नाचऽ दियौ। छठि व्रतक दिन! जखन हमर अनिष्ट छठि मइया सुधारि देलनि तऽ एकरे किएक कष्ट हो। इहो उपासले छै।" भौजीक बात सुनि मुनू बाबू गुम्मी लाधि लेलनि। बिरिजभान हाली-हाली तैयार भऽ आँचरपर आबि सर्वप्रथम रामदेवकेँ गोर लगलक। फेर दिनकर दीनानाथकेँ सुमरि ओ आँचरपर शुरू भऽ गेल। दू पीढ़ीक अद्भुत नृत्य! आंगिक-वाचिक अभिनय, पद-ध्वनि, भाव-भंगिमा, यति-गति, त्वरा, तालमेल आ प्रश्नोत्तरीमे के बीस रहल ई कहब मोश्किल। ओम्हर घाटपर हाथ उठि रहल छल एम्हर महारपर दू पीढ़ीक कलाकारक कला केर द्वंद्व परवान चढ़ि रहल छल। हाथ उठाएब संपन्न होइते मुनूबाबू नमरीक एकटा माला बना रामदेवक गरामे पहिरा देलनि। बिरिजभानकेँ सेहो जे गछने रहथि से दैत विदा कएलनि। रामदेवक विदाई भव्य रहल। जाइत काल बड़की कनिञा रामदेवकेँ प्रणाम करैत धोती-साड़ीक अतिरिक्त नुकाकेँ की देलनि से ककरो नहि पता। एकर चर्च होइत रहल मुदा एहिसँ बेसी गमर्थन होइत रहल हुनका रामदेवकेँ प्रणाम करबाक विरल घटनासँ। अपन घाटपर हाथ उठा एहि घाटपर आएल रामदेवक बेटा-पुतोहु ई दृश्य देखि दंग रहि गेल। शायद जे काज पाइ नहि करा सकैत अछि से भाव करा दैत छैक। रामदेव एकरा अपन कलाकारी जीवनक अपूर्व सम्मान मानैत

विदा भऽ गेलाह। पाछूसँ रामदेवक बेटा श्रवण आ पुतोहुक कन्हापर दू छिट्टामे तुलसीफूलक चाउर, कतरनी चूड़ा, राहरिक दालि, गमकैत घीक डिब्बा, करू तेल, कटुक मसाला, काजू-किशमिश, फल, मधुर आदि रहए।

केराक हत्था नेने संग चलैत लक्ष्मी बाजल– "जे खेत करबाक हो से खेत देखा देबाक आदेश मुनू बाबू हमरा देलनि। जे खेत पसीन हुअए से कहब, घुरती काल हम देखा देब।"

रामदेव अपन जीवनक अंतिम नाच आ एकर एहन सम्मानसँ तिरपित रहथि। बेटा-पुतोहु से मुदित आ गर्वित।



[अनुप्रास, वर्ष 05 अंक 08, 2024]

चक्रव्यूहमे अभिमन्यु

– ओह! जुलुम भऽ गेलै।

– अँय! की भेलै यौ?

– मर्डर!

– मर्डर! हौ बा! ककर?

– हमर! आर ककर?

– अहाँक मर्डर?

– हँ। हमर!

– धुर जी! अहूँ खेलौर करैत छी। मुरदा बजैत अछि की? अहाँ अपने बड़का डॉक्टर छी। स्वस्थ छी, बाजि रहल छी आ कहैत छी जे हमर मर्डर भऽ गेल।

– आइ दोसर बेर भेल अछि।

– अहाँ कहियासँ फकैत भेलहुँ यौ?

– फकैत नहि छी बच्चाभाइ! सर्वथा सत्य कहैत छी।

– धुर जी! मर्डरो दू बेर होइ छै? की भेल से फरिछाकेँ कहू।

– बच्चाभाइ! मात्र देहक मर्डर नहि होइत छै। सपनाक मर्डर सेहो मर्डरे थिक।

– नहि बुझलहुँ। हम अहाँ जकाँ विशेषज्ञ नहि छी जे छातीपर आला दैत मातर हृदयक धड़धड़ी, गति आ कोनो बेमारीक खतरा सभटा जानि जाइत छी। कने फरिछाकेँ कहू। हमर जिज्ञासा बढ़ि गेल अछि।

– अगुताइ किएक छी बच्चाभाइ! सब कहैत छी। पहिने पहिल मर्डरक कथा सुनब वा दोसरक?

– तखन पहिलुके कहू।

– सुनू! आइ जे हेल्थ डायरेक्टर छथि से सीएम साइंस कॉलेजमे हमर

बैचमेट। संगे आइ. एस-सी कएलहुँ। बाप सेहो दरभंगेमे हाकिम रहथिन आ ओ मेडिकल कोचिंग लेल पटना गेल। हमर परिवार कोचिंग नहि करा सकैत छल तेँ अपने तैयारी कएलहुँ। ओहि समय मेडिकल प्रवेश परीक्षामे फिजिक्स, केमेस्ट्री आ बायोलोजी 40-40 नंबर माने कुल परीक्षा 120 अंकक होइत छल। हमसब संगे परीक्षा देने रही। परिणाम यैह भेल जे 89 अंक आनि हमरा प्रवेश नहि भेटल। ओहि वर्ष सामान्य केर कट ऑफ मार्क 90 रहल छल। 33 अंक आनि रामजीक एडमिशन डीएमसीएचमे भऽ गेल छल।

– छिया-छिया! ई तऽ अनर्थ भेल।

– ई कोनो अनर्थ नहि भेल बच्चाभाइ! सरकारक पॉलिसी छलै। ओहिपर ककर सक?

– अपने अहाँ सात रंगक बात करैत छी। कखनो मर्डर आ कखनो अनर्थो नहि।

– ओह! ओहि परीक्षामे हमरा नहि भेल रहए से खराब लागल छल मुदा एहि असफलतापर ओहि दिन तामस नहि चढ़ल रहए।

– तखन तामस कहिया चढ़ल?

– तामस ओहि दिन चढ़ल रहए जाहि दिन छओ-सात मास बाद ओहिना रामजीसँ भेंट करए ओकर ब्वॉयज हॉस्टल गेल रही। ओकर तऽ ताले-मात्रा बदलल लागल। ओ आब हर समय हमरासँ पुछि तैयारी कएनिहार हमर सहपाठी नहि रहि गेल छल। ओढ़ल मेधा आ कृत्रिम आत्मविश्वाससँ भरल एकटा मेडिकल छात्र बनि गेल छल जेकरा एकर बड़का गुमान छलै जे पहिल बेरमे मेडिकल प्रवेश परीक्षा कोइ-कोइ क्रेक करैत अछि। हम अपन मेरिटसँ ई अपूर्व गौरव पओलहुँ। हम चुपचाप ओकर आत्मप्रशंसा सुनि रहल छलहुँ, ओकर आत्मविश्वास अकानि रहल छलहुँ जे आब बहुत बढ़ि गेल छल।

– अहाँक एहिपर तामस किएक चढ़ल?

– ओकर आत्मप्रशंसापर तामस नहि चढ़ल। हमर मित्र छल ओ। कतेक पानिमे छल ओ से हमरासँ बेसी के बुझि सकैत छल!

– तखन?

– ओ ई बिसरि गेल जे ओहि परीक्षामे ककरा कतेक अंक आएल छलै। ओकरा यैह ध्यान रहलै जे हमरा ओहि परीक्षामे सफलता नहि भेटल छल आ ओ सफल भऽ आइ मेडिकल छात्र अछि।

– से की कहि देलक?

– कहलक जे तुम फिजिक्स के न्यूमेरिकल्स पर ध्यान नहीं देते हो। इसके लिए तुम प्रो. एचसी वर्मा साहेब की किताब खरीद लो और मन से तैयारी करो। न्यूमेरिकल्सपर ध्यान दो।

– हमरा तड़बासँ टीकासन धरि लहरि गेल जेना साँसे देहमे खौँत बारि देने हो। हम चिचिया उठल रही– तुम किससे बात कर रहे हो होश है न? ओ हमरोसँ बेसी जोरसँ चिचिआएल– हाँजी! पूरा होश है। मैं उस परीक्षा के एक फेलियर से बात कर रहा हूँ जिसे पास कर मैं आज मेडिकल की पढ़ाई कर रहा हूँ। हमरो सहनशीलता जेना जवाब दऽ देने हो– चुप रहो! तुम्हें लज्जा नहीं आई जो मुझे बताने लगे कि यह पढ़ो वह पढ़ो। यह भी भूल गए कि वर्मा साहेब की किताब मैंने ही तुम्हें दी थी। और यह भूल गए तो कोई बात नहीं। यह कैसे भूल गए कि दो साल से तुम मेरे कहे अनुसार पढ़ते रहे और आज मुझे बता रहे हो कि यह करो वह करो। तुम्हें यह भी ध्यान नहीं रहा कि जिस परीक्षा में सफल होकर आज तुम इतराते हुए मुझे उपदेश दे रहे हो उसी परीक्षा में तुझे मुझसे आधे से भी कम अंक मिले थे। याद है न तुझे 33 और मुझे 89 अंक मिला था। जहाँ एक-एक अंक पर दस-बीस छात्र रहते हैं वहाँ तुमसे ढाई गुना से अधिक अंक आया था मेरा। तब भी मुझे यह पढ़ने वह पढ़ने की सलाह देना तुम्हें शोभा देता है क्या?

– अरे तुम तो गुस्सा गए। भाई इसमें मेरा क्या दोष है? यह तो सरकार का आदेश है। नरम पड़ैत ओकर स्वर अभरल। हमरा ओकर ई बात अरघल नहि। हम रूमसँ बहरा गेलहुँ– नहीं ! तुम्हारा दोष नहीं है। दोष मेरे सवर्ण जाति में जन्म लेने का है, मेरे भाग्य का है!

– फेर? अहाँ डाक्टर कोना भेलहुँ? ओकरासँ फेर भेँट-घाँट भेल?

– फेर की! दोसर बेर फेर परीक्षा देलहुँ। एहि बेर नीक अंक आएल। डीएमसीएचमे सेहो एडमिशन भऽ सकैत छल मुदा हम ओकरे डरसँ एतऽ एडमिशन नहि लेलहुँ।

– से की?

– एतऽ रैगिंगमे ओ हमर जान लऽ लितए। एसकेएमसीएचमे लेलहुँ एडमिशन। फेर आइ धरि भेँट-घाँट नहि। बहुत बादमे एक बेर फोनपर गप्प भेल छल।

– से कोन गप्प?

– बाप बीमार रहथिन तखन हमरासँ सजेशन नेने रहए।

– अहाँसँ सजेशन?

– हँ! ई सब अपन ज्ञान आ मेरिट केर सीमा बुझैत अछि ने! कम्प्लीकेशनमे एकरो सभकेँ फारवार्डे डाक्टर चाही। जान सभक कीमती होइत छै ने। तमाशा लागि जेतै जँ अपने वर्गक डॉक्टरसँ देखाएब कंपलसरी कऽ देल जाए।

– कने फरिछाकेँ कहू।

– की फरिछाबी? सुपर स्पेशलाइजेशनमे कोनो रिजर्वेशन नहि छैक। तेँ एहिमे ओकरा सभक उपस्थिति नगण्ये छैक। ईबीसी संवर्गक किछु मेरिटोरियस छात्र एहिमे अवश्य छथि मुदा एससी-एसटी प्राय: नहिए छथि। आब बहुत जोर-शोरसँ एहि सुपर स्पेशलाइजेशनमे सेहो रिजर्वेशन केर माँग भऽ रहल छैक।

– तखन तऽ मेरिट सभक नाशे होयत। खैर, कहिया गप्प भेल?

– हमर एमडी मेडिसिन भऽ गेल छल आ हम तखन कार्डियोमे डीएम करैत रही। ओकर बापकेँ किछु दिन पूर्व दिल्लीमे बाइपास सर्जरी भेल छल आ एतऽ समस्या एकाएक गम्भीर भऽ गेल रहए। तखन फोन नंबर ताकि ओ हमरासँ सजेशन नेने रहए।

– ओकरा सभकेँ अपना किछु नहि अबैत छैक की? तेँ सुनैत छी जे पेटमे कैंची छोड़ि देलक तऽ गॉज-कॉटन भीतरे रहि गेल। एपेंडिक्सक बदला हर्नियाक ऑपरेशन कऽ देलक तऽ प्रोस्टेटक स्थानपर किडनी चीर देलक। हे भगवान्! एहन भुसकौल डाक्टरसँ बचाकेँ राखब।

– से नहि छैक। पैथोलॉजी आ रेडियोलॉजीक एडवांस टेक्नोलॉजी डायग्नोसिसकेँ आसान बना देलक अछि। कैंची वा गॉज-कॉटन ककरोसँ छुटि सकैत छैक। असल खेला छै डायग्नोसिसमे। कोनो कम्प्लीकेशनमे डायग्नोसिस मायने रखैत छै। एहि ठाम मेरिट काउंट करैत छैक।

– ओ आब बुझलहुँ जे ओ सब किएक बड़का डॉक्टर नहि होइत छैक। सिविल सर्जन भले भऽ जाए मुदा अपन खगता पड़लापर देखाओत कोनो झाए मिसरसँ।

– देखै नहि छी जे दरभंगेमे डॉ. द्विवेदी, डा. मोहन मिश्रा, डॉ. एनपी मिश्रा, डॉ. सुनीति सिन्हाक वा पटनामे डॉ. शिव नारायण सिंह सन लीजेन्डरी स्टेटस एहि वर्गक कोनो डाक्टरकेँ आइ धरि किएक नहि भेटल?

– सब मेधाक खेल छियै। एमडी बेरमे तऽ हमरा संगे अन्याय नहि भेल मुदा हमर बैचमेट अभिराम त्रिवेदीकेँ एमबीबीएस थर्ड प्रोफेशनल पार्ट 2मे जेनरल मेडिसिनमे डिस्टिंक्शन भेटल रहै। ओ एमडी जेनरल मेडिसिन करऽ चाहैत छल मुदा पीजी परीक्षामे ओकरासँ कतेक नीचाँवला सभकेँ पीजीमे जेनरल मेडिसिन भेटलै आ एमबीबीएस केर अंतिम परीक्षामे ऑनर्स प्राप्त कएनिहार त्रिवेदी विवश भऽ ऑप्थामे पीजी कएलक। सब रिजर्वेशन केर कमाल।

– ओ तखन फेर दोबारा किएक नहि देलनि परीक्षा?

– सभक परिस्थिति अलग-अलग रहैत छै। साल भरिक समय बहुत लोक बर्बाद करबाक स्थितिमे नहि रहैछ। ओना ओकर मेरिट ओकरा ऑप्थाक लिविंग लीजेंड तऽ बनाए देलकै। कोर्निया ट्रांसप्लांट कएनिहार बिहारक ओ प्रथम आइ सर्जन भेल। पता नहि सरकार एहन अन्याय किएक करैत अछि?

– भोटक कारणेँ। आर की? मेरिट गेल तेल आनऽ।

– मात्र भोटे कारण नहि छै। समाजक वंचित वर्गक उत्थान हो इहो कारण अछि।

– मंडलजी कान पाथने हमरा सभक गप्प बस सुनि रहल छथि। एको बेर टोनो नहि मारलनि। की मंडलजी?

– हम की टोन मारी बच्चाभाइ! हमहूँ एकरे मारल छी।

– अँय! से कोना?

– की कही? जल संसाधन विभागमे हम आ एकटा कृष्णा पासवानजी संगे जूनियर इंजीनियर रूपमे ज्वाइन कएने रही। हम ओहिना रहलहुँ आ ओ प्रोमोशनसँ सहायक अभियंता भऽ गेलाह। हमरा तऽ बुझू जे पराभव भऽ गेल। एक बेर तऽ एहन भेल जे जखन हम सहायक अभियंता भेलहुँ तखन पासवानेजी लऽग ज्वाइनिंग देबऽ पड़ल। ओ ताबत हमर नवका विभागमे कार्यपालक अभियंता रहथि। संगे-संगे गाए चरेलहुँ किशना भेल गोसइयाँ...

– अहाँ हुनका सर कहैत छलहुँ की नहि? प्रणाम करैत छलिएनि की?

– ओना ओ रहथि नीक लोक। हमरा कहियो भान नहि होमऽ देलनि जे हम हुनक अधीनस्थ छी। मुदा सर कहल होइत नहि छल। रसे-रसे सर कहब कहुना शुरू कएलहुँ।

– खराब तऽ लगैत होयत?

– ओह! से सब जुनि पुछू। कहैत छैक जे हुनका सभकेँ समान अवसर नहि भेटल छलै तेँ आरक्षण जरूरी। हमर छोट प्रश्न अछि जे जखन हम सब समान पद आ वेतनपर समान काज शुरू कएने रही तखन प्रोमोशन मात्र हुनकर किएक? इहो नहि जे ज्वाइनिंगमे सीनियर छलाह। हमरासँ नीचाँ बीसम स्थानपर छलाह, आरोप सेहो छलनि मुदा प्रोमोशनमे सेहो हुनका आरक्षण भेटलनि। अजब हाल छै। ई तऽ संविधानप्रदत्त समताक अधिकारक स्पष्ट उल्लंघन अछि। लगैत अछि जे समान अवसरक बात मात्र संविधानक पोथीएमे छैक। हुनका एहि लेल ने प्रोन्नति भेटल जे हमरा अहाँक पुरुखा हुनकर पुरुखा सभक शोषण कएने छलाह। अजब हिसाबक गजब न्याय। हमर पितामह ककरो गारि पढ़लनि, अपमानित कएलनि वा मारलनि वा खून कएलनि ओकरा लेल हमरा न्यायक कोन कानूनसँ सजा देल जा रहल अछि?

– अगुताउ नहि मंडलजी! जखन प्रोमोशनमे रिजर्वेशन अहाँकेँ अनुचित लगैत अछि तखन शुरूमे जे जाति आधारित आरक्षणक लाभ लेलहुँ ओ तऽ सेहो अनुचित भेल ने? कोइ अहाँसँ बेसी मेरिटवला छँटल तऽ हेतै। ओकरा नजरिसँ देखियौ तखन तऽ इहो अनुचिते लागत।

– हँ बच्चाभाइ! ककरो हक छिनब तऽ अनुचित अवश्ये ने। मुदा जन्म-जन्मांतरसँ अभावग्रस्त, चिर कालसँ उपेक्षित, शोषित, दमित, थकुचाएल आ सामान्य संसाधनसँ वंचित वर्गकेँ मुख्य धारामे अनबाक लेल एकर आवश्यकता छैक। एहि नग्न सत्यकेँ स्वीकार करबाक चाही।

– हम अहाँक बातसँ पूर्ण रूपेण आ अक्षरशः सहमत छी। एहन वंचित वर्ग सब जातिमे भऽ सकैछ। ओकर उन्नतिक लेल प्रयास करब सर्वथा उचित। ओकरा सभकेँ पढ़ाइ-लिखाइ, स्कॉलरशिप, कोचिंग, हॉस्टल इत्यादिक व्यवस्था होएबाक चाही। एहन सभटा उपाय हो जे एहि वर्गक छात्र सेहो सामान्य वर्गक छात्रसँ स्वस्थ प्रतिस्पर्धामे सक्षम बनि सकए।

– ई तऽ होइते छै। प्राथमिक विद्यालयसँ छात्रवृत्ति, प्रत्येक नीक कोर्समे रिजर्वेशन, ओहि ठाम विशेष सुविधा, ओतएसँ निकलू तखन रिजर्वेशन, फेर अत्याचार अधिनियमक संरक्षण! आब आर की चाही?

– आरंभिक सुविधाक विस्तार! आर किछु नहि।

– आब अपने गामक हाल देखू। रामावतार यादवक बेटा बीए पास भेल। कतहु नोकरी नहि भेटलै। ड्राइवर सिपाहीक नोकरीक लेल चारि लाख

मँगने रहए दलाल। कतऽसँ दितए तँ नहि भेलै। आब बस चलबैत अछि। राम भरोस रामक बेटा चंसगर छलै। चारि कोस रोज साइकिलसँ जाइत-अबैत बिरौल कॉलेजसँ बीए कएलक। कतेक ठाम फार्म भरलक आ परीक्षा देलक। किछु नहि भेलै। धन्य मुखियाजी जे अपन घरहटमे घटैत एक धुर ओकर घरारी लऽ ओकरा पंचायत शिक्षक बना देलनि। नहि तऽ ओ सेहो ओहिना रहितए।

– यैह अछि आरक्षण केर प्रभाव। आरक्षणसँ एकटा नव वर्ग तैयार भेल। नोकरी भेटल। रहन-सहन नीक भेलै। धिया-पुताक पढ़ाइ-लिखाइ नीकसँ भेल। सब सुख-सुविधा भेटल। आर्थिक, सामाजिक आ मानसिक स्तर नीक भेलै। हिनका सभक संततिकेँ फेरसँ आरक्षण केर बैसाखी भेटल। गामक गरीब-गुरबा हिनकर संतति सभसँ प्रतिस्पर्धामे सकि नहि सकल। एक्का-दुक्का एहि दौड़मे सफल होइत ओहि विशिष्ट वर्गक अंग बनैत रहल मुदा फेर ओकर संतान.. फेर ओकर संतान...। आजादीक बाद आब तऽ एहि विशिष्ट वर्गक चारिम पीढ़ी तैयार भऽ गेल। एहि वर्गक आम पीढ़ी अखनो ओहने अछि।

– एहि विंदुपर तऽ हम सब नहि सोचने रही। ई तऽ फेर ओहने स्थिति आबि गेल जाहिमे आरक्षण केर आवश्यकता समझल गेल छल।

– हमर नेताजी सब कहैत छथि जिसकी जितनी साझेदारी उसकी उतनी हिस्सेदारी। इहो तऽ सोचल जएबाक चाही ने?

– हँ यौ। अवश्य सोचल जएबाक चाही। तखन केंद्रीय बजट जतेक लाख-करोड़क होएत ओही अनुपातमे हुनका सभकेँ टैक्स रूपमे अपन हिस्सेदारी सेहो देबाक चाही। जे वर्ग जतेक टैक्स देत ओहि वर्गक लेल एकरे अनुपातमे विकास काज होएत। एहि सिद्धांतकेँ टैक्स दैत काल सेहो मानल जएबाक चाही।

– केओ नहि मानत एकरा। देखू, ई एकटा जुआएल प्रश्न अछि। जखन जातीय जनसंख्याक आधारपर आरक्षण भेटत तखन लोक इन्नोवेशनकेँ किएक तरजीह देत?

– से तऽ सत्ते! जखन जाहि वर्गकेँ आरक्षणक लाभ भेटैत अछि ओ सब एकर समर्थनमे रहैत छथि आ जे जे एहिसँ प्रभावित होइत छथि हुनका सभकेँ ई फुटली आँखि नहि सोहाइत अछि। आखिर एकर की उपाय छैक?

– उपाय तऽ छैक मुदा ओ करत कोइ नहि?

– की उपाय?

– आरक्षण केर शर्त्त लगाओल जाए जे एक बेर जँ पिताकेँ आरक्षणक लाभ भेटल तखन ओहि वर्गक नोकरी लेल हुनक संततिकेँ एकर लाभ नहि भेटत। ओहिसँ उच्चतर वर्गक लेल लाभ पूर्ववत् भेटैत रहत।

– आरक्षित वर्गमे तैयार भेल ओ विशिष्ट वर्ग एकरा कोनो हालतमे नहि मानत।

– निश्चय नहि मानत। अनारक्षित वर्ग आरक्षणकेँ अखनो कहाँ उचित मानैत छथि जे ओ सब मानि लेताह। मुदा एहिसँ समानीकरण केर गति तीव्र भऽ सकैत अछि। एहिसँ अवसरक समानताक क्षितिज विस्तृत भऽ सकैछ।

– यौ डॉक्टर साहेब! हमसब कतऽ रही आ घोघाँउजमे कतऽ आबि गेलहुँ। अहाँक मर्डरवला बातमे व्यतिक्रम आबि गेल। ओकरा फेर बढ़ाउ। मर्डर भले नहि कही मुदा अन्याय कहबामे कोनो भाँगठ नहि।

– एहन कृत्यकेँ कुकर्म किएक नहि कही?

– अहाँक बातमे दम अछि। अन्याय तऽ निश्चित कहि सकैत छी एकरा। अहाँक कथा तऽ हमर आँखि खोलि देलक।

– दोसर मर्डर केर कथा कहल जाए डाक्टर साहेब!

– ओह! की कही? एहि बेर हमर नहि हमर बेटीक अरमान सभक मर्डर भेल।

– फेर सस्पेंस आबि गेल। एहि रोचक कथाकेँ आगू बढ़ाउ।

– भेल यैह जे बेटी एमबीबीएस कएलनि आइजीआइएमएससँ। ऑप्थामे ऑनर्स भेटल छलनि। अपनो इच्छा रहनि जे एहीमे एमएस करी। रैंक सेहो ठीक-ठाक छल। पहील काउंसिलिंगमे नहि भेटलनि। दोसर बेरमे सेहो नहि भेटलनि। हमरो आश्चर्य लागल। जाहि तथ्यसँ अवगत भेलहुँ ओ बहुत खतरनाक रहए।

– एहिमे की खतरनाक रहत? अहाँ अनेरे हमरा सभकेँ भटका रहल छी।

– भटका नहि रहल छी। तथ्य उद्घाटित करैत छी। सुनब तखन चकबिदोर लागि जाएत।

– जे हो, मुदा जिज्ञासा तऽ बढ़िए गेल अछि। सरिपहुँ रोचक! आब जिज्ञासा शांत करू।

– कंपेंसेशन!

– ई की होइत अछि? किनका कोन नुकसान भेल जे कंपेंसेशन भेटत!

– एहि समस्त प्रक्रियामे नुकसान होइत छैक सामान्य वर्गक छात्र सभक। संभव जे हुनका सभकेँ किछु कंपेंसेशन केर प्रावधान भेल हो। की यौ डॉक्टर साहेब?

– नहि! ई कंपेंसेशन भेटैछ कोटा वला सभकेँ।

– आश्चर्य! कने फरिछाउ एकरा।

– देखू मानि लेल जाए जे पटनाक सभ मेडिकल कॉलेजमे ऑप्थामे एक-एक सीट जेनरल अछि आ एक एक सीट विभिन्न कोटाक लेल आरक्षित अछि। खेल एतहिसँ शुरू होइत अछि। कल्पना कएल जाए जे ईबीसीक कोनो तेजगर छात्रक सामान्य रैंक 15म अछि आ ओकर अपन इच्छा अछि जे हम जेनरल मेडिसिनमे पीजी करी।

– तखन ओ करत। एहिमे नव कोन बात?

– नव ई बात जे पहिल काउंसिलिंगमे ओ सामान्य सीटपर ऑप्था भरि देत। सामान्य सीट लॉक। अर्थात् ओहि कॉलेजमे ऑप्था सामान्य संवर्गक लेल समाप्त। ओ फेर दोसर-तेसर काउंसिलिंगमे कतहु दोसर ठाम जा सकैत अछि तेँ एकटा आर सीट इबीसी/ओबीसीक छात्रकेँ कंपेंसेशन देल जाइछ। फेर अगिला काउंसिलिंगमे ओ छात्र अपन सीट छोड़ि जेनरल मेडिसिन लऽ लेत। ताबत सामान्य वर्गक छात्र जेहन-तेहन सीटपर एडजस्ट कऽ लेने रहत। एससी-एसटीमे सेहो एहि कंपेंसेशनक प्रावधान अछि मुदा ओकरा सभक रैंक सामान्य छात्र सभसँ प्रायः नीचे रहैत छै तेँ ई खेला मात्र ईबीसी/ ओबीसी वर्गमे होइत अछि। एकटा गिरोह सक्रिय अछि जे सीट छेकि अपन वर्गक सीट बढ़बैत अछि। बेटीकेँ ऑप्था नहि भेटलै आ ऑप्थाक जे सीट मैट्रिक्समे जेनरल सीट छल ओहिपर हमर बेटीसँ पचास रैंक नीचाँवला ईबीसी छात्रक प्रवेश भेल। आइजीआइएमएसमे सीट मैट्रिक्समे एक जेनरल सीट रहलाक बादो एहि कंपेंसेशनक फेरमे एमएस ऑप्थामे एकहुटा जेनरल छात्रक प्रवेश नहि भेल।

– एना होइत छैक की? ई तऽ साँचे अनर्थ अछि।

– एहने भेल अछि। यैह होइत अछि।

– हाइकोर्ट केओ किएक नहि गेल? एक मिनटमे टुटि जेतै।

– ओतेक आसान नहि छैक। एकर गणितकेँ तेना ने ओझरा देलक जे न्यायालयमे सेहो ई नहि हटल। सहीसँ तथ्य नहि राखल गेल।

– बड़का जान मारुक अछि ई कंपेंसेशन!

– की कहै छी बच्चाभाइ! ई तऽ मर्डरे छी ने?

– हौ, जेना लगैत अछि जे अभिमन्यु एक बेर फेर चक्रव्यूहमे घेरा गेल अछि। आगूक बाट नहि देखा रहल छै ओकरा।

– नहि यौ बच्चाभाइ! देखै नहि छी जे बियाहमे जातिक बंधन कोना टुटि रहल छै? एक दिन ई जातीय व्यवस्था खत्म भऽ जेतै।

– ताधरि की अभिमन्यु चक्रव्यूहेमे रहतै? चक्रव्यूहमे एक दिन ओकर वध भऽ जेतै।

– नहि बच्चाभाइ! मेधाक मान कहियो ने कहियो अवश्य बढ़तै। एकरे बलपर अभिमन्यु एहि चक्रव्यूहकेँ एक दिन अवश्य ध्वस्त कऽ देतै।



[कोलकाता, 16 अक्टूबर 2023]

एकटा एहनो प्रतिकार

ओहि दिन जेना निशी एकदम हड़बड़ाएल रहए। डिशवाशर जकाँ ओकर हाथ चलैत छल। थारी-बर्तन सभक ढनमनीक तेज आवाजसँ ओकर हाथक तीव्र गतिक अनुमान होइत छल। चौका-बर्तन तुरंत चमकि गेल। घरमे झाड़ू लगबैत काल ओ नहु-नहु बाजलि– "आंटी! संभव जे आइ साँझमे हम नहि आबि सकी। जे जरूरी काज होइ से अखने करा लियऽ।"

हमर मोन निशियाक पाँचे बजे भोरमे आबि कॉलबेल जोर-जोरसँ टिपब आ ओकर घंटीक लगातार घनघनएबाक कारणेँ नीन टुटलासँ खौँझाएल रहए। अहुना निशिक माए नीलम बीच-बीचमे छुट्टी कऽ दैत छल। कहियो माए बीमार, कहियो डनियाही सासुक गुण झिकबाक लेल एहि ओझासँ भेंट तऽ ओहि गुनीसँ भेंट, कखनो कोनो पावनि तऽ कखनो कोनो व्रत! कोनो ने कोनो भगलसँ हफ्तामे एक ने एक दिन टल्ली मारबे करैत छलि। एम्हर दू दिनसँ कतहु गेल अछि आ काजपर दुनू साँझ निशिए अबैत अछि। जँ इहो नहि आएल तऽ बड़का आफत! हमर खौँझाएल मोन आर पिता गेल। बिछानेपरसँ पुछलहुँ– "आइ फेर नानीक मोन गड़बड़ छौ की! माए की सिखा पठओने छौ?"

"माएक सुग्गा आइ उड़ाँत भऽ गेलै आंटी। आब ओकर किछु नहि सुनबै। जँ साँझमे हम नहि आबी तऽ बुझबै जे सुग्गा फुर्र भऽ गेलै।" आब हम चौंकि गेलहुँ। नीन उड़ि गेल। हड़बड़ाकेँ उठि बिछानेपर बैसि गेलहुँ। हॉलसँ झाड़ू लगबैत निशि हमर रूममे आबि गेल रहए। निशिकेँ बच्चेसँ देखैत रही मुदा आइ खूब गौरसँ देखलहुँ। तेरह-चौदह वर्षक सुखाएल-नेराएल निशिक देहपर एको रत्ती माँसु नहि। माए जकाँ एकरो पकिए रंग! धिए-पुता जकाँ लागए। ई छौंरी फुर्र हेतै?

"ई की बजैत छेँ। ककरा संगे एहन दोस्ती भेलौ जे विधवा माएकेँ छोड़ि फुर्र होइपर बिर्त छेँ?" हम शंकित भऽ गेल रही।

“जा आंटी! अहाँ की सब सोचि लैत छी!” निशि ठिठिआए लागलि। झाड़ू लगा आबिकेँ हमरे संगे बेडपर बैसि गेल।

निशि बच्चेसँ अबैत छल। ओकर माए चारि-पाँच घरमे चौका-बर्तन करैत छथि। हमरो घर करैत छथि। मोन पड़ि गेल ओ दृश्य जखन पहिल बेर नीलम हमरा ओतए आएल छलीह।

बीस-पच्चीस वर्ष पूर्व खुशीलाल पंडौलक सलेमपुरसँ किनको संग पटना आएल छल। नौबतपुरक अर्जुन महतो सेहो ओहि ठाम काज करैत छल जतऽ खुशीलाल। दुनू एकहि जाति। परिचय प्रगाढ़ भेलै आ आन-जान शुरू भेलै। कहू जे ओकरा अर्जुन महतो पोल्हा लेलकै आ एक दिन खुशीलाल महतोक बियाह नीलम संग भऽ गेलै। खुशी एतहि बसि गेल। ठीक-ठाक समय बिति रहल छलै। दू बहिन गुड़िया आ निशिपर एक भाएक जन्म भेलै। हँसी-खुशी जीवन जिबैत रहए सब कि एक दिन जेना भगवान् सहसा अपन इंद्रजाल समेटि नेने होथि। एकटा पियाक ड्राइवर खुशीक देहपर गाड़ी चढ़ा देने छल। एक मर्दपर आश्रित संसार ओकरा गेलाक बाद कोना भड़भड़ाकेँ खसि पड़ैत अछि से प्रत्यक्ष देखि रहल छलहुँ। जाहि दिन खुशीक एक्सीडेंट भेल छल ओहि दिन हमहूँ सुनने रही। छोट-छीन जमा पूँजी सब इलाजमे उड़ि गेलै। ने जान बाँचल आ ने पाइ। नैहर किछु दिन संग देलक फेर हाथ खींचए लागल। नीलम एहि फर्ककेँ अकानि लेलनि। हमरे मुहल्लामे रहैत छलीह। जाइत-अबैत देखैत छलहुँ। ओ हमरे सब जकाँ गृहिणी छलीह। ओ कतहु कोनो काज नहि करैत छलीह। घरवला ठीक-ठाक कमाइत छल। एकटा अस्पतालमे काज करैत छल। नीलमक भाग्यमे कहियो छोटछीन राजभोग छलै। मुदा आब परिस्थिति बदलि गेल छल। जखन बुतातपर आफत आबि गेलै, मकान मालिक घर खाली करबाक लेल कहि देलक, धिया-पुताक स्थिति खराब रहए लागल, जे दोकानदार पहिने सहजतासँ उधार दैत छल से पलटि गेल रहए तखन नीलम दिन-दुनियाँक हाल बुझलक। ओहि दिन छौंराक मोन खराब छलै। जाहि अस्पतालमे खुशी काज करैत छल नीलम अपन नेनाकेँ ओतहि लऽ गेल। डाक्टर देखिकेँ दबाइ लिखि देलनि, पाइ नहि लेलनि मुदा दबाइवला दोकानदार उधार दबाइ नहि देलक। ननकिरबाक देह बोखारसँ धिपल छलै। तखन ओहि दिन नीलम साहस करैत हमरा ओतए आएल छलीह। सब खेरहा सुना किछु टाका मँगलनि। खुशीलालक गामक नाम सलेमपुर सुनि हमरो सहानुभूति भेल। हमरो नैहर पंडौल लऽग कुआ कमलपुर। निशि सेहो कोरेमे छलै। मात्सर्य अभरि गेल। हमरो चौका-

बर्तन लेल एकटा दाइक आवश्यकता छल। छौंराकेँ क्रोसीन सीरप देलियै। कनी कालमे बोखार उतरि गेलै। हम नीलमकेँ राखि लेलहुँ। फेर अपने अपार्टमेंटमे दू ठाम आर काज धरा देलियै। ओकर जीवन कहुना पटरीपर आबि गेलै। साहस तऽ वैह कएने छल। एक गृहिणी कोना एक व्यक्तिक अवसान बाद दोसराक घरमे चौका-बर्तन करएवाली दाइ बनैत अछि, एहन विवशतामे ओकर केहन मन:स्थिति होइत छै से देखि रहल छलहुँ हम। हम इहो प्रत्यक्ष देखि रहल छलहुँ जे कोना एक निरक्षर महिला एहनो विकट परिस्थिति अएलापर अपन साहससँ परिवारक सहारा बनैत छैक! नहि करैत तऽ के करैत! माए तऽ माए होइत छै, करऽ पड़तै।

निशि काजपर पहिने माएक संगे अबैत रहए। आब जखन माए कोनो कारणवश नहि आबि सकैत छलि तखन निशि आबिकेँ हमर काज सम्हारि दैत छल। हमरा बहुत आदर दैत छल। पता नहि किए बेर-बेर हमरा अन्नपूर्णा कहैत छल।

अपन गाम सलेमपुर ओ कहियो नहि देखने छै मुदा हमरासँ सदिखन अपन गामक विषयमे पुछय। एक दिन कहने छल जे बापक बड़ सेहंता रहए जे एक बेर सभकेँ लऽकेँ अपन गाम जाइ मुदा से नहि भेल। विधाता बाम भऽ गेलथि। निशि हमरा मैडम नहि कहि आंटीए कहय। ओकरा सभक मानब रहए जे जँ हम ओहि विपत्तिमे संग नहि दितियै तऽ ओ सब बिलटि जएतै। तेँ ओ सब हमर विशेष ध्यान राखए, बेर-सबेर आबिकेँ काज सम्हारि दैत रहए। हम सेहो ओकरा मानैत रही। छोटकीक उतरन ड्रेस दियै, कहियो किछु दऽ दियै तऽ कहियो बचलाहा नीक-नुकुत खुआ दियै। हम यैह सब सोचैत रही। हम सोचमग्न रही कि निशिए टोकलक– "की सोचए लगलियै आंटी?"

"हमरा तऽ आश्चर्य लागि रहल छौ! तोँ की कहि रहल छेँ? स्पष्ट कह! डरबाक कोनो काज नहि छै।" हम सम्हारबाक प्रयास कएलहुँ।

"दस घर चौका-बर्तन केनिहारि दाइक बेटी असमये बुझनुक भऽ जाइत छै आंटी। ओकरा कथीक डर! हमरा सभकेँ माए पढ़ा-लिखा नहि सकलै मुदा हम अपन हित-अहित खूब बुझै छियै।"

"तखन फुर्र होइबाक कोन बात?"

"लोक घरसँ फुर्र होइ छै बियाह करबाक लेल आ हम भागबै बियाह नहि करबाक लेल।" सुनैत मातर हमर माथमे जेना चकरी पैसि गेल हो।

"की भेलै से कह! देखै छी जे हम की कऽ सकैत छी।" हमरा मुहसँ कहुना बहराएल।

"अहाँकेँ हमर घरक किछु थाह-पता नहि अछि आंटी! एम्हर तीन-चारि माससँ हमर घरमे महाभारत मचल छै। दीदीकेँ पहुना बंबई लऽ जाकेँ झरका देने छल, से पता अछि ने?"

"अँय! तोहर मम्मी कहने रहथि जे ओ खाना बनबैत काल अपने झरकि गेल छल।"

"झूठ कहने छल मम्मी! साँच यैह छै जे ओ जनपिट्टा खाना बनबै काल दीदीक माथपर पाछूसँ मटिया तेल उझिल देलकै। स्टोवसँ पूरा आगि पजरि गेलै। वैह पपिआहा दीदीकेँ झरका देने छल।"

"हे भगवान्! हमरासँ पाइ लेलक जे बेटीकेँ बचाकेँ आनब। जँ जमायक कारस्तानी हेतै तखन ओकरा फाँसीपर चढ़ेलाक बादे आएब।"

"सब पाइ पतित पहुनाकेँ बचबैमे खर्च केलक। एकरे बयानपर सरधुआक जान बचलै। दीदी तऽ ऊपर चलिए गेलै।" निशि कानि रहल छलीह।

"ओह! तोरा केना पता चललौ?" हम पुछलियै।

"एक दिन खूब पीने रहए। ओ हमरा फोन कऽ हमर चेस्टरक साइज पुछलक। हम माए-बहिनकेँ गरियाकेँ उकटि देलियै। तखन निसाँमे बाजल जे स्टोव और गुड़ियापर एक टीन मटिया तेल डालकर जला दिया। अब तुमसे मेरा बियाह होगा। मम्मी मान गई है। अब नया माल मिलेगा मुझे! तभी तो ब्रेसियर का साइज पूछता हूँ। तुम्हारे लिए वही ब्रा लाऊँगा जो यहाँ मुम्बईमे हिरोइन सब पहनती हैं।" कहैत निशि कानए लागल।

"हे भगवती!" हम अवाक् ! की सोचने रही आ की सत्य छल! तेसरक मुहसँ सुनब आ स्वयं अपन कानसँ सुनबमे बहुत फर्क छै! किछु काल बाद निशि स्वयं शुरू भऽ गेल–

"हमहूँ खूब गारि पढ़लहुँ। कहलियै जे आउ ने पटना! ओहिना नहि अहाँपर सुतलेमे एक टीन मटिया तेल ढारि सलाइ खररि देलहुँ तऽ हम अपन बापक बेटी नहि! ओहि दिन निर्णय लेलहुँ जे भीख माँगिकेँ जी लेबै मुदा एहि बहुखौकासँ बियाह नहि करबै।"

"मम्मी की कहै छौ?"

"मम्मीक मोन हरि लेलकै बेलधुक्का! ओकरे बात बजै छै जे बियाहमे किछु खर्चो नहि हेतै आ ओकर घरो बसि जेतै।"

"ओह! ई कारण छै! हम देखै छी!"

“आब की देखब आंटी! आब बहुत देर भऽ गेल छै।” कहैत ओ अपन मुड़ी झुका लेलक।

हम बोल-भरोस देलहुँ तऽ ओ कानए लागलि। कोनो माए कोना कसाइ भऽ सकैछ! खर्चक कारणेँ बेटीक सपना सुड्डाह करबा लेल तैयार! हम यैह सब सोचैत रही कि धम-धम करैत ओकर माए पहुँचि गेल।

“एतेक कहीं देर भेलैए। हम सबठाम ताकि-हेरि आबि रहल छी। चल जल्दी। भोरमे नौबतपुर जाना है।” ओ हड़बड़ाएल छल। हम किछु पुछबाक उपक्रम करैत रही कि निशि हाथ दाबि सप्पत दऽ देलक। हमर वाक्य मुहेमे रहि गेल। निशि माएक संग चलि गेलीह। हम निरीह जकाँ ओकरा जाइत देखैत रहलहुँ।

भोरे पाँचे बजे कॉलबेलक लगातार घनघनीसँ नीन टुटि गेल जेना कोइ दुनू हाथेँ खूब जोर-जोरसँ स्वीच दबा रहल हो। गेट खोललहुँ तऽ हकासल-पियासल नीलम ठाढ़ छलीह।

“निशिया नाक कटा देलक। रातिए पता नहि घरसँ कखन निपत्ता भऽ गेल! सौंसे दुनिया छिछिया एलहुँ ओकर थाह नहि लागल” ओ हाक्रोश करैत छलीह।

“की भेलै? किए भागल? किछु कहि देलहुँ की?”

“हम किछु नहि कहलियै। एम्हर किछु दिनसँ ई हेहर जकाँ करैत छै। किछु कहियौ तऽ पकठोस जकाँ जवाब दैत छै। एकर मति फिरि गेल छै।”

“से की ? की केलकै ?”

“हम कहलियै जे गुड़ियाक बियाह केहन धूमधामसँ केने रही। पलंग, सोफासेट, ड्रेसिंग टेबुल, गहना-गुड़िया सब देनहि छी। गुड़ियाक मुइलाक बाद पाहुन केहन मतंग जकाँ एम्हर-ओम्हर छिछिआएत रहैत छथिन। हुनकेसँ बियाह कऽ लेतै तऽ हुनको घर बसि जेतै, हमरो किछु आर देबय नहि पड़त। से नाकपर माछीए नहि बैसऽ दैत छै ई छौंरी! हमर तऽ प्राण कंठमे आबि गेल अछि।”

“अखन ओकर अवस्थे की छै। बाल विवाह कराएब अपराध छै। जहल जाए पड़त।” हम किछु प्रयास कएलहुँ।

“किछु नहि हेतै। अखने तऽ मात्र दू सय टाकामे आधारकार्डमे ओकर उम्र पंद्रहसँ अठारह कराकेँ अनने छी। जतय दू सय टाकामे उम्र बदलि जाइत हो ओहि ठामक पुलिस पाइपर कोनो केस होमए देतै की? हम सभटा सल्तनत कऽ देने छी मुदा ई किछु सुनिते नहि छै।”

“ओकरा मंजूर नहि अछि तऽ ओकर बियाह करब उचित नहि।”

“हम ओकर उचित-अनुचित बुझै छियै। ओकर अखन बचपना छै। नहि बुझै छै।”

“बचपना छै तखन बियाह किएक करऽ चाहैत छी? सेहो ओकर इच्छाक विरुद्ध। ई महापाप छै।”

“पाप आ पुण्य अहाँ सभक लेल छै दीदी! बिनु बापक बेटी लेल कोनो पाप नहि छै। जे भऽ जाए छै सैह पुण्य छै।”

“समझा-बुझाकेँ देखल जा सकैछ।”

“जे समझाबै छै ओकरे लुलुआ लैत छै। उकटि दै छै। हम नैहर लऽ गेल रहियै जे बूढ़ नानाक बात सुनतै। ओ कहलनि तखने निशिया एक रूममे केबाड़ बंद कऽ चिचिया-चिचिया सभकेँ गारिसँ तऽर कऽ देलकै। मामी कने प्रयास केलखिन जे गेट खोलि दे तखन ओ चोट्टे कहि देलक जे एतबे बहुखौकाक चिंता अछि तखन अपने बेटीसँ बियाहि दियौ ने! मामी गुम्मी धऽ लेलनि। एक दिन तामसमे तेहन बात हमरा कहि देलक जे हम की बाजी!”

“की कहलकै!

“ओह! से नहि पुछू दीदी!”

“सुनियै तऽ की कहि देलकै?”

“हमरा कहि देलक जे हम फँसि गेल छी जमाय संगे। ओकर सपरतीब देखू जे हमरा कहलक जे तूँही सम्मध कऽ ने ले ओहि भतपेलुआसँ। हम पोखरि-इनार वा गंगाजीमे डुबि प्राण हत् कऽ लेब मुदा ओकरासँ बियाह नहि करब।”

“ओकर प्रतिकारकेँ बुझब उचित। हमरा हिसाबेँ अखन ओकर बियाहक चर्चे छोड़ि देल जाए। कहि देल जाए जे दू साल बाद तोहर बियाह कोनो दोसर लड़कासँ करबै तखने ओ एतै।”

“से कहै छै जे भिखमंगासँ बियाह कऽ दे एक बेर मना नहि करबौ। हम आब अपने पाँच घर कमाइत छी, चारि घर आर काज पकड़ि लेब। भूखे नहि मरबै आ ने ओकरा मरए देबै। बस ओहि भतपेलुआसँ बियाह नहि कर नहि तऽ माहुर खा लेबौ। फेर हमर बियाहक बदला श्राद्ध करिहेँ।”

“एतेक छोट ओकर इच्छा छै एकर सम्मान होएबाक चाही। ओकर निर्णय एकदम उचित छै।”

"तखन तोँही दिहक पटोर, कपड़ा-लत्ता, गहना-गुड़िया, फटफटिआ आ दहेज। गुड़ियाकेँ सभटा देनहि रही से फेर नहि देबय पड़ितए। तेँ हमर एहन विचार रहए। आब तोँही दिहक सभटा।" भनभनाइत निशिक माँ सीढ़ी उतरि गेलि। हमर जवाबो नहि सुनलक।

हम सोचि रहल छलहुँ जे एकटा निरक्षर विवश माए कतेक पैघ अर्थशास्त्री भऽ सकैत अछि। हम स्वयं अर्थशास्त्रमे पीजी कएने छी मुदा एहन सिद्धांत नहि पढ़ने रही। लियोनेल रॉबिंसक अभावक सिद्धांत सेहो एहि माए-बेटीक मानसिक द्वंद्वक ठोस रस्ता नहि सुझबैत अछि। हमरे मोन बेकल होइत रहल। निरक्षर निशि किछु विशेष करबामे सक्षम नहि अछि तथापि अपन बहिनक हत्यारासँ मौन प्रतिशोध लेबाक लेल तैयार तऽ अछि वा कमसँ कम यथासाध्य एकर प्रतिकार लेल सचेष्ट तऽ अवश्य अछि। दोसर दिशि जेकर बेटीक हत्या जमाय कऽ देलक ओकरा क्षमादान दैत ओकर घर बसेबाक लेल ई सक्षम माए तैयार कोना भऽ गेल! ओह! अपन-अपन वृत्त आ अपन-अपन निर्णय। एकमे प्रतिकार दोसरमे जोगार! एकमे भाव दोसरमे अभाव! एकमे दिल दोसरमे दिमाग! अर्थशास्त्री सब फरिआबैत रहथु अपन सिद्धांत मुदा निशि सभपर भारी पड़लीह। तीन-चारि दिन बाद निशि साँझमे सहसा प्रकट भेलीह।

अत्यंत उत्फुल्ल आ प्रमुदित! लगैत छल जेना निशिक रोम-रोम हँसि रहल हो। गोर लागि ठिठिआए लगलीह– "हम जीति गेलियै आंटी! मंदिरमे एकरा सभक सभटा तैयारी रहिए गेलै। खान-पान, पंडित-पुरहित, गौँआ-घरुआ, बराती-सराती सब ओहिना रहलै आ हम निपत्ता!"

"गेल कतऽ रही?" हम पुछलियै।

"हमर मसिऔत बहिन रहैत छै राजा बजारक मछली गलीमे। मम्मी आ मौसीमे झगड़ा छै। मसिऔत बहिन सभक आन-जान हमरा ओतऽ नहि छै। ओतहि गेल रही। मम्मीक दिमागमे ई बात आएले नहि हेतै जे जेकरासँ एहन भारी झगड़ा छै हम ओकरा ओतऽ जा सकैत छी। तीन दिनसँ एकहिटा नाइटी पहिरने-पहिरने हमर मोन घिनाए लागल। बियाहक दिन तऽ दू दिन पहिने बिति गेल छल। हम पाहुन संगे रोडपर आबि एकटा नाइटी किनैत रही कि भाए देखि लेलकै। हमरा सभकेँ किछु नहि कहलक मुदा चोट्टे रुकनपुरा आबि माएकेँ कहि देलक। फेर तऽ बड़का नाटक भेलै। ललकम-ललका, पकड़म-पकड़ा, झगड़म-झगड़ा, थुक्कम-फज्झति, मारि-पीट, कन्ना-रोहट सब भेलै। एहि ठाम

पता लागल जे भतपेलुआ परोपट्टामे भेल अपन बेइज्जती बर्दाश्त नहि केलक। अपन भेल भारी अपमानसँ ओ निर्णय लेलक जे हम निशिसँ बियाह नहि करब। ओ गुड़ियादीक बियाहमे देल गेल सभटा सामान आपस कऽ देलक। हमरा लगैत अछि जे हम बड़का विजेता छी। एकर बाद हम मसिऔत पाहुन संग एतय आबि गेलियै। दुनू परिवारमे आन-जान फेर शुरू करा देलियै। हम जितलियै ने आंटी?" निशि एकहि साँसमे तीन दिनक कथा सुनबैत छलीह तखने नीलम सेहो अएलीह– "निशिया! तोँ साँचे विजेता छैं गे!"

"निश्चित रूपसँ जीत! सभटा सामान सेहो घुरा देलक ई मात्र जीत नहि ई तऽ महा विजय अछि!" हम उत्साहमे रही। हमरा पता नहि चलल जे कखन हम निशिकेँ अपन सीनामे सटा लेलहुँ। ओ भावुक भऽ गेल छलि।

"एक बेर हमरा अपन गाम सलेमपुर लऽ चलब आंटी? पापाक बड़ इच्छा छलै। अहाँ तऽ ओम्हर अपन नैहर जाइत-अबैत रहैत छी।" पता नहि हमरा नैहरक कोन उद्वेग आबि गेल जे हम निशिकेँ कसिकेँ पँजिया लेलहुँ– "तोरा तोहर गाम सलेमपुर हम जरूर लऽ जेबौ। एतबे नहि, जँ तोहर मोन हेतौ तऽ समय अएलापर ओम्हरे तोहर बियाह सेहो करेबौ। केहन सुंदर मैथिली बजैत छैं।" वातावरण ओहिना हल्लुक भऽ गेल जेना कुहेस फाड़ि सूर्यक किरण चमकि गेल हो।



[पटना, 4 सितंबर 2024]

गोलट

अरुण आ किरणक गोलट कथा स्थिर भेल रानी आ कमलेश संगे। दुनू परिवारक सहमति छलै। एम्हरसँ ई दुनू भाए-बहिन आ ओम्हरसँ सेहो। गोलट माने अहाँ लड़का दियऽ आ एम्हरसँ लड़का लियऽ। किछु करिछाँह वा कहू जे पिंडश्याम रहबाक कारणेँ किरणक कथा कतहु स्थिर नहि होइत छल तेँ अरुणक लेल आएल उपन्यासमे रामावतारजी गोलटक शर्त्त राखि देलनि। श्यामलाल अपन परिवारमे विचार कएलनि। बेटा कमलेश बहिनकेँ आइ आइ टी इंजीनियर लड़कासँ बियाह होएत एहि लेल पिंडश्याम कनिआसँ विवाह करबाक लेल तैयार भऽ गेल। ओ अपने कोनो हाकिम नहि रहए, सिविल कोर्टमे पेशकार छल मुदा बहिनसँ स्वाभाविक स्नेह करैत छल। रानीक बेहतर भविष्यक लेल सहर्ष त्याग कएलक। एक दिनक आगू-पाछू दुनू बियाहक दिन स्थिर भऽ गेल। पहिने अरुणक बियाह भेलै आ फेर किरणक।

किरण बियाहक तेसरे दिन भोरे-भोर परिवारमे हड़कंप मचा देलनि। बेसिनमे सीँथिक सिंदूर धोइत माए देखलनि तऽ दौड़लीह– ई की करै छेँ!

"हम हिजड़ा संग नहि रहब! ओ साफ नपुंसक अछि। कोनो जोकरक नहि! बियाहसँ पहिने पता नहि केलही तऽ भोग आब।" दृढ़तापूर्वक किरण माएकेँ जवाब देलनि आ पूरा भूषणा सिंदूर धो लेलनि। घीसँ सानल भूषणा सिंदूर हटिते नहि छल। फेर बाथरूम जा कतेक बेर शैम्पू कएलनि आ बाहर आबि गेलीह। माए तलमलाकेँ बाथरूमक गेटेपर खसि पड़लीह। किछु सर-कुटुम्ब अखन एतहि छलथि। सभ निःशब्द आ स्तब्ध! माएक मुहपर पानि छिटल जा रहल छल आ कोइ बीअनि डोला रहल छल। बियाहक हँसी-खुशीक माहौलमे आब कन्ना-रोहट पसरि गेल छल। भारी झंझट बजरि गेलै। कोइ कहै वरकेँ मारि-पीटकेँ भगाओल जाए जे सभटा जनैत ओ बियाह किए कएलनि, केओ बाजै

जे बान्हिकेँ राख आ एकर बापकेँ बजाओल जाए। दुनूक इलाज करब! स्थिति विस्फोटक भेल जा रहल छलै। किरण अपने कोबराघर जा वरकेँ कोबराक पाछूसँ बाड़ी होइत विदा कऽ देलनि। किछु काल बाद माएकेँ होश भेलनि आ ओ बेटाकेँ फोन लगा देलनि। ओतए तखन चतुर्थीक विधि शुरू भेल छल। अरुण कनिञाक गुहल जाँत खोललनि, आँगनमे पालोपर बैसा सिरहरक जलसँ दुनूक स्नान कराओल गेल छल। कपड़ा-लत्ता बदलि दुनू कोबराघर आएल आ पंडित भगलू झा चतुर्थीक विधि शुरू करा देने रहथि। वेद मंत्रोच्चार संग अरुणसँ विधिपूर्वक पूजन करा रहल छलाह। अग्निमे आहुति देल जा रहल छल। माए-बेटाक गप्प अकानि गीतगाइन आ विधिकरी शंकित भेलीह। ओम्हरसँ जाहि हालमे छेँ ओही हालमे अएबाक स्पष्ट आदेश छल। इहो कहल गेल जे दनऽही कालमे कपड़ा बदलि पोखरिएसँ भागि जो वा बाथरूम जएबाक लाथे ओतऽसँ कहुना निपत्ता भऽ एतय आबि जो। एहि बियाहक कोनो मोजर नहि! तोहर दोसर बियाह करबौ! यैह तोहर बहिनक प्रतिशोध छियौ। कोबराघरमे होम भऽ रहल छल। पूरा घर गाम भरिक स्त्रीगण आ कुमारि कन्या सभसँ भरल छल। धुआँसँ सब बेदम भेल छल। ओम्हरसँ हर दू मिनटपर फोन आबए। स्त्रीगण चाउल करथि जे माए बड़ चाँकि रखैत छथि। अखनो जुआने छथि की? ललन भाइजीसँ भेंट करा दियौ ने! किछु गोटे भभाकऽ हँसि देलनि मुदा एम्हर तऽ अरुणक हालत खराब छल।

ओम्हर कमलेश कहुना टोलसँ ससरि सकलाह। बियहुती वरकेँ तेजीसँ चलैत देखि किछु लोक पुछबो कएलनि। ई तेज चलबाक लेल डॉक्टरक एडभाइस कहि कहुना गामक सीमान पार कएलनि। हकमैत छलाह। एकटा पाकड़िक गाछतर सुस्तएबाक लेल बैसि गेलाह। जेबीमे किछु छलनि, भेलनि जे मनीबैग अछि। देखलनि तऽ पर्स नहि मोबाइल छल। अपन एक संगीकेँ फोन कएलनि– बाइकसँ जल्दी एतऽ आबि जो। किछु पाइ संगमे राखि लिहैं। किछु काल बाद फेर माएकेँ फोन लगा सभटा खेरहा सुना देलनि। हुनक माए बेटीक दुरागमनक भार सँठैत छलीह। आब एहि ठामक स्थिति विचित्र! जे हड़कंप ओतऽ मचल छल ओहने बिड़रो एतहु उठल। माए दौगल कोबराघर गेलीह तऽ चतुर्थीक सब विधि संपन्न भऽ गेल छल मात्र सिंदूरदान बाँचल छल। हुनके बेटीक मुह झँपबाक छलनि। ओ बैसि गेलीह। रानीक केशपर घी लगाओल गेल छल। ओ ओकर मुह झँपलनि आ चतुर्थीक सिंदूरदान भेल। ओ बेटी-जमायक

चुमान कएलनि। मोनमे तऽ विचित्र हलचल मचल छल। कहुना थड़थड़ाइत हाथसँ विधि संपन्न कएलनि। ओना जमायकेँ सभटा विधि करैत देखि किछु संतोष होइनि तथापि धुकधुकी थमि नहि रहल छल। होइनि जे कखनो खसि पड़ब। चुमान बाद पचीसी खेल भेल आ वर-कनियाँ संगे दनऽही लेल पोखरि गेल। दनऽहीमे तीनू संगे स्नान कऽ आँगन अएलीह। बेटाक सुरता अबिते जेना अखन धरिक हिम्मत जवाब दऽ देने हो ओ आँगन अबिते खसि पड़लीह। केहन विकट स्थिति रहए हुनक! बेटाक जीवन बर्बाद भऽ गेल छल आ ओ कानियो नहि सकैत छलीह। बेटीक विधि जे करबाक छनि। अन्तस केर तूफान समेटने बेटीक चतुर्थीक विधि करैत रहलीह। आँगन अबिते भोकारि पाड़िकेँ कानए लगलीह। दाँती लागि गेलनि। लोक चम्मचसँ दाँतपर बैसल दाँतकेँ अलग करैत छल। तखने डब्लूक बाइकपर बैसि कमलेश आँगन आबि गेलाह। माएक हाल देखि स्वयं कानए लगलाह। सहसा माए उठिकेँ ठाढ़ भऽ गेलीह। बेटाकेँ कनैत देखि जेना अपन दुख बिसरा गेलनि। बेटाकेँ दुनू हाथसँ पकड़ि बजलीह– सब ठीक भऽ जेतै बाउ! भगवती हमरा संग एहन अनर्थ नहि कऽ सकैत छथि!

किछु काल बाद जखन आँगन खाली भेल आ सब कोइ प्रकृतस्थ भेल तखन आगूक योजनापर विचार-विमर्श होमऽ लागल। घरमे लोक विचार करए लागल।

– "ओह! ई गोलट होइते अछि महा खराब।" कक्काक स्वर।

– "तैँ ने आब उठि रहल छै।" पिउसा टोन मारलनि।

– "गोलटमे तऽ जेहने अहाँ करब तेहने हम करब। ओ हमर भाएकेँ छोड़ि देलनि तऽ आब रानीओ हुनकर भाएकेँ छोड़ि दिए।" पितिऔत बहिन बजलीह।

– "ई छोड़ा-छोड़ी कोनो नीक बात नहि। हड़बड़मे गड़बड़ नहि होएबाक चाही!" नीका भाए बजलाह।

– "एतेक आसानीसँ एतेक पैघ आ एहन कठोर निर्णय नहि लियऽ। एहि विषयपर शांत मन आ ठंडा दिमागसँ विस्तृत विचार होएबाक चाही।" पिउसाक स्वर छल।

– "टिट फॉर टैटे एकर निदान अछि पिउसाजी! ओ सब पैघ लोक छथि तऽ की बुझि लेलनि जे जे मोन होएत सैह करब! ई नहि चलतनि। भैया की कम छथि! केहन-केहन अफसर कोर्टमे बिलाइ बनि कऽल जोड़ने ठाढ़ रहैत छै।" छोट भाए देवेश कनी तैशमे बाजल।

– "रानीसँ पुछल जाए जे ओ की चाहैत छै।" श्यामलालजीक मध्यम स्वर छल।

– "ओ की चाहत! जे अहाँ सब कहबै सैह करत!" पिउसी बजलीह।

– "नहि! ओकर भविष्यक निर्णय लेनिहार आब हमसब के?
बियाहि देलियै तऽ आब ओकरे सभकेँ निर्णय लेबऽ दियौ।" पिउसा पिउसी दिशि आँखि तरेड़लनि। ओ शांत भऽ गेलीह।

– "पहिने तऽ कमलेशक विषयमे सोचू जे की करब। ओहिना छोड़ि देल जाए वा एकर दोसर बियाह करा देल जाए। सुलह केर एक प्रयास सेहो कएल जा सकैछ।" बड़का पित्तीक स्वर छल।

– "नहि कक्का! हमर तऽ जाने बचि गेल से भगवतीक महिमा। हम ओतए फेर किन्हु नहि जा सकब। आब हम बियाहे नहि करब। देवेशक बियाह कतहु स्थिर कएल जाए।" कमलेश बाजल।

– "ककर दिन छलै जे अहाँमे भिड़ैत! जाकेँ सभक हाड़-पाँजर तोड़ि देबनि। आइ चाही तऽ अखन जा भौजीकेँ उठाकेँ एतय आनि लेब। के रोकि सकत हमरा!" देवेशक स्वर कड़क छलै।

– "अगुताउ नहि! ओ स्वयं जखन मना कऽ देलनि तऽ जबरदस्ती अनबाक कोन बात छै! रानीक विषयमे सोचल जाए।" कमलेशक शांत स्वर छल।

– "पहिने ओकर विचार लेल जाए। फेर पाहुनसँ पुछल जाए।

तकर बादे एहि विषयपर निर्णय हो!" बापक श्रांत-क्लांत स्वर छल।
रानीकेँ बजाओल गेल। ओ सभक समक्ष स्पष्ट घोषणा कएलनि जे हमरा कोनो समस्या नहि अछि। ओ किन्नर छथि वा कसाइ एहि सभसँ कोनो मतलब नहि। ओ हमरा सिंदूर देलनि तऽ आब हम हुनका कोना छोड़ि सकैत छी? हम हर हालमे हुनके संग रहब।

बात-विचार तखने समाप्त भऽ गेलै। सब जखन एम्हर-ओम्हर भऽ गेल तखन कमलेश कोबराघर जा अरुणसँ भेंट कएलनि। उद्विग्न अरुण कोबरेमे एम्हरसँ ओम्हर टहलैत छलाह। नमस्कार-पातीक बाद दुनू बैसि गेलाह। वातावरण बोझिल छल आ अपन माए द्वारा तत्क्षण आबि जएबाक आदेशक पालन नहि करबाक कारणेँ सदा-सर्वदा लेल त्यागि देबाक मैसेज अरुणकेँ भितरे-भितर मथि रहल छलै। लगै जेना कोनो राक्षस ओकर करेजाकेँ हाथमे लऽ मसलि रहल हो।

व्यग्रतापूर्वक ओ ओतए केर बात पुछलनि। वास्तवमे की भेल छल से पुछलनि। कमलेश कहलनि जे किछु भेले नहि छल तऽ की कहू! बियाहक राति हमरा हुनका भेंटे नहि भेल छल। दू रातिसँ जागल रहबाक कारणेँ दोसर राति हम निन्न पड़ि गेल रही। भिनसरबामे निन्न टूटल तखन कने परिचय-पात भेल आ ओ चलि गेलीह। तेसर राति किछु गप्प-सप्प भेल। फेर आइ भोरेमे ओ कांड कऽ देलनि। अरुण स्पष्ट शब्दमे पुछलनि– "आर यू फिजीकली फिट ऑर नॉट?" (अहाँ शारीरिक रूपसँ पूरा स्वस्थ छी वा नहि?)

– "एबसोल्यूटली! हंड्रेड परसेंट फिट!" (निश्चित रूपसँ! शत-प्रतिशत स्वस्थ!)

अरुण किछु कालक लेल चुप भऽ गेलाह फेर मंद स्वरमे बजलाह– तखन एहन घिनाउन आरोप! आखिर की कारण भऽ सकैत अछि! चिंतामे पड़ि गेलाह। कमलेश कहलनि जे अन्यथा नहि लेल जाए। संभव जे कतहु कोनो एफेयर रहल हो आ ओतए विवाह नहि होएबाक कारणेँ एहन षड्यंत्र भेल हो।

– "एहन तऽ हमरा सभकेँ कोनो जानकारी नहि अछि। ओना आब ई कोनो आश्चर्यक बात रहि नहि गेल अछि। घर-घरमे होइ छै। ओ एक बेर कहैत तऽ हमसब ओतहि बियाह करा देने रहितहुँ। कथामे आबि रहल परेशानी ओ देखिते रहए! कहियो किछु कहलक नहि आ ने हमरा सभकेँ कहियो एहन आभास भेल। ई सत्य नहि लगैछ। ओना की कहल जाए! हे भगवान्! पता नहि की भऽ रहल अछि!"

– "अहाँ की करब?"

– "जे अहाँक बहिन चाहथि! हम हुनका सिंदूर देने छी तऽ ओकर रक्षा करब।" एतेक कहि अपन माताश्री द्वारा पठाओल त्याग करबाक ह्वाट्स अप्प मैसेज अपन मोबाइलमे खोलिकेँ देखा देलनि। कमलेश सन्न रहि गेलाह।

भरि गाम चतुर्थी भोजक नोँत भोरे पड़ि गेल छल। अरुण 51 हजार टाका एहि लेल देने छलाह। देहरि छेकाइ, विधिकरी, गोला पूजा आ अन्य लेल 25 हजार अलगसँ। एहि गाममे कोनो जमाय आइ धरि एतेक टाका चतुर्थी भोज लेल नहि देने छलाह। मुदा हाय रे भाग्य! केहन ई विपत्ति आएल जे घरमे ने भोजन बनल आ ने केओ खएनिहार अएलाह। रातिमे द्विरागमन छल मुदा सेहो संभव नहि भेल। ने दही-माछक भार आएल आ ने कोइ दुरागमनक बरिआती आएल। भोजे दिन उपास! सेहो सासुरमे! ओह! एहन तऽ कहियो भेले नहि छल! ई राति श्यामजीक परिवारपर बड़ भारी छलनि। सब घरमे बिछानपर विमर्शे चलि

रहल छल। ने ककरो पेटमे अन्न आ ने कोनो आँखिमे निन्न। अलग-अलग कक्षमे अलग-अलग लोक अपना तरीकासँ समस्याक समाधान लेल प्रयासरत। सभसँ बेसी व्यग्रता कोबराघरमे! जे आइ कौतुकागार होएतै से कारागार लगैत छल। सपनाक सप्तवर्णी इंद्रधनुषपर जेना बज्रपात भऽ गेल हो! जाहि ठाम चिर संचित सेहंताकेँ साकार होएबाक बात छल, श्यामल बादल जकाँ उमड़ैत–घुमड़ैत अरमान सभकेँ आकार लेबाक क्षण छल, दू देह एक प्राण बनि तन-मन एकाकारक कामना छल, ब्रह्मानंदक साक्षात्कारसँ नव संसार सर्जनाक सपना छल ओहि ठाम नोरक पारावार छलै, अपार दुखक संसार छल, भविष्य अन्हार छल। जेना प्रेमक सागरमे बहैत जहाज कोनो हिमशैलसँ टकरा क्षत-विक्षत भऽ गेल हो आ दुनू अन्हरियाक अनंत सागरमे उब-डुब करैत हो। घरमे चुप्पी पसरल छल मुदा दुनू एक दोसराक व्यग्रता बुझैत छल। मौनक संप्रेषण शक्ति अजीब होइत छै। किछु काल बाद अरुण बजलाह–

– "दुरागमन तऽ नहि भेल मुदा हम काल्हि गाम जाएब। अहाँ की ..."

– "हमहू जाएब।" रानीक दृढ़ स्वर अभरल।

– "खतरा अछि। अहाँक संग दुर्घटना भऽ सकैत अछि। अपमान आ मारि-पीट किछुओ भऽ सकैत अछि। जानो जा सकैत अछि। हम पहिने गाम जा ओतए केर स्थिति देखिकेँ आबि जाइत छी। जँ ठीक रहत तखन आबि अहाँकेँ लऽ चलब।" अरुण प्रस्ताव देलनि।

– "नहि! हम संगे चलब। जे हेतै देखल जेतै।"

– "आ जँ रहऽ नहि देलक तऽ...."

– "कमनिहारिकेँ हटा देबै। हम नौड़िन बनिकेँ हुनके रूपमे रहि जाएब। किछु भऽ जाए हम अहाँक संगे जएबे टा करब। हम हर हालमे जाके रहब।"

– "जिद नहि करी। हमरा देखिकेँ आबए दियऽ।"

– "ई संभवे नहि अछि। अहाँ एसकर ओम्हर गेलहुँ आ पाछूसँ हमर मृत्युक समाद भेटत। से कहि दैत छी।"

हिचकी! नोर!! नोर!!! सब घरमे प्राय: भरि राति एहिना चलल। गेरुआसब नोरसँ भिजैत रहल। बिनु एक शब्दक उच्चारणसँ सब सभक भाव बुझैत रहल। छतपर टकटकी लगओने कतेक जोड़ आँखि ओहि निस्तब्ध रातिमे कतेक नोर बहएलक तकर ठेकान नहि। कहुना प्रात भेल।

अरुण जखन कनिञाकेँ लऽकेँ गाम पहुँचलाह तखन तीन बजैत छल। गाड़ीमे प्रतीक्षा करैत रहलाह जे केओ आबिकेँ रानीक परिछन कऽ घर लऽ जाएत मुदा केओ घरसँ नहि बहराएल। गेटपर गाड़ी लागल रहल आ दुनू गोटे गाड़ीमे ओहिना बैसल रहल। साढ़े तीन बाजल फेर चारि बाजल मुदा अपन ककरो दर्शन नहि। टोल-पड़ोसक धिया-पुता आबिकेँ कखनो गाड़ी तऽ कखनो कनिञा दिशि हुलकी दैत छल। अंतमे अरुण रानीकेँ गाड़ीमे छोड़ि स्वयं दुरुखासँ आँगन आबि गेल। माए देखलनि मुदा एक रूममे जा केबाड़ ठोकि कानब शुरू कऽ देलनि। किरण सेहो ओही घरमे रहए। दुनूक पुक्कीक आवाज अत्यंत भयावह छल। अरुण दादीकेँ देखलनि आ गोर लगलनि। ओ कहलनि जे एहन हालमे कनिञाकेँ किएक आनि लेलही। फेर ओ उठिकेँ लाठी ठक्-ठक् करैत कहुना बाहर अएलीह– "कनिञा! अहाँकेँ केओ नहि उतारत। सभकेँ अहाँक सासु सप्पत देने छथि! तेँ के परिछन करत आ के खोइँछ झाड़त? हम तऽ ई सब कऽए नहि सकैत छी। अपने उतरि जाउ आ घर चलू।"

रानी घोघ तनने कहुना अपने उतरि रहल छलीह। तखने एकटा लड़की पता नहि कतयसँ आबि हुनका पकड़ि ददिया सासुकेँ गोर लगा देलक। हुनके पाछू-पाछू रानी आँगन अएलीह। अगल-बगलक अँगनासँ किछु गोटे सेहो आब आबि गेल छलीह। कनिञाकेँ एक रूममे बैसा देल गेलनि। सप्पत देलाक बादो नीका काकी अँगनाक नीलू सभसँ पहिने आएल छलीह। वैह कनिञाकेँ सम्हारने छलीह। संबंधमे अरुण ओकर भाए लगैत छल। वैह टा संग छल। गाममे आब कतेक लोके रहैत छै जे भीड़ लगितए। ओम्हर पछबरिया घरसँ दू टा पुक्कीक स्वर तीव्रतर होइत रहल। नीलू भाए-भाउजक हकासल-पिआसल दशा देखि व्यग्र भेल। बाड़ीसँ कागजी नेबो तोड़ि अनलक आ गिलासमे शर्बत घोरि भाए-भाउजकेँ देलक। काल्हि भोरसँ आइ साँझ धरि अन्नक एक दाना दुनूक पेटमे नहि गेल छल। ई शर्बत तऽ दुनूकेँ अमृते लागल। रानी शर्बत देनिहारि अपन ननदि नीलूकेँ भरि पाँजमे लैत भोकारि पारिकेँ कानए लगलीह। कनैत रहलीह। फेर किछु काल बाद दुनू गोटे मिलिकेँ भोजन बनओलनि मुदा खएबाक लेल कोइ तैयारे नहि। पछबरिया घरसँ आबि रहल कन्ना-रोहट केर स्वर मंद होइत-होइत बंद भऽ गेल छल। केबाड़ अखन धरि ओहिना बंद। नहि खुजल। नव कनिञा नीलूक सहयोगसँ तैयार भोजन थारीमे परोसिकेँ केबाड़क आगू माँ माँ केर गोहारि करैत रहलीह मुदा केबाड़ नहि खुजल। नीलू सेहो कलपि-कलपिकेँ कहने रहथि–

'केहन पाथर करेज अछि अहाँक चाची! भौजी काल्हिसँ उपासले छथि। अन्न-पानि किछु नहि। कहै छथि जे जाबत माँ नहि खएथिन ताबत नहि खाएब। एनामे तऽ ओ भूखसँ मरि जेथिन। कलपना पड़त। जहिना अहाँ किनको बेटी छी तहिना उहो ककरो बेटीए छथिन। हिनकर कोन अपराधक दंड हिनका दऽ रहल छियै! केबाड़ खोलियौ। अहाँ नहि खएबै तऽ कोइ नहि खाएत। भौजी लारू-बातू भेल पेटकान देने छथि। भैयाक मुहमे सेहो काल्हिएसँ एक दाना नहि गेल छै। केहनो अनर्थ होइ छै, कोइ मरि जाइत छै तैयो पेट कहाँ रुकैत छै चाची!' नीलू कतबो आवाज देलनि, नेहोरा कएलनि मुदा नहि खुजलै केबाड़। किछु सोचि फेर रानी पुछलनि जे एहि रूममे ट्वायलेट छै की? नीलू कहलनि– नै छै। तखन दुनू ननदि-भाउज बंद केबाड़क आगू ओसारापर पटिया बिछा बैसि गेलीह। ई कखनो तऽ खुजबे करत! एतएसँ ताबत धरि नहि उठब जाबत ई केबाड़ नहि खुजत! नव कनिञाक एहन परिछन आ स्वागत कोइ कहियो देखने-सुनने नहि होएत!

राति साढ़े एगारह बजे सिटकिनी खुजबाक आहट भेलै। दुनू साकांक्ष होइत ठाढ़ भऽ गेलीह। केबाड़ खुजिते रानी सासुक पयर धऽ लेलनि। अपन आँखिक जलसँ सासुक चरण पखारि देलनि। सासु किछु बजलीह नहि सीधे बाथरूम दिशि बढ़ि गेलीह। अबैत काल कनिञा फेर पयर धऽ लेलनि– माँ! खा लेथिन ने! मोन खराब भऽ जएतनि। दुनू थारी ओहिना परसल रखले छनि। फेर नीलू आ कनिञा एक-एकटा थारी उठा रूममे लऽ जा टेबुलपर राखि देलनि। किरण फोँफ काटि रहल छलीह। दीदी-दीदी करैत रानी किरणकेँ उठा देलनि। फेर की फुराएल जे अपनेसँ कऽर बना सासुकेँ खएबाक आवेस करैत कऽर हुनक ठोरमे सटा देलनि। सेवा आ समर्पणक एहि भावसँ सासुक आँखि नोरा गेलनि। आइ ने ओ सधवा आ ने विधवा! माथक सेनुर जेना धोखरि गेल हो! पति निपत्ता आ बेटी संग एहन अन्याय! हुनक व्यथा आ दशाक अनुमाने करब मोश्किल! अझक्के ओ हाथसँ रानीक घोघ हटा देलनि। घरमे जेना एकाएक रोशनी बढ़ि गेल हो। कनिञाक आँखिसँ नोर टघरि रहल छल। सासुक आँखिसँ सेहो नोर बहए लागल। चारू आँखि बरसि रहल छल। एहिमे बहुत रास कष्ट जेना भासि गेल हो! किछु काल बाद ओ बजलीह– "नीलू! जो भैयाकेँ खुआकेँ दुनू ननदि-भाउजि खा ले। हमसब खा लैत छी।" दुनू सुनलक मुदा गेल नहि कतहु, ओत्तहि ठाढ़े रहल। कखनो पानि आनए तऽ कखनो गर्म दूध, कखनो पापड़ सेंकि आनए तऽ कखनो तरुआ। किरण आ चाचीकेँ खाइत देखि नीलू

बजलीह– “हँ! भौजीक हरिबासल व्रत खत्म भऽ गेलै। आब हमसब सेहो पारण कऽ लैत छी!” ओकर एहि वाक्यसँ वातावरण किछु हल्लुक भेलै। रानीक सासुरमे पहिल दिन एहिना बितलै।

दू-तीन दिन बाद अरुण अपन नोकरीपर बेंगलुरु जएबाक तैयारी करैत छल। रानीकेँ चलबाक लेल पुछलनि मुदा ओ अखन सभकेँ एहन हालतमे छोड़ि बेंगलुरु जाएब नहि गछलनि। बजलीह– “अहाँ दोसर बेर आएब तखन सभकेँ लऽकेँ चलब। एहि बेर हमरा एतहि रहए दियऽ, किरण आ माँकेँ सम्हारए दियऽ। हुनका सभकेँ जाइ लेल तैयार करैत छी, तखन चलब। बेंगलुरु की भागल जाइ छै!” अरुण सुनलनि तऽ पत्नीक उदात्त भावना सुनि हुनका प्रति आदर बढ़ि गेलनि। ओ बेंगलुरु आबि गेलाह मुदा मोन जेना गामेपर रहि गेल छलनि।

किछुए दिनमे रानी पूरा घर सम्हारि लेलनि। नीलू अक्सर आबथि आ बेसी काल संग रहथि। हमउम्र आ हमजोली ननदि। रानी हुनका प्राणदा कहथि। ओ मानथि जे वैह एक गिलास शर्बत ओहि दिन हमर प्राणक रक्षा कएने छल। दुनूमे खूब बनय। ननदि भाउजिसँ बेसी मित्र! नहि बेस्ट फ्रेंड! किरण अखनो बेसी काल मौन रहए। सासु आब किछु-किछु बाजथि मुदा कखनो एकाएक चुप भऽ जाथि। अरुणक पापाक ध्यान जखने आबनि तखने ओ होशमे नहि रहथि। सासु-पुतोहु मध्य संबंधपर जेना बर्फक पहाड़ अखनो ठाढ़े हो। रानी सेवासँ एहि पहाड़केँ पसीझएबाक जत्न करथि। मुदा छल तऽ ओ पहाड़े! कतेक पसीझत!

बेंगलुरुसँ गाम आबिकेँ फेर अरुण आपस चलि गेलाह। किरण आ माँ बेंगलुरु जाइ लेल तैयार नहि भेलीह। ओना एहि बेर अरुणकेँ गाम बेसी नीक लागल तथापि जाहि भावक कारणेँ गाम गाम होइत छै आओर तेकर जे रेख नीलूक व्यवहारमे देखने रहथि ओ अखनो पातरे रहए। एहि भावमे सांद्रत्व आएब अखनो शेष अछि। किरणकेँ जखन देखथि तखन एहने भाव आबनि। ओना किरण बेसी काल अपने रूममे बंद रहथि। गाममे बच्चाभाइ कहलनि जे ओकरासँ पुछही आ जँ ओ तैयार होइ तऽ दोसर बियाह करा दिहै। पुछबाक ककरो साहसे नहि होइत छल।

एहि बीच एक राति दादी सुतले रहि गेलीह। फोन गेलनि आ अरुण विदा भऽ गेलाह। मुखाग्नि हुनके देबाक छल। बाप तऽ बियाहमे भेल एहन दुर्घटना बादसँ पता नहि कतए निपत्ता भऽ गेल छलाह। कतबो तलाश भेल, यत्र-तत्र खोज-पुछारि भेल, पुलिसमे शिकायत भेल, अखबारमे विज्ञापन देल गेल

मुदा हुनक कोनो थाह-पता नहि लागल। कोइ पुरीमे साधु बनबाक बात तऽ कोइ गुदड़िया बाबा बनि सारंगी बजबैत कोलकाताक काली मंदिरमे देखल जएबाक बात करथि। कोइ गंगासागर मेलामे देखल जएबाक कथा कहथि तऽ कोइ किछु कोइ किछु कहथि। ओही दिन दोनार गुमटीसँ आगू ट्रेनसँ कटल लहासक बात सेहो होइत छल। पता नहि बाबूजी कतय छथि! देखै छी की होएत अछि! फ्लाइट पकड़ि चारि बजैत-बजैत दरभंगा होइत ओ गाम पहुँचि गेलाह। सभटा विधि-विधान सहित श्राद्ध संपन्न भेल। मुखाग्नि अरुणे देने रहथि तेँ रानी सेहो एकभुक्त करथि, अनोन खाइथि। श्रद्धापूर्वक ओ श्राद्धकर्मक सामान सभक ओरिआन कएलनि, भोजक सामग्री सभक व्यवस्था देखलनि। सर-कुटुंबकेँ नौँत-हकारसँ श्राद्धक सरंजाम सभक इंतजाम तेहन कुशलतापूर्वक कएलनि जे सभठाम हुनके चर्चा। नीलू बड़का सहारा बनल रहलीह। रानी की करितथि? सासु तऽ आर गड़बड़ा गेल छलीह। कखनो ठीक-ठाक आ कखनो पतिकेँ पुत्र-धर्म निर्वहनसँ वंचित रहबाक कारणेँ विकल होइत छलीह।

एहि श्राद्धमे श्यामलालजी सेहो आएल छलाह। सर्वत्र बेटीक होइत प्रशंसा सुनि गर्वित छलाह। हँ, एकर कचोट अवश्य रहनि जे किरण एको बेर खोजो नहि कएलनि, देखबाक-सुनबाक तऽ कोनो बाते नहि। कमलेश आएले नहि छलाह। देवेश किरणसँ भेंट करबाक प्रयास कएलनि मुदा किरण साफ मना कऽ देलनि। श्यामजी पाहुनसँ गाम अएबाक अनुरोध कएलनि। श्राद्धक बाद एक दिनक लेल अरुण सासुर गेलाह तऽ चतुर्थीक ओ बकिऔता भोज तेहन धमगज्जर भेल जे की कहल जाए!

गाम आबि टिकट लेलनि आ गामक व्यवस्था कऽ सभगोटे बेंगलुरु आबि गेलाह। रानीक कल्याणक योग्यता छलनि।

एहि ठामक ठाठ-बाट देखि पहिल बेर रानीकेँ अपन नाम रानी होएबाक गुमान भेलनि। एहि ठाम कोनो काजे नहि रहए। चौका-बर्तन लेल अलग मेड, घरक साफ सफाइक लेल अलग आदमी, भोजन बनबैवाली मेड अलग। ई 8 बजे भोरमे आबथि आ सभकेँ खुआ-पियाकेँ राति आठ बजे जाइत छलीह। काजमे काज यैह जे कहुना ननदि आ सासुकेँ खुश राखी। साहित्यिक-सांस्कृतिक काजमे रूचि रहनि। बेंगलुरुक मैथिलानी सभक एक समूह बना लेलनि। सामाजिक माध्यममे सेहो सक्रिय छलीह। केहनो व्यस्तता हो मुदा रानी रोज अपन प्राणदासँ गप्प करब नहि बिसरथि। हुनका अपने नैहर अनबाक विचार करथि। एक

दिन नीलू कहलनि जे हरिद्वारमे हर की पौड़ीपर अपन गामक गरभू रामावतार कक्काकेँ सारंगी बजबैत देखलक। ओ गाम आबि बाबूजीकेँ कहलक। इहो कहलक जे जाबत हुनक खोज करी ओ पता नहि कतय निपत्ता भऽ गेलाह। रानी ससुरक फोटोक फोटो खींचि देवेशकेँ पठओलक। देवेश हरिद्वार जा पूरा खोजलनि मुदा सफलता नहि भेटलनि। एतेक पता लागल जे एकटा सारंगी वला साधु गंगाक दर्शन बाद समुद्र दर्शनक बात करैत छल। ओ साधु दू दिनसँ देखाइत नहि छथि संभव जे रामेश्वरम् दिशि विदा भेल हो!

रानी अपन फेसबुक आ सभटा समूहमे ससुरक फोटो देलनि जे सारंगी बजबैत हिनका जे केओ देखी से हमरा कहब।

प्रतिदिन रातिमे एकर खोज करथि। कहियो कोनो एहन सूचना नहि भेटल। एहि बीच कार्यालयक काजसँ अरुणकेँ बीस दिनक प्रशिक्षणपर यूएसए जाए पड़ल। रानीक आठम चलि रहल छल तैँ ओ नहि गेलीह। जाहि दिन अरुण अमेरिकासँ बेंगलुरु घुरलाह ओकर दोसरे दिन रानीकेँ अस्पताल जाए पड़ल। अगिला दिन पुत्रवती भेलीह। तीन दिन बाद घर अएलीह। गेटपर सासु आ किरण आरतीक थारी लऽकेँ ठाढ़ि छलीह। किरण भाउजि आ भातिजक आरती कएलनि। कोरामे लेलनि। ई आश्चर्यजनक परिवर्तन देखि रानी आह्लादित भेलीह। जे किरण अपन रूमसँ कहियो बहराइत नहि छलीह ओ आब सदिखन भातिजमे लागल रहैत छथि। अरुणकेँ लागल जेना बेटा नवका सूर्योदय लऽकेँ आएल अछि। रानी छठिहारमे अपन प्राणदाकेँ बजाएब नहि बिसरलीह। टिकट पठेलाक बादो ओ आबि नहि सकलीह। पिता बहुत बेमार रहथिन। बाबूजी सब आएल रहथि।

छठिहारमे नीक भोज भेल। बेंगलुरुमे प्रवासी मैथिलक कमी नहि। भोजमे मैथिल सभक जुटान झमटगर छलै। रानी अपन प्राणदाक नामपर बेटाक नाम प्राणद राखि देलनि।

मास दिन बितल हेतै कि साँझमे भातिजकेँ आको-चाको कएलाक बाद किरण रानीसँ पुछलनि– भाभी! अहाँ एक बेर अपन ग्रुपक कोनो सहेलीक स्कूलक विषयमे कहने रही जे ओ अहाँकेँ काज ऑफर कएने छलीह...

– "हँ हँ। मिथिलेश मिश्रा! हम तऽ मना कऽ देने रही। से की?"

– "ओ जँ हमरा ऑफर देतीह तऽ हम सोचै छी जे ज्वाइन कऽ ली। ओ स्कूल कतेक दूरीपर छै ? ओना तऽ आब चारि मास भऽ गेलै। तैयो जँ किनको

नहि रखने हेतीह तऽ पुछबै। भरि दिन कतेक पढ़ू आ टीवी देखू! हम कऽ लेबै!" खुशीसँ रानीक पोर-पोर जेना हँसि पड़ल हो। ओ बजलीह–

"मिथिलेश तऽ सपरिवार छठिहारमे आएले रहथि। ओकर तीनटा स्कूल छै। एकटा तऽ किंडरगार्टनवला लऽगे छै। अपन सोसाइटीक जस्ट बाहर। अखने पुछै छियै।" एतेक कहि ओ फोन लगा देलनि। मिथिलेश चिल्काक हाल पुछलनि, छठिहारी भोजक प्रशंसा कएलनि आ भोरमे नौ बजे स्कूलपर किरणकेँ पठा देबाक लेल कहलनि।

किरण स्कूल जाए-आबए लागलि। बच्चा सभमे समय बिति जाए। एहि दोसर पारीमे नेना सभक संग जीवनक प्रति ओकर दृष्टिकोणकेँ बदलि देने छल। एक राति रानी अपन मोबाइल देखैत रहथि कि एक अनजान नंबरसँ मैसेज छल। मैंगलुरुक मंगला देवी मंदिरक बाहर सारंगी बजबैत एक साधु देखल गेल। बड़का दाढ़ी आ जट्टा भेल केश कारणेँ फोटो मिलैत नहि अछि। रानी कछ-मछ करैत रहलीह। अरुण एक दिनक भिजिटपर मुंबई गेल छलाह। समुद्र कातक सुरम्य शहर मैंगलुरु बेंगलुरुसँ साढ़े तीन सए किलोमीटरसँ बेसी दूरीपर अछि। तथापि ओ निर्णय लेलनि जे भोरे विदा होएब। मुदा हुनका चिन्हब कोना? फेर सोचलनि जे माँकेँ लऽ लैत छी।

भोरे ड्राइवरकेँ बजा सासुकेँ तैयार कएलनि। हुनक केशक अपने हाथसँ जूड़ा बनओलनि आ एक ठाम जएबाक अछि कहि हुनका लेने विदा भऽ गेलीह। प्राणद दादीक कोरामे टुकुर-टुकुर ताकि रहल छल। सासु पुछलनि जे कतय जा रहल छी तऽ यैह कहलनि जे मंगला देवी भगवतीक दर्शन करब आ आबि जाएब। गाड़ी तेजीसँ एन एच 75पर दौड़ि रहल छल। सड़कक कात नारिकेलक जंगल, हरियर पहाड़ आ हरियर कचोर मैदान, हरीतिमा ओढ़ने कॉफीक बाग आ एस्टेट एवं समुद्रक अद्‌भुत शोभा अत्यंत मनोरम दृश्य उपस्थित करैत छल मुदा रानी एहि सभसँ असंपृक्त मंगला देवी मंदिर 358...25, 24, 23, 22...3, 2,1 किलोमीटर देखि रहल छलीह। सामने मंगला देवी मंदिर देखा रहल छल। एक ठाम गाड़ी रोकबा देलनि। प्राणद दादीक कोरामे सुति गेल छल तेँ सासुकेँ ओहिना रहबाक संकेत करैत ओ गाड़ीसँ उतरि गेलीह। मंगला देवी मंदिरक शिखर आ धुजाकेँ प्रणाम कएलनि– हमर मनोरथ पूर्ण करू माँ! पाँच डेगपर एक बूढ़ा ठाढ़ छल। कान्हपर सारंगी छलै। ओ सीधे ओहि बूढ़ साधुक पयरमे झुकि गेलीह। साधु भड़कि गेल– मेरे पैर मत छुओ। मेरे पास कुछ नहीं है देने को। मैं स्वयं

माँग-चाँगकर खाता हूँ। तुमको कुछ नहीं दे सकता! सारंगी बजाता हूँ और कोई खाना खिला देता है। तुम खिलाओगी मुझे क्या?

रानी पुछलनि– अहाँक नाम की अछि बाबा? मैथिली सुनिते बाबा अकचका गेलाह– रमता योगी बहता पानी! तुम कौन हो बेटा? मुझे खाना खिलाओगी क्या?

रानी कहियो ससुरकेँ देखने नहि छलीह जे चिन्हि सकितथि। मैथिली सुनिते चौंकैत देखि अंदाज तऽ भेलनि जे संभवतः तपस्या फलित भेल। ओ ने हुनका देखने रहथि ने आवाज सुनने छलीह जे अकानि लितथि तथापि ओ 'हँ' कहैत बाबाक हाथ पकड़ि गाड़ी लऽग आनि लेलनि। बेर-बेर नाम पुछथि– मुझे सब राम अवतारी बाबा कहते हैं ! साधुक स्वर सुनि सासुक ध्यान ओम्हर गेल। ओ प्राणदकेँ लेनहि गाड़ीसँ कुदैत उतरलीह– "कनिञा यै कनिञा! ई तऽ अहाँक ससुर छथि। हमर सिउँथक सेनुर! हमर सोहाग ताकि लेलहुँ अहाँ! अहाँ साक्षात् सरस्वती छी! हमर लक्ष्मी छी!! हम अहाँकेँ चिन्हि नहि सकलहुँ कनिञा! अहाँ हमरा क्षमा करब!" कहैत ओ नेनाकेँ अपन पतिक हाथमे दऽ देलनि– "अरुणक बेटा प्राणद! अहाँक पौत्र!!"



[पटना, 30 जनवरी 2025]

अनुकंपा

बड़ा बाबू महतोजी बहुत दिनसँ बेमार छलथि। प्रसाद हॉस्पिटलमे भर्ती रहथि। अट्ठासी हजार टाका खर्च भेल आ काल्हिए घर अएलाह। खाए-पियैक शौकीन महतोजीकेँ बीपी-सुगर छनि तथापि कोनो परहेज नहि। शाकाहारी भोजन पसीन नहि। रोज माछ-मांसु-मुर्गा चाहबे करी, कमसँ कम दूटा रसगुल्ला तऽ रातिमे रहबाके चाही। दिनमे टिफिन काल एक प्लेट रस मलाइ आ चारि बेर चाय केर उठौना ट्रांसपोर्ट वला सभ दिशिसँ लागल छलै। चखना आ ताड़ी तऽ शुरूएसँ प्रिय छलनि। जहियासँ ट्रांसपोर्ट कार्यालयमे बड़ा बाबू भेलाह तहियासँ अंग्रेजीक चस्का सेहो लागि गेल छलनि। भारी देह बेमारीक घर मुदा कोनो पथ्य-परहेज नहि। कहथि जे आब की परहेज करब। दू मास बाद तऽ रिटायरे करब। तखने देखब आ पथ्य-परहेज करब। मुदा डॉ. प्रसादक गंभीर चेतौनी छल जे सावधानी नहि राखल जाएत तखन मल्टी ऑरगन फेल्योर दिशि जा सकैत छथि। तखन मोश्किलसँ तीन मास खेपताह।

बेटा जोगेंदर पढ़लक कम आ बापक पाइपर फुटानी बेसी कएलक। महतोजी तखन आपूर्त्ति विभागमे बड़ा बाबू रहथि। अलेल पाइ अबैत छल। बापक ध्यानो नहि रहए आ बेटा जोगेंदर हरदम पाइ निकालि लिए। माएसँ आ बापसँ अलगे पाइ लिए। दुलारे छिरिया गेल छल। अंग्रेजीक चस्का ओकरो लागि गेल छलै। बाप मात्र खैनी खाइत छलाह सिगरेट नहि पिबैत रहथिन मुदा ई सभसँ मँहग डनहिल, बेंसन एंड हेजेज वा मार्लबोरो छोड़ि कोनो साधारण सिगरेट नहि पिबैत छल। जखन डनहिल सिगरेट फुकैत छल तऽ वातावरण गमगमा उठए। तैँ घरमे नहि बाहरे सिगरेट धुकैत छल।

अस्पतालसँ घर अएलाक सात दिन बाद जोगेंदर एक दिन नव बेडशीट आ दूटा नव तकिया अनलनि। नेहपूर्वक बापकेँ उठा सावधानीपूर्वक दुनू बदलि

देलनि। फेर ओ घरसँ बाहर भऽ गेल। महतोजी तकिया देखलनि, हाथसँ अनुभव कएलनि। तकिया खूब गुदगर आ पुष्ट छलै। सहसा हुनका किछु मोन पड़ि गेलनि।

आइसँ तीस वर्ष पूर्वक बात। तखन युवा रहथि। एम्हर– ओम्हर बहुत रास परीक्षामे फार्म भरथि, परीक्षा दैत छलाह मुदा सफलता नहि भेटनि। तीस वर्षक भऽ गेल छलाह। बियाह सेहो भऽ गेल छलनि। एक बेटा आ एक बेटीक बाप बनि गेल छलाह। बियाहमे राजदूत मोटर साइकिल भेटल छलनि मुदा ओकर पेट्रोल भारी पड़ि जाइत छल। बापसँ किछु मँगबाक साहस नहि होइत छलनि। पत्नी आ बच्चा सभक आवश्यकता बढ़िए रहल छल। ओ दूटा ट्यूशन करथि, अपन तैयारी करथि आ बच्चा सभक नेकरी सेहो करथि। भरि दिन लागल रहलाक बादो कतहुसँ कोनो खुशखबरी नहि आबि रहल छल। अर्थोपार्जन लेल पत्नीक दवाब बढ़ि रहल छल। बाप निरसू महतो एहिना बेमार रहथि। निरसू सीधा-सादा लोक। सदर अनुमंडल कार्यालयमे मुलाजिम छलाह। बाइली आमदनी स्वीकार्य नहि छलनि तैँ घरक स्थिति साधारणे छल। ओना कोनो खराब आदतो नहि छलनि तैँ बेसी दिक्कतो नहि रहए। इलाज घरेपर चलैत छलनि। तोशक-तकिया आ बिछानक चद्दरि चमकट भऽ गेल छल। अनसर्ध लगैत छल। स्वास्थ्यक दृष्टिसँ एकदम प्रतिकूल! मोन भेलनि जे ई सब बदलि दी। स्वच्छता बढ़त तखने पिता स्वस्थ होएताह। मुदा ई सब कोना होएत? पापा तऽ पंद्रह दिनसँ अपन कार्यालय गेलो नहि छलाह। हुनकर बड़ा बाबू आबिकेँ किछु टाका दऽ गेल छलाह। पाँच दिनमे तऽ ओकर झाड़नो नहि बाँचल होएत। बोखार उतरिए नहि रहल छल। टॉयफाइड डाइग्नोज भेल छलनि। घरमे एक्वागार्ड लगाएब जरूरी छलै। स्वच्छता आ शुद्धतेसँ ई ठीक होएत। रोज सुइ पड़ैत छलनि। सुइ देनिहार कंपाउंडरक पाइ बहुत भऽ गेल छै। कोना पार लागत हे भगवान्! पत्नीसँ पुछलनि तऽ ओ एम्हर-ओम्हर ताकि-हेरि कहुना अढ़ाइ सए टाका निकालिकेँ देलनि।

बिछानक दोकानपर गेलाह। एकटा नव चद्दरि आ दूटा नवका खोल सहित गेरुआ लेलनि। सबा सए उड़ि गेल। दोकानेपर कंपाउंडर साहेब भेंट भऽ गेलथि। कहलनि जे दबाइवला तगादा करैत अछि तऽ एक सए कंपाउंडरकेँ दऽ देने रहथि। तैँ तोशक नहि भेल आ एकर बदला खादी भंडारसँ एकटा मोटका शतरंजी लऽ लेलनि। कंपाउंडर साहेब कहलनि जे जँ बूढ़ा अखन मरि जेथुन तखन तऽ तोहर सभटा कष्ट हरण भऽ जेतौ। अनुकंपावला नोकरी भेटि जेतौ। महतोजी कंपाउंडर साहेबकेँ लुलुआ लेलनि– केहन अनर्गल बात बजै छी अहाँ! शुभ शुभ बात बजबाक चाही!

कंपाउंडर साहेब समझओलनि– देख! तमसो नहि। कनी प्रैक्टिकल बन। हुनकर किडनी सेहो इनभोल्भ भऽ गेल छनि। काल्हि सुइ दैत काल देखने रही जे पयर फुलि रहल छनि। ओहनो दू– तीन माससँ बेसी नहि चलथुन। कहैत छलाह जे रिटायरमेंट अगिला मासमे अछि। जँ एहि मासमे रिटायरमेंटसँ पहिने गेलखुन तखने अनुकंपाक लाभ भेटतौ बादमे गेलापर अनुकंपाक लाभ नहि भेटैत छै। तकियापर हुनक नजरि गेलनि। पुष्टगर तकिया देखिकेँ कहलनि जे तेहन भारी तकिया लेने छैं जे जँ सुतलेमे धोखो-धोखीमे निरसू बाबूक मुहपर ई पड़ि गेलनि तऽ ओ हटा नहि सकथुन आ राम नाम सत्त है भऽ जेथुन। महतोजी तमसा गेल रहथि– बंद करू अपन बकवास! मरि जेथिन! मरथि अहाँक दुश्मन! आ जहिया मुइताह तऽ माएकेँ पेंशन तऽ भेटबे करतै। कंपाउंडर साहेब चुप्पी लाधि लेने छलाह। हुनकासँ झगड़ा कऽ महतोजी डेरा अएलाह। बापक बिछान बदलि देलनि। हुनको नीक लगलनि। आँखिमे संतोषक चमकी स्पष्ट देखा रहल छल। राति महतोजी जखन बिछानपर गेलाह तऽ मोन व्याकुल छलनि। आइ पत्नी बढ़ैत बेटाक नीक प्राइवेट स्कूलमे एडमिशनक नामपर अट्ठा बजर खसा देने रहथि। बहुत बात-कथा कहि देलनि। मोन बेकल भऽ गेल छलनि। भरि राति आँखिमे नीन नहि। मोनमे मंथन चलि रहल छल जे आखिर हमर भविष्य केहन रहत! की करी जे चारू कातसँ घेरल समस्याक निदान हुअए। कंपाउंडर साहेबक बात मोन पड़लनि जे जँ बाप एहि मास धरि चलि जेथुन तऽ अनुकंपावला नोकरी भेटि जेतौ। ओना हुनकर आयु बेसीसँ बेसी तीन मास! मोनमे भेलनि जे जँ बाबूजीकेँ दू-तीन मासमे मरबाके छनि तऽ पहिनहिए मरि जाथि तऽ नीक रहत। नोकरीओ भेटि जाएत। सभटा समस्याक निदान! यैह सब गुन-धुन करैत तीन बाजि गेल, चारि बाजि गेल। महतोजी एक बेर उठि बाबूजीक कोठरी गेलाह। ओ निसभेर सुतल छलाह। चक-चक बिछान आ गुदगर तकिया जेना हुनका पूर्ण संतोष आ गहींर निन्न देने हो। ओ बाहर आबि गेलथि। बाहर किछु कुकुर समवेत रूपसँ कानि रहल छल। भिनसरबा भऽ गेल छलै। फेर बाबूजीक रूममे गेलाह आ एकटा तकिया उठा मुह दाबि देलनि। कमजोर देह कोनो प्रतिकार नहि कएलक। मात्र दू-तीन बेर ऊ-आँ आ गूँ-गाँ केर स्वर आएल आ लगले सभटा शांत भऽ गेल। निरसू महतो, सदर अनुमंडल कार्यालयक एक किरानी चटपटमे चलि गेलाह। महतोजी मुहपरसँ तकिया हटा देलनि। लगै छल जेना अखनो सुतले होथि बाबूजी। छाती स्थिर कोनो ऊपर-नीचाँ नहि। कोनो स्पंदन नहि। चेहरा

देखलनि तऽ डर भऽ गेलनि ओ सहसा चिचिएलाह– माँ गै माँ! बाबूजी...। सब दौगल। ई पलंगक नीचाँ बैसल भोकारि पाड़ि कानि रहल छलाह। माए बाबूजीक शांत भेल देहपर ओँघराइत छलीह आ पत्नी छाती पिटैत कानि रहल छलीह। दुनू बच्चा बेकल! कन्ना-रोहटक आवाजसँ आस-पड़ोसक लोक जुटि गेल। निरसूजीक सहकर्मी सब बेरा-बेरी जुटैत गेल। सभसँ पहिने बड़ा बाबू आएल छलाह। महतोजीकेँ बोल-भरोस देलनि। फेर बाँस, विमान आ दागक कपड़ा सभक इंतजाममे लागि गेलाह। ओह! सब कहए जे सुतले-सुतल चिर निद्रामे चलि गेलाह। कोइ हुनक सरलता, सहजता आ निष्ठा-ईमानदारीक प्रशंसा करैत छल तऽ कोइ कहि रहल छल जे जाइत-जाइत परिवारक कल्याण कऽ गेलाह, बेटाक नोकरी धरा गेलाह। एसडीओ साहेब स्वयं आएल छलाह। पोस्ट मार्टम करएबाक बात चलल। पोस्ट मार्टमक चर्च सुनिते महतोजीक पिल्ही चौंकल। एसडीओ साहेब सभटा सम्हारि लेलनि। माएसँ पोस्ट मार्टम नहि करएबाक अनुरोध-पत्र लऽ ओतहि आदेश कऽ कागज दऽ देलनि। एसडीओ साहेब बाप निरसू महतोक खूब बड़ाइ कएलनि। अनुकंपावला नोकरी जल्दीए करा देब से आश्वासन देलनि। महतोजी तऽ एकदम मौन भऽ गेल छलथि। ने मुहसँ बकार फुटैत छल आ ने आँखिमे नोर अबैत छलनि। विचित्र स्थितिमे छलथि।

संस्कार सब संपन्न भेल। देखैत-देखैत मृत्यु प्रमाण-पत्र, आय प्रमाण-पत्र, पारिवारिक-सूची, शपथ-पत्र सब बनि गेल। सभकेँ जानकारी छल जे निरसू बाबू पहिनेसँ बेमार छलथि। स्वाभाविक मृत्यु मानि लेल गेल। अनुकंपा समितिक बैसारमे एसडीओ साहेब स्वयं रहथि। सभटा काज भऽ गेल आ श्राद्धक मास दिनक भीतर महतोजी सदर अनुमंडल कार्यालयमे अपन पिताक कुर्सीपर विराजमान भऽ गेलाह। एसडीओ साहेब जानिकेँ वैह प्रतिलिपि शाखा हिनका आवंटित कएने छलाह जाहिमे पहिने हुनक पिता निरसू बाबू काज करैत छलाह। गोल-गोल मोती सन अक्षर होइत छलनि। महतोजीक अक्षर सेहो बापे जकाँ सुंदर होइत छल। यैह सब सोचिकेँ साहेब महतोजीकेँ बापेवला काज आवंटित कएने छलाह। ओना कहियो निरसू बाबूक शिकायत नहि भेल छलनि मुदा महतोजी तऽ अपन खेल एकहि सप्ताहमे चालू कऽ देलनि। अभिलेख सभक प्रतिलिपि लेनिहार सभसँ स्वयं संवाद करथि। बहुत व्यस्त छी अखन, अहाँक अभिलेख भेटिए नहि रहल अछि, अभिलेखागारमे बड़ साँप-बिच्छू छै, हमरा ओकर बड़ डर होइत अछि, अखन समय लागत इत्यादि! जे केओ बाइली पाइ देथि हुनक

अभिलेख तुरंत भेटि जाए। यैह सब चलि रहल छलै। बाइली आमदनी बढ़ल आ घरक स्थिति क्रमश: सुभितगर होइत गेल। बापक बरखी आ माएक श्राद्ध खूब डील-डौलसँ कएलनि। बच्चा सभक एडमिशन सभसँ नीक प्राइवेट कान्वेंटमे करओलनि। जिनगीक गाड़ी आब सुभ्यस्त पटरीपर दौड़ि रहल छल।

जोगेंदर मुदा ओरिआएल नहि। पढ़ाइ-लिखाइमे ओकर मोन नहि लागए। ओ सिगरेट धुकब शुरू कऽ देने रहैक। हँ, बेटी प्रीति बड़ नीक रहए, खूब चंसगर आ मेहनती। मैट्रिकमे जिला भरिमे फर्स्ट आएल छल। डी एम साहेब स्वयं ओकरा मंचपर सम्मानित कएने रहथि। महतोजी बेटाक लेल चिंतित रहथि। कखनो सोचथि जे बाबूजीक समय जखन अभाव रहए, कोनो सुख-सुविधा नहि रहए तखन कोनो चिंतो नहि रहए। प्रेमसँ रहैत रही, खूब परिश्रम करी, कोनो खराब आदत नहि लागल छल। कोनो अमल नहि आ आब जखन संपन्नता आएल तखन अपनो बहुत अमल लागि गेल। बेटा बेकहल भऽ गेल, हाथसँ ससरि रहल अछि। सभटा अमल ओ अपने लाधने अछि। ओह! कतेक अंतर आबि गेल! आइ सभ किछु अछि मुदा अभावमे जे आगू बढ़बाक, संघर्ष करबाक एकटा प्रेरणा होइत अछि से टा मात्र नहि अछि। साँचे दुख-तकलीफ लोककेँ माँजैत छै, निखारैत छै आ संघर्ष करबाक प्रेरणा दैत छैक। मुदा आब ओ शक्ति आ ओ प्रेरणा कतएसँ आएत! संपन्नता संघर्ष करबाक शक्तिकेँ समाप्त कऽ दैत छै। महतोजीक ई श्मशानी वैराग्य कार्यालय अबिते तिरोहित भऽ जाइत छलनि आ फेर वैह दू टकही, पँच टकही, दस टकही-बीस टकही मोन रहि जाइत छलनि। यैह सब ओसुलैत निबंधन कार्यालयमे बड़ा बाबू भऽ गेलाह। बान्हल बाइली पाइ अबैत छल। बेटी प्रीति एतहि मेडिकलमे पढ़ैत अछि। ओ डॉक्टर भेलीह आ बेटा जोगेंदर बुड़िया गेलाह। दुनूक बियाह-दान कऽ देने छलाह। वैह रामा वैह खटोलामे रमि गेलाह। घर सभक नक्शा बदलि गेल छल। सभ ठाम टाइल्स लागि गेल। तीनटा कमोड आ चारिटा एसी घरमे लागल छल। पर्दा, सोफा सेट, डाइनिंग टेबुल सब खूब मँहग-मँहग आ पैघ-पैघ। बहुत पदाधिकारी सभक एहन घर नहि छल।

एहन घरमे जोगेंदर द्वारा आनल तकिया आ झक-झक करैत बिछौना चद्दरिपर फेर ध्यान गेलनि आ अपन आनल ओ तकिया आँखिमे गड़ि गेलनि। दुनू तकिया अनमन एकहि जकाँ। हँ, रंगमे कने अंतर अछि। ओ किछु गुलाबी छल आ ई झक्-झक् सफेद! मुदा ई धव-धव उजरा रंग मोनमे शांत रस नहि उत्पन्न कएलक। मोन आशंकासँ ग्रसित भऽ गेलनि। फेर कहीं वैह कथा दोहराओल तऽ

नहि जा रहल अछि! नहि नहि! जोगेंदर एहन किए करत। कथीक कमी कएने छी! एतेक अरजि देने छी जे जीवन भरि कोनो काज नहि करत तखनो एहिना खुश-मौजसँ जीवन जी सकैत अछि। हमर तऽ अभावमे स्वभाव गड़बड़ाएल छल जे कुकृत्य कएने छलहुँ। एकरा कोन अभाव छै जे स्वभाव खराब हेतै आ एहन कांड करत। तैयो ओ तकिया देखि मोन औनाइत छलनि। पेटमे जेना सदिखन किछु हौँड़ैत हो, छाती धक्-धक् करैत छलनि आ साँस लेबामे प्रयास करए पड़ैत छल। बड़का द्वंद्वमे पड़ि गेल छलाह। डॉ. प्रसाद कहने रहथि जे स्टेंट लगा देने छी तथापि कोनो तरहक तनाव कहियो नहि लेब। ई जानलेबा भऽ सकैत अछि! नैराश्यमे एक मोन इहो होइनि जे एहन जीवनसँ बरु मरिए जाए सैह नीक। माहुरे खा ली! पापक प्रायश्चित तऽ करबाके चाही!

एहने द्वंद्वमे पड़ल महतोजी पत्नीकेँ सोर पारलनि। कहलनि जे हमर मोन ठीक नहि अछि। हमरा आब बहुत डर होइए। रातिमे एसकर हम नहि रहि सकैत छी। आब अहाँ रातिमे एतहि सुतू। पत्नी स्वाभाविक रूपसँ तैयार भऽ गेलीह। रातिमे पत्नी संगे रहथिन। डॉक्टर बेटी सेहो आबि गेल छलीह। बेटा जोगेंदर आबिकेँ बेर-बेर देखि जाए। ओ जखन-जखन आबए महतोजी चौंकि जाइत छलाह आ प्रीतिकेँ आवाज दैत छलाह। बेटी सेहो दौड़ल आबि जाथि। भरि राति एहिना चलैत रहल। हुनका भिनसरबाक चिंता बेसी व्यग्र कऽ रहल छलनि। भिनसरबामे तऽ बेटीकेँ अपने लऽग रहबाक कातर अनुरोध कएलनि। माए-बेटी ओही ठाम रहलीह। कहुना सूर्योदय भेल। महतोजी सुतले छलाह। पत्नी राति भरिमे हिनक उद्विग्नता आ बेटाक अएलापर चौंकैत देखि भारी उलझनमे रहथि। किछु तऽ अजीब बात अवश्य छै। ओ गुन-धुनमे लागि गेलीह। एकांत भेटलापर पतिसँ पुछलनि। महतोजी कनी काल मौन रहलथि फेर दुनू आँखि बंद करैत कहलनि – "हम महापाप कएने छी। हम..."

– "की कएने छी? कहू ने! कोनो पाप एहन नहि जकर प्रायश्चित नहि हो! हमसब प्रायश्चित करब। कहू तऽ!"

– "पापक प्रायश्चित होइ छै। महापापक दंड तऽ भोगए पड़ैत छै।"

– "पहिने की कएने छी से तऽ कहू। तखन देखल जेतै जे ओ पाप अछि वा महापाप!"

– "हम अपन पिताक हत्या कएने छी!" सुनितहि पत्नी पलंगेपर खसि पड़लीह। महतोजी उठाकेँ फेर बैसा देलनि। ओ बाजि रहल छलाह– "एहने

नवका तकिया हमहू अनने रही। एहिसँ मुह दाबि देने छलियै। जोगेंदर ओहने तकिया आनिकैं देलक अछि। ओ निश्चित रूपसँ रातिए एहन काज करैत। तैं अहाँ सभकैं एतहि रहबाक लेल कहने छलहुँ। हमरा जोगेंदरसँ काल्हिएसँ बड़ डर होइत अछि। ओ अवसर भेटिते एहन काज अवश्य करत।"

– "अँय! ओकर एहन हिम्मत! अहाँ कही तऽ अखने खानामे माहुर मिला ओकरे साफ कऽ दी। ने बाँस रहतै ने बाँसुरी बजतै!" पत्नी फुसफुसाइत पुछलनि।

"केहन माए छी अहाँ! राम-राम! एहनो बात सोचि सकैत छी अहाँ! हमरा सभक समय आब समाप्त अछि। ओकरा सभक पूरा जिनगी बाँचल छै। एहिसँ नीक हमही माहुर खा ली। हमर महापापक प्रायश्चितो भऽ जेतै आ कोइ किछु बुझबो नहि करत। पता नहि अनुकंपाक अनुकंपा होइत छै वा नहि! जँ होइत हेतै तऽ नीक आ जँ नहि हेतै तखनो नीक। कमसँ कम हमर प्रायश्चित तऽ भऽ जेतै!" महतोजीक आँखि नोरा गेलनि। पत्नी चुपचाप अपलक अपन पतिकैं निहारि रहल छलीह।

साँझमे महतोजीसँ भेंट करए आएल एक ट्रांसपोर्टकर्मीसँ तीनटा दबाइक नाम लिखि अनबाक लेल कहलनि। आबिकैं ओ कर्मी कहलक जे तेसरका केहन दबाइ अछि जे पूरा मुजफ्फरपुर बौआ गेलहुँ तखन एक दोकानमे भेटल। महतोजी हँसि देलनि।

जोगेंदर बहिनकैं पहुँचाबए दरभंगा जाइत छलाह। माएकैं कहने रहथि जे काल्हि घुरबै। महतोजी पत्नीकैं कहलनि जे अहाँक आइ एहि रूममे सुतबाक आवश्यकता नहि अछि। सभटा ग्रह कटि गेल। ओ मानि गेलीह। हुनका भोजन करा दबाइ खुआ एम्हर आबि गेलीह। सभकैं खुआ-पिया पोता-पोतीक संग निश्चिंत भऽ सुति रहलीह। पुतोहु अपन कोठरीमे फोँफ काटि रहल छलीह।

जोगेंदर देर रातिए दरभंगासँ घुरि गेल छल। माए निसभेर सुतल छलीह तैं नहि बुझलनि मुदा बाप बुझि गेलाह जे जोगेंदर अपन रूममे आबि गेल अछि। इहो बुझि गेलाह जे एहिसँ नीक अवसर जोगेंदरक हाथ फेर कहियो नहि एतै। ओ चाहितथि तऽ पत्नीकैं बजा सकैत छलाह मुदा ओ से नहि कएलनि। चुपचाप उठिकैं ट्रांसपोर्टकर्मी द्वारा आनल तेसर दबाइ खा लेलनि। मोनसँ प्रायश्चित करबाक लेल ओ तैयार भऽ गेल छलाह। बिछानपर जगले आँखि मुनने अपन अतीत विषयक सोचैत छलाह। हल्लुक आहट भेल आ दारूक भभक्का नाकमे

सन्हिआ गेलनि। ओ बुझि गेलाह जे जोगेंदर अछि आ आइ ओ अपन मंजिल अवश्य प्राप्त करत। तथापि गहन नीनमे होएबाक भगल कएलनि। ओना ओ आंतरिक रूपसँ एकदम सावधान आ साकांक्ष रहथि। बेटाक हल्लुक-हल्लुक पदचाप क्रमशः लऽग आबि रहल छल। ओ अनुभव कएलनि जे जोगेंदर पलंगक पैतानापर राखल तकिया उठा लेलनि। आब ओ सिरमा दिशि आबि रहल छथि। ओ सिरमामे ठाढ़ भऽ गेल छथि। आब तकिया हमर मुहपर राखि रहल छथि। हँ आब! आब!! ओ तकियाक किनारीमे लागल फुदना सभक स्पर्शकेँ जेना अनुभव करैत होथि। जखने तकियाक स्पर्शक एहसास भेलनि ओ तुरंत अपन माथ दोसर दिशि छिपि लेलनि आ उठिकेँ पलंगपर बैसि गेलाह। जोगेंदर हतप्रभ भेल ओहिना ठाढ़े छल। दुनू हाथमे कसियाकेँ तकिया पकड़ने। एहन दृश्यक विषयमे की कहल जाए। ने कोइ देखने आ ने कोइ सुनने! अकल्पनीय दृश्य!

"ई सभ करबाक आब अहाँकेँ कोनो काज नहि अछि बाउ! जे पाप हम कएने रही से अहाँकेँ कोना करए दी! हम अपन कएल पापक प्रायश्चितमे माहुर खा लेने छी। अनुकंपाक लाभ दोसर बेर भेटैत छै वा नहि से हमरा नहि पता मुदा एतेक अवश्य कहब जे अहाँ हमर पोस्ट मार्टम नहि कराएब। सब गड़बड़ा जाएत। हमरा बाबूजी बजा लेलनि। हम स्वयं हुनका लऽग जा रहल छी। अपन पापक प्रायश्चित लेल।"

एतेक कहैत-कहैत महतोजीक माथ एक कात टगि गेलनि। दुनू आँखि तऽ मुनले छलन्हि। बेटा दिशि तकबाक साहस जे नहि छलनि। जोगेंदर बदहवास ओहिना ठाढ़े छल दुनू हाथमे तकिया गछारने।



[मुजफ्फरपुर, 10 जनवरी 2019]

संतुलन बदलि रहल अछि

रेणु स्नानघरेसँ पति रमेशकेँ आवाज देलनि– हम नहाइ लेल आबि गेल छी। जल्दीसँ दूटा रोटी आ भुजिया पैक कऽ देबै। देरी नहि करब नहि तऽ आफत भऽ जाएत। अहूँ तैयार भऽ जाउ। रोज अहाँक कारणेँ एमबेरेसिंग सिटुयेशन अबैत अछि। हेडमास्टर तऽ पूरा कसाइ अछि। एको मिनट देर होइत अछि कि ओकर लल्लो-चप्पो करू तखने हाजिरी बनबऽ दैत अछि। हमरा सोहाइत नहि अछि ई सब।

रमेश हड़बड़ाएल रेणुक टिफिन पैक कएलनि, पानिक बोतल रखलनि आ मोटर साइकिल निकालि रोडपर ठाढ़ रहथि। रेणु तैयार भऽ घड़ी देखैत मोटर साइकिलपर बैसलीह– बाप रे! आइ तऽ गेले छी! अहाँ रोज लेट कऽ दैत छी। आइ फेर हमरा सारि बनए पड़त। मोटर साइकिल उड़ि गेलै।

विद्यालयक गेटपर रेणुकेँ उतारि मोटर साइकिल आपस घुरि रहल छल। रमेशक चिंतन प्रक्रिया सक्रिय भऽ गेल छल।

रमेश सोचि रहल छल जे की सोचने रही आ की कऽ रहल छी। सोचने रही जे गाड़ीसँ ऑफिस जाइत काल पत्नी टिफिन देतीह आ प्रेमसँ विदा करतीह। फेर अबैत काल एक मुस्कीसँ स्वागत करैत सब थकान हरि लेतीह। रातिमे नीक-नुकुत बनाकेँ प्रेमसँ भोजन करओतीह। सरिपहुँ व्यवहार अनमोल नारी! आ भेल की से देखिए रहल छी! भोरे उठि बर्तन-बासन साफ करैत छी। मोर्निंग स्कूलमे तऽ भोरक जलखै, हिनक टिफिन आ बेरहटिया हमही बनबैत छी। डे स्कूलमे जलखै रेणु बना दैत छथि। भोरमे मैडमक टिफिन पैक करैत छी। हुनका मोटर साइकिलसँ स्कूल छोड़ैत छी। साँझमे फेर हिनका स्कूलसँ घर अनैत छी। नोकरी तऽ भेटल नहि। आब जे भाग्यमे बथाएल छल से करैत छी। ओह! इहो परीक्षा हमसब संगे देने रही। हमरा हिनकासँ बेसी नंबर आएल छल एकर बादो नहि भेल आ हिनका कम्मे नंबरपर भऽ गेलनि। महिला सभक रिजर्वेशन जे छल!

मोन पड़ि रहल छलनि नोकरीक लेल अपन संघर्ष। बनारस, लखनऊ, दिल्ली, हावड़ा, चेन्नई आ मालदा जा रेलवे आओर बैंकक परीक्षा दैत रही। कलक्टरीसँ किरानीगिरी धरि सभटा परीक्षामे फार्म भरी, परीक्षाक लेल दिन-राति तैयारी आ अभ्यास करैत रही। परीक्षा देबाक लेल बाहर जाइत रही। जाइत काल बाबूजीसँ पाइ मँगैत आब खराब लगैत छल। हुनको कोनो खास नोकरी नहि। पोस्ट ऑफिसमे डाक पिउन छलाह। बान्हल मासिक आय! जाहि दिन किनको कोनो इंटरव्यू वा खुशखबरीक पत्र आबै तखन हुनका किछु बकसीस भेटैत छलनि वैह दिन हमरा सभक लेल खुशीक दिन होइत छल। ओहि दिन सिंघियावाली ओतएसँ स्वादिष्ट पेड़ा अवश्य अबैत छल। जाहि दिन बाबूजीक हाथमे ठोँगा देखियै हमसब बुझि जाए जे आइ अवश्य ककरो ज्वाइनिंग लेटर आएल छलै। हमर ई बड़ सेहंता रहए जे हमरो ज्वाइनिंग लेटर आबए, मुदा ओकर कतहु कोनो थाह-पता नहि छल। बीपीएससीक स्नातक ग्रेडवला परीक्षाक परिणाम आएल छल। सफल भेल रही मुदा आइ धरि कोनो पत्र नहि आएल। सुनलियै जे हाइकोर्टमे केस भऽ गेल छै। एहि परीक्षासँ सीआइ, सप्लाई इंस्पेक्टर वा प्रखंड शिक्षा पदाधिकारीमे सीधा पदस्थापन होइत छै। लगैए इहो गेल। हमरा एकर बड़ जिज्ञासा रहए जे हमर ज्वाइनिंग लेटर अएलापर बाबूजी की करताह। स्वयंसँ पाइ लेताह वा कोन मधुर अनताह मुदा ई मनोरथ कहियो पूर नहि भेल।

एक दिन सुनलहुँ जे बाबूजी माएकँ कहि रहल छथि– एकरा अपन भाग्यसँ तऽ आब नोकरी नहि भेटलै। सोचै छी जे एकर बियाह कऽ दियै। की पता जे कनिञाक भाग्यसँ नोकरी भेटि जाए।

– हँ, कऽ दियौ। एगो ज्योतिषी हमरा कहनेओ छल जे कनिञेक भाग्यसँ एकर भाग्य चलतै। चंद्रमा बड़ मजगूत छै। ओहिनो मुनियाक दुरागमनक बाद तऽ हमरो दिक्कत होएत। दिने कतेक छै ओकर दुरागमनक! आब हमरो ओतेक सऽक नहि अछि। कनियो झड़िया-फटकिया करैत छी कि हकमि जाइत छी। दम फुलए लगैत अछि।

– हम अबैत काल डॉक्टर साहेबसँ हफनीक कोनो दबाइ नेने आएब।

– एहिसँ की हेतै! आब छोड़ू ई सब। बौआक बियाहे विषयमे सोचू।

– हँ, सैह सोचैत छी। भुवनजी कहने छलाह जे हुनक साढ़ूक बेटी बड़ चंसगर छै। खूब फार्म भरै छै आ परीक्षा दैत छै। कतहु ने कतहु नोकरी हेबे करतै। महिला सभक रिजर्वेशनक घोषणा सेहो भेल अछि। एहि लगनमे देखै छी!

एकर बाद किछुए दिनमे बियाह भऽ गेल। रुखे-सुखे सही मुदा बियाह बाद एक बरख कोना बिति गेल से पता नहि चलल। एतेक अवश्य भेल जे कतहु दूर-दराज़वला परीक्षाक फार्म नहि भरी। रातिकेँ बाहर रहब आब नीक नहि लागए। रेणु परम संतोषी छलीह। कहियो कोनो फरमाइश नहि! केहनो अभाव हो, कोनो कष्ट हो सदिखन हुनक ठोरपर मुस्की रहिते छलनि। नोकरीक विषयमे पहिने अपन भाग्य, फेर कनिञाक भाग्य आ आब संतानक भाग्यपर आश छल। बियाहक बादो हमर जीवनमे कोनो विशेष परिवर्तन नहि आएल। कनिञोक भाग्यसँ हमर भाग्य नहि बदलल। मुदा बेटीक भाग्यसँ जेना परिवर्तन शुरू भेल। एसटीईटी हम दुनू गोटे संगे देने छलहुँ। बेटीक ठीक छठिहार दिन परिणाम आएल। हमरा 89 अंक आएल आ रेणुकेँ 82 नंबर अएलनि। हुनका पंचायत शिक्षक आ प्रखंड शिक्षक दुनूमे सफलता भेटलनि हमरा कोनोमे नहि। आश्चर्य भेल जे एक लाखसँ बेसी गोटे ई परीक्षा पास कएलनि। लोक कहैत छै जे एहि परीक्षामे के नहि पास कएलक! गाछ-वृक्ष आ लोढ़ी-सिलौट धरिकेँ सफलता भेटलै। हुनका सभकेँ सेहो सफलता भेटल जे हमरे मार्गदर्शनमे तैयारी कएने छल मुदा हमरे भाग्य एहन भेल जे हमही लटकि गेलहुँ! ई असफलता हमरा अखरल– कनिञासँ पराजय! ओह! ई परिणाम हमरा तोड़िकेँ राखि देलक। फेर कनिञाक सफलतापर हमरो मोनमे संतोष भेल किएक तऽ हमही रेणुकेँ एहि परीक्षाक लेल तैयारी करबैत छलहुँ। हुनक सफलतासँ हमरो मोन खुश भेल। बेटी जेना हमर परिवारक भाग्य बदलबाक लेल जन्म लेने हो। छठिहारक राति ओकर नामे राखि देलहुँ भाग्य लक्ष्मी! पुकारक नाम ई ऋचा रखलनि।

किछु दिन बाद आवेदन करबाक सूचना बहराएल। आवेदन पंचायते पंचायत आ प्रखंडे प्रखंडमे करबाक छलै।

फार्म, फोटो, डाक टिकट, लिफाफ, विभिन्न अंक-पत्र आ प्रमाण-पत्र सभक फोटो कॉपीक तऽ जेना घरमे पथार लागल हो। एकटा उधियाकेँ जँ कतहु मिज्झर भेल तऽ ओकरा ताकएमे मोन हलकान भऽ जाइत छल। कहुना अलग-अलग सभक सेट तैयार भेल। भरि-भरि दिन बाइकपर एहि पंचायतसँ ओहि पंचायत, एहि ब्लॉकसँ ओहि ब्लॉक आ एहि जिलासँ ओहि जिला धरि बौआएत रहलहुँ तखन पाँचम दिन मधुबनी, दरभंगा आ समस्तीपुर जिलाक 151 ठाम हिनक आवेदन जमा भऽ सकल। ओहि समय जे हालत भेल छल से हमही जनैत छी। ने खाएक ठेकान ने आरामक स्थान! दिनमे स्टुडियो जा हिनक फोटो तैयार कराबी आ अंकपत्र सभक फोटो कॉपी कराबी। डाक टिकट आनी आ भरि-भरि राति फार्म तैयार करी। भरल

दुपहरियामे भुखले-पियासे फिरिशान गामे-गाम छिछिया रहल छी, पानि-बुन्नीमे रने-वने बौआ रहल छी! बाध-वोनमे बौखि रहल छी। अजीब स्थिति रहए। तथापि जखन घर आबी आ भाग्य लक्ष्मीकेँ अनेरे मुस्काइत देखी तऽ जेना सभटा भूख-पिआस, हरानी-परेशानी छू-मंतर भऽ जाइत हो! सभटा हरारत जेना ओकर मुस्की चुसि लैत हो! अपन जीवन-संघर्षमे लगातार भेटल पराजयसँ हम चौंकल रही। पूरा साकांक्ष आ प्रयासरत रही जे एहि बेर कोनो चूक नहि रहि जाए। अपने नहि भेलहुँ पदाधिकारी वा नोकरिहारा तऽ कोनो बात नहि मुदा रेणुकेँ शिक्षिका बनाकेँ रहब! ओहिनो बाबूजी रिटायर कऽ गेल छलाह आ हुनका पेंशन नहि भेटैत छलनि। एक्स ग्रेशिया ग्रेच्युटी आ सेवरेंस राशि रूपमे ढाइ लाख टाका मात्र भेटल छल जे कहिया उड़ि गेल छलै से आब मोनो नहि अछि। परिवार चलाएब पहिनेओ मोश्किल छल आ आब तऽ...। आब एहि नोकरीक अत्यंत खगता छल। मत चूको चौहान वला स्थिति! हमर तऽ भाग्य खराबे छल मुदा रेणुक लेल कएल हमर प्रयास सुतरि गेल। ओह! की संयोग जे जाहि दिन भाग्य लक्ष्मीक पहिल जन्म दिन रहए ओही दिन रेणु मध्य विद्यालय, सिमरीमे प्रखंड शिक्षिका रूपमे योगदान देलनि। ओहि दिन कोनो विशेष भोज-भात नहि एकटा छोट-छीन पार्टी जकाँ भेल। सासुरसँ मुनियाँ पाहुन आ बच्चा सभक संग आएल छलीह। ओ केक आ बैलून सेहो अनने छल। बाबूजी आस्ते-आस्ते कहुना चलिकेँ सिंघियावालीक दोकानसँ भरि ठोँगा पेड़ा आनि देने छलाह। सब केओ केक काटि पेड़ा खा मुह मीठा कएलक। भागिन-भगिनी गीत गओलक। भाग्य लक्ष्मी टुकुर-टुकुर तकैत छलीह, मुस्की दैत छलीह। सभकेँ नीक लागल।

आब हमर काज बहुत बढ़ि गेल छल। रोज रेणु मैडमकेँ बीस किलोमीटर दूर विद्यालय पहुँचाबी फेर आबि जाए आ फेर जाए आ हुनका आनी अर्थात् प्रत्येक दिन 80 किलोमीटर! आबिकेँ दिनक भोजन बनाउ। माँ बाबूजीकेँ खुआउ। भोरक जलखै आ रतुका भोजन रेणु बना लैत छलीह। माए तऽ आब कोनो काजमे सकैत नहि छलीह।

परिवारमे जे कर्ता-धर्ताक कॉन्सेप्ट अछि ओकर गणित बड़ साधारण होइत छै। ई शुद्धकेँ भात-रोटीक व्यवस्थापर आधारित अछि। जे भोजनक व्यवस्था करैत छथि वैह ब्रेड विनर, वैह गार्जियन आ वैह परिवारक कर्ता-धर्ता! पहिने पिता छलाह आ एकर बाद हमरा होएबाक छल मुदा हम परिवारक ब्रेड विनर बनिए नहि सकलहुँ। आब तऽ ब्रेड विनर हमर पत्नी छथि तखन हम कर्ता-धर्ता कोना! परिवार आब छोट भेल जा रहल छै मियां-बीवी-बच्चा बस! एहिमे जे पैघ पुरुष से गार्जियन

मुदा जखन ई व्यवस्था एक स्त्री द्वारा होइत छै तखन ओहि स्त्रीकेँ अभिभावक किएक नहि मानल जाइत अछि! समाजमे पितृसत्तात्मक व्यवस्थाक पोषक लोक स्त्रीकेँ परिवारक मुखिया मानैपर हिनछिन-हिनछिन करैत छथि। अहं केर टकराव जे अछि। मुदा आब ई संतुलन बदलि रहल अछि। हम तऽ आब रेणुकेँ सहर्ष परिवारक प्रधान मानैत छी। परिवार चलएबाक लेल अर्थ चाही आ जे अर्थ उपार्जन करए सैह भेल कर्ता-धर्ता वा गार्जियन! ओना हमरा एहि स्थितिपर कोनो आपत्ति नहि रहए मुदा जखन-जखन गाड़ीमे पेट्रोल भरबैत छलहुँ आ पाइ लेल हुनका दिशि देखैत छलहुँ तखन-तखन जेना हमर खून सुखा जाइत हो, ग्लानि तऽ होइते छल। नियति मानि गुम्मी लाधि लैत छलहुँ। आनो सामान किनबाक काल एहने स्थिति रहए।

एक दिन मैडमकेँ अनबाक लेल हम समयपर विदा नहि भऽ सकलहुँ, झपकी आबि गेल छल। जखन डेरासँ विदा भेलहुँ तऽ रेणुकेँ हेडमास्टर साहेबक संग बाइकपर बैसल अबैत देखलहुँ। पहिल बेर कान ठाढ़ भऽ गेल। बाइकपर दुनूक बैसबाक ढंग सेहो हमरा नीक नहि लागल। स्कूल सभक कतेक कथा रेणुसँ आ आन लोकसभसँ सुनने छलहुँ। सभक शुरूआत एहि मोटरसाइकिलपर सटिकेँ बैसनाइएसँ होइत छै। भरि दिन संगे हँसी-ठट्ठा, रंग-बिरंगक कथा-पुराण आ किछु लोकक किरदानी विद्यालय सभक वातावरणकेँ गरिमामय नहि रहए देने अछि। सब स्वच्छंद, कोनो आँकुश नहि, सभक अपन-अपन वृत्त, सभक हाथमे पाइ, सभ अपन-अपन सऽख-मनोरथ वा दमित इच्छाक पूर्ति लेल स्वतंत्र! एहनमे एक वृत्त जखने दोसरमे सन्हिआएल तखने कोनो नवकथाक सर्जना सहजे संभव। रमेशक मुह तीत भऽ गेल छल। तखने भाग्य लक्ष्मीकेँ कोरामे सम्हारैत रेणु उतरि गेलीह। हेडमास्टर साहेब लऽग आबि बजलाह– नमस्कार रमेश बाबू! आइ अहाँक काज हमरे करए पड़ल। बच्ची तंग करैत छलनि। अहाँक बेटी बड़ सुंदर अछि! भोज-भात तऽ चाहबे करी। चलू अहाँक डेरा चलैत छी। आत्मीयतासँ भरल शब्द सुनि रमेश अपन सोचक संसारसँ धरतीपर अएलाह। गाड़ी मोड़लनि तऽ रेणु पाछू बैसि गेलीह आ सब गोटे डेरा आएल। किछु काल बाद हेडमास्टर साहेब चाह-पानि पिबि माता-पिताकेँ प्रणाम कऽ विदा भऽ गेलाह। रमेशक मोन हुनक व्यवहारसँ कने आश्वस्त भेल। आदमी नीक छथि। काल्हि छुट्टिए रहए। बात आएल गेल।

हम बेसी काल अपन बेटीक नेकरी स्वयं करैत छी। नहा-धुआ देह-हाथ पोछि पावडर लगा कपड़ा पहिरा कन्हापर घुमबैत छी। ओकर नेकरीमे कनियो घिन नहि आएल। नेहक डोर जे बान्हल रहए। रेणु आबिकेँ आँखिमे काजर कऽ देथिन

आ बामा कपारपर एकटा कारी ठोप लगा देथिन जे नजर-गुजर नहि लागए। बेटीक ई रूप निहारि हम अपन सभटा दुख बिसरि जाइत छलहुँ। ओह! एकर मुस्की तऽ दैवीय मुस्कान छै!

ओना ई एकदम सत्य जे रेणुमे बहुत परिवर्तन आबि गेल छल। हुनक आत्मविश्वास बहुत बढ़ि गेल छलनि। पहिने जखन कतहु पुरुष-स्त्री संबंधपर गप्प होइ तखन ओ पतिक नामसँ स्त्रीक परिचितिक गप्प करथि आब ओकर स्वतंत्र अस्तित्वक पक्षधर बनि गेल छलीह। स्त्रीकेँ सेहो निज इच्छासँ व्यय करबाक स्वतंत्रता चाही, माए-बाप वा नैहरकेँ देखब वा नैहरपर आवश्यकतानुसार खर्च कएलापर पुछल नहि जएबाक चाही, परिवारक जखन हम भार उठओने छी तखन परिवार विषयक कोनो दोसरो निर्णयमे हमर सहभागिता रहबाक चाही। हुनक तर्क आ स्थापना सभक निष्कर्ष यैह छल जे आब परिवारक अभिभावक केर जे स्थान अछि से हुनका भेटबाक चाही। आर्थिके नहि पारिवारिक आ सामाजिक निर्णय लइसँ पूर्व हुनकर इच्छाक सम्मान होएबाक चाही। जखन एक बेटा (पुरुष) काज लेल बाहर जाइत छै, देरीसँ घर अबैत छै, दोस्त संग पार्टी करैत छै तखन घरमे कहाँ कोनो विवाद होइ छै आ यैह काज जखन एक बेटी (स्त्री) द्वारा होइत छै तखन एहिपर हड़बिड़रो किएक मचि जाइत छै! मिथ्या कलंक लगाओल जाइत छै! एक स्त्री जखन काजपर बाहर जाइत छै तखन ओकर कष्टक परिमाण तिगुना रहैत छै। सभसँ पहिने अपन घरमे ओ संघर्ष करैत छै। भरि दिन घरसँ बाहर रहब घरक कोनो आन सदस्यकेँ नीक कोना लागत! एहि भावसँ ओ लड़ैत अछि। परिवार आ बच्चा सभक अपेक्षापर चकरघिन्नी जकाँ नचैत अछि। पैदल हकमैत, ऑटोमे ठुसाइत, बसमे रगड़म-रगड़ा करैत वा स्कूटीमे व्यंग्य बाण सहैत कहुना कार्यस्थल अबैत अछि। एहिठाम अपनाकेँ कहुना सुरक्षित राखि भरि दिन काज करैत अछि। एतए केर संघर्ष तऽ आर विचित्र! विद्यार्थी सभक अलग अपेक्षा, सहकर्मी सभक अलग। कनी ई देखि लेब तऽ कनी ओ! हमर माथ फाटि रहल अछि कने हमरो क्लास देखि लेब। हेडमास्टरक फरमाइश जे ई पंजी बना दियऽ तऽ ओकरा भरि दियौ। अभिभावक सभक शिकायत सुनू आ बच्चा सभपर विशेष ध्यान दियऽ। हेहरो बच्चाकेँ जँ एको चटकन लगा देलियै तखन तऽ बुझू जे आफत आबि गेल! गौंआ सभ मारि कऽ लेत! हुड़हुट्टी आ उकाठी बच्चाकेँ सेहो एहिना समझा-बुझाकेँ सज्जन-सुशील बनाउ। आखिर अहाँ राष्ट्र निर्माता जे छी! ई कोना संभव छै से कोनो प्रशिक्षणमे नहि बताओल जाएत मुदा करियौ। रेणु कहने छलीह जे हम जनैत छी जे प्रत्येक वर्गमे

एक दूटा एहन छात्र अवश्य रहैत छै जे अखन एक सटकनमे ओ सही रस्तापर आबि जेतै नहि तऽ एक दिन ओ तेहन अबंड हेतै जे फेर समाज आ पुलिसकक नाकमे दम कऽ देतै। ए स्टिच इन टाइम सेव्स नाइन आ लालयेत पञ्चवर्षाणि दश वर्षाणि ताडयेत... क भावे नहि बुझैत अछि केओ। बाल मनोविज्ञानपर शुरूएमे ध्यान देब उचित! बादमे ओकरा सम्हारब कठिन! एक दिन ओ कहलनि जे चारिमसँ पाँचम वर्गमे आएल एक बच्चा एक बेर अपन बामा हाथक तर्जनी आ मध्यमा आँगुरकेँ ऊपरसँ सटा ओकर फाँकमे दहिना तर्जनी सन्हिआबैत हुनकासँ पुछने रहए– इसको घुसा दें? हिनकर तऽ पित्त लहरि गेल रहए। मुदा की करितथि! हुनक निष्कर्ष छल जे अपवादेमे सही मुदा सटकन केर सदुपयोगेसँ सही राष्ट्र निर्माण संभव छै! एकर दुरूपयोग नहि हो मात्र एहिपर ध्यान राखल जएबाक चाही। ओ तऽ धन्य कही पाठक बाबाकेँ जे गारि-शाप सुनियोकेँ विद्यालय सभक दशा आ दिशा सुधारि देलनि जे आब सब गोटे समयपर विद्यालय अबैत छथि।

शिक्षिका सब भरि दिन विद्यालयमे एहिना मगजमारी करैत जखन विदा होइत छथि तखन फेर ओहिना भोरका जकाँ संघर्ष करैत घर अबैत छथि। घरमे बच्चासँ बूढ़ तक हुनके प्रतीक्षारत! बच्चा सभकेँ यैह आश जे मम्मी आएत तऽ किछु भोजन बनत, बूढ़ा-बूढ़ीक यैह उमेद जे कनिञा अएतीह तखन पनिपिआइ आ दबाइ भेटत। फेर सभक अपेक्षापर सफल होएबाक संघर्ष! भोरसँ राति धरि संघर्षे संघर्ष! एतेक जँ कोनो पुरुषकेँ करए पड़ैत तऽ ओ कहिया ने बिखरि गेल रहैत। ई मातृशक्तिए अछि जे एतेक संघर्ष करितो जीवित अछि। सिरजनहारी संग पालनहारी शक्ति!

रेणुक प्रतिष्ठा बढ़ैत गेलनि। आब कोनो काज-दनमे हुनक पुछारी होइत छल। साहित्यिक आ सामाजिक जीवन हुनक बढ़ि रहल छलनि मुदा व्यक्तिगत दाम्पत्य जीवन घटि रहल छल।

जेना-जेना रेणुक आभामंडल विस्तृत होइत गेलनि तेना-तेना जेना हमर पुरुषार्थ घोकचैत गेल। समयक फेर छल। जे राति पहिने धोपचटमे बिति जाए वा हम रातिकेँ कहियो बाहर नहि रहए चाहैत छलहुँ से राति आब पहाड़ बनि गेल छल। रेणुक देह छूबाक हमरा साहसे नहि होइत अछि! पता नहि ई की भऽ गेल अछि हमरा! जतेक कसिकेँ एकरा पकड़ए चाही ओतबे तेजीसँ ओ छिटकि जाइत छल। हमर तऽ स्थिति अजीब भेल जा रहल छल। कहियो-कहियो ओहिना अपन मथदुखीक भगल करैत हुनका स्कूल छोड़ब मठिया दैत छलहुँ आ ओ कुनमुनाइत टेम्पोसँ जाइत रहथि। ओहि दिन हुनक मुहपर अभरल चिंताक रेख

पता नहि किएक हमरा आत्म-तोष दैत छल। शायद हमर पुरुषार्थ एहि चिंताक रेखकेँ अपन छोट-छोट विजय मानैत छल। वा पता नहि किएक! भाग्य लक्ष्मी छँटगर भऽ गेल छलीह। ओ कखनो माँ-बाबूजी लऽग तऽ कखनो हमरा लऽग रहि जाइत छलि। ओकर मुस्की अखनो हमरा आनंद दैत छल!

एक दिन रेणु अपन एक सहकर्मी शिक्षिका विषयमे कहलनि। ओ अक्सर गुरु डाक सेवापर प्रसारित मनोरंजक कथा-पिहानी कहैत छलीह। एक दिन कहलनि जे कोना श्वेता ठाकुरक शक्की पति अक्सर विद्यालयपर आबि ओकरा गारि-फज्झति करैत छल। हेडमास्टरकेँ कहैत छल जे पहिलुक डीएभी विद्यालयसँ एकरा चरित्रहीनताक कारणेँ निकालल गेल छल। जँ एतए अहाँक संग फँसल अछि तऽ अहाँ ओकरा संग बियाह करू। हम तलाक दऽ देने छी ओकरा। कोनो समस्या नहि अछि। आ जँ अहाँ नहि फँसल छी तऽ तत्काल एहि ठामसँ निकालू एकरा। स्कूलक बच्चा सब दुरि भऽ जाएत। एक दिन तऽ ओ हद कऽ देलक। ओ किछु करैत नहि छल आ गाँजा-भाँगक निसाँमे श्वेता संग स्कूलमे मारि-पीट सेहो कएलक। फोन गेलापर मातृकसँ दौगल भाए सब स्कूलपर आबि श्वेताक पति केर नीक इलाज कएलक। पुलिसमे फोन भेलै आ ओ आबिकेँ निसाँमे बड़बड़ाइत पतिकेँ लऽ गेल। एहि सभसँ तंग आबि श्वेता पतिसँ तलाक लेलनि आ एक विधुर शिक्षक संग अपन जीवनक दोसर पारी शुरू कएलनि।

दोसरो दिन एकटा नवकथा कहलनि। ई तऽ शॉकिंग संग आश्चर्यजनक सेहो छल। ओ कहने छलीह जे बगलक विद्यालयक रूपमजीक जिनगी एक छोट घटनासँ कोना बदलि गेलनि। हुनको पति किछु खास नहि करैत छल। भरि दिन लैपटॉपपर टकु-ट्रा आ ऑनलाइन गेममे लागल रहैत छल। हँ! एकटा बड़का खूबी छलनि जे प्राय: भोजन वैह बनाबथि। रूपम मात्र बर्तन-बासन माँजि लैत छलीह। एक दिन एहन भेल जे रूपमक किछु सहकर्मी सब घरपर आएल छल। रूपम पतिकेँ चाय बना देबाक लेल कहि गप्प-सप्पमे लागि गेलीह। पति लैपटॉपपर किछु व्यस्त रहथि, बिसरा गेलाह। रूपमक सखी सब बिनु चाय पीने चलि गेलीह। यथार्थमे रूपम अपन सखी सभक समक्ष अपन रुतबाक प्रदर्शन करए चाहैत छलीह जे देखू हम कोना अपन पतिकेँ मुट्ठीमे रखने छी। ई नहि सुतरल आ उल्टे बेइज्जती सेहो भऽ गेलनि। एहिसँ तामसे-पित्ते घोर भेल रूपम एकटा सूटकेस लऽ हिंदू रहितो तीन बेर तलाक-तलाक-तलाक कहि घरसँ विदा भऽ गेलीह। केहन विचित्र समय आबि गेल छै। एहन छोट बातपर एतेक पैघ निर्णय!

रमेशकेँ एहिसँ बेसी विचित्र ई लागल जे आखिर ई सब कथा रेणु हमरा किएक कहि रहल छथि। की हुनको मोनमे किछु खिचड़ी पाकि रहल अछि की! भरि राति रमेश कछ-मछ करैत रहि गेल, नीन नहि भेलनि।

राति भरि जागल रहबाक कारणेँ भोरमे रमेशक माथ दुखाइत छल। रेणु तैयार भेलीह आ रमेशसँ गाड़ी जल्दी निकालबाक लेल कहलनि। रमेश मना कऽ देलक। सुनिते रेणुक पारा हाइ भऽ गेल। चिचिआए लगलीह "हमर काजमे अहाँक माथ दुखाइए आ हमरे आनल राशन खाइत काल ने माथ दुखाइए आ ने पेट! लाज नहि होइए की? आब तऽ टेम्पोओ समयपर नहि पहुँचा सकत! पहिने कहैत ठोरपर ताला लागल रहए की?" रेणुक कटाह बोल सुनि रमेश तमतमा गेल।

– "भरि राति जागल छलहुँ से देखने नहि छलहुँ की?"

– "हम कहने रही जे भरि राति जागू!"

– "नहि! अहाँ नहि अहाँक करम!"

– "एहि झंझटसँ नीक जे हम सिमरीएमे डेरा लऽ ली...

– "ओ! ओह! तऽ बात एतऽ धरि पहुँचि गेल अछि! साली आब घरवाली बनतै?"

– "केहन निर्लज्ज छी अहाँ! पति जखन कोनो चीजमे पत्नीसँ पराजित होइत अछि तखन पत्नीक चरित्रपर आगि उठा जितबाक प्रयास करैत अछि। मिथ्या आरोप आ मिथ्या विजय! छिया-छिया! जे हमरा विषयमे स्कूलोमे कोइ सोचि नहि सकल से आरोप हमरापर लगा देलहुँ अहाँ! जानथि दिनकर दीनानाथ! मुदा हम आब एतए एक सेकंड रहि नहि सकब। हम सभटा त्यागि सकैत छी। कोनो दुख सहि सकैत छी मुदा चरित्रहीनताक आरोप सुनि जीवित नहि रहि सकैत छी।" रेणु ऋचा ऋचा कहैत कानए लगलीह। ऋचा दादीक कोरामे छल। ओ बेटा-पुतोहुक झंझट सुनि कहुना घसिटाइत एम्हरे आबि रहल छलीह। ऋचा कुदिकेँ माएक कोरा चलि गेल। हमरो की ने की फुराएल जे बेटीकेँ रेणुक कोरासँ छीनि लेलहुँ– "आब जाउ अहाँकेँ जतए जएबाक अछि! एकरा नहि जाए देबै हम! एकरा बिना हम जी नहि सकै छी!"

रेणु जोरसँ चिचिआए लगलीह। ओसारासँ उतरए लगलीह कि बाबूजी सोझाँमे ठाढ़ भऽ गेलथि। बाइकक चाभी रेणुकेँ दैत बजलाह– "ई चाभी लियऽ आ प्रैक्टिस करू। ई बाइक तऽ अहीँक नैहरसँ भेटल छल ने! आइसँ ई अहाँक जिम्मा। एहिसँ स्कूल जाउ। घर नहि छोड़ू कनिञा! अहाँ एहि घरक लक्ष्मी छी। हम हेडमास्टर साहेबकेँ आजुक सीएल लेल फोन कऽ देने छी।"

रेणु थकमका गेल छलीह।

माए घुसकुनियाँ काटैत कहुना बाहर अएलीह। हमर माए हमरे दुर्गति करए लगलीह– "तू हमर लछमीनियाँ पुतोहुपर एहन अनर्गल आरोप लगेलैँ किए रे अभगला? तोँ भाग एतएसँ। कनिञा कतहु नहि जएतीह। एतहि रहथिन। तू जो दिल्ली-पंजाब कमाइ लेल।" बैसल आ कनैत रेणुक देहपर माए ओँघरा गेलीह– "कनिञा यै कनिञा! एहन अनर्थ नहि करब। अहाँ साक्षात् अन्नपूर्णा छी! अहाँ चलि जाएब तऽ हमसब ओहिना बेलल्ला भेल भूखसँ मरि जाएब। के खाना देत आ के दबाइ! बेटा दिशिसँ हमही अहाँसँ एक बेर एहि अभागलकेँ क्षमा करबाक भीख मँगैत छी।" रेणु माएक छातीमे मुह नुका हिचुकैत छलीह। दुनू सासु-पुतोहु कानि रहल छल। हमरो मोन व्याकुल भेल रहए। मोन हुअए जे तत्क्षण कतहु दूर भागि जाए। यैह सब चलि रहल छल कि दलानपरसँ डाक पिउन झाजीक हाक हमरो कानमे पड़ल– यौ डाक बाबू! की हल्ला होइए? कथीमे लागल छी यौ? शीघ्र बाहर आउ। मधुर खुआउ। बीपीएससीसँ रमेशक नाम चिट्ठी आएल अछि।



[पटना, 4 सितंबर 2025]

किछु युद्धकथा

थारो बीरा

पिलोवणी मध्य विद्यालयक प्रधान शिक्षक शशांक राजपुरोहितक ई अंतिम व्याख्यान छल। शशांकजी प्रत्येक मासक अंतिम शनिकेँ एकसँ सात वर्गक सभटा छात्र-छात्राकेँ एकठाम बैसा किछु-किछु कहैत छलाह। आइ ओ उदयपुर राज पैलेस आ पिलोवणीक संबंधपर बहुत बात कहलनि। इहो कहलनि जे पहिने रक्षाबंधन दिन पैलेससँ सभक लेल चुँदड़ी अबैत छल। चारिम कक्षामे पढ़ैत सुलु ध्यानसँ सभटा बात सुनलक मुदा बहुत बात ओ बुझि नहि सकल। ओ एकहि दरबड़मे अपन घर आबि गेल आ सभकेँ कहऽ लागल जे काल्हि हमरा सभक लेल सिटी पैलेससँ चुँदड़ी आएत। सात-आठ बरखक सुलु भरि राति चौंकले रहल। बीच-बीचमे कतेक बेर माएसँ पुछैत छल जे भोर भेल वा नहि। ओ अत्यंत आतुर रहए। भोरेसँ माएकेँ रोहिणी माता मंदिर चलबाक जिद करैत छलि। कतबो सब समझेलक मुदा ओ नहि मानल। सुनील भैयाकेँ सेहो तंग कऽ देलक। अंतमे सुनीले माए संग ओकरा रोहिणी माता मंदिर लऽ गेल। एतऽ कोनो एहन बात नहि छल। भोपाजी बहुत समझेलनि मुदा सुलु शांत नहि होइत छलीह। अंतमे भोपाजी मंदिरक भीतर जा एक चुनरी आनि सुलुकेँ देलनि जे ई विशेष रूपसँ ओकरे लेल उदयपुरसँ आएल अछि। सुलु एक क्षणक लेल प्रसन्न भेलीह मुदा शीघ्रे जानि गेलीह जे ई ओकरा बहटारबाक प्रयास छोड़ि आर किछु नहि अछि। भैया बोल-भरोस देलनि जे हम सभटा पता करब आ अहाँकेँ बताएब। उदयपुरसँ अहाँक लेल चुनरी आनि देब। फेर सब विदा भेल। स्कूलपर सेहो गेल मुदा ओहि ठाम एकदम सन्नाटा छल। कहुना आँगन आएल आ अबिते दादीसासँ पुछलक– अठे उदयपुर सूँ अब चुँदड़ी क्यूँ कोनी आबे? (आब उदयपुरसँ चुनरी किएक नहि अबैत अछि?) दादीसा सेहो किछु नहि बजलीह। सुलु उद्विग्न छलीह। कहुना रक्षाबंधन संपन्न भेल।

सुलु आ सुनील दुनू भाए-बहिन बहुत चंसगर। सुनील इंटर बाद एनडीए, खड्गबासला चलि गेल छल। सुलु अपन वर्गमे टॉप करैत रहलीह।

समय व्यतीत होइत रहल। सुनील मराठा लाइट इन्फेंट्री रेजिमेंटमे सेकेंड लेफ्टिनेंट रूपमे कमीशन प्राप्त कएलनि। हर हर महादेवक युद्धघोष हुनका अत्यंत प्रिय छल। आब तऽ कैप्टनसँ मेजर होइवला छथि।

एक बेर सुनील रक्षाबंधनमे दू दिनक लेल गाम अएलाह। ओहि दिन सुलुक नीट मेडिकल केर परिणाम आएल छल। सुलु सफल भेल छलीह। सुनील बहिनसँ किछु मँगबाक लेल कहलनि। ओ उदयपुर आ चित्तौड़गढ़ देखबाक सेहंता प्रकट कएलनि। अखन धरि गेल नहि छलीह। कार्यक्रम बनि गेल।

प्रस्थान काल किछु वृद्धजन उदयपुर सिटी पैलेस नहि जएबाक लेल कहलनि तखन मात्र चित्तौड़गढ़ केर कार्यक्रम बनल। सुलु फेर शंकित भेलीह जे सिटी पैलेस किएक नहि जा सकैत छी!

चित्तौड़गढ़ पहुँचलाक बाद सुनील सुरक्षा अधिकारी सभकेँ किछु कहलनि आ विशाल गेट तत्क्षण खुजि गेल। दूटा सिपाही हिनका सभक संग चलल। चित्तौड़गढ़ किलामे राणा कुम्भा द्वारा खिलजीपर जीतक स्मृतिमे बनाओल गेल पंद्रहम शताब्दीक विजय स्तंभ, कुम्भा श्यामा मंदिर, फतेह प्रकाश पैलेस, गोमुख कुंड, जैन तीर्थंकर आदिनाथकेँ समर्पित चौदहम शताब्दीक कीर्त्ति स्तंभ, मीरा बाई मंदिर सब देखलनि। जखन ओ सब राणा साँगा द्वारा पूजित कालिका भगवतीक दर्शन करैत छलीह तखन संग गेल एक सिपाही बाजल– सुनते हैं राणा साँगा पूजा पर बैठे-बैठे ही भगवती के माथे पर तिलक लगा देते थे। सभकेँ आश्चर्य भेल जे भगवतीक माथ एतेक ऊँच अछि जे ठाढ़ भऽ कहुना हमरा सभक हाथ भगवतीक माथ धरि पहुँचि सकैत अछि आ राणा साँगा बैसले-बैसल भगवतीक माथमे ठोप लगा दैत छलाह! ओह! अद्‌भुत! आठ फीटसँ ऊपरक लोक रहल होएताह महावीर राणा साँगा! जखन सुलु अत्यंत सुंदर पद्‌मिनी महल देखि जौहर स्थलपर पहुँचलीह आ रानी सभक हाथक थाप देखलनि तखन मोन व्याकुल भऽ गेलनि। ओहि स्थलकेँ प्रणाम कएलनि जेकर परतर विश्वक कोनो स्थल नहि कऽ सकैत अछि। अपन आन-बान-शानक लेल स्वेच्छासँ हजारक हजार पद्‌मिनी जाहि ठाम अग्नि-प्रवेश कएने होथि ओ स्थल अद्‌भुत तऽ अछिए, अनुपम सेहो अछि। संग लागल सिपाही बाजल– पहले यह स्थान एक कूप की शक्ल में था जहाँ विशाल चिता सजाई गई थी और जिसमें कूदकर रानियों ने आत्मदाह किया था। अब इसे भरकर समतल बाग बना दिया गया है। यह स्थल सारे संसार में एक ही है। अद्‌भुत शौर्य की अनुपम वीरभूमि!

सुलु किछु काल ओहि अदृश्य ज्योति-पुंजक धाह केर अनुभव कएलनि फेर रानी सभक हाथक सिंदूरी छापपर अपन हाथ राखि देलनि। बकोर भेल आँखिसँ नोरक टघार बहि रहल छल। ओ कखन फर्शपर बैसि गेलीह से हुनको पता नहि। अग्नि-स्नान लेल जाइत काल सर्वाभरणभूषिता क्षत्राणी सभकेँ दुनू तरहत्थीमे सिंदूर तोपि देबालपर अपन अंतिम निशानी रूपमे थाप देबाक हुनका सभक मनोदशा अकानि रहल छलीह। आँखिसँ नोरक टघार जेना ओहि मनस्वी वीर क्षत्राणी सभकेँ अश्रु-तर्पण दैत हो! सुनील किछु काल हुनका ओहिना छोड़ि देलनि फेर टोकलनि तखन सुलु हड़बड़ाकेँ ओहि दिव्य भावलोकसँ आपस अएलीह। ओहि थाप सभकेँ प्रणाम करैत ठाढ़ भऽ चलबाक लेल तत्पर भेलीह। किलाक बाहर एकटा बच्ची हाड़ा रानीक एक हाथमे तलवार आ दोसर हाथमे थारीमे अपन कटल मस्तक दूतकेँ दैत कालक फोटो बेचि रहल छलीह। सुलु गौरसँ ओ फोटो देखि रहल छलीह। हुनक कानमे किछु काल पहिने संग गेल जवान द्वारा कहल गेल बात घनघना रहल छलै– कुछ भी कहिए पर यह राजस्थान निराला है। छल, स्वार्थ, षड्यंत्र, धोखा या दमन की चाहे कितनी भी कहानियाँ गढ़ लीजिए पर इस राजपुताने ने भारतवर्ष के इतिहास को जो गौरव दिया है वह कोई दूसरा दे नहीं सकता। मैं राजस्थानी नहीं एक बिहारी हूँ, राजपूत भी नहीं हूँ फिर भी गर्व से कह सकता हूँ कि भारतवर्ष के इतिहास से यदि राजस्थान के राजपुताना और मराठों का इतिहास निकाल दिया जाए तो भारतवर्ष का इतिहास गूँगा, बौना और शौर्यहीन होकर रह जाएगा। सच में गढ़ तो चित्तौड़गढ़ और सब गढ़ैया! छैल-छबीलो राजस्थान! रंग-रँगीलो राजस्थान!! सुनील फोटो बेचि रहल ओहि बचियासँ हाड़ा रानीवला फोटो किनि लेलनि।

खाइत-पिबैत साँझ भऽ गेल छल। गाड़ीमे सुनील सुलुक हाथमे हाड़ा रानीवला ओ फोटो दऽ देलनि। फोटो छातीसँ सटा सुलु बजलीह– त्याग अर बलिदान री निराली कहानी है। ओह! इतड़ो कठण किल्लो! इण गौरवी परंपरा पर एक छोटी सी रीत नी निभा सकी! आखिर यो कैयो भयो? (त्याग-बलिदानक ई गाथा अनुपम अछि! एतेक पैघ किला! एहन गौरवशाली परंपरा! आ एकटा छोट परंपराक निर्वहन नहि भऽ सकल! आखिर ई कोना भेल?)

सुनील बाजि उठलाह– अब न वा भगवती रे न वा कड़ाही रे!अब न राजा न रजवाड़ा। (ने आब ओ भगवती छथि आ ने वो कड़ाह! आब ने राजा रहल ने रजवाड़ा!) बीचहिमे सुलु पुछि देलनि– म्हाणो आज उदयपुर जावण सूं कांई कारण सूं मना करियो? (हमरा सभकेँ उदयपुर जाइसँ आइ किएक मना कएल गेल?)

– वचन! प्रण!!

– किवो वचन? किवो प्रण ? (कोन वचन? कथीक प्रण?) सुलुक जिज्ञासा बहुत बढ़ि गेल छल। ओ आतुर होइत प्रश्न पर प्रश्न करैत छलीह।

– इणरी घड्यो कवण इणी नूं ठीक कोनी जाणै। कोई तीन सौ, कोई दो सौ, कोई एक सौ बरस आगैरी बात माने। पहले गाँव की बेटियाँ रक्षाबंधन में राखियाँ भेजता ही अर उणारी बदले में उणाँने चुँदड़ी भेजी जाती ही। सबेरे रोहिणी माताजीरे मंदिर में चुँदड़ी चढ़ाई री रीत ही, पछै भोपाजी सगली वैणां ने चुँदड़ी बाँटता। वा चुँदड़ी पेर'र वैणां आपरे बीरा ने राखी बाँधती ही। (ई कहिया भेल से किनको ठीकसँ नहि पता। कोइ तीन सए वर्ष, कोइ दू सए वर्ष तऽ कोइ सए वर्ष पूर्व मानैत छथि। पहिने गामक बेटी रक्षाबंधनमे उदयपुर सिटी पैलेस राखी पठबैत छलीह आ ओम्हरसँ हुनका सभक लेल चुनरी अबैत छल। भोरे-भोर चुनरी रोहिणी माताक मंदिरमे चढ़ाएल जाइत छल। फेर पुजारी सभकेँ चुनरी बँटैत छलाह। यैह चुनरी ओढ़ि बहिन सब अपन-अपन भाएकेँ राखी बान्हैत छलीह।)

– ओह! राजा अर प्रजा रे बीच ऐड़ो सकोत भोट मोटो अभिनव भावनात्मक संबंध! (राजा आ प्रजाक बीच एहन सक्कत आ एतेक मजगूत अभिनव भावनात्मक संबंध!)

– ई परंपरा री ही। बाद में चुँदड़ी आण बंद हो गयो। फेर भी गाँव सूं सिटी पैलेस राखी भेजी जावै ही। तीस वरसां तांई राखी भेज्यां पाछै भी उण कनै सूं कोई प्रतिक्रिया नीं आयो अर बहनां मंदिर सूं निराश लौटती रई तो उणा में रोष उठ्यो। वैणां प्रण करयो के अब कोई सिटी पैलेस राखी कोनी भेजसी। मरदां सूं वचन लियो ग्यो के बिना बुलावे कोई भी सिटी पैलेस में पग नीं राखसी। (यैह परंपरा छल। बादमे चुनरी आएब बंद भऽ गेल। एकर बादो गामसँ सिटी पैलेस राखी पठाओल जाइत रहल। जखन तीस वर्ष धरि राखी पठबैत रहलाक बादो ओम्हरसँ कोनो प्रतिक्रिया नहि भेल आ गामक बेटी सब प्रत्येक राखी दिन भोरमे मंदिरसँ निराश घुमैत रहलीह तखन हुनका सभमे आक्रोश अभरल। बहिन सभ प्रण लेलनि जे आब कोइ सिटी पैलेस राखी नहि पठाओत। पुरुष सभसँ वचन लेल गेल जे बिनु आमंत्रणकेँ कोइ सिटी पैलेसमे कहियो पयर नहि धरत।)

– ओह! अठै वास्ते म्हानूं उदयपुर जवणों रे मनाई कर दी। (तेँ हमरा सभकेँ उदयपुर जाइसँ मनाही भेल छल।)

– हँ। आज भी वो प्रण अर वचन चालू रिया हँ। (हँ! अखनो ई प्रण आ वचन जारी अछि।)

– रैहणी भी चाही जे। एक चुँदड़ी री कीमत ही कै केई... एइ वास्ते एक पुरानी रीत तोड़ी गी, वैणा रो हिया दुखायो गयो। दाम देख्यो, मन रा ऊँचे भाव नीं। (रहबाको चाही। एक चुनरीक मोले की? एहि लेल पुरान परंपरा तोड़ल गेल। बहिन सभक हृदय दुखाओल गेल। दाम देखल गेल मोनक उदात्त भाव नहि देखल गेल।)

– वे सगला बड़ां लोग छै। (ओ सब पैघ लोक छथि।)

– तो आपां हुण कुण छोटा लोग हां? भारतीय सेना रा कैप्टन सुनील सिंह राजपुरोहित री बहन ने छोटी मानणी ठीक है के? भाव संबंध में सब बराबर! (तऽ हमसब कोन छोट लोक छी! भारतीय सेनाक कैप्टन सुनील सिंह राजपुरोहितक बहिनकेँ छोट कहब उचित अछि की?)

– बस-बस! दिल पे मत ले बाईसा!

– हिआ अर मूँडै दोन्यूँ पर ले लियो है। ए लोग बाग म्हारो आस्था विश्वास तोड्यो है। म्हारो मन मां सदा सदा सूं ई भाव रह्यो हूं कै म्हारां एक वीर वंश परंपरा सूं जुड्वीं हूँ। इण भाव रै अंदर देश भगत रो सार छुप्यो है। ई भाव ने खंडित करण रो पाप तो हो ही ग्यो है बीरा! (दिल आ दिमाग दुनूपर लेलहुँ। ई लोकनि हमर आस्था आ विश्वास तोड़लनि। हमर मोनमे सदिखन एक भाव छल जे हम सेहो श्रेष्ठ महावीर सभक वंश-परंपरासँ जुड़ल छी। एहि भावमे देशभक्तिक मर्म नुकाएल अछि। एहि भावकेँ खंडित करबाक पाप तऽ भेले अछि भैया!)

– ओह! यू आर सो सीरियस! (अहाँ अति गंभीर छी।)

– म्हे जाणां के अब राजा-महाराजा कोनी होबे, सगला एक समान नागरिक। म्हे इयो भी जाणूँ के के वे सब म्हारे कोई कोनी। वो क्षत्रिय सै अर आव्हां ब्राह्मण! ए भी जाणूँ कै ई सूँ न तो कठैई भेंट होसी न कठैई कोई लाभ। (हम जनैत छी जे आब कोइ राजा-महाराजा नहि होइत छै। सब समान नागरिक। इहो जनैत छी जे ओ सब हमरा सभक कोइ नहि छथि। हमसब ब्राह्मण ओ क्षत्रिय! ने कहियो हुनका सभसँ भेंट होएत आ ने हुनका सभसँ कोनो लाभ होएत।)

– फेर तो इणती सोचणो यूँ ही है। क्यों इणती सोच्यो है? (तखन फेर एतेक सोचब व्यर्थ! किएक एतेक सोचैत छी?)

– पर हम राजपुताने री वीर वंशे री शौर्यगाथा पढ़'र घणा हिवड़ै सूं हर्षित अर रोमांचित होवा, के फेर म्हारी आंख्यां मे सूं आँसू बहै वो सब उणां माथे अपणो भाव-कर्ज है। (तथापि जे राजपुतानाक वीर वंश सभक अतुलित शौर्य

कथा पढ़ि हमसब पुलकित होइत छी, भावातिरेकमे हमरा सभक आँखिसँ नोर बहैत अछि वा गर्वित होइत छी ई हुनका सभपर हमरा सभक भाव-ॠण अछि।)

– नो नीड नोट टू थिंक अपटू दिस लेभेल। (एहि स्तर तक सोचबाक आवश्यकता नहि।)

– हँ! माँ उण भावना री चिंता करूँ, जीकी म्हारे देस, म्हारी भासा-संस्कृति-परंपरा, म्हारे समाज आ म्हारे पुरखां ने मान देवणो सिखावै है। राजमहल री होटल खुलीं। अब वे सब धंधो करे। इन सबसूं किसी न काई आपत्ति है। इनकूं तो क्यूं रे इणसूँ क्यूं है जाण कोनी पण इनइं बहुत मान-सम्मान दीजे। इनकी उपलब्धियां बू देखनै म्हानै खुशी होवै। पण क्यूँ? यो तो निरो म्हारो नीज को भाव है जिको कोई म्हाऊँ छीन कोनी सके। (हम ओहि भाव लेल चिंतित छी जे अपन गाम-समाज, अपन भाषा-संस्कृति-परंपरा, अपन पुरुखा आ अपन देशकेँ मान देनाइ सिखबैत अछि। राजमहलमे होटल खुजल। आब व्यापार करैत छथि एहि सभसँ ककरो कोनो आपत्ति नहि। अकारण किएक हिनका सभक प्रति मोनमे आदर आ मान अछि, हिनका सभक उपलब्धिपर प्रसन्न होइत छी। से किएक? एकटा अकथनीय संबंधक भाव अछि। ई नितांत व्यक्तिगत अछि जेकरा कोइ हमरासँ छिनि नहि सकैत अछि।)

– नेभर! (कहियो नहि!)

– म्हारा प्रदेश रा झुँझुनू इलाका मां बहनां रक्षाबंधन रे दिन घर आवै आपरा वीरा नै राखी बाँधै, अर फेर देश ने वास्ते युद्ध में शहीद जवानवां री पाषाण मूरतवां री कलाई मां राखी बांधै। इणमें जाति या आपरा पराया कोई बंधण नीं। आखिर क्यूँ सो ? कोई इणरो मोल दे सके है के? ये तो अनमोल है। यो आपणे गाँव-समाज रा शहीदां सारे आपणाप रो परगटण है, एक मान-सम्मान है। (अपने प्रदेशक झुँझुनू क्षेत्रमे प्रत्येक रक्षाबंधन दिन नैहर आबि बहिन अपन भाएकेँ राखी बान्हैत छथि आ फेर गाममे आनठाम निर्मित शहीद सैनिक सभक प्रस्तर प्रतिमाक हाथमे राखी बान्हैत छथि। एहिमे जाति वा अपन-आन केर कोनो बंधन नहि रहैत छै। आखिर किए? कोइ एकर मोल दऽ सकैत अछि की? ई अनमोल अछि। अपन गाम-समाजक शहीदकेँ सम्मान देनाइ थिक।)

– ओह!

– कोई तो झुँझुनूं री बेण है जी नवी चाल चलावे अर कोई वे है जी थोड़े से खर्च रे कारण सदियां री परंपरा मिटा देवे। (एक झुँझुनूक बहिन सब छथि जे नव परंपरा शुरू करैत छथि आ एक ओ सब छथि जे शताब्दीक परंपरा किछु खर्चक कारणेँ ध्वस्त करैत छथि।)

– जावण द्यौ,मन रीस मत करो। अबखो नी मानोजो। (जाए दियौ। मोन छोट जुनि करी। कष्ट नहि मानू।)

– कष्ट क्यूँ नहीं मानू? इण मन्ने घणो कष्ट दियो है। तो भी,आप देखज्यो भैया, मैं इण नै एक दिन जरूर ठीक कर देस्यूँगी। (नहि! कष्ट कोना नहि मानब? ई हमरा अपार कष्ट देलक। तथापि अहाँ देखब भैया! हम एक दिन एकरा अवश्य ठीक कऽ देब!)

– कोना?

– ई जीवण इतरो छोटको कोनी। जद राजघराणो रो कोई मोसूं मिलसी बठे ही म्हारे मन री बात खूब कैसूं। वां जाणे अर वांरा करम जाणे! (ई जीवन ओतेक छोटो नहि। जाहि दिन राज परिवारक कोनो सदस्यसँ हमर भेँट भेल ओहि दिन अपन मोनक व्यथा उझिल देब, खूब सुनाएब! फेर ओ जानथि आ हुनक कर्म जानए।)

– थारी मनोकामना पूरण होसी, यो थारे भाईजी रो आसीरवाद है। माता रोहिणी अर भगवान् एकलिंग थानैं जल्द सफल करै। (अहाँक मनोकामना अवश्य पूर होएत। ई अहाँक भैया केर आशीर्वाद अछि। रोहिणी माता आ एकलिंग भगवान् अहाँकेँ शीघ्र सफल करथि।)

दुनू भाए-बहिन बात-चीतमे तेहन मग्न रहथि जे कखन गाड़ी गाममे घरक दुरुखा आगू ठाढ़ भऽ गेल से पता नहि चललनि।

समय अपन गतिसँ आगू बढ़ि रहल छल। सुलु सबाई मानसिंह मेडिकल कॉलेज, जयपुरसँ एमबीबीएस कऽ गेलीह। मेडिसिनमे ऑनर्स आ डिस्टिंक्शन भेटलनि। फेर मेडिसिनमे पीजी कएलनि। इंटर्नशिप सभक बाद एम्स, दिल्लीमे सीनियर रेजीडेंट रूपमे योगदान देलनि। सुनील सिंह राजपुरोहित मेजरसँ लेफ्टिनेंट कर्नल, कर्नल आ फेर ब्रिगेडियर बनि गेल छलाह।

एम्स दिल्लीक प्राइवेट वार्ड डिलक्स ए 1मे एचओडी डॉ. रस्तोगी संग सीनियर रेजिडेंट डॉ. सुलेखा राउंडपर छलीह। जाइत काल डॉ. रस्तोगी कहलनि– डू यू नो ही इज द डिजेंडेंट ऑफ ऑवर ग्रेट नेशनल हीरो महाराणा प्रताप। बी एटेंटिव एंड टेक हिज पर्सनल केयर। (अहाँक बूझल अछि जे ओ हमरा सभक आ देशक महान् राष्ट्रनायक महाराणा प्रतापक वंशज छथि? सावधान रहू आ हुनकापर निजी ध्यान राखू)। डॉ. सुलेखा अवाक् रहि गेल छलीह। मोनमे नेनपनसँ संचित एक गुबार फटबाक अवसर शायद एकलिंगजी दऽ देलनि। ओ बाजथि किछु नहि मात्र अक्सर आबिकेँ स्वयं मरीजक देखभाल करथि। कुँवर साहेबक ध्यानमे ई बात आबि गेलनि जे ई डॉक्टर तऽ सिस्टर जकाँ

सेवामे लागल अछि। तेसर दिन डिस्चार्ज करैत काल नामपटपर डॉ. सुलेखा राजपुरोहित देखि कुँवरजी पुछि देलनि–

– आर यू राजस्थानी? (की अहाँ राजस्थानी छी?)

हँसैत डॉ. सुलेखा कहलनि– या, फ्रॅम पिलोवणी। (हँ, पिलोवणीसँ)

– थे म्नो जाने हे के? (हमरा अहाँ जनैत छी की?) ओ पुछलनि।

– आप म्हे महान् महाराणा प्रताप रा वंशज छ्याँ आप म्हारो गौरव छ्याँ। (अहाँ हमरा सभक महान् महाराणा प्रतापक वंशज छी। अहाँ हमरा सभक गौरव छी।)

– ओह! ग्रेट!!

– परंपरा रे हिसाब सूँ तो आप म्हारो बीरा हो पण राजा महाराजावाँ अब म्हाराँ जियाँ छोटा लोग्या सूँ नाता राखणो या परंपरा निभाणी घणी पैला सूँ ही छोड़ दियो है। (परंपरासँ तऽ अहाँ हमर भाए छी मुदा राजा-महाराजा सब हमरा सभक सन छोट लोक संग रिश्ता राखब वा परंपराक निर्वाह करब बहुत पहिनेसँ छोड़ि देने छथि।) दुनू कऽल जोड़ने खम्मा घणी कहि डॉ. सुलेखा एम्सक भीड़मे नहि जानि कतय सन्हिआ गेलीह। सुलेखाक आँखि बहुत किछु कहि गेल। कुँवरजी ओहि आँखिक तापकेँ सहन नहि कऽ सकलाह। बेचैन भऽ गेलाह। उद्विगन भेल हुनक दुनू आँखि एम्हर-ओम्हर ताकि रहल छल। मोन सोचमे पड़ल छल जे आखिर डॉ. सुलेखा की कहि देलनि! कतबो मोन पारथि जे कोन परंपराक निर्वहन नहि भेल वा कोन संबंध हमसब तोड़ि देलहुँ तेकर पता नहि लागल। मोन ओहिना औनाइत रहल। गाड़ीमे भरि रस्ता यैह सोचैत रहलाह मुदा किछु थाह नहि चलल।

पिताक बेमारीक सूचनापर उदयपुर आबि गेल रहथि। एक दिन बाबोसासँ जिज्ञासा कएलनि। ओ चुप्प भऽ गेलाह। हुनको पता नहि छलनि। किछु नहि बजलाह। बाबोसाक मौन कुँवरकेँ व्यथित करैत छल। ओ सोचथि जे अनादि कालसँ मेवाड़क राजसत्ता जनोन्मुखी रहल अछि। भगवान् एकलिंगक देवान रूपमे हमर पुरुखा सेवा कएलनि। सभकेँ समान दृष्टिसँ देखल गेल। सभक सम्मान आ सभक सहयोग शासनक मूलमंत्र रहल। मेवाड़ कहियो जाति-धर्मक आधारपर भेद नहि कएलक।

खनवाक युद्धमे राणा सांगाक संग हसन खाँ मेवाती अद्भुत पराक्रम देखा एहने संबंध सभक कारणेँ महाराणा सांगाक लेल, अपन मेवाड़क लेल शहादत देलनि। किछु एहने भावक कारणेँ हकीम खाँ सूरी महाराणा प्रतापक

हरावल सेनाक सेनापति बनि मेवाड़ लेल आत्मोत्सर्ग कएलनि। महाराणा प्रताप तऽ एक भील सरदार वीरपुँगव पुँजाकेँ अपन मित्र आ राणाक मान देने रहथि। मेवाड़ तऽ कोल-भील तककेँ सम्मान देलक। बराबरीक दर्जा देलक। सभकेँ समान दृष्टिसँ देखलक। सभक सुख-दुखमे संग रहल, प्रत्येक संबंधकेँ मान देलक, हर रिश्ता निभएलक, फेर आखिर कोन त्रुटि भेल! कोन परंपरा टुटि गेल!! यैह सब सोचैत रहथि। मोन विचलित रहनि। डॉ. सुलेखाक आँखिक ओ ताप ...ओह!

किछु दिन बाद बहुत साहस कएलाक बाद बाबोसासँ एक बेर फेर पुछलनि। ओ कहलनि जे एहन बात तऽ कोनो नीकसँ मोन नहि पड़ैत अछि। हमरा समयमे एहन कोनो बात नहि भेल जे हम कोनो परंपराक त्याग कएने होइ। मुदा संभव जे किछु शताब्दी पूर्वक एक घटनासँ एकर संबंध होइ। आगू कहलनि जे हल्दीघाटी युद्धमे नारायण दास राजपुरोहितक बलिदान बाद हुनक संततिकेँ पाँच गाम– पिलोवणी, बणदार, गेणड़ी, रूँगड़ी आ शिवतलाब देल गेल छल। एहि गामक बेटीसब राज पैलेस प्रतिवर्ष राखी पठबैत छलीह आ पैलेससँ हुनका सभक लेल चुँदड़ी जाइत रहल। ई परंपरा छल मुदा कए सए वर्षसँ जखन एम्हरसँ चुँदड़ी पठाएब बंद भऽ गेलै तखन ओम्हरसँ राखी आएब सेहो बंद भऽ गेल। पता नहि एहन अनर्थ कोना भेल। केओ मोन नहि पारलनि। नहि पता जे ओ कोन समय रहए जे एहन चूक भेल। बापक बूढ़ आँखि पनिया गेल छल आ बेटाक आँखिमे डॉ. सुलेखाक वैह छवि अभरि गेल छल। कानमे ओकरे स्वर घनघना रहल छल– छोटा लोग्या सूँ नाता राखणो वा परंपरा निभाणी घणी पैला सूँ ही छोड़ दियो है।

कुँवरजी मसनदपर ओठँगि गेलाह। आँखि हुनको पनिया गेल छल। मोन व्यग्र व्याकुल!

किछु दिन बाद बाबोसा भगवान् एकलिंगमे लीन भऽ गेलाह।

उदयपुरमे सर्वत्र शोक केर वातावरण। पिलोवणीमे सेहो शोक छल। रोहिणी माता मंदिरमे बैसल ग्रामीण सभमे ओहिना विचार-विमर्श चलि रहल छल। एहि मास ब्रिगेडियर सुनील सिंह राजपुरोहित सेवानिवृत्त भऽ गामे आबि गेल छलाह। ओ सेहो बैसल रहथि। तखने सिटी पैलेसक किछु करिंदा आबि रोहिणी माता मंदिरक पुजारीकेँ किछु सामान देलनि। ओहिमे पीअर रंगमे रँगल चाउर आ एक पत्री छल। एक करिंदा पठाओल गेल पत्री सस्वर गाबि-गाबिकेँ सुना रहल छल। गीतक भाव छल जे राणा अरविन्द सिंह मेवाड़ साकेतवासी भेलाह। नव महाराजक तिलक होयत। राजपुरोहित सभकेँ सम्मानपूर्वक श्राद्ध आ अभिषेकमे

बजाओल जाइत अछि। पैलेससँ आमंत्रण देखि-सुनि सभकेँ छगुंता लागि गेलनि। ई परंपरा तऽ कतेक सए वर्षसँ समाप्त भऽ गेल छल। ई नव आ अजगुत बात कोना भऽ गेल! सिटी पैलेस नहि जएबाक निर्णय भेना डेढ़-दू सए वर्षसँ बेसी भऽ गेल छल। एहि आमंत्रणपर सिटी पैलेस जाइ वा नहि जाइ एहिपर भारी गमर्थन चलि रहल छल। सभक नजरि ब्रिगेडियर साहेबपर छल। ओ जे निर्णय करथि सैह करब। ब्रिगेडियर सुनील सिंह चलबाक पक्षमे निर्णय देलनि। निश्चित भेल जे आमंत्रण आएल अछि तऽ अवश्य चलल जाए। एकटा मिनी बसमे सब मुहपुरुख सवार भऽ तय तिथिकेँ सिटी पैलेस गेलाह। श्राद्ध कर्म नीकसँ संपन्न भेल। पिलोवणी आ दोसर गामक राजपुरोहित सभक यथोचित सम्मान भेल। सभकेँ रेशमी चद्दरि आ मेवाड़ी साफासँ विदाइ भेलनि। तखने एक करिंदा भरि मोटा चुनरी उघने आबिकेँ बसमे राखि देलक। विदा करए स्वयं कुँवरजी आएल रहथि।

ओ मोटा दिशि इशारा करैत एतबे बजलाह– ई सबली बाईसा खातर सै! (ई सभटा बहिन सभक खातिर अछि!) अबैत काल कुँवरजी ब्रिगेडियर साहेबकेँ एक विशेष चुँदड़ी देलनि। भावातिरेकमे ओ कहुना बाजि सकलाह– इणनै बाईसा डॉ. सुलेखा नै भेज देस्याँ। (एकरा बहिन डॉ. सुलेखाकेँ पठा देब)। आह्लादपूर्वक सुनील सिंह ओ चुनरी हाथमे लेलनि। रंग-बिरंगक गोटा लागल रेशमी चुनरीपर एक छोट कागज साटल छल जाहिपर हाथसँ लिखल छलै– ई राखी में तू आप ही आवै तो म्हारो भाग से। कोनी आवै तो थारा बीरा री चाह है कि आखी बार राखी जरूर भेजज्यो– थारो बीरा! (एहि राखीमे जँ अहाँ स्वयं आबि सकी तऽ हमर सौभाग्य। जँ नहि आबि सकी तऽ अहाँक भैयाक इच्छा अछि जे एहि बेर राखी अवश्य पठाएब– अहाँक भैया)

सब विभोर भेल छल। पिलोवणी आ सिटी पैलेसक अभिनव संबंध सेतुपर जमल बर्फ कोना आ ककरा कारणेँ पघीलि गेलै से मात्र ब्रिगेडियर साहेब आ कुँवरजी जनैत छलाह। दुनू एक दोसराकेँ पाँजमे गसिया लेलनि। दुनूक आँखिमे सुलुए बहि रहल छलीह।



[मैथिल समाज, रहिकाक मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह स्मारिका, 27-28 फरवरी-1 मार्च 2026]

जसु वचन देने छल

अक्टूबर केर अंतिम सप्ताहमे जखन जाड़क ई हाल तखन नवंबर-दिसंबरमे की होएत! प्रचंड जाड़! पहाड़पर जमल बर्फ जेना उज्जर धप-धप साड़ी पहिरि प्रकृति अपन श्रृंगार कएने हो! बर्फसँ भरल पहाड़क चोटीपर पड़ैत सूर्यक प्रथम किरण जेना श्वेत वस्त्रावृता भारतमाता कंचन-किरीट पहिरने हो!

4 गढ़वाल राइफल्स यूनिट केर बहुत जवान आइए एतऽ पहुँचल छल। सेकेंड लेफ्टिनेंट सुरेन्द्र नाथ टंडन आ बी के गोस्वामी जवान सभकेँ एकटा छोट-छीन मैदानमे घासपर बैसा हुनका सभसँ परिचय-पात कऽ रहल छथि। ई सब तवांगसँ रातिए आएल आ आइ भोरे जिमितांग भैली। फेर सब सेला क्षेत्रमे रिपोर्ट कएलनि। ओम्हर नामकछु भैली लऽग नेफा बॉर्डरपर चीनी सेना आक्रमणक सुरि-सारि कएने छल।

– नेफा क्या? सेकेंड लेफ्टिनेंट गोस्वामी पुछलनि।

– कुछ नहीं। नेफा से कोई नफा नहीं। नुकसान ही नुकसान! गोपाल गुसाई बाजल तऽ सब सैनिक भभाकेँ हँसि देलक।

– नेफा मीन्स नार्थ ईस्ट फ्रंटियर एजेंसी। सेकंड लेफ्टिनेंट बी के गोस्वामीक गंभीर स्वर अभरल– आप सबों को पता होना चाहिए कि संपूर्ण भारतवर्ष में सर्वप्रथम सूर्योदय यहीं होता है। सूर्य की पहली किरण यहाँ की डोँग पर्वत-घाटी में बसे डोँग ग्राम पर पड़ती है।

– हाँ सर! सूर्य की पहली किरण यहाँ के अचल पर्वत पर पड़ती है तो इसका नाम अरुणाचल होना चाहिए नेफा नहीं। भारतवर्ष में अंतिम सूर्योदय गुजरात के गरबाड़ा में होता है। दोनों में ठीक दो घंटे का अंतर है।

जसवंत सिंह रावत सहसा बाजि उठल।

– वेल! आइ'म प्राउड ऑफ यू! टंडन बजलाह। ओ जसवंतकेँ लऽगमे बजा विशेष चाबसी देलनि। परिवार आ शिक्षा विषयमे अतिरिक्त जिज्ञासा

कएलनि। एकाएक जसवंत सामान्य राइफलमैनसँ विशेष भऽ गेल। तखने किछु दूरीपर बैसलि दू मोनपा युवतीमेसँ एक किछु बाजि उठल। जसवन्त आपत्ति कएलनि जे ई के छथि जे सामरिक गोपनीय बात निधोख सुनि रहल छथि।

टंडन समझएलनि जे ई स्थानीय मोनपा लड़की छथि। हिनक परिवार हमरा सभकेँ रसद-पानिक जोगाड़मे सहायता करैत अछि। फेथफुल पोर्टर! दुनू बहिनपर विश्वास कऽ सकैत छी। अखन ओ अहाँक ज्ञानक प्रशंसा करैत अहाँकेँ स्थानीय दिरांग मोनपा भाषामे नीमा कहलनि अछि। मोनपा भाषामे नीमा माने सूर्य। जसवंत ओकरा दिशि देखलनि। फेर ओ स्वयं लजकोटर जकाँ अपन आँखि हटा लेलनि। सेलाक आँखिमे अजगुत चमकी छल। ओ अपलक जसवंत दिशि निहारि रहल छलीह।

सेकेंड लेफ्टिनेंट वी के गोस्वामी आगू तवांगक विश्लेषण करैत कहलनि जे 'त' माने घोड़ा आ 'वांग' माने चुनल। तवांगमे मोनेस्ट्री लेल जखन मेराग लामा लाड्रे ग्यात्सो जगह निर्धारित नहि कऽ पाबि रहल छलाह तखन एक ठाम जा हुनक घोड़ा ठाढ़ भऽ गेल। ओतएसँ हटबे नहि करए तऽ एकरा दैवीय संकेत मानि एतहि मोनेस्ट्रीक निर्माण भेल। तेँ तवाँगक अर्थ भेल अश्व द्वारा चयनित स्थल! किछु विचार-विमर्श बाद सब मैदानसँ विदा भऽ गेल।

चारि-पाँच दिन बाद सेला एपीओसँ जवान सभक चिट्ठी अनने छलीह। एहिमे जसवंतक गामसँ आएल माएक चिट्ठी सेहो छल। सस्वर पत्र पढ़ल जा रहल छलै। यैह परंपरा छल। आश्चर्य जे भाव भाषापर भारी पड़ैत छल आ सब सभक भाव बुझि लैत छल। जसुक माए पत्रमे ओकर चिंता कएने छलीह। एक बेर जसवंतक मुह देखबाक लेल पेटकान देने कतेक कबुला-पाती कएने छलीह। हुनक सेहंता छल जे युद्ध खत्म होइते बेटा गाम बरयूँ आबि जाए। ओ पौड़ी गढ़वालमे ओकरा लेल लड़की देखि रहल छथि। जसवंतक मुह लाल भऽ गेल रहए मुदा सेलाक लाल गाल एकाएक मुरझा गेल रहए। नूरा लक्ष्य कएने छलीह।

फेर पहाड़पर पोस्ट निर्माण काल भेटैत रहलीह दुनू बहिन। पैघ-छोट पाथर उठाकेँ आनि ओकरासँ देबाल निर्माण करब सहज नहि। जवान सभकेँ आश्चर्य लगै जे दुनू बहिन एकदम नहि हकमैत अछि आ हम सब एकहि बेरमे हकमि जाइत छी। समुद्रतलसँ 13700 फीटक ऊँचाइपर ऑक्सीजनक पातर स्तरक अभ्यस्त होएबाक कारणेँ एहन छल। छोट खुटीक दुनू बहिन देह-दशासँ अत्यधिक मजगूत छलि।

एक दिन जखन हम दुनू बहिन नीचाँसँ पीठपर लादि गोलीक दू पेटी पोस्टपर लऽ गेलहुँ तखन सेला दीदी जसवंतकेँ मोनपा भाषामे कहलनि जे पहिने

अहाँ अपन माथ एहि पेटीमे सटाउ एकर बादे ई उतारब हम। हमरा सभक पाबनि चोएकोर (चोस्कर)मे पवित्र धर्मग्रंथकेँ हम एहिना पवित्र कपड़ामे बान्हि पीठपर लादि जुलूसमे चलैत छी। आगू सिंगा, तुरही, डफली, ढोल, घड़ीघंट, शंख आदि बजबैत वादक आ लामा सब आ पाछूसँ त्रिपिटक वा धम्मपद वा आन कोनो पवित्र ग्रंथ पीठपर टँगने हमसब। बाटक कात ठाढ़ लोकसब एहिपर अपन माथ सटबैत छथि आ आशीर्वाद प्राप्त करैत छथि। अखन एहिमे बद्री विशालक फोटो सेहो अछि। गोलीक एहि पेटीकेँ सेहो पवित्र धर्मग्रंथे बुझू। माथसँ लगाउ। यैह प्राण रक्षा करत। हँसैत जसवंत सेलाक पीठमे बान्हल पेटीमे अपन माथ सटा देलनि। सेला आगामी लोसार (नववर्ष)पर संग-संग नाच-गानक लेल वचन देलनि।

एतऽ अएला आइ बीसम दिन छल। चीनी सेना लगातार बढ़ि रहल छल। बहुत रास फारवर्ड पोस्ट पॉलिसी ओतेक कारगर नहि रहल। संसाधनक अभावक बादो सैनिक सभक साहसमे कोनो कमी नहि। दू दिनसँ गोली चलबैत-चलबैत तर्जनी ततेक फुलि गेल छल जे ट्रिगरक खोलमे दिक्कतसँ पैसेत छल। फाटल मोजामे पयर जेना सर्द आ सुन्न भऽ गेल हो। तैयो भारतीय सेना बद्री विशाल की जय करैत युद्धभूमिमे डटल छल।

पौने पाँच बजे भोरमे नूरा हकासल-पिआसल पोस्टपर हकमैत चढ़ि गेलीह। हकमैत कहुना बाजि सकलीह जे मोनपा युवक सभक भेषमे चीनी सैनिक हथियार नुका एम्हर आबि रहल छथि। ओ सब मोनपा नहि छथि, एहि इलाकाक नहि छथि। हम एहि इलाकाक सब मोनपाकेँ चिन्हैत छी। आखिर ई बाहरी लोकसब मोनपाक भेषमे किएक छथि? जरूर ई सब चीनी सैनिक छथि जे अहाँ सभकेँ भ्रमित करबाक लेल मोनपा सभक भेष धारण कएने छथि। ताबत नीचाँ किछु अबरजातक अंदेसा बुझाएल। सतर्क जसवंतक संगी-साथी फायरिंग शुरू कऽ देलनि। मोनपा भेषमे चीनी सैनिक सेहो अपन-अपन लबादा फेकि फायरिंग शुरू कएलनि मुदा हुनका सभकेँ भागए पड़ल। नूराक सूचना एकदम सही छलै। पौने आठ बजे आ सवा नौ बजे फेर चीनी सेनाक आक्रमण भेल मुदा भारतीय वीर योद्धा चीनी सभकेँ आपस करबामे सफल भेल। चारिम चीनी आक्रमणक प्रहार बेसी धारदार छलै। चीनी इंफेंट्रीक पूरा ताकत जे लागल छल। ग्रेनेड, मोर्टार आ गोली लगातार बरसि रहल छलै।

एकटा चीनी एमएमजीक रेंजमे जसवंतक पोस्ट छल। ओ लगातार फायर झोंकि रहल छल। ओ एम्हरका डेल्टा कम्पनीक एलएमजीकेँ प्रभावहीन

कऽ देने रहए। भारतीय टुकड़ीमे प्रलय मचल छल। दनादन कैज्युल्टी! पोस्ट छोड़बाक आदेश भेल छल मुदा ई सब पोस्ट नहि छोड़लनि। जसवंतक अजीब स्थिति! आगूसँ फायर रूपमे झौंकाइत मृत्यु आ पाछूसँ एक बोतलमे याकक दूध आ दोसरमे पानि नेने अबैत ओकर जीवन सेला। एक बेर पाछू देखए आ तुरंत फेर आगू मुदा अखन एतेक समय नहि छल जे जीवनक प्रतीक्षा कएल जाए। तीन जोड़ी आँखि आपसमे बात कएलक। निर्णय भऽ गेलै। त्रिलोक सिंह कवर फायर देबऽ गछलनि। जसवंत आ गोपाल जान हाथमे लेलनि। एहने दिनक लेल ने वीरमाता वीरपुत्रकेँ जन्म दैत छथि। दुनू भुआ जकाँ ससरैत उभर-खाभर पहाड़ी भूमिपर कोहनी आ ठेहुनक बले रेँगैत बढ़ि गेलाह। प्राणक कोनो मोह नहि। चीनी पोस्टपर 15 मीटर लऽगसँ ग्रेनेड फेकलनि। पोस्टपर चढ़ि पाछूसँ पकड़ि चीनी संतरीक मुड़ी मचोड़ि देलनि। गोपाल गोसाँइ दोसर चीनीकेँ पटकिकेँ घायल कएलनि। जसवंत एमएमजीपर सक्रिय चीनी सैनिककेँ अपन दुनू हाथसँ उठाकेँ पटकि सुरधाम पठा एमएमजी उठा लेलनि। 15 मिनटमे ई अनुपम ऑपरेशन संपन्न भेल मुदा लांस नायक त्रिलोक सिंह वीरगति पओलनि। जसवंतक कनपट्टीमे गोली लागल छल। एक कान उड़ि गेल छलै। खून बहि रहल छल। कहुना पताइत-तलमलाइत दुनू एमएमजी नेने पोस्टपर आपस अएलाह। सेलाकेँ देखिते जसवंत व्याकुल भेल– सेला! पानि ला। विह्वल भेल सेला बोतले जसवंतक मुहमे लगा देलनि। फेर कानक मरहम-पट्टी कएलनि। याकक दूध पिआ देलनि। किछु सचेष्ट होइते ओ सेलाकेँ जएबाक लेल कहलनि आ एमएमजीक फायर झौंकब शुरू कएलनि। ओकरे हथियार आ ओकरे कपार! लगातार प्रहारपर प्रहार! किछुए कालमे युद्धक दिशा बदलि गेल। 11.40 बजे ओम्हरसँ प्रतिरोध थमि गेलै।

जसवंत फेरसँ सेलाकेँ जएबाक लेल कहलनि। ओ अड़ि गेलीह जे नहि जाएब। जसवंत जान जएबाक भय देखा जिद कएलनि तखन सेला सेहो तमसाइत अपन मोनपा भाषामे चिचिआए लागलि– ई भारतवर्ष मात्र अहींक नहि अछि। हमरो सभक अछि। अहाँ पौड़ी गढ़वालसँ एतऽ आबि एकर रक्षामे लागल छी आ हम तऽ एत्तहि केर छी। ई पहाड़, ई अल्पाइन आ सुंदर गाछ-वृक्ष, ई नदी, ई प्रपात, ई झील, एतए केर माटिक कण-कण सभटा हमर छी तऽ हमरा सभक कोनो कर्त्तव्य नहि ? एकर रक्षा करबाक हमरा कोनो अधिकार नहि? भारतीय सेनामे स्त्रीगणक भर्तीक नियम नहि अछि तैं, नहि तऽ

हम सेहो आइ अहीँ जकाँ अपन मातृभूमिक लेल एहि चीनी सभकेँ मारितहुँ। हम एतएसँ कतहु नहि जाएब। हम सेहो लड़ब। आब तऽ अहाँ एतऽ एसकरे छी। हम अहाँक देखभाल करब। आब जीवन-मरणक कोन प्रश्न? जे हेतै से संगे हेतै। जीवित रहब तऽ गोम्पा (मंदिर) संगे चलब। मरि जाएब तऽ अहाँक जे केओ कीर्त्तिकथा पढ़त ओ हमरो नाम अवश्य लेत। हमसब कहियो मरि नहि सकैत छी। खबरदार जे हमरा जएबाक लेल कही। फेर ओ कलपऽ लगलीह– हम अपन प्राण एतहि त्यागि सकैत छी मुदा अहाँकेँ छोड़िकेँ जा नहि सकैत छी। घरोपर जाएब आ अहाँक शहादत केर समाद सुनिते एहि पहाड़सँ नदीमे कुदि अपन प्राण त्यागि देब। ओहिनो हमरा सभमे मृत्युक बाद नदी किनारमे कोनो एकांत स्थानपर बैसि थम्पा (काटनिहार) मृत देहक 108 कुट्टी काटैत छथि आ प्रत्येक कुट्टी नदीएमे प्रवाहित कएल जाइत छै। हम सौँसे स्वयं नदीमे प्रवाहित भऽ जाएब। हमरा जएबाक लेल नहि कहू। हम किन्नहु जा नहि सकब। अहाँक अवज्ञा करए हम नहि चाहब। एहि द्वंद्वसँ हमरा बचाउ आ जएबाक लेल नहि कहू।

जसवंत किछु नहि बाजल। तखने नूरा अएलीह। याकक दूध केर छुरपी (पनीर) जसवंतकेँ देलनि। तीनू गोटे लऽग-पासमे पड़ल हथियार आनि ओकरा अलग-अलग स्थानपर लगा देलनि।

एकाएक पौने तीन बजे पाँचम हमला शुरू भऽ गेल। फेर आगि बरसऽ लागल। जसवंत एक स्थानपर राखल हथियारसँ फायर करैत दोसर स्थानपर जा दोसर हथियारसँ फायर करैत छल। सेला आ नूरा एक सैनिक केर अद्भुत पराक्रम अकानि रहल छलीह। ओ सब सेहो मन-प्राणसँ लागल छलीह। अलग-अलग स्थानसँ अबैत फायरसँ चीनी सेनाकेँ लगैत छल जे भारतीय पोस्टमे बहुत रास सैनिक छथि। पोस्ट छोड़बाक आदेश तीन दिनसँ वायरलेसपर घनघनाइत छल। मुदा जसवंत एक स्थानसँ दोसर स्थान दौगैत अलग-अलग हथियारसँ फायर करैत रहल। ओ चीनी सेनामे अपन अजेयता पसारने छल।

भोजन लऽकेँ अबैत काल भारतीय पोर्टर चीनी सैनिक हाथेँ धरा गेल। ओकरा संगमे एहि पोस्टक लेल मात्र एक भोजन पैकेट देखि चीनी अकानि लेलक जे ओहि पोस्टपर एकमात्र सैनिक अछि। भारी झुंड बना ओ सब धमधमा गेल। सेला कनपट्टीसँ बहैत खून रोकबाक लेल पहाड़पर रक्त प्रतिरोधी पासवाय (हनुमन पत्ता) वा चिनातिरक पत्ता ताकि रहल छलीह। जखन अएलीह तखन

एहि पोस्टपर सब किछु समाप्त भऽ चुकल छल। ई दशा देखि ओ पहाड़सँ सीधा नीचाँ कुदि गेलीह। जाइत चीनी सैनिक ग्रेनेड फेकलक आ सेलाक प्राण-पखेरू उड़ि गेलै। ओ जखन खसलीह तखनो हुनक हाथमे ओ रक्तस्राव रोधी पासवाय आ चिनातिरक पत्ता रहबे करए। भारतीय सेनाक नवका टुकड़ीकेँ प्रहार करैत अबैत देखि चीनी दल पड़ा गेल छल।

महावीर योद्धा जसवंतक तीन दिनक ओ विराट् युद्ध थमि गेल छल। नूरा मृतप्राय भेल खसल छलीह। एक चीनी सैनिक खसल जसवंतकेँ दू चीनी सैनिकक सहायतासँ बैसा खुखरीसँ हुनक घैंट छोपि लेलनि। ई भयंकर दृश्य देखि पता नहि कतयसँ नूरामे प्राण आबि गेलै। ओ सहसा ठाढ़ भेलीह आ एक झपट्टामे जसवंतक कटल मुड़ी छिनि अपन माथपर राखि लेलनि। जसवंतक खूनसँ जेना ओकर माथ सेनुरा गेल हो। फेर मुड़ी अपन छातीमे सटा लेलनि जेना कोनो माए अपन नेनाकेँ छातीमे नुका लैत अछि। ओ कसिकेँ मुड़ी गछारने छलीह। दू चीनी सैनिक जखन मुड़ी छिनि नहि सकल तखन बहुत रास चीनी सैनिक मिलिकेँ नूराकेँ राइफलक बट आ अपन बूटसँ थकुचि-थकाइच अधमरू करैत मुड़ी छिनलक। नूरा बेहोश भऽ गेल रहथि तखने ओ सब सफल भेल। चीनी सैनिक सब जसवंतक मुड़ी आ मृतप्राय नूराक देह अपन कैम्पमे आनि पटकि देलक। नूरा चीनी कैम्पमे भरि राति बेहोश पड़लि रहल। तीन-साढ़े तीन बजे भिनसरबामे जाड़क कारणेँ जखन होश आएल तखन ओ एम्हर-ओम्हर तकलनि। कतहु केओ जागल नहि। संतरी बाहर पहरापर छल अंदरमे केओ नहि। किछु फौँफ काटबाक स्वर अबैत छल। बाहर बर्फ खसि रहल छलै। ओ लक्ष्य कएलक जे किछु-किछु अंतरालपर लकड़ीक फर्शपर बूटक पदचापक खट्-खट् स्वर अबैत अछि। ओ अकानि लेलक आ जखन लागल जे ओ बूटधारी आब गेटक सोझाँ होएत तखन घुसकुनिया मारि ओकर लऽग आबि गेलीह। आगूक ओकर चुबा (परिधान) हटि गेल छल। ओ अपन मोनपा भाषामे बाजि रहल छलीह– हमर ई विनती मानि लियऽ आ जसवंतक मुड़ी आपस कऽ दियौ। ओ एसकर अहाँक बटालियन साफ कऽ देलनि। ओ महावीर छल। दैवी शक्तिसंपन्न भगवान्! ओकर लहासक अनादर उचित नहि। हम जनैत छी हुनक शौर्य, शील आ स्वभाव! एक बेर जखन सभकेँ पोस्ट छोड़बाक आदेश भेल छल तखन ओ अड़ि गेल। ओ कहैत छल– हम अमर गढ़वाली योद्धा भुपू राउत आ गढ़वाली रानी लक्ष्मीबाई तीलू रौतालीक संतान छी, हम वीर पिता गुमान सिंह रावतक

गुमान छी। हुनका सभक पवित्र क्षत्रिय रक्तक अपमान कोना होमऽ दी! बरस अठारह क्षत्रिय जीबै आगे जीवन को धिक्कार! हम तऽ अपन औरदा जी नेने छी। कोनो हालतमे पोस्ट हम नहि छोड़ब। आब जे करथि बद्री विशाल! जसु बाजल छल। ओ हमरा कहने रहथि जे चीनकेँ हरा देब तखन चीनी बजारसँ अपन माएक लेल चीनी सिल्कक साड़ी कीनि गाम लऽ जाएब। एहन महावीरक लहास केर अनादर कोनो दोसर वीरकेँ शोभा नहि दैत अछि। आबैवला इतिहास अहाँ सभकेँ कलंक देत। ओह! पानि... पानि... पानि ...नूरा फर्शपर बैसि गेलीह। ओ अखनो बड़बड़ा रहल छलीह–

जसु हमरो बहुत नीक लगैत छल। हमरा नहि पता जे सेला दीदी सेहो ओकरा चाहैत छथि। एक दिन जखन कैम्प जाइत काल ओ हमरा ओतए आएल तखन दीदी कतहु गेल छलीह। हम नहाइ लेल जाइत रही। देहपर मात्र एकटा चद्दरि छल। सेला नहि अछि ई जानि जसवंत आपस होमऽ लागल। घरपर तखन केओ नहि रहथि। हमरा ई अपन मोनक बात कहबाक एकदम उपयुक्त अवसर बुझाएल आ हम देह हिला चद्दरि खसा ठाढ़ भऽ गेलहुँ। ओ किछु नहि बाजल। चुपचाप खसल चद्दरि उठा हमरा फेरसँ ओढ़ा देलनि। हमर माथ हँसोथैत कहलनि– हम अहाँक दीदी सेलासँ प्रेम करैत छी। प्रेम शुद्ध रूपसँ मोनक भाव होइत छै। एहिमे देहक कोन स्थान! ई युद्ध थमि जाइ तऽ हम अपन माए सभकेँ एतहि बजा अहाँक दीदी सेलासँ बियाह करब। एहि कारणेँ अहाँ हमर सारि भेलहुँ। तेँ ई उचित नहि। हम चुंगमा (दोसर बियाह) नहि कऽ सकैत छी। हँ, आइ हम अहाँकेँ एतेक वचन अवश्य दैत छी जे जँ अहाँ चाहब तखन हम अपन छोट भाए रणजीतसँ अहाँक बियाह कराएब। जसु कहने छल। हमरा वचन देने छल। कमांडर साहेब! अहाँक जे मोनमे फुराएत हो से करू मुदा हमर ई विनती मानि लियऽ आ हुनकर मुड़ी आपस कऽ दियौ। भारतीय सेना ओकरा पौड़ी गढ़वाल पठा देत। हुनक माए कमसँ कम ओकरा अंतिम बेर देखि तऽ लेतीह। ओह! पानि... पानि... चीनी कमांडर हमर मोनपा भाषा बुझैत छल। ओ बाजल किछु नहि। एकटा कंबल आनि हमरा ओढ़ा देलक। थर्मशसँ इन्होर पानि आनि पिआ देलक। ओ बेर-बेर ओह नो नो करैत रहल। हम फेर जखन बेहोश होइत खसैत रही तखन ओ हमरा सम्हारलनि। अपन कोरामे हमर माथ राखि लेलनि। हुनके कोरामे हम पड़ल छी। जसु कहने छल जे जाबत धरि भारतवर्षमे सेला आ नूरा सन वीरांगना जन्म लैत रहत भारतवर्षकेँ केओ जीति नहि सकैत अछि। हमसब

अवश्य जितब। जीति नहि सकब तऽ मातृभूमिक रक्षामे प्राण अर्पित तऽ अवश्य करब। फेर जन्म लेब हम। फेर लड़ब हम। तखन जितब। क्षत्रिय छी हम। पराजित भऽ जीवित रहि नहि सकैत छी। जसु कहने छल...। देखू! आइ हमरा की नहि अछि... झूम खेती (सीढ़ीनुमा खेत) लेल गोसा (निजी जमीन)... ख्येमसा (घरारी) पर बड़का चेस-खेम (पाथर-माटिक नीक घर), आगूमे नक्काशीदार पांग-खेम (काठक नीक घर)... एहन घर ककर छै... देखू... देखू अपन सेला दीदीक कोबर हम मेइलो (अतिथि कक्ष)मे सजा रहल छी... ई जे नक्काशीदार पलंग लागल अछि ओकर सभटा नक्काशी हम स्वयं अपना हाथसँ कएने छी, ई सतरंगी कालीन हम स्वयं बुनने छी... देखू...देखू दीदी सजल-धजल कोबरामे दुलहिन बनल हँसि रहल अछि...जसु गोम्बु (स्टोर रूम)मे थेम्सिंग (एक मोनपा मादक पेय) लऽ रहल छथि। देखू जे ... चोइसेम (पूजाघर)क बगलवला रूममे दीदी हमर कोबर सजा रहल अछि। हम दीदीक कोबर सजा रहल छी आ दीदी हमर कोबर ...वाह वाह... एहन तऽ कहियो भेले नहि छल... देखू... देखू ...रणजीत दुल्हा बनल मुस्की दऽ रहल छथि... हम हुनक मात्र फोटो देखने रही आइ साक्षात् देखि रहल छी... अरे देखू जे ओ हमर लऽग आबि रहल छथि... लऽग आबि गेल छथि। देखू जे ठेहुनपर बैसल कोना अपन दुनू हाथ हमरा दिशि बढ़ा देने छथि..ओ हमरा अपन भुजपाशमे लेबऽ चाहैत छथि... ओह! ...लियऽ... ओ आबि गेलाह... हे भगवान्... ओ पाँजमे भरि लेलनि हमरा! ...हम दुनू एहि प्रपातमे नहा बर्फक गुफामे सन्हिआ जाइत छी... ओहि कोबरामे... आइ हमरा सभक सोहागक राति अछि... सोहागक राति...जसु हमरा वचन देने छल...।

अर्र-दर्र बड़बड़ाइत नूरा शांत भऽ गेलीह। पता नहि ओहि चीनी कमांडरकेँ की भेल जे बहुत समय धरि नूराक माथ अपन कोरामे रखने रहल। जखन किछु काल धरि कोनो स्पंदन नहि भेल तखन ओ चुपचाप अपन तरहत्थीसँ टुक-टुक तकैत नूराक दुनू आँखि मुनि देलनि। सम्मानपूर्वक ओकर माथ धरतीपर रखलनि। सावधानक मुद्रामे ठाढ़ होइत नूराक रक्तरंजित मृत देह आ जसुक कटल मुड़ीकेँ सैल्यूट कएलनि। बाहर पुबरिया कात श्वेत हिमाच्छादित चोटीपर नीमा (सूर्य)क लाली पसरि रहल छल।

* * * *

बादमे ज्ञात भेल जे ओ चीनी कमांडर जसवंतक मुड़ीक पितरिया मूर्त्ति बनबा एक थारीमे सजा चीनी सिल्कक सुंदर साड़ी संग ओ थारी आ जसवंतक कटल मुड़ी

भारतीय सैन्य कमांडरकेँ सम्मानपूर्वक समर्पित कएलनि। यैह मूर्त्ति जसवंतगढ़ वार मेमोरियलमे स्थापित अछि। पता नहि जे जसवंतक माता लीलावती अपन शहीद जसु बेटाक मुह कहियो देखलनि वा नहि। इहो नहि पता जे ओ साड़ी कहियो छातीसँ सटा कनलीह वा नहि।

हँ, ई अवश्य पता अछि जे शहादत केर बाद जसवंत सिंह रावतकेँ महावीर चक्रसँ सम्मानित कएल गेलनि। हिनक शहादत स्थलपर भव्य जसवंतगढ़ वार मेमोरियल स्थापित भेल। मान्यता यैह अछि जे बाबा जसवंत अखनो देशक रक्षा करैत छथि। हुनका छुट्टी आ प्रोन्नति ओहिना देल जाइत अछि। सेलाक नामपर अरुणाचल केर तवाँग जिलामे बनल विशाल टनेलक नाम सेला टनेल राखल गेल। नूराक नामपर नूरा प्रपातक नामकरण भेल।



[पटना, 1 दिसंबर 2022]

आँगनमे ढोल बाजल

संयुक्त भारतवर्षक एक शहर लायलपुरक एक गाम खुशपुर। एकर मात्र नामे खुशपुर। खुश होएबाक एहन कोनो विशेष बात नहि। गाममे एकटा गिरिजाघर आ ओकर पाछू एकटा विद्यालय। बादमे एकटा अस्पताल सेहो बनल! बस आर किछु विशिष्ट नहि! बेल्जियमसँ आएल फादर फिलिक्स एहि गामकेँ 1901मे बसओने रहथि। क्रिश्चियन बहुल एहि गाममे ओना हिन्दू-सिक्ख-मुस्लिम सभक सेहो वासोवास अछि। एहि बस्तीमे राफेल जॉन आ गैब्रियल जोसेफ अपन माता-पिताक संग परिवारमे रहैत छल। संपूर्ण भारतवर्ष तखन आजादीक शोरमे दलमलित रहए। तखने जेना प्रलय आबि गेल। जमीनपर भारतवर्षक नक्शा राखि एक वकील सिरिल रेडक्लिफ ओहिपर एक रेखा घीचि देलक। एम्हर भारतवर्ष ओम्हर पाकिस्तान! जेना एक निस्सन देबालकेँ कोनो पैघ आड़ीसँ बीचहिसँ काटि देल गेल हो। एहन कतहु बँटवारा होइ! आँगन भारत दलान पाकिस्तान! एकहि परिवारक एक घर पाकिस्तानमे दोसर घर भारतमे! दुनू तरफ तनातनी तऽ किछु दिन पूर्वहिसँ बढ़ि रहल छल आब जखन ओहिमे जनसंख्या स्थानांतरण केर प्रश्न जुड़ि गेलै तखन ई भयंकर रूप धऽ लेलक! दुनू तरफ रोज लाउडस्पीकरपर दोसर धर्मक लोककेँ अपन-अपन जर, जमीन आ जोरू एतहि छोड़ि दोसर दिशि जएबाक घोषणा होमऽ लागल। एहि पार ओहि पारक स्थानांतरण अत्यधिक विध्वंसक रहए। लफुआ सब उठि बैसल। सर्वत्र लूटपाट, मारि-काट, अपहरण-बलात्कार-हत्याक अन्हरिया राज पसरि गेल। पता नहि सलवार फाड़ि ओकर नारा निकालि अपन डाँरमे लपेटब कोना शौर्य आ मर्दानगीक निशानी बनि गेलै। जेकरा डाँरमे जतेक नारा लपटल से ततेक भारी मर्द! संख्या बढएबाक जोशमे ने उम्र देखल गेल ने अवस्था। जे अंग विरोध करए ओ कटि जाए। जँ हाथ जोड़ि बकसि देबाक अनुरोध कएलहुँ तऽ दुनू हाथ कटि धरतीपर, मुहसँ अनुनय-विनय कएलहुँ तऽ घेँटे छोपा जाइत छल।

अजीब वातावरण! तथापि बिनु कोनो विरोध कएने सभसँ बेसी स्त्रीगणक छाती कटल। नाक-कान केर कोनो ठेकान नहि। जे युवक कोनो स्त्रीक सम्मानमे कहियो लक्ष्मण रेखा खींचि रक्षा नहि कऽ सकैत छल से निरीह स्त्रीगणक नाक-कान काटि लक्ष्मण बनबाक स्वाँग रचि रहल छल। दुनू दिशि एहने हाल रहए। एम्हर दिशि पंथ रंगीला आ ओम्हर दिशि मुस्लिम गार्ड! दुनू कातक स्थिति एक्कहि सन।

गैब्रिएल अपन गाम खुशपुरसँ नोकरीक खोजमे अपन एक संबंधी ओतए अमृतसर आएल छल। भारतीय सेनामे नोकरीक संभावना छलै। भारतवर्षकेँ आजादी भेटबाक बात सेहो चलि रहल छल। ओना वातावरण एकदम तनावपूर्ण भऽ गेल छलै। मुसलमान एक दिशि आ हिन्दू-सिक्ख एक दिशि। मार्चे माससँ तनातनी शुरू भऽ गेल रहैक। गप्पी सभक चलती बढ़ि गेल छल। अफवाह केर बाजार गर्म रहए। अमृतसर केर स्थिति ठीक नहि छलै। कखनो हो-हल्ला होइ आ दोकानसब बंद भऽ जाए। रोज कमाउ आ खाउ वला लोक सभक हालत ठीक नहि। कतेक दिन बजारमे किछु नहि भेटए तखन मात्र स्वर्णमंदिरक लंगरक भरोसा। एहि लंगरवला हॉलक पाछू छोले-कुलचे, लस्सी आ केसरयुक्त दूध-मलाइवला एक सरदारजीक दोकान प्राय: बंद नहि होइत छल। दिनमे कदाचित बंदो हुअए मुदा साँझमे केसरवला दूध अवश्य भेटैत। एकरो बड़का सहारा! खास काज नहि रहबाक कारणेँ गैब्रियल अक्सर अमृतसरक गली सभमे छिछिआएत रहैत छल। ओकरा कोन खतरा! ने हिन्दू-सिक्ख आ ने मुसलमान रहबाक कारणेँ ओ कने बेसिए निश्चिंत जकाँ रहए। कद-काठी से नीक छलैक तकरो गुमान रहए। अमृतसरमे घुमि-घुमि स्थितिक आकलन करैत छल। एक दिन ओकर होश उड़ि गेलै जखन ज्ञात भेलै जे जाहि मरियमाबादसँ आबि ओकर पुरखा एहि खुशपुर गाममे बसल छलथि ओहि मरियमाबादक क्रिश्चियन कालोनीपर सेहो लश्करक धावा भेल। गैब्रियल अपन माए-बाप लेल सेहो चिंतित रहए। ओना राफेल भैया ओतहि छथि आ सैनिक छथि एकर संतोष रहए। ओ गाम पहुँचबाक प्रयास करए मुदा व्यवस्था नहि होइ। सोचलक जे बससँ लायलपुर, फेर समुन्द्री आ तखन कहुना गाम जा सकैत छी। जोशमे एक दिन पैदल विदा भेल मुदा रस्तामे जे गाम सभक दृश्य रहए ओ अत्यन्त कारुणिक!

कतहु घरमे आगि लागल अछि तऽ कोनो गाममे हजारक हजार लश्कर गामकेँ लुटि रहल अछि। घर लुटि आगि लगा रहल अछि तऽ कोइ घरमे घुसि जबर्दस्ती घरसँ कोनो स्त्रीकेँ कन्हापर उठा एक कातमे पटकि ओकर शीलभंग कऽ रहल अछि। किछु गोटे ओहि घरक पुरुषकेँ काटि रहल अछि। कोनो पुरुष

नुकाएल अछि तऽ ककरो आँखिक सोझाँमे अनर्थ भऽ रहल अछि। संसारमे कोनो पुरुषक लेल एहिसँ पैघ पराजय किछु नहि भऽ सकैत छै जे ओकरा समक्ष घरक स्त्रीगणकेँ उठा कोनो कोनमे लऽ जा ओकरा संग बलात्कार हो आ ओ पुरुष किछु नहि कऽ सकए! एहन दृश्य आम छल। बेसी ठाम यैह भऽ रहल छल।

पैदल चलैत-चलैत एक ठाम विशाल गाछक छाहरिमे विश्राम लेल रुकल छल। ओतए जे दृश्य देखलक तऽ मोन भिनभिना गेलै। भूखसँ ठोरपर फुफड़ी पड़ल अस्थिपंजर मात्रवाली एक वस्त्रहीन युवती पड़ल छलीह आ एक नेना ओकर एक छातीमे मुह लगओने छल। युवतीक आँखि खुजले छलै जेना ओकरासँ किछु याचना कऽ रहल हो। गैब्रियल अपन गमछा ओकर देहपर ओढ़ा देलक मुदा एकर कोनो प्रतिक्रिया नहि भेलै। आँखि ओहिना टुकुर-टुकुर ताकि रहल छल आ देहमे कोनो हरकत वा हिलडोल नहि भेलै। गैब्रियल ध्यान देलक तऽ ओ माए आ बच्चा दुनू मुइल छल। ओहि युवतीक एक छातीसँ खून बहि सुखा रहल छल जेना कोइ कसाइ जकाँ ओहिमे किछु भोंकि देने हो। डाँरक नीचासँ सेहो खून अखनो आबि रहल छलै। रक्तरंजित मातृत्वक एहन अनसर्ध दृश्य देखि गैब्रियल विचलित भऽ गेल। मोन केनादन करए। तीन दिन धरि तऽ किछु घोँटाइते नहि छल। भुखले रहए। खाइत काल मुइल स्त्रीक छातीमे मुह लगओने ओहि मृत बच्चाक चेहरा सामने आबि जाइत छल। गुरु नानक साहेबक भजन– एती मार परे कुरलाने तैँ की दरद न आया सुनि गैब्रिएलक करेजा फाटि जाए। गैब्रियल घुरि गेल। आइ फेर गाम नहि जा सकल। दू बेर तऽ स्वयं एहि अताइ सभक फेरमे पड़ैत-पड़ैत बाँचल। नाम आ प्रभु यीशुक क्रॉस जान बचा देलक।

बहुत लोक जमीनकेँ माए मानैत अछि। माएकेँ छोड़त कोना! तैँ एहि लेल धर्म छोड़लक। बहुत सिक्ख-हिंदू मुसलमान बनि गेल आ बहुत रास मुसलमान हिंदू-सिक्ख। कोइ मातृभूमिक लेल निज धर्म छोड़लनि तऽ कोइ धर्मक लेल निज मातृभूमि! कचोट दुनू दिशि रहए। दुनू कात नोरक घैल भरि रहल छल।

गैब्रियल अमृतसर स्टेशनक ओहि कात अपन एक मामा ओतए ठहरल छल। भोरमे जलपान कऽ अक्सर स्टेशन आबि जाइत छल। 9 अगस्त 1947केँ ओकरे समक्ष अमृतसर स्टेशनक ताँगा स्टैंडमे पहिलेसँ सादा भेषमे नुकाएल पुलिसकर्मी एक अराजकतावादी मुस्लिम नेता मुहम्मद सईदकेँ गिरफ्तार कएलक। ओ अपना दिसक पंथ रंगीले रहए। मुस्लिम सभमे एकर भारी प्रतिक्रिया भेलै। तनाव पसरि गेल छल। दुपहरिया अबैत-अबैत हिन्दू-सिक्ख सभक घर आ

दोकानपर मुस्लिम लफुआ सभक हमला शुरू भेल। हजारक हजार लश्कर बना छोट-छोट गामपर हमला भेल। लूट, आगिजनी, हत्या, बलात्कार आ दोसराक संपत्तिपर दखल-कब्जा करब एकदम साधारण बात भऽ गेल छल। जबलफाद गाममे भारी दंगा भेल। गौँआ आ परोपट्टाक गामक मुस्लिम लफुआ सब लश्कर बनि गामकेँ घेरि लेलक। हिंदू-सिक्ख सभक घर लुटि आगि लगा देलक। पुरुष सभकेँ कत्लेआम शुरू भेल। सएसँ बेसी सिक्ख-हिन्दूक हत्या भेल। स्त्रीगण सभक अपमान गानल नहि जा सकल। धापाई गाममे एहन आक्रमणकारी सभक हिन्दू–सिक्ख समवेत रूपसँ प्रतिकार कएलनि। एतऽ लफुआ सभक गोटी नहि सुतरल। छोट गाम गाजीपुरक एहने प्रतिकारमे 14 मुस्लिम अताइ मारल गेल।

एहन ने विकराल समय आएल जे गैब्रियल फेर अपन गाम आपस नहि जा सकल। खुशपुर पाकिस्तानमे पड़ि गेलै आ ओ अपने अमृतसरमे रहि गेल। माए-बापक सुरता आबए तऽ मोन बेचैन भऽ जाए। भैया राफेल बड़ मोन पड़थि। खाइत काल तऽ निश्चित रूपसँ। गाममे दुनू भाए संगे खाइत छल। कतेक दिन एहन भेल जे राफेल अपनो हिस्साक डेजर्ट गैब्रियलकेँ दऽ दैत छल जे बेसी मधुर खाएब तऽ मोटा जाएब। गैब्रियल जनैत छल जे भैयाकेँ मधुर बड़ नीक लगैत छै तथापि हमरा खुएबाक लेल ओ एहन कहैत छथि।

अमृतसरमे गैब्रियलकेँ भारतीय सेनामे नोकरी भेटि गेलै। शुरूमे गैब्रियलकेँ होइत छल जे ई विभाजनक बवंडर सब भावोद्रेक मात्र छी आ फेर शीघ्र सभटा पहिने जकाँ भऽ जेतै। तखन अपन गाम खुशपुर जाएब। मारकाट तऽ नवंबर धरि समाप्त भऽ गेल रहए। ओ क्रिसमसमे अपन गाम खुशपुर जाए चाहलक। बहुत छटपटाएल आ खूब प्रयास सेहो कएलक मुदा जा नहि सकल। ओकर कतेक संगी-साथी अपन-अपन गाम गेल मुदा गैब्रियल नहि जा सकल। भारतीय सैनिक पाकिस्तान कोना जा सकत भले ओ ओकर जन्मस्थाने किएक नहि हो! क्रिसमस सन पैघ पावनि दिन एसकर गैब्रियलकेँ किछु नीक नहि लागए। भरि दिन बैरकमे कनैत रहि गेल। माए-बाप आ राफेल भैया लेल मोन अहुरिया कटैत रहल। पहिल बेर परिवारसँ अलग क्रिसमस! देशक बँटवारा केहन होइ छै तेकर एहसास होइत रहल। ओम्हर माए-बाप, भाए-बहिन आ पूरा खुशपुर उदास आ एम्हर अहुरिया कटैत एसकर गैब्रियल! मात्र 200 किलोमीटरक दूरी! मुदा कतेक भारी!!

धीरे-धीरे डाक-व्यवस्था बहाल भेल। बहुत बादमे गैब्रियलकेँ ज्ञात भेल जे भैया जॉन राफेलक बियाह गामेक विद्यालयमे पढ़बैत शिक्षिकासँ भेल। गैब्रियल

अनेक प्रयासक बादो अपन गाम नहि जा सकल। प्रशिक्षणमे जएबाक आइ मोन नहि होइ। कहुना गेल। भरि दिन गैब्रियलक मोन बेचैन रहल। साँझमे एक बैचमेट सरदार तारा सिंहजी किछु मधुर आ केक संग गैब्रियलक भाउजक आगमन सेलिब्रेट कएलनि। लुंगी ओढ़िकेँ तेहन ने भँगड़ा कएलनि तारा सिंहजी जे उदास गैब्रियलो हँसि देलक।

गैब्रियलक बियाहमे सेहो एहिना भेल। ओम्हरसँ केओ नहि आबि सकल। ई केहन बियाह जे माए-बाप, भाए-बहिन, संगी-साथी किनको उपस्थिति नहि। दूरी तऽ बेसी नहि छै मुदा दू देशक सीमा-रेखा बड़ पैघ भऽ जाइत छै।

सेंट पॉल चर्च, अमृतसरमे गैब्रियलक बियाह भेल। ने चुमावन आ ने रिसेप्शन! के चुमाओन करितथि आ किनका लेल आयोजित होएत ई प्रीतिभोज! एहि ठाम अमृतसरमे छथिए के? लऽ दऽकेँ दू परिवार। एक मामाक परिवार, जनिका ओतए गैब्रियल अमृतसरमे शुरूमे रहैत छल, आ दोसर अपन सासुरक परिवार। माए-बाप भाए-बहिन आ भातिज-भतीजी सभ तऽ खुशपुरेमे छथि। केओ आबि नहि सकल रहए। बियाह सन हँसी-खुशीक वातावरण मुदा ई केहन दुर्भाग्य जे दुनू कात परिवार कानिए रहल छल। एम्हर दिशि एसकर गैब्रियल आ दोसर दिशि पूरा परिवार कनैत रहए। दुनू दिशि लोक छटपटा रहल छल। दुनू कात नोरक टघार बहैत छल।

भारत आजाद तऽ भेल मुदा विभाजनक दंशसँ दुनू दिशि कन्ना-रोहट मचले छल।

गैब्रियल भारतीय सेनामे प्रशिक्षणमे छल। प्रशिक्षण नीकसँ संपन्न भेलो नहि रहए कि अमृतसरसँ सीधा कश्मीर पठा देल गेल। पाकिस्तान कश्मीरपर दखल-कब्जा करबाक फेरमे उत्पात शुरू कएने छल। पाकिस्तान अपन कबीला आ अतिवादी समूहकेँ अपन सैनिक सहयोग देलक। मिलिशिया सभक समूह बना कश्मीर सन सुंदर स्थानकेँ श्मशान बनएबाक जोगारमे छल। हरिनिवास पैलेस आ माता वैष्णो देवी मंदिरपर दखल करबाक फेरमे रहए। तनातनी बढ़ल। महाराजा हरि सिंहक कश्मीरक भारतमे विलय-पत्रपर हस्ताक्षर करिते भारतीय सैन्यबल कश्मीर कूच कएलक। गैब्रियलक पलटन एक पंजाब सेहो कश्मीर आबि गेल। पाकिस्तानी कबीला, मिलिशिया आ सैनिक सभक संयुक्त सेनासँ मारि बजरल छल। राफेल पाकिस्तानी सेनामे छल। दुनू भाए एहि बातसँ अनजान रहए जे दुनूमे आमने-सामनेक भिड़ंत होएत मुदा एक दिन ई भऽ गेलै।

ओहि दिन जखन दुनू दिशिसँ फायरिंग होइत छल तखन गैब्रियलकेँ लागल जे ओम्हरसँ भैया राफेल सेहो फायरिंग करैत छथि। गैब्रियल अपन सूबेदारकेँ कहलनि जे लगैत अछि जे हमर निशानापर भैया राफेल छथि। इहो कहलनि जे अपन कर्त्तव्यक कारणेँ हम किछु नहि सोचब। गोली चलबैत रहब। ओ सोचबो नहि कएलनि आ ट्रिगर दबा देलनि। सहसा सूबेदार साहेब अपन हाथक झटकासँ राइफलक नाल घुमा देलनि। राफेलकेँ घुलटनिया दैत नीचाँ ससरैत देखल गेल। हे प्रभु यीशु! हमरासँ ई केहन अपराध भेल! गैब्रियलक हाथ जेना सुन्न भऽ गेल हो। कतबो प्रयास कएलक मुदा फेर ओ गोली चला नहि सकल। निढाल पड़ि रहल। ओकर आँखिक सोझाँमे नेनपनक ओ दृश्य आबि गेलै जखन दुनू भाए विद्यालयसँ संगे घर अबैत छल। एकटा बतहा कुकुर गैब्रियलपर झपटल। गैब्रियल भागिकेँ एक खाइधिमे खसि पड़ल। कुकुर सेहो ओहि खाइधिमे उतरि गेल। जाबत ओ गैब्रियलकेँ हबकि सकए भैया राफेल फनैत खाइधिमे उतरि ओहि कुकुरकेँ धऽ लेलनि। कुकुर गैब्रियलकेँ हबकि नहि सकल। आब राफेल भैया संग ओकर पटकम-पटका होमऽ लागल। भैया घायल अवश्य भेलाह मुदा ओ कुकुरकेँ अधमरू कइएकेँ छोड़लनि। बादमे चौदहटा सुइ लेलनि। ओह! ओहि दिन भैया अपन प्राण संकटमे दैत हमर रक्षा कएने छलाह आ आइ हम हुनकर प्राण लैत छलहुँ। केहन अधम सहोदर भाए छी हम! प्राण रक्षाक सरियत प्राण हरण! केहन दृश्य देखएलहुँ विधाता!

ई युद्ध तऽ समाप्त भऽ गेल मुदा गैब्रियलक मोनमे युद्ध चलिए रहल छल। ओ सोचैत रहए जे जँ सूबेदार साहब झटका देलनि एकर बादो भैया घुलटनिया किएक मारलनि! कहीं... ओह! भाए हाथेँ भाएक खून! कतेक दिन बाद भैयासँ भेंट भेल छल मुदा ई केहन विचित्र स्थिति! घैंटजोरीक बदला घैंट छोपबाक स्थिति। प्रणाम करबाक लेल हाथ नहि बढ़ल प्राण हरबाक लेल हाथ बढ़ि गेल। ओह! देश बँटैत अछि किए! युद्ध किएक होइत अछि! ई निर्णय लेनिहार सभक कोइ अपन समाँग युद्धभूमिमे नहि रहैत अछि की? अनाथ भेल धिया-पुताक चित्कार, लाचार-बेमार बूढ़ माए-बापक पेटकान देने करुण क्रंदन, हाहाकार करैत परिजन, नदीमे भसिआइत जाइत राखी, धारमे प्रवाहित होइत ढोलना आ सपरी, हाथसँ फोड़ल जाइत चूड़ी आ माँगसँ मेटाओल जाइत सिंदूर! अहुरिया कटैत पत्नी, टुअर भेल बच्चा! ओह! ओ लोकनि ई सब नहि देखैत छथि की? हुनका सभक करेज ई सब देखि किएक नहि फटैत अछि! आब ओ सदिखन यैह सब सोचैत

रहए। कहुना युद्ध समाप्त भेलाक बहुत दिन बाद चिट्ठी-पत्री फेर शुरू भेल। बहुत दिन बाद दुनू देशमे वीसा व्यवस्था व्यवस्था बहाल भेल आ आन-जान शुरू भेल।

एक दिन गैब्रियल अत्यंत व्यथित छल। गाम शिद्दतसँ मोन पड़ि गेल छल। तखने सरदार तारा सिंह गैब्रियलक गाम खुशपुरसँ आएल पत्र हुनका हाथमे देलनि। पत्र बहुत ठामसँ घुमि-घामिकैँ एहि एपीओ आएल छल। पता सेहो सही नहि छल मात्र गैब्रियल जोसेफ नाम ठीक छल तेँ पत्र भुतिआएल आ देरीसँ आएल। राफेलक बेटी एस्टिलाक पत्र छल। अपन टुटल-फुटल अंग्रेजीमे एस्टिला अपन पित्तीकेँ चिट्ठी लिखने छलीह। पत्र देखि गैब्रियल भावुक भेल। पत्रक भाव रहए– अंकल! हमरा अहाँसँ भेंट करबाक बड़ मोन होइए। की अहाँक मोन नहि होइत अछि जे देखी हमरा! बाबा आ दादी सेहो बेकल रहैत छथि। पापा कहैत छथि जे आब अहाँ अपन गाम आबि नहि पाएब। पापा झूठ बजैत छथि ने? अहाँ जल्दी आउ। हमसब प्रतीक्षा करैत छी।

एस्टिलाक ई चिट्ठी पढ़ि गैब्रियलक आँखि भरि गेलै। विह्वल भेल गैब्रियलकेँ सरदार तारा सिंह सहारा देलनि।

गैब्रियलकेँ आइ ई स्पष्ट भऽ गेल छल जे ओहि दिन जे सूबेदार साहेब झटका देलनि ओ काज कऽ गेल छल। भैया सकुशल छथि। मोनक कचोट हटल जेना करेजापर राखल बड़का पाथर हटि गेल हो। गैब्रियल चर्च जा प्रार्थना कएलनि।

एस्टिलाक पत्र अबैत रहल। पत्रक लगातार सुधरैत भाषा, भाव आ मात्सर्यसँ गैब्रियल अकानैत छल जे आब ओ छँटगर भऽ गेल होएतीह। एक बेर एहि भावक पत्र आएल– चचाजान! अहाँकेँ पता अछि जे अपना आँगनमे आब ढोल नहि बजैत अछि। बाबा कहैत छथि जे अहाँ बड़की बुआक बेटाक जन्म बाद गाम छोड़ने रही ओहि दिन बधइयामे ढोल बाजल छल। एकर बाद फेर कहियो अपन अँगनामे ढोल नहि बाजल। मम्मीक चुमावनोमे नहि, रिसेप्शनोमे नहि, हमर वा जॉनीक जन्मोपर नहि। खुशपुरमे सबठाम खुशीक अवसरपर ढोल बजैत छै मात्र अपना आँगनमे नहि। कहियो नहि! अहाँ जहिया घुरिकेँ गाम आएब हम अपने हाथेँ खूब ढोल बजाएब! हे कक्का हमर! अहाँ आबि जाउ ने! अहाँक गाम अहाँकेँ बजा रहल अछि! एक बेर तऽ अबियौ!

जखन-जखन ओकर पत्र आबए गैब्रियलक करेजा जेना दरकि जाइत हो। ओ भाभीकेँ, एस्टिलाकेँ वा जॉनीकेँ देखने नहि छल मुदा क्रमिक रूपसँ सांद्र

होइत एस्टिलाक भाव गैब्रियलकेँ विह्वल करैत छल। ओकरो मोन व्याकुल रहए अपन जन्मस्थानक दर्शन लेल। जखन-जखन एस्टिलाक पत्र आबए गैब्रियल ओकरा नत्थी कऽ अपन गाम जएबाक अनुमति लेल अवश्य आवेदन करथि मुदा आब तऽ खुशपुर जाएब आर मोश्किल भऽ गेल रहए किएक तऽ ई भारतीय सेनामे छल आ खुशपुर आब पाकिस्तानमे अछि।

गाम जएबाक लेल गैब्रियल भारतीय सेनामे रहबाक ई अदृश्य देबाल खसबए चाहलनि। एहि लेल 1960मे गैब्रियल सेनासँ त्यागपत्र दऽ देलनि जे एक बेर कमसँ कम अपन-गामक दर्शन तऽ कऽ सकब। हुनक इहो प्रयास सफल नहि भेलनि। अनेक प्रयासक बादो गाम जएबाक अनुमति नहि भेटलनि। ताबत 1965मे फेर भारत-पाकिस्तान युद्ध बजरि गेल। एहि युद्धमे पूर्व सैनिक सभकेँ सेहो बजाओल गेल छल। गैब्रियलकेँ सेहो बजा लेल गेलनि। ओना एहि बेर हुनका प्रत्यक्ष युद्धमे नहि लगाओल गेल छल तेँ विशेष चिंता नहि रहल। तथापि अपन गामक दर्शन केर सुयोग नहि भेटलनि। एहिना चलैत रहल आ गैब्रियलकेँ अपन गामक दर्शन नहि भेलनि। आब तऽ सेवानिवृत्त सेहो भऽ गेल छथि।

किछु बरख आओर बितल। माता-पिता गैब्रियलकेँ देखबाक सेहंता नेने चलि गेलथि। कतेक प्रयासक बादो जखन गैब्रियल स्वयं गाम नहि जा सकल तखन 1978मे एक बेर एस्टिला स्वयं हुनकासँ भेंट करबाक लेल भारत अएलीह। अमृतसरमे गैब्रियलसँ भेंट भेलनि। एस्टिला खूब कनलीह आ अपन नोरेसँ गाम आ परिवारक कथा कहलनि। गैब्रियल आ पूरा परिवार एस्टिलाक आगमनसँ भाव-विभोर भेल छल। एस्टिलाक संग एहि कार्यालयसँ ओहि कार्यालय जा पाकिस्तानी वीसा लेल कागज-पत्तर जमा कएलनि। एस्टिला धिया-पुताक संग एकहि दिनमे ततेक ने रितिया गेलीह जे की कहल जाए! एको रत्ती ई नहि लगैत छल जे ओ दोसर देशक छथि वा पहिल बेर भेंट भेल अछि। अपन छलीह अपने छथि। पुरान परिचित! पाँच-सात दिन कोना व्यतीत भेल से ककरो पता नहि चलल। ओ स्वर्ण मंदिर देखलनि। जलियाँवाला बाग गेलीह जतए 13 अप्रैल 1919केँ बैसाखी दिन डायरक आदेशपर भयंकर गोलीबारी भेल आ इनार लहाससँ भरि गेल छल। केंद्रीय सिक्ख संग्रहालय, महाराजा रणजीत सिंह संग्रहालय, टाउन हॉल सब देखलनि। फेर भारी मोनसँ खुशपुर आपस भऽ गेलीह।

एहि बेर एस्टिलाक प्रयास सफल भेल। किछु दिन बाद गैब्रियलकेँ अपन गाम खुशपुर जएबाक अनुमति भेटल। पासपोर्ट-वीसा सब तैयार!

अमृतसरसँ अटारी-बाघा बोर्डर, फेर लाहौर तखन फैसलाबाद तखन समुंद्री होइत खुशपुर! ऑटो, पैदल, बस आर फेर ऑटोसँ 190-200 किलोमीटर केर यात्रा भारी छल मुदा तीस वर्षक बाद मातृभूमिक दर्शनक जोश ओहिपर भारी पड़ि गेल। कतेक परिवर्तन भऽ गेल अछि! अटारी-बाघा बोर्डरपर बहुत निर्माण भऽ गेल, लायलपुर फैसलाबाद बनि गेल। गाममे सेहो बहुत परिवर्तन भऽ गेल।

गैब्रियल जखन खुशपुर पहुँचल तखन चकबिदोर लागि गेलनि। खुशपुर आइ बड़ खुश छल आ अपन नाम सार्थक करैत छल। पूरा गाम झंडा-पताकासँ सजल छल। तोरण द्वार बनल छलै। लोकसब स्वागतमे ठाढ़ छल। पहिने गैब्रिएल सोचलनि जे गाममे अवश्य कोनो उत्सव अछि जे एतेक साज-सज्जा आ गहमा-गहमी अछि। ओ एक युवकसँ पुछलनि जे आइ गाममे कोनो समारोह अछि की? ओ कहलक जे आइ तीस-बत्तीस वर्ष बाद गामक एक बेटा अपन गाम आबि रहल छथि। हुनके लेल ई स्वागत समारोह भऽ रहल अछि। गैब्रियलकेँ आश्चर्य भेलनि। सहसा लागल जे ओ अपन घरक लऽग ठाढ़ छथि मुदा रस्ता नहि देखा रहल अछि। यथार्थमे ओ घरक पछुआरमे रहथि। दरवज्जा आगूसँ छल। एक गोटेक नजरि पड़लनि आ लोक हुनका घेरि लेलक। किछु उत्साही युवक हिनका कन्हापर उठा घुमबैत द्वारपर अनलक। फूलमालासँ लादि देलक लोक। आइ हुनका आँगनमे ढोल बाजि रहल छल। उत्सव केर माहौल छल। ओ सीधे अपन आँगन गेलाह। प्रवेश करिते मोन भावुक भेलनि आ अपन आँगनमे खसि पड़लाह। आँखिक नोर आँगनक माटिपर खसि ओकरा सिक्त करैत छल। एस्टिला नाचि-नाचिकेँ ढोल ढम-ढमा रहल छलीह।



[अमृतसर, 3 दिसंबर 2024]

हमर बेटा गाम घुरि आएल

मिसेज सिंह दुनू बेटी आ बेटा संग बजारमे छलीह। दुर्गापूजा लगिचा गेल छल। सभक लेल कपड़ा लेबाक छलै। बेटा अमित एक दोकानपर भारतीय सेनाक वर्दीवला ड्रेस टाँगल देखि जिद धऽ लेलक जे हम यैह लेब। मिसेज सिंहकेँ ई साधारण दोकान पसीन नहि छलनि। ओ मठिया देलनि। अमित दोकानक आगू ठाढ़ भऽ गेल। हटिते नहि रहए। माए कतबो बहटारबाक प्रयास करथि ओकर जिद दृढ़सँ दृढ़तर होइत गेल। टससँ मस नहि भेल। दुनू बहिन समझएलक आ घिचबाक प्रयास सेहो कएलक मुदा अमितक पयर जेना अंगदक पयर जकाँ जमि गेल हो। विमलाजी कने तमसा जकाँ गेलीह– स्टैंडर्ड श्रीमे पढ़ैत छेँ आ तोरा एतेक दम भऽ गेलौ जे दू-दूटा पैघ बहिन तोरा हिला नहि सकलौ। नहि भेटतौ ई वर्दीवला सूट! चल एहि दोकानमे दोसर ड्रेस लऽ ले।

– छोड़ि दियौ ने मम्मी! हमर दू बहिनपर एक भाए अछि। विशेष तऽ अछिए हमरा सभक राजा भैया! यैह ड्रेस कीनि दियौ। एकर मोन रहि जेतै।

बड़की बेटी नीता छोट भाएक पक्ष लेलनि। छोटकी बबीता सेहो कहलनि– देखही मम्मी! कतेक सुंदर ड्रेस छै! ड्रेसपर ओरिजनल सितारा टाँकल छै। यैह लऽ ले। हमरा सभक ड्रेस बरु एहि बेर छोड़ि दिहै। हमसब बादमे लऽ लेब।

एतेक कहि बबीता दोकानमे टाँगल ओ सैनिक वर्दीवला ड्रेस उतारि लेलनि। अमित खुश भऽ गेल। डेरापर अबिते दुनू बहिन अपन-अपन ड्रेस पहिरि नाप आ फिटिंग देखलक। अमित कतहु देखा नहि रहल छल। विमलाजी दुनू बेटीक सुंदर ड्रेस देखि फिटिंग अकानि रहल छलीह। तखने पापाक स्टडी रूमक बंद केबाड़ खुजल आ वर्दी, हैट आ बूटमे सजल-धजल अमित ड्राइंग रूममे आबि मम्मीकेँ सैल्यूट कएलक– जय हिंद मम्मी! विमलाजी आश्चर्यचकित छलीह जे एतेक नीकसँ सैल्यूट करब ई सात-आठ वर्षक बच्चा कोना सिखलक!

अमितक देहपर ओ ड्रेस खूब फबि रहल छलै। विमलाजी विभोर भेल बेटाकेँ छातीमे सटा लेलनि। दुनू बहिन मुग्ध छलीह। ड्रेस वास्तवमे बहुत सुंदर छलै। यैह ड्रेस पहिरने मेला घुमैत काल अमित पंडालमे जखन दुर्गामाता प्रतिमाक आगू ठाढ़ भऽ स्टाइलसँ सैल्यूट करए तखन सब एकरे देखऽ लगैत छल। सरिपहुँ अद्भुत! यैह ड्रेस पहिरि जखन विद्यालयक फंक्शनमे 'नन्हा-मुन्ना राही हूँ, देश का सिपाही हूँ, बोलो मेरे संग जय हिंद! जय हिंद!!' गीत प्रस्तुत कएने छल तखन बड़ी देर तक हॉल थपड़ीक करतल ध्वनिसँ स्पंदित होइत रहल। अमितक टीमकेँ प्रथम पुरस्कार भेटल छलै। तिरंगा झंडा आ खिलौनावला बंदूक-तोप-टैंक सभसँ एकर पेटार भरल रहैत छल।

केंद्रीय विद्यालय, हेब्बाल, बेंगलुरुक विशाल परिसर जेना विशाल हरियर शमिआना टाँगल हो! अमितकेँ अपन विद्यालय बहुत नीक लगैत छल। जेना अपन गाम महमदाक गाछी हो। अमित जेहने कुशाग्र बुद्धि पठन-पाठनमे छल तेहने तेज ओ खेलकूद आ अन्य कार्यक्रम सभमे सेहो छल। वर्गक हेड ब्याय छल। वाद-विवाद सहित विभिन्न खेल प्रतियोगिता सभमे जितल मेडल, शील्ड, ट्रॉफी आ प्रशंसा-पत्र सभसँ आलमारी भरि गेल छलै। टेंथमे सेहो नीक परिणाम आएल आ पुरस्कार भेटल छलै।

तखन ट्वेल्भमे छल। परीक्षा नहि भेल छलै। एक रवि दिन भोरे कहलक जे हम एक ठामसँ घुमिकेँ अबैत छी, साँझ धरि आबि जाएब। साँझमे आबि गेल। बात आएल आ गेल। ककरो ध्यान ओम्हर नहि गेलै। ध्यान तखन गेलै जखन किछु मास बाद ओकर एन डी ए परीक्षाक साक्षात्कार/ शारीरिक परीक्षणक पत्र आएल। घरमे हड़कंप मचि गेल। पिता चिंतित आ माए पेटकान देने। विमलाजी सोचथि जे जकर डर छल सैह भेल। ई कहियो कहबो नहि कएलक आ पता नहि कोना चुपचाप फॉर्म भरि देने छल। ओहि रवि दिन जे एक ठामसँ घुमिकेँ अबै छी कहि कतहु गेल रहए से लगैत अछि ओही दिन ई एनडीए वला परीक्षा देने छल। ओह!

एकहि टा बेटा आ ओ फौजमे जाएत! हे भगवान्! कथीक कमी अछि!! गामपर अफरात संपत्ति। पिता कृषि विभागमे वरीय वैज्ञानिक पदाधिकारी! नहि चाही एहन नोकरी! वीरगाथा पढ़इए-सुनइएमे नीक लगैत छै, प्रत्यक्ष भोगैमे नहि! जकरापर बितै छै वैह एकर महिरम बुझै छै, शेष लोकक लेल तऽ ओ गौरवगाथा रहबे करैत छै। नहि! हम किन्नहु जाए नहि देबै। ओना एहिमे एकटा पेंच छलै जे

अमितक ट्वेल्भक परीक्षा 3 मार्चसँ छलै आ मैसूरमे साक्षात्कार 1 मार्चसँ। दुनू एकहि संग संभवे नहि छल। भने भेल! आब अमित साक्षात्कारमे नहि जा सकत! दोसर बेर कोनो हालमे हम फार्मे नहि भरए देबै। ईंजीनयरिंगक फार्म भरए। हम एकदम एलर्ट रहब। अखन देरी छलै।

विमलाजी यैह सब सोचैत छलीह कि एक संध्या गार्डेनमे बैसल माए लऽग आबि अमित कहलक जे आर्मी हेडक्वार्टरसँ प्रिंसिपल साहेबक बात भऽ गेल छै। परमिशन भेटि गेल छै। आब मैसूर जएबाक तैयारी कर! विमलाजी झमाकैँ खसए लगलीह। अमित सम्हारि लेलक। बाजल– मम्मी! अहाँ ओहि महान् देशक वीर नारी छी जतय रणमे जाइत काल वीर माता अपन पुत्रक माथ सूँघि आशीर्वाद दैत विदा करैत अछि, बहिन चंदन लगा आ आरती उतारि विदाइ दैत छै, हाड़ा रानी सन महान् पत्नी अपन पतिकैँ मुंडमालक उपहार पठबैत छै! अहाँक एना विचलित होएब ओहि महान् परंपराक उपहास अछि माँ! सब माए जँ एहिना सोचतीह तखन भारतीय सेनाक ई गौरवशाली परंपरा कोना अक्षुण्ण रहि सकत! आ अखन हम युद्धमे जा कहाँ रहल छी! अखन तऽ इंटरव्यू आ मेडिकल सब बाँचले अछि। देखू आकाशमे कतेक तारा अछि। सभटा कोनो ने कोनो वीरक रोशनीएसँ जगमग करैत हुनक प्रतिनिधित्व करैत अछि! जखन हम अहाँक लऽग नहि रहब तखन अहाँ एहि तारा सभकैँ देखब। हम एहि तारावलीक कोनो तारामे अहाँकैँ देखा जाएब मम्मी!

अमित माएक मुड़ी आकाश दिशि उठा देलक आ हाथसँ ध्रुवतारा दिशि संकेत कएलक।

विमला सेहो अमितक संग मैसूर गेल छलीह। अमित साक्षात्कार आ मेडिकल दैत छल आ विमला मैसूरक भव्य राजमहल देखि रहल छलीह। जखन एहि राज पैलेसक अद्‌भुत विवाह मंडप कल्याण पैवेलियन देखलनि तऽ सहसा अमितक बियाह एहने मंडपपर करबाक सपना देखए लगलीह। ई 1996क बात छल।

एनडीएमे अमितक चयन भऽ गेलै। एहि बीच बी आइ टी, मेसरासँ सेहो इंजीनियरिंग कोर्स ज्वाइन करबाक पत्र आएल मुदा अमित एहि पत्रकैँ नुका देलक। भारतीय सेनामे जएबाक ओकर चिर संचित मनोरथ जे पूर्ण भऽ रहल छल!

तीन वर्ष बाद अमितक पासिंग आउट परेडमे सभ गोटे गेल रहथि। ओहि ठाम अंतिम पग बाद वर्दीपर कपड़ासँ घेरल सिताराक अनावरण समारोह भेल। एक दिशि विमलाजी आ दोसर दिशि हरिश्चंद्र बाबू ठाढ़ भऽ दुनू कन्हापर

शोभित दू-दूटा सितारापर लागल कपड़ाक फीता उतारलनि। अमितक गौरवर्ण सुडौल देहपर जैतूनी हरियर वर्दी आ ओहिपर लागल दू-दूटा स्वर्णिम सितारा दिव्य लगैत छल। परिवार आइ नेहाल भेल छल। अमित भारतीय सेनामे लेफ्टिनेंट रूपमे कमीशन प्राप्त कएलनि। दुनू बहिन एतए केर अद्भुत कैप टॉसिंग सेरीमनी देखि खुशीसँ नाचए-कुदय लगलीह। एहन दृश्य ने कहियो देखने रहथि आ ने सुनने रहथि। साँचे अभूतपूर्व आ विलक्षण दृश्य! सभकेँ गौरवक अनुभूति भेल।

एनडीएमे तीन सालक कठोर प्रशिक्षणक सफलतापूर्वक समाप्तिक बाद अमित खड्गवासला, पुणेसँ आइएमए, देहरादून विशेष प्रशिक्षण लेल गेलाह। 3 जून 2000सँ 9 गोरखा राइफल्सक प्रथम बटालियनमे लेफ्टिनेंट रूपमे अमित सिंह भारतीय सेनामे अपन चिरसंचित सपनाकेँ साकार करैत स्वर्णिम सेवा शुरू कएलनि।

जम्मू-कश्मीरमे उग्रवादी गतिविधि आ अवैध घुसपैठकेँ रोकबाक भार गोरखा राइफल्स आ अन्य सुरक्षा बलपर ऑपरेशन रक्षक रूपमे देल गेल छल। अमितक पदस्थापना एतहि छल। कुपवाड़ा क्षेत्रमे अमितक यूनिट मोर्चा सम्हारने छल। एहि यूनिटक कार्यक्षेत्र अत्यंत संवेदनशील आ एकदम अस्थिर रहए। सतत् परिवर्तनशील, क्षणमे छनाकवला स्थिति! नियंत्रण रेखा लऽग रहबाक कारणेँ घुसपैठ केर प्रबल संभावना! एहि क्षेत्रमे अनेक आतंकवादी गिरोह सक्रिय छल। पाकिस्तानी रेंजर सभक शह पाबि घुसपैठिया सभ एलओसी पार कऽ जम्मू-कश्मीरमे आबि उत्पात मचा रहल छल। अमितक टुकड़ी एहिपर लगाम लगा रहल छल। एहनेमे एक दिन भोरे आसूचना भेटल जे कुपवाड़ा जिलाक पंजगाम जंगलमे किछु अतिवादी नव लोकक जमघट देखल गेल अछि। संभव जे ओ सब अवसर पाबि कांड करए। पंजगाम जंगलमे गश्ती वा तलाशी अभियान चलाएब अत्यंत दुष्कर काज। देवदार आ चीड़क विशाल-विशाल गगनचुम्बी गाछ! डेढ़ सए फीटसँ कम नहि। चीड़क गाछ किछु कम मुदा उहो सए फीटसँ कम नहि। दुनू विशाल गाछक युगलबंदी जेना आकाशकेँ स्थिर रखबाक लेल जमीनसँ सौंगर लागल हो! हरियर कचोर मैदान, पहाड़पर हरियरी, बदामक खिलैत श्वेत पुष्पसमूह, रंग-बिरंगक फूल आ फल केर प्राकृतिक क्यारी, हिमाच्छादित पहाड़क चोटी सभक मनभावन दिव्य स्वरूप, लोलाब घाटीक अतुलित सौंदर्य आ मीठ पानिक स्रोत-समूह जतबे आकर्षित करैत अछि ततबे किछु गाछ सभक चोखगर पत्ता, झाड़ी सभक काँट, ऊँचगर पहाड़ आ छोट-छोट

नदी-नाला तलाशी अभियानमे लागल जवानकेँ हलकान सेहो करैत अछि। पता नहि कोन गाछक अऽढ़सँ गोली चलि जाए, कोन झाड़ीसँ ग्रेनेड आबि जाए!

सत्य तऽ इहो अछि जे एहि सभसँ डरि गेल से भला भारतीय सैनिक कहाँ! अमित जाहि गोरखा जवान सभक नेतृत्व करैत छथि हुनका विषयमे कहबी छैक जे केओ ई कहैत हो जे हमरा मृत्युक भय नहि अछि ओ या तऽ झूठ बजैत छथि या ओ गोरखा सैनिक छथि।

राति तऽ अमित घरपर गप्प कएने रहथि। तखन एहन कोनो सूचना नहि छल। रूटीन गश्त चलै छल। बबीता कहलक जे माए दीदी लऽग मास्को गेल छथि। अहाँ शीघ्रे मामा बनब। ओकर छठिहारमे हमसब मास्को जाएब। छुट्टीक आवेदन अखने दऽ दियौ। सेनामे बड़ नियम-कानून छै! पापा अखन घरपर नहि छथि तेँ हुनकासँ गप्प नहि भऽ सकत।

अमित हँसैत कएलनि– बॉबीदी! तखन तऽ अहीँक राजपाट अछि दिल्लीमे! खूब मौज करू! हँ! रातिकेँ एक बेर छतपर जाकेँ तारा सभकेँ अवश्य देखब। अनादि कालसँ जे विद्वान् वा मनीषी वा वीर योद्धा सत्कर्म करैत अपन देह त्याग करैत छथि हुनक आत्मा आकाशमे एकटा तारा बनि जगमग करैत छनि। हुनकर पुनर्जन्म नहि होइत छै। जखन जन्म-मरणक चक्रसँ मोक्ष भेटि जाइत छै तखन आत्मा अनंत आकाशमे तारा बनै छै। हमहूँ एकटा तारा बनब। उत्तर दिशामे ध्रुवतारा लऽग। अहाँ आकाशकेँ निहारैत रहब। हम अवश्य भेटब!

– इह! तारा बनब! पहिने लेफ्टिनेंटसँ कैप्टन तऽ बनू भैया! आ ई कहू जे अहाँ हमर विषय दर्शन कहिया पढ़लहुँ जे मनीषी, कर्म, आत्मा, मोक्ष, पुनर्जन्म, आकाश, तारा सभक बात करैत छी?... बबीताक हँसीक आवाज अमित सुनलनि कि सहसा फोन कटि गेल। जेठ रहितो बबीता अमितकेँ भैया कहैत छलीह। दुलार आ स्नेहसिक्त आदर करैत छलीह।

आइ भोरमे भेटल आसूचनाक सत्यापन भेल आ एक टुकड़ीक संग अमित ऑपरेशन कुपवाड़ा लेल प्रस्थान कऽ गेलाह। पंजगाम जंगलमे देवदार आ चीड़ केर गाछसँ बहुत नीक खुशबू अबैत छल। सब जवान आ अमित एक-एक गाछक अऽढ़ लैत बढ़ि रहल छल। बहुत देर बाद जंगलमे एक ठाम किछु धुआँ उठैत बुझाएल। आशंका भेलनि। ओना जंगलमे आगि लागब तऽ कोनो असामान्य बात नहि तथापि शंका समाधान जरूरी अछि। दूरबीनसँ देखलनि तऽ धुआँ स्पष्ट देखाइत छल जे कोनो गाछसँ नहि उठि रहल छल।

किछु लऽग गेलापर ई धुआँ एक झाड़-पात आ लकड़ीसँ बनल एकटा अस्थायी निर्माणसँ अबैत भेटल। अवश्य एहिमे कोइ रहि रहल अछि। लऽगक देवदारक गाछ टेबि सब केओ अपन-अपन पोजीशन लऽ लेलनि। अमित एकटा पाथर उठा ओहि घरपर फेकलनि जे कोइ अछि वा नहि। पाथर खसिते ओहि अस्थायी निर्माणसँ गोली चलल। स्पष्ट भेल जे संकलित आसूचना सही छल। अमित अपन परिचय दैत ललकार देलनि जे हाथ उठा बाहर आ! एकर बाद फेर गोली नहि चलल। कोनो आवाज नहि आएल। किछु देर बाद जंगल ओहिना शांत भऽ गेल। कोनो तरहक हलचल नहि पूर्ण रूपसँ नि:शब्द! मात्र सर्द हवामे पत्ता खड़खड़एबाक स्वर अबैत छल। सहसा एक जवान अगुताकेँ अपन मियानसँ संगीन निकालि राइफलक लगमे फिट कएलक आ 'जय माँ काली आयो गोरखाली'क युद्धघोष करैत आगू बढ़बाक फेरमे बढ़ए लागल। अमितक एहन कोनो आदेश नहि छलै। ओ संकेतसँ पुछलनि। उत्तर भेटल– लास्ट चार्ज साहेबजी! अमित रोकलनि– अहाँ बाल-बच्चेदार छी। हमर तऽ अखन बियाहो नहि भेल अछि। लास्ट चार्ज अहाँ नहि हम स्वयं करब। अहाँ हमरा कभर फायर दियऽ। बहादुर मैथिली बुझैत छल। सुनिकेँ भावुक भेल। विकट परिस्थिति रहितो भावना जोर मारलक आ ओकर आँखि नोरा गेलै। एहनो पदाधिकारी होइत छै जे निश्चित मृत्युकेँ देखितो स्वयं अग्निकुंडमे कुदैत अछि आ अपन जवानक जान बचा लैत अछि! जय माँ काली! जय जानकी!! समवेत स्वर पाछूसँ आबि रहल छल आ अमित राइफल लेने दौड़ रहल छलाह। कवर फायरक आवाज आ जय जानकीक स्वर सुनिते उग्रवादी सेहो फायर शुरू कऽ देलक। दू नालसँ आगि बरसि रहल छल। स्पष्ट छलै जे उग्रवादी एकसँ बेसी अछि। बूटसँ काठक कुंदानुमा केबाड़ धँगैत अमित अतुलित साहस आ शौर्यसँ अंदर राखल देवदार लकड़ीक ढेँगपर फानि गेलाह।

हुनक देह हवामे उड़ैत छल मुदा आँगुर ट्रिगर दबने छल। लगातार गोली बरसि रहल छलै। एकटा अतिवादी या अल्ला करैत 72 हूर लऽग चलि गेल। ढेँगपर फनबाक क्रममे अस्थिर भेल अमितक शारीरिक संतुलन जाबत स्थिर हुअए ताबत दोसर उग्रवादी अमितक सीनामे गोली उतारि देलक। अमित देवदारक ओहि ढेँगपर खसि पड़लाह। ओ बड़बड़ाइत छलाह– हम मामा बनि गेल छी मुदा हम चंदा मामा नहि बनब, हम तारा बनब। हम तारा बनब... जय... हिंद! तखने सामने देवदारक एक विशाल गाछ स्वत: अरड़ाकेँ खसि

पड़ल। श्याम बहादुर थापाक गोली दोसरो जैश मोहम्मदक उग्रवादीकेँ ऊपर पहुँचा देलक। ऑपरेशन खत्म भऽ गेल छल। श्याम बहादुर थापाक मोनमे विजयक कोनो भाव आइ नहि छल। ओकर कमांडर, ओकर जीवनदाता, ओकर प्रेरणापुंज जे शहीद भऽ गेल छलाह। सब टोप उतारि सशस्त्र सलामी देलक। श्याम थापा जीवनदाता जीवनदाता करैत नेना जकाँ बिलखि रहल छल। फेर एक कन्हापर अमितक पार्थिव देह उठाकेँ ओ लादि लेलक जेना कोनो बाप अपन सुतल नेनाकेँ अपन कन्हापर सुता लेने हो! मृत्युसँ नहि डरनिहार श्याम थापा अपन पदाधिकारीक उदात्त भावसँ पसीझ गेल छल। कहुना सब कैम्प घुरि आएल। हेडक्वार्टर खबरि गेल। ई 3 सितंबर 2000क घटना थिक।

सेना मुख्यालयसँ फोन आएल तऽ बबीता फोन उठओने छलीह। ओम्हरसँ कहल जा रहल छल– हमने एक जांबाज शूरवीर लेफ्टिनेंट अमित सिंह को खो दिया है। आज जैशे मोहम्मद के उग्रवादियों से लड़ते हुए उन्होंने वीरगति पाई। भारतवर्ष के लिए उन्होंने सीने पर गोली खाकर अपना सर्वोच्च बलिदान दिया।

बबीताक हाथसँ चोँगा खसि पड़लै। लटकल चोँगासँ अखनो आवाज आबिए रहल छल– अंत समय वे स्वयं को आकाश में तारा बनने की बात कह रहे थे!

पहिने तऽ घरमे ककरो विश्वासे नहि होइत छल जे अमित राष्ट्र सेवामे शहीद भऽ गेल छथि। एहि नामक कतेक पदाधिकारी भऽ सकैत छथि। एम्हर-ओम्हर फोन घुमाओल गेल मुदा एहन बात झूठ नहि होइत छै। टीवीपर समाचार आबि रहल छलै। एम्हर दिल्लीसँ मास्को धरि आ पटनासँ महमदा, समस्तीपुर धरि कोहराम मचल छलै।

अमितक पार्थिव शरीर दिल्ली आबि गेल छल। वीरमाता विमला सिंह मास्को छलीह तेँ संस्कारमे समय लागल। ओ मास्कोसँ अएलीह तखन पिता हरिश्चंद्र प्रसाद सिंह तिरंगा ओढ़ने पुत्र अमितक पार्थिव देह उठओलनि। संसारक सभसँ पैघ बोझ यैह थिक! सम्मानक संग वीर लेफ्टिनेंट अमित सिंहक अंतिम संस्कार संपन्न भेल। मिथिलाक माटि महमदाक धरतीपर जे अमित ज्योतिपुंज 28 मइ 1979केँ प्रकट भेल छल से राष्ट्र-दीप बनि लोलाबक सुरम्य घाटीमे पंजगाम जंगलक धरतीमे समा गेल। हिनक अस्थि हरिद्वारमे गंगाजीमे प्रवाहित भेल जे समग्र भारतवर्षकेँ आप्लावित करैत सागर होइत संपूर्ण संसारमे पसरि गेल।

पिता हरिश्चंद्र बाबूक कान्हपर बेटा अमितक पार्थिव शरीर भले संसारक सभसँ पैघ बोझ किएक नहि हो, ओ अमितकेँ जियाकेँ रखबाक लेल प्रतिबद्ध

छलाह। अमितक जन्म-तिथि 28 मइ आ हुनक शहादत-तिथि 3 सितंबरकेँ प्रतिवर्ष समारोह आयोजित होइत रहल। ले. अमित सिंह मेमोरियल फाउंडेशनक स्थापना 2001मे भेल। कृषि क्षेत्रमे डॉ. हरिश्चंद्र प्रसाद सिंहक नाम अत्यंत श्रद्धापूर्वक लेल जाइत अछि। ओ पूसा कृषि विश्वविद्यालयक भाइस चांसलर रहल छथि। कृषि क्षेत्रमे उल्लेखनीय अवदान हेतु अमितक नामपर अमित कृषि ऋषि, अमित पद्म जागृति, अमित प्रबुद्ध मनीषी, अमित अग्रणी पुरस्कार/सम्मान सुयोग्य सत्पात्रकेँ प्रदान कएल जाइत अछि। ई समारोह देशक विभिन्न भागमे आयोजित होइत अछि। राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय स्तरपर कृषि क्षेत्रमे लब्धप्रतिष्ठ विद्वान्/ किसान सम्मानित होइत छथि। लेफ्टिनेंट अमित सिंहक गाम महमदामे आयोजित एहने समारोहक भव्यताक अनुमान मात्र एहिसँ लगाओल जा सकैछ जे 15 एकड़मे पंडाल बनल छलै। एहि अभूतपूर्व समारोहमे संपूर्ण भारतवर्षसँ कृषि वैज्ञानिक सभक जुटान भेल छल। पहिनेसँ चयनित सत्पात्र कृषि वैज्ञानिक आ प्रगतिशील किसान सभकेँ ले. अमित सिंहक नामसँ जुड़ल विभिन्न पुरस्कारसँ सम्मानित कएल गेलनि। सम्मान करैत छलीह वीरमाता श्रीमती विमला सिंह आ वीर भगिनीद्वय नीता सिंह व बबीता सिंह। भाइस चांसलर साहेब हरिश्चंद्र बाबू चुपचाप दर्शक दीर्घामे बैसल अपन वीर पुत्र अमित सिंहक कीर्त्तिगाथाक बखान सुनि रहल छलाह। एहि समारोहमे पद्मश्री गोपालजी त्रिवेदीक अध्यक्षता आ विकलजीक संचालनमे विराट् कवि सम्मेलन आयोजित भेल छल।

आइ जेना महमदाक शौर्यभूमिपर ओकर लाल ले. अमित सिंहक पुनर्जन्म भऽ गेल हो! कवि सम्मेलनमे अमित जेना सदेह उपस्थित होइत अपन शहादत केर बखान सुनि रहल होथि। हुनक जीवन-चरित्र जेना एहि कवि-गोष्ठीमे जीवंत भऽ गेल हो! महमदा-पूसा मुख्य मार्गपर दहिना कात भव्य ले. अमित सिंह स्मृति स्थलमे अमितक प्रतिमा प्रतिष्ठित अछि आ दहिना कात वीरभूमि महमदा जाएवला पथपर एक सुंदर द्वार सुशोभित अछि। आइ महमदा गाममे चलि रहल समारोहमे कवि सम्मेलन शमा बान्हने छल। ओज गुण आ वीर रस केर धार बहि रहल छलै। देशभक्ति आ बलिदानक साधल स्वरसँ संपूर्ण गाम जेना स्पंदित भऽ रहल हो!

अझक्केमे श्वेत वस्त्रावृता गामक बड़की काकी मंचपर आबि गेलीह। मंच संचालन करैत विकलजीकेँ आशीष दैत कहलनि– दस बरख बाद आइ फेर हमर बेटा गाम घुरि आएल अछि! अहाँ ओकरा फेरसँ जिया देलहुँ। जुग-जुग जीबू अहाँ!

विकलजी स्वयं भावुक भेल छलाह। ओ किछु काल पूर्व सम्मानमे भेटल मिथिला पेंटिंगसँ सुशोभित अपन डोपटा बड़की काकीक चरण-कमलपर चढ़ा प्रणाम कएलनि। फेर बजलाह– शहीद कहियो मरबे नहि करैत छथि माँजी! ओ तऽ समस्त देशवासीक हृदयमे चिर युवा रूपमे सदिखन वास करैत छथि। हर स्मरणमे ओ जिबैत छथि। जे राष्ट्र अपन शहीद सभक सुधि नहि लैत हुनका बिसरा दैत अछि ओ राष्ट्र बेसी दिन स्वतंत्र नहि रहि सकैत अछि! महमदा अपन लालकेँ नहि बिसरत! अमर शहीद लेफ्टिनेंट अमित सिंह हमरा सभक हृदयमे छथि। सदेह जीवित! देखू एहि भव्य स्मृति स्थलपर सजल-धजल हुनक प्रतिमा केहन प्रफुल्लित अछि! देखू! देखू!! राष्ट्रकवि दिनकर कहने छथि–

जो चढ़ गए पुण्यवेदी पर लिए बिना गर्दन का मोल!
कलम! आज उनकी जय बोल!

विकलजीक बात सुनैत मातर उपस्थित भारी भीड़ ले. अमित सिंहक जय-जयकार करैत तुमुल करतल ध्वनिसँ पंडाल हिला देलक।



[समस्तीपुर, 5 फरवरी 2026]

दुखी नहि हो छोटे

उत्तर प्रदेशक एक जिला रामपुर! तारीख गवाह अछि जे कहियो एकर जलवा-जलाल मशहूर छल। आइ रामपुरीक लेल प्रसिद्ध अछि। रामपुरी माने रामपुरी चक्कू! तेज धार, विशिष्ट बनावट, दस्तकारी आ बिनु कोनो स्प्रिंग मात्र बटन दाबिकैँ खोलबाक अद्‌भुत यांत्रिकी कारणेँ अखनो एकर विशेषता अद्‌भुत अछि। आइ एहि रामपुरक दू भाएक कथा!

कठेर नामक जंगली क्षेत्रमे कठेरिया राजपूत रामसिंहक शासन छल। नवाब फैजुल्ला खान अंग्रेज सभक सहयोगसँ 7 अक्टूबर 1774कैँ रोहिल्ला राज्यक रूपमे एकर स्थापना कएलनि। स्थापत्य, शिक्षा, साहित्य, संगीत आदि क्षेत्रमे एकर उन्नति भेल। संगीत क्षेत्रमे प्रसिद्ध रामपुर-सहसवान घरानाक उत्पत्ति एतहिसँ भेल।

रामपुर रियासतक नवाब हामिद अली शाह आ नवाब रजा अली खानक समय सर अब्दुस समद खान मुख्य मंत्रीक ओहदा सम्हारैत छलाह। हिनक पहिल वीवीसँ उत्पन्न बेटी रफत जमानीक बियाह नवाब रजा अली खानसँ भेल छल। पहिल जोरूक इंतकालक बाद दोसर बियाहसँ साहेबजादा अली खान, साहेबजादा यूनुस अली खान आ साहेबजादा याक़ूब अली खान नामक तीन पुत्र एवं जहाँआरा बेगम आ फाखरा बेगम नामक दू पुत्रीक जन्म भेल छल। नवाबी खूनमे छलनि। साहेबजादा यूनुस अली खान पहिनेसँ ब्रिटिश भारतीय सेनामे छलाह आ साहेबजादा याक़ूब अली खान सेहो अपन बीसम जन्मदिनसँ एक दिन पूर्व 22 दिसंबर 1940कैँ रॉयल इंडियन मिलिट्री एकेडमी, देहरादूनसँ ब्रिटिश भारतीय 18 किंग एडवर्डक घुड़सवार सेनामे कमीशन प्राप्त कएलनि।

द्वितीय विश्वयुद्धक आगाज भऽ गेल छल। भारतवर्षसँ बाहर ब्रिटिश सेनाक खिदमतमे हजारक हजार आ लाखक लाख भारतीय युवक जबरन विभिन्न

देशमे अंग्रेजी हित सभक रक्षा लेल पठाओल गेल। एहि सेनामे ओना सब किछु व्यवस्थित छल– रसद-पानि, सुखायल राशन, वर्दी, बंदूक, कारतूस, फोल्डिंग कॉट आ कंबल। समय-समयपर चाय आ अंग्रेजी सेहो भेटैत छल। गोरकी मेम सभक आन-जानसँ कैंपक रौनक बढ़ल रहैत छल। विशेष रूपसँ तरकारी, फल आ दूध लऽ अबैत गोरकी हूर सन सुन्नरि छहफुटिया मेम सभकेँ देखबाक लेल तऽ जवान सभक मेला लागि जाए। ई आकर्षण छोड़ि एहि जंगमे कोनो आकर्षण नहि। घर-परिवार आ देशसँ दूर एतऽ अनका लेल लड़ैत छी। कोनो जोश नहि आ ने कोनो उत्साह। अपन देश, अपन धरती, अपन लोक वा अपन अस्तित्वक रक्षाक लेल लड़बाक जे जुनून एक सैनिककेँ विशिष्ट बनबैत छै तकर अभाव छलै। एतए सब हुक्म केर तामिल मात्र करैत छल।

लीबियाक एक बंदरगाही शहर तोब्रुक मिस्र देशक सीमासँ सटल। 1941मे इतिहास प्रसिद्ध 231 दिनक मशहूर तोब्रुक घेरा एतहि भेल छल। रेगिस्तानी लोमड़ी नामसँ प्रसिद्ध इरविन रोमेलक इतालवी आ जर्मनीक नाजी सेनाकेँ मित्र राष्ट्रक सेना लीबियाक एल एलामिन आ अलम एल हलफामे भारतीय सैनिक सभक शौर्यक बलेँ परास्त कएलक। पाँचम इंडियन इंफेंट्री रूबेसात रिजपर कब्जा करएमे महत्वपूर्ण भूमिका अदा कएलक। अल अघैलापर ब्रिटिश सैनिकक कब्जा भेल। दिसंबरसँ फरबरी धरि खूब गहमा-गहमी रहल। ब्रिटिश सेनाकेँ यूनानमे सैन्य सहायता पठाएब जरूरी भेलै तखन लीबिया सीमापर सैनिक कम भेल। लेफ्टिनेंट जेनरल रोमेलक शातिर दिमाग काज कऽ गेलै। ओ फरबरीसँ मई धरि गहन सैन्य कार्रवाइ कएलनि। अल अघैलापर कब्जा भेल आ ब्रिटिश सेना मिस्र दिशि जएबाक लेल बाध्य भेल। इतालवी सेना मेकिलीमे ब्रिटिश दुर्ग घेरि लेलक। सेकंड लेफ्टिनेंट याक़ूब खानक 18 कैभेलरी इतालवी तोपखानापर प्रचंड प्रहार कएलक। याकूब खानक नेतृत्वमे भारतीय दलकेँ इतालवी सेनापर बढ़त भेटलै मुदा रोमेलकेँ रेगिस्तानी लोमड़ी ओहिना नहि कहल जाइत छलै। ओ नव कुमुक मँगा 3000 ब्रिटिश भारतीय सेनाकेँ आत्मसमर्पण लेल बाध्य कऽ देलनि। इतालवी सेना याकूब खानक 3 इंडियन मोटर ब्रिगेडकेँ पस्त कएलक। डेढ़ मास पूर्व लेफ्टिनेंट भेल याकूब 21 वर्षक आयुमे युद्धबंदी भेलाह। शिविर दक्षिण इटलीक अवेरसामे छल। एहि ठाम ओ इतालवी भाषा सिखलनि।

अपनाकेँ केहनो शातिर मानी आ कतबो आकाशमे उड़ैत रही एक न एक दिन धरतीपर आबए पड़ैत छै। रोमेल साहेबक संग सेहो यैह भेलनि। 18म

इंडियन इंफेंट्री देर अल शेनमे रोमेलक सेनाकेँ रोकि देलक आओर ब्रिटिश 8म सेना नीक स्थितिमे आएल। उत्तरी अफ्रीकामे मशहूर कमांडर रोमेलक पराभव भेल। संपूर्ण युद्धमे चारिम, पाँचम, दसम इंडियन इंफेंट्री डिविजनक आ तेसर भारतीय मोटर ब्रिगेडक शौर्य शबाबपर छल। ओम्हर वर्मा फ्रंटपर जेठ भाए साहेबजादा यूनुस अली खान अपन बहादुरीसँ रामपुरक नूर विश्व भरिमे पसारि देने छलाह। एहि फ्रंटपर गोरखा बहादुर लक्ष्मण गुरुंग सन महाबली एक हाथ आ आँखि गमएलाक बादो अपन अतुलित साहससँ जापानी सेनाक दुर्गति कऽ देने छल। हुनका विक्टोरिया क्रॉससँ अलंकृत कएल गेल छलनि। ब्रिटिश फील्ड मार्शल सर क्लॉडे ऑचिंलेक भारतीय सैनिक सभक शौर्यगाथाक सराहना करैत स्पष्ट घोषणा कएलनि जे जँ भारतीय सेना संग नहि रहैत तखन हमसब ई महायुद्ध जीति नहि सकैत छलहुँ। ई अलग बात जे ई शौर्यगाथा सत्तासी हजारसँ बेसी शहीद सैनिक सभक शोणितसँ लिखल गेल छल। चौंतीस हजारसँ बेसी घायल आ सड़सठ हजारसँ बेसी युद्धबंदी भेल छल। 38 विक्टोरिया क्रॉस सहित चारि हजारसँ बेसी पदक भेटल। अनेरुआ सभक रखबारी लेल वीरता पदक! ओह!

रामपुरक दुनू लाल दोसर विश्वयुद्धक मैदानमे कमाल देखा रहल छलाह। जेठ यूनुस खान अपराजित विजयी रहलाह छोट याक़ूब युद्धबंदी सेहो भेलाह। हुनक मित्र आ कोटा स्टेटक कुमार लेफ्टिनेंट अभय सिंह प्रशिक्षणमे आ द्वितीय विश्वयुद्धमे एक साथ युद्धमे शामिल छलाह। दुनू एकहि संग युद्धबंदी भेल छलाह आ बंदी शिविर पीजी 91सँ संगे पलायन कएलनि! याक़ूब इतालवी भाषा सिखने छलाह। देहातमे एहि भाषाक कारणेँ एक गाममे शरण भेटलनि। एहि ठाम किछु दिन नुकाएल छलाह। एक इतालवी युवती हिनका सभक प्रति सहानुभूति रखने छलीह। ई सहानुभूति कखन कोमल भावनामे परिवर्तित भेल तेकर एहसास याकूब खानकेँ नहि छलनि। जर्मनीक सेना हिनका सभकेँ फेर पकड़ि लेलक। एहि ठामसँ जाइत काल ओ युवती स्मरण रखबाक निमित्ते अपन हार उपहारमे देलनि। ओ भावुक छलीह आ मानैत छलीह जे भारतीय सब सुच्चा देवदूत छथि। याकूब खानकेँ युद्धबंदी बना जर्मनीक ब्राउनश्वेग शहरक वैगममे अवस्थित ओफ्लैग 79 बंदी शिविर आनल जा रहल छल। जाइत काल ओ युवती याकूबकेँ अपलक निहारि रहल छलीह। हुनक आँखिमे अभरल पानि याक़ूबकेँ आब-ए-जमजम जकाँ पाक लगैत छल। बादमे जखन-जखन ओ ओहि युवती द्वारा देल गेल हारक उपहार देखथि तऽ हुनका आब-ए-जमजम मोन पड़ि जाइत छलनि। अखनो

स्मरण मात्रसँ विह्वल होइत छथि। जर्मनीक एहि ब्राउनश्वेग युद्धबंदी शिविरसँ अमरीकाक नवम सेना जेनरल सिम्पसनक नेतृत्वमे हिनका सभकेँ 1945मे मुक्त करओलक। ताबत याकूब जर्मन भाषामे पारंगत भऽ गेल छलाह।

ओम्हर यूनुस खान ब्रिटिश भारतीय सेनामे अपन दमदार उपस्थिति दर्ज करा देने छलाह। ने कहियो पराजित भेलाह आ ने कहियो युद्धबंदी! द्वितीय विश्वयुद्ध समाप्तिक बाद यूनुस खान भारतीय शांति कोरक सदस्य बनि इंग्लैंड गेलाह। एहि ठाम माउंटबेटनसँ भेंट भेलनि। ओ हिनक अपराजेयता आ शौर्यक कथा सुनि प्रभावित भेलाह। भारत अएलापर माउंटबेटन यूनुस अली खानकेँ अपन एडीसी (Aide-de camp) बना लेलनि। यूनुस खान भारतवर्षक अंतिम गवर्नर जेनरल सी राजगोपालाचारी आ स्वतंत्र भारतक प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसादजीक एडीसी रहल छलाह।

माउंटबेटनक भारतकेँ स्वतंत्रता देबाक प्रस्ताव यूनुस खानकेँ आनंद दैत छलनि। माउंटबेटन अपन योजनाक तहत 3 जूनकेँ घोषणा कएलनि जे 15 अगस्तकेँ भारतवर्ष आ पाकिस्तानकेँ आजादी देल जाएत। आजादीक बात सुनिते यूनुस खानक रोम-रोम माउंटबेटनक प्रति कृतज्ञ रहए मुदा पाकिस्तान निर्माणक बात सुनि संपूर्ण शरीर जेना सिहरि गेल हो। सभटा रोइँया जेना भुलकि गेल हो! ई की भेल!

ओहि समय सेनाक ऑफिसर सभमे एकटा मिमियोग्राफ्ड प्रपत्र उपलब्ध कराओल गेल जे के कोन देशमे सेवा करए चाहैत छथि। प्रपत्र देखिते यूनुस खान सन्न रहि गेलाह। अनुज याकूब पाकिस्तान जएबाक मोन बनओलनि आ यूनुस भारतमे रहबाक निर्णय कएलनि। याकूब मजहबकेँ तरजीह देलनि तऽ यूनुस अपन धरतीकेँ, अपन समाजकेँ आ अपन देशकेँ। दुनू भाएमे मादरे वतन आ मजहबपर खूब गमर्थन भेल। याकूब नहि मानलनि। रातुक भोजनपर अपन निर्णय अम्मीजानकेँ सुना देलनि आ भोरमे रामपुरसँ जएबाक घोषणा कएलनि। अम्मीजान खिन्न भेलीह। तमसा गेलीह। समझएबाक बहुत प्रयास कएलनि। ओ स्पष्ट रूपसँ कहलनि जे अहाँक पुरुखा एहि धरती लेल बलिदान भेल छथि। 1857क क्रांतिमे सक्रिय रूपसँ भाग लेबाक कारणेँ नजीमाबादमे हुनका सरेआम फाँसी देल गेल छल। एहि ठाम अपन रियासत अछि। हिंदू-मुस्लिम दुनूमे परिवारक प्रतिष्ठा अछि, वकार अछि। एहि खान्दानक खिदमतमे अनेक मुलाजिम हिंदू अछि। अहाँक रसोइया रामलाल आ ड्राइवर कुंदन सिंह दुनू हिंदू छथि। धर्मक नामपर हमसब कहियो कोनो ने भेद कएलहुँ आ ने आइ धरि कोनो

विवाद भेल। अपन अस्लाफ सभक कब्र एतहि अछि। हम सियासत नहि जनैत छी मुदा एतेक अवश्य जनैत छी जे जँ अहाँ आइ रामपुर छोड़ि देलहुँ तऽ हमसब मुंतशिर होएब, बिखरि जाएब। मादरे वतनक कतहु बँटवारा होइ! हम एक स्वार्थी अम्मीजान छी! ने अपन अम्मी रामपुरकेँ छोड़ि सकैत छी आ ने औलाद अहाँकेँ!

घरमे खूब मगजमारी भेलै तथापि याकूब खान नहि घमलाह। देश आ मजहबपर दुनू भाएमे खूब तर्क-वितर्क होइत रहल। ओहि माएक दुर्दशा के अकानि सकैत अछि जेकर दू बेटा ओकरा अपना-अपना लऽग रहबाक लेल दू दिशि घीचि रहल हो। अंतमे ओ यूनुसक संग देलनि। यूनुस खान अपन अनुजकेँ ब्रिगेडियर मुहम्मद उस्मान खान, ब्रिगेडियर मुहम्मद अनीस अहमद खान आ लेफ्टिनेंट कर्नल हबीबुल्लाहक सेहो उदाहरण देलनि जे भारतवर्षकेँ अपन देश मानि एतहि रहबाक विकल्प चुनने रहथि। ब्रिगेडियर उस्मान खानकेँ तऽ पाकिस्तानी सेनामे सीधा जेनरलक पद केर प्रलोभन सेहो देल गेल छल मुदा ओ नहि डिगलाह। यूनुस खानकेँ एहि बातक आश्चर्य छल जे एतेक छोट बात याकूब किएक नहि समझि पाबि रहल छथि जे देश मात्र लोकक समूहे नहि होइत छै। एहि ठामक लोक-वेद, माटि-पानि, आबो-हवा, धरती-आकाश, जंगल-पहाड़, नदी-नाला, ताल-तलैया, जाति-धर्म-संस्कार सभक नाम देश थिक। जँ देशे नहि बाँचत तऽ धर्म कोना बचि सकत! यूनुस खानकेँ तखन कोनो शक-शुबहा नहि रहल जखन ओ सेनासँ फरागत भेल पूर्व सैन्य अधिकारी चुन्नी खानकेँ रातिमे अपन हवेलीमे याक़ूब खान द्वारा अरिआइतकेँ विदा करैत स्वयं देखने रहथि। ओ मानि लेलनि जे मजहबकेँ मुल्कसँ अजीम मानएवला खतरनाक गिरोह हमर परिवारोमे सक्रिय अछि। भोरमे याकूब खान विदा भऽ गेलाह। अपन दरकल करेज नेने श्वेत साड़ीमे पवित्र कुरानक आयत पढ़ैत अम्मीजान बेटाकेँ विदा कऽ देलनि। जाइत काल याकूब खान एतबे बजलाह जे पाकिस्तान में सेट हो जाने के बाद एक बार अपना सामान ले जाने मैं अवश्य रामपुर आऊँगा। कुंदन सिंह आ रामलालक आँखि भरल छल। दुनू जनैत छल जे आब मालिक फेर कहियो रामपुर घुरि नहि सकताह।

भारतवर्षक तारीखमे सभसँ पैघ त्रासदी सामने छल। रेडक्लिफ भारतवर्षक नक्शा जमीनपर राखि अपन तलवारी कलमसँ विभाजनक एक रेखा खींचि देलनि आ एहि रेखाक दुनू कात तेहन आगि लागल जेकर धाह अखनो महसूस होइत अछि। मार-काट, अपहरण-बलात्कार-हत्या, आगजनी, संपत्तिपर कब्जा! ने कोनो कानून आ ने कोनो व्यवस्था! तमाम अपराधी, लुटेरा, मक्कार धर्मांध लोक उठि

बैसल। अफवाह खूब पसरैत छल आ अन्याय-अनाचार चरमपर छल। सभक जान जेना अवग्रहेमे हो! ट्रेनमे ठूसल अबैत लोकक लहास, क्षत-विक्षत भेल स्त्रीगण, भूखसँ बिलबिलाइत बच्चा! लाचार माए-बाप! कुहरैत बूढ़ा-बूढ़ी! अराजकता, अनाचार आ अन्यायक एहन वीभत्स दृश्य ई भारतवर्ष कहियो देखने नहि छल। आश्चर्यक गप्प तऽ यैह छल जे जाहि धर्मक नामपर एहन उत्पात मचल छल ओहि ईश्वरपरसँ लोकक विश्वास दरकि रहल छलै। कोनो धर्मक भगवान् एहन निष्ठुर नहि भऽ सकैछ आ जँ एहन अनीति देखियोकेँ अहाँ मौन छी तखन अहाँ ने शक्तिमान छी, ने इन्सान छी आ ने भगवान् छी! छिया छिया! तथापि धर्मक नामपर देशक बँटवारा! ओह! यूनुस खान सहित बहुत लोककेँ सर्वशक्तिमान भगवान् आइ अस्तित्वहीन, लाचार आ कमजोर लागि रहल छलनि।

देशी रियासत सभक अलगे रंग-ताल रहए। कतहु नवाब मुस्लिम आ बहुसंख्यक प्रजा हिन्दू तऽ कतहु राजा हिन्दू आ बहुसंख्यक प्रजा मुस्लिम। अजीब स्थिति रहए। धर्मक अफीम जेना लोकक बुद्धि नष्ट-भ्रष्ट कऽ देने हो। रामपुर रियासतक सेहो एहने हाल छलै। यूनुस खान मजहबी कट्टरतासँ भरल पूर्व सैनिक चुन्नी खानकेँ अपन अनुज याकूब खानक हवेलीसँ बहराइत स्वयं देखिने रहथि। यूनुस खान रामपुर रियासतक भारतमे विलय केर पक्षधर छलाह आ याक़ूब खान पाकिस्तानमे विलय केर हिमायती। आश्चर्य होइत छलनि जे अपन छोटे एहन केना भऽ गेल। धार्मिक कट्टरता किछु करा सकैत अछि!

एहने संक्रमण स्थितिमे 4 अगस्तकेँ चुन्नी खान रामपुरकेँ पाकिस्तानमे विलय करबाक बात करैत विद्रोह कऽ देलनि। संपूर्ण रामपुरमे भयंकर अराजकता पसरि गेल छल। धार्मिक उन्माद, नफरत आ विद्वेषक आगिमे रामपुरकेँ झोंकि देल गेल। हिंदू-मुस्लिममे सहिष्णुता रामपुरक आंतरिक सौंदर्य छल। एकर नामे सभटा कथा कहि दैत छल। कतेक सए वर्षसँ एतय नवाबी शासन रहलाक बादो एहि नामपर कहियो प्रश्न नहि उठल छल मुदा आब ई नाम किछु लोककेँ अरघैत नहि छलनि। स्थिति बदसँ बदतर भेल जा रहल छल। एहनमे नवाब साहेब स्वयं दिल्ली जा सरदार पटेलसँ भेंट कएलनि। निर्णय भेल जे 6 जाट रेजिमेंटकेँ तत्काल रामपुर पठाओल जाए। ओहि समय यूनुस खान तखन भाइसराय हाउसमे एडीसी छलाह। हुनक मोन अपन मातृभूमिमे अमन-चैन लेल तड़पि गेल। एहि जाट रेजिमेंट संग यूनुस खान सेहो रामपुर आबि स्थिति सम्हारलनि। अपन गाम, अपन धरती आ अपन लोक बीच सैन्य कार्रवाइ करब कतेक कठोर भऽ सकैत

अछि से हुनके मोन जनैत छल। रामपुरक हाट-बजार, पोखरि-इनार, घर-परिवार, खेत-खरिहान, चऽर-चाँचड़, गाछ-वृक्ष, बँसबिट्टी-मैदान सभपर अपन नेनपनक स्मृतिक छाप तकैत छलाह। नेनपनक सुखद स्मृतिक स्थानपर आब हिंदू-मुस्लिम मध्य विद्वेष आ घृणा पसरल छल। मात्र सैन्य कार्रवाइ एकर निदान नहि भऽ सकैत छल। यूनुस खान सैन्य कार्रवाइ संग एक आओर प्रयास कएलनि। ओ अपन बचपनक मित्र आ उदार विचारवला लोक सभक खोज कएलनि। एहिमे हिंदू आ मुसलमान दुनू रहथि। सभकेँ एकत्रित करैत विद्वेषक आगिपर देशभक्तिक पवित्र जल बरसा साहेबजादा यूनुस खान अपन गाम रामपुरकेँ बचा लेलनि।

भारत विभाजन केर दंशसँ तखन पूरा देश दलमलित छल। सितंबर मास बिति गेल रहए आ जाड़ अपन रूप देखा रहल छल। जम्मू-कश्मीरक महाराजा हरि सिंह अपन राज्य जम्मू-कश्मीरक स्वतंत्र अस्तित्व चाहैत छलाह जखन कि मुस्लिम आबादी पाकिस्तानमे विलय चाहैत छल। महाराजा हरि सिंहक प्रस्ताव पाकिस्तान नकारि देलक। ओ हर हालमे धरतीक एहि जन्नतकेँ पाकिस्तानमे मिलबए चाहैत छल। कूटनीतिक स्थानपर एकरो मजहबी चश्मासँ देखल गेल आ महाराजा हरि सिंहकेँ सबक देबाक लेल ऑपरेशन गुलमर्ग 22 अक्टूबरसँ शुरू भेल। एहिमे कबीला सभक दंगा-फसादी लोक आ पाकिस्तानी सेनाक सहभागिता रहए। मिलिशिया सक्रिय छल। महाराजा हरि सिंह भारत सरकारकेँ त्राहिमाम संदेश पठा रहल छलाह। सरदार पटेल बिनु विलय-पत्रपर हुनक हस्ताक्षर कएने कोनो सैन्य सहायता लेल तैयार नहि छलथि। महाराजा हरि सिंहक सेनामे पाकिस्तानी प्रवाह रोकबाक सामर्थ्य नहि छलै। धर्मक नामपर ई सेना सेहो विभाजित रहए। पाकिस्तानी मिलिशिया आ नियमित सैनिक सभक उत्पात, आक्रमण, आगिजनी आ भयंकर लूटपाटसँ स्थिति नियंत्रणसँ बाहर जाइत देखि अंततः 26 अक्टूबरकेँ महाराजा हरि सिंह विलय पत्र-पर हस्ताक्षर कएलनि आ भारतीय सेना दिल्लीसँ उड़िकेँ श्रीनगर उतरि क्षेत्रमे अपन प्रभुत्व स्थापनामे लागि गेल। 1 सिक्ख, 1 कुमायूँ, 4 कुमायूँ, 1 पंजाब आ 6 राजपुताना राइफल्स केर जुटान श्रीनगर परिक्षेत्रमे भेल।

161 इंफेंट्री ब्रिगेड अपन ब्रिगेडियर जे सी केटॉचक कमानमे अक्टूबरमे एतए आबि गेल छल। दुर्भाग्य जे ब्रिगेडियर केटॉच घायल भेलाह आ तखन बॉगी नामसँ मशहूर ब्रिगेडियर एल पी सेन कमान सम्हारलनि। 6 राजपुतानाकेँ श्रीनगरक रक्षामे आ 4 कुमायूँकेँ हवाइपट्टीक सुरक्षामे लगा शेष बटालियन

दुश्मनक उचित इलाजमे लगाओल गेल। ओम्हर ब्रिगेडियर उस्मान खान अपन 50 पैरा ब्रिगेड संग 13 नवंबरकेँ कश्मीर आबि गेलथि। सामरिक दृष्टिसँ अत्यंत महत्त्वपूर्ण नौशेरा आ झाँगरमे अपन उपस्थिति दर्ज करओलनि।

मेजर यूनुस खान सेहो कश्मीर आएल रहथि। पहाड़पर बर्फबारी शुरू भऽ गेल छल। बर्फसँ श्वेत भेल पहाड़क चोटीपर पड़ैत सूर्यक किरण जेना भारतवर्षक वज्रमणि-प्रभा स्तंभ दमकि रहल हो! ई दृश्य अति सुंदर लगैत छल मुदा जखन बर्फक एहि धवल चद्दरिपर लाल मानव रक्त बहैत देखथि तखन मोन व्याकुल भऽ जाइत छलनि। ओना ई दृश्य तऽ आम छल। पाकिस्तान धरतीक एहि जन्नतपर अपन दखल-कब्जा करबाक फिराकमे जे छल!

मेजर यूनुस खान ब्रिगेडियर उस्मान खानक शौर्य आ शीलसँ अत्यधिक प्रभावित छलाह। अपन धरती आ अपन देशक लेल पाकिस्तानी सेनामे जेनरलक पद केर ऑफरक त्याग कएनिहार महावीर उस्मान खान हुनक आदर्श नायक रहथिन। पहिने ओ बलूच रेजिमेंटमे छलाह। एकर पाकिस्तानी सेनामे विलयक बाद उस्मान खान डोगरा रेजिमेंटमे आएल छलथि। मजहबी आधारपर किछु सैनिक हुनका शक केर निगाहसँ देखैत छल मुदा किछुए दिनमे सभटा ठीक भऽ गेल। पहिने सेनामे राम-राम, सत् श्री अकाल, अस्सलाम वालेकुम आदि संबोधन प्रचलित छल। उस्मान साहेब जय हिंद संबोधनक शुरूआत करओलनि। आम सैनिकक संग रहि ओकर भावनाकेँ बुझथि आ यथासाध्य ओकर कष्ट निवारण करथि। किछुए दिनमे आम सैनिकक विश्वास अर्जित कऽ लेलनि।

24 दिसंबरकेँ झाँगरपर पाकिस्तानक कब्जा भेलाक बाद विचलित भेल रहथि। ओ प्रण कएने छलाह जे जाबत झाँगर मुक्त करा नहि लेब ताबत पलंगपर नहि सूतब। उस्मान साहेबक ई प्रण सभकेँ अनायासे वीर-श्रेष्ठ महाराणा प्रतापक स्मरण करा देने छल। बर्फीला फर्शपर सुतनाइ केहन होइत छै से बर्फमे रहनिहारे जनैत छथि। केहनो प्लास्टिक शीट बिछाउ आ गद्दा-बेडशीट लगाउ सर्द भेल बिछानपर नीन कहाँ अबैत छै! मोन हुअए जे उड़िकेँ नौशेरा सेक्टर जा ब्रिगेडियर उस्मानक प्रण पूर्ण करएमे हुनक संग दी मुदा एहू ठामक स्थिति तऽ तेहने अछि। पोस्ट छोड़ल नहि जा सकैत अछि! पता नहि ब्रिगेडियर उस्मान साहेबक ई प्रतापी प्रण कहिया पूर्ण होएत!

कुमायँ रेजिमेंटक डेल्टा कंपनी कमांडर मेजर सोमनाथ शर्माक बडगाममे प्लास्टर लागल हाथसँ पाकिस्तानी सेनासँ युद्ध करैत देशक लेल सर्वोच्च बलिदानक उदाहरण मेजर यूनुस खानक सोझाँ छलनि। मोनमे युद्धक

निर्रथकतापर विचार करथि मुदा जखने राष्ट्रक प्रश्न सामने आबि जाइत छलनि युयुत्सा आ जिगिषा दुनू प्रबल भऽ जाइनि। एहिना समय बिति रहल छल। सहसा एक दिन....।

ई तऽ होएबाके छल। पाकिस्तानी सेना युद्धमे सक्रिय छल। मेजर याकूब खानकेँ भारतीय सैनिक पोस्टकेँ तबाह करबाक जवाबदेही देल गेल छल। भैया यूनुस खान सेहो एम्हरे छथि एहिसँ एकदम अनजान! एहि क्रममे एक दिन दुनू भाएक आमने-सामने भिड़ंत भऽ गेलनि। दुनक हाथमे हथियार! दनादन गोली छुटि रहल छल। मेजर यूनुस खानक गोलीसँ मेजर याकूब खान घायल भेलाह। पाँखुरसँ खून दरदरा रहल छलनि। मेजर यूनुस खान छोट भाए मेजर याकूब खानक बहैत खून देखलनि। एक क्षणक लेल विचलित भेलाह। केहन दिन परवरदिगार देखओलनि! एतेक दिन बाद भेंट भेल मुदा केहन विकट परिस्थितिमे। भाएक हाथसँ भाएक खून! ओह!! फेर सहसा ध्यान आएल जे ई अपन सहोदर भाए अवश्य छथि... नहि ...सहोदर भाए अवश्य छलाह मुदा आब नहि! आब तऽ ओ दुश्मन देशक सैनिक छथि। हमरे गोलीसँ घायल भेल दुश्मन देशक सैनिक। मोनमे द्वंद्व मचल रहए कि मुहसँ बजा गेलनि– दुखी मत हो छोटे! हम सैनिक हैं। मैंने अपने वतन के लिए अपना फर्ज निभाया है। तुम भी अपने मुल्क के लिए अपना फर्ज निभाओ!

कहि तऽ देलनि मुदा मोन उचटि गेल छल। विचलित! व्यथित!! मेजर याकूब खानकेँ अस्पताल आनल गेलनि। पाँखुरक सर्जिकल ऑपरेशन भेलनि।

जखन ओहि समयक कर्नल करियप्पा एहि घटनाक विषयमे सुनलनि तऽ चकित भेलाह। चाबसी देलनि। ओहि दिन करियप्पा यूनुस खानकेँ उस्मान विषयक एक प्रसंग सुनओलनि। ओ कहलनि जे जखन ब्रिगेडियर उस्मानसँ भेंट भेल तखन हम कोट नहि पहिरने रही। प्रचंड जाड़ छल मुदा हमर दिमागमे नौशेरा, कोट आ झाँगर नाचि रहल छल। हम उस्मानसँ कहलहुँ– मुझे कोट कब दोगे?

– अभी देता हूँ! कहि ओ तुरंत अपन कोटक बटन खोलऽ लगलाह। हमरा हँसी लागि गेल। हँसैत कहलहुँ– यह नहीं दोस्त! वह कोट जो अपना था और जिसे दुश्मन ने हमसे छीन लिया है। वह कोट, झाँगर और नौशेरा! गंभीर होइत उस्मानक जवाब छल– वचन तो वचन है। दे दिया तो दे दिया! हर हाल में निभाऊँगा। मैं चला। अब आपके लिए उस कोट का उपहार लेकर ही लौटूँगा!
6-7 फरवरी! नौशेरामे बर्फ खसि रहल छल। धरतीपर जेना बर्फक झक्-झक्

उजरका जाजिम बिछा देल गेल हो! पाकिस्तानी सेनाक खूनसँ ई बड़का जाजिम आइ जेना टुह-टुह लाल भऽ गेल हो! नौशेरा सेक्टरमे दू हजारसँ बेसी लहास खसल छल। एहि क्रममे एक मस्जिदक अऽढ़मे नुकाएल पाक सेनापर प्रभावी प्रत्याक्रमणमे दिक्कत भऽ रहल छल। ब्रिगेडियर उस्मान किछु सोचलनि। पाक-नापाकपर विचार कएलनि आ तत्क्षण ओहि मस्जिदकेँ उड़ा देबाक अप्रत्याशित आदेश देलनि। मस्जिद उड़ल आ नौशेरा फतह भेल। नौशेराक शेर ब्रिगेडियर उस्मानक दहाड़ संपूर्ण पाकिस्तानमे सुनाएल। फेर तेरह घंटाक भयंकर ऑपरेशन कीपर बाद कोटपर सेहो भारतवर्षक कब्जा भेल। ब्रिगेडियर उस्मान अपन मित्र करियप्पाकेँ कोटक उपहार देलनि। यूनुस खान अपन आदर्श नायकक वीरगाथा सुनि रोमांचित छलाह। मुदा अखन धरि भूमिपर शयनक बात चिंता दैत छल। फेर आएल 18 मार्च! ब्रिगेडियर उस्मान अदम्य साहस बलेँ एहि दिन झाँगर आपस लऽ लेलनि। प्रण पूर्ण भेल। समस्या जे यूनिटमे कतहु पलंग उपलब्ध नहि छल तखन निकटवर्ती गामसँ एक पलंग मँगाओल गेल आ तीन मास बाद ब्रिगेडियर उस्मान पलंगपर सुतलाह। मेजर यूनुस ब्रिगेडियर उस्मान केर राणा प्रतापी प्रण पूर्णता भेलापर आह्लादित भेलाह। यद्यपि ई खुशी बेसी दिन नहि चलल आ 3 जुलाइकेँ नौशेरामे मुख्यालयपर भेल भारी आक्रमणमे नौशेराक शेर वीरगति पओलनि। पाकिस्तानमे एहि महावीरक केहन आतंक छल जे एक पाकिस्तानी रेडियो हिनक मुड़ीपर पचास हजारक इनाम घोषित कएने छल। ब्रिगेडियर उस्मान साहेबक जनाजामे तत्कालीन गवर्नर जेनरल, प्रधान मंत्री सहित मंत्रीगण आ आम लोकक जे हुजूम उमड़ल ओ विशिष्ट छल। शहादत केर ई सम्मान अपूर्व छलै। देश आ धर्मक द्वंद्वमे देशकेँ तरजीह देनिहार एक सुच्चा धर्म निरपेक्ष भारतीय! मेजर यूनुस खानकेँ गुमान रहनि अपन आदर्श नायक ब्रिगेडियर उस्मानपर!

कश्मीरमे युद्ध विराम लागू भेलापर भारत-पाक संघर्ष थमि गेल। यूनुस खान किछु दिन एतहि रहलाह मुदा छोटेसँ फेर भेंट नहि भेलनि। कोनो संपर्क नहि।

1960मे कलकत्ताक इरानी मोहल्लाक बेटी तूबा खलीलीसँ याकूब खानक निकाह कराची शहरमे भेल। रामपुरक नवाब साहेब कराची गेल छलाह। पाकिस्तानक राजकीय अतिथिक दरजा हुनका भेटल छलनि। यूनुस खान अपन नट्टाक बियाहमे नहि जा सकलाह। ओ एहि निकाहपर अपन छोटेकेँ मुबारकबाद केर पैगाम पठओने छलाह। बारह वर्षमे ई एकमात्र खत! फेर दुनू भाएक संपर्क-सूत्रपर ओहिना सन्नाटा पसरल रहल।

समय गुदश्त होइत गेल। यूनुस खान भारतीय सेनामे ब्रिगेडियर बनि बरेलीसँ फरागत-प्राप्त कएलनि। याकूब खान पाकिस्तानी सेनामे लेफ्टिनेंट जेनरल भेलाह। फेर रूस आ फ्रांसमे पाकिस्तानक राजदूत बनैत 1982मे पाकिस्तानक विदेश मंत्रालय सम्हारलनि। यश-मान-प्रतिष्ठा सभटा भेटलनि मुदा रामपुर फेर जा नहि सकलाह। हुनक सामान सब ओहिना हुनक इंतजार करैत पड़ल रहल। एहि वर्ष दिसंबरमे भारत-पाकिस्तान संयुक्त आयोगक स्थापनाक क्रममे पाकिस्तानक विदेश मंत्री रूपमे याक़ूब खान दिल्ली आएल रहथि। यूनुस खान तखन दिल्लीए रहथि। हुनको निमंत्रण छलनि। हुनक समधि एक योजनाक तहत याक़ूब खानकेँ सेहो अपना ओतऽ दावतपर बजओने छलाह। दुनू भाएमे एतहि भेंट भेलनि। एक दोसराकेँ देखिते दुनू भाए दौगैत एक-दोसराकेँ पाँजमे लऽ लेलनि। यूनुसक मुहसँ नट्टा! मेरे भाई!! सुनिते याकूब खान हिचकि-हिचकिकेँ कानए लगलाह। पैंतीस वर्षक बिछोह आइ दुनू भाएक आँखिसँ अश्क बनि बहि रहल छल। ओना याकूब खानक पाँखुर कनकना गेल छलनि मुदा आइ छाती जुड़ा गेलनि। मोन विह्वल मुदा एकदम तृप्त! दुनू भाए किछु काल ओहिना निःशब्द कनैत रहथि। वातावरणमे अखंड शांति पसरल छल। यूनुस खानक पुत्रवधू समन अली खान टकटकी लगाकेँ दुनू बिछुड़ल भाएक भावुक मिलन देखि रहल छलीह। ओ आश्चर्यचकित छलीह जे फौजक एतेक पैघ हाकिम आ एहन रफ-टफ रहल दुनू अब्बाजानी एना नेना जकाँ हिक्का करैत खुलेआम कानि सकैत छथि! दुनू भाएक गलबाँही अखनो ओहिना रहए। दुनू भाएक आँखिसँ लगातार बहैत नोरसँ दावतमे उपस्थित सभक हृदय सिमसिमा गेल छल। किछु काल बाद याकूबक मुहसँ सहसा बहराएल– “ये सरहद बड़ी जालिम चीज होती है भैया!”

“हाँ! छोटे! यह सरहद तो जालिम होती ही है। बहुत कुछ बाँट देती है। पर तुम दुखी मत हो छोटे! दिलों की कहीं कोई सरहद नहीं होती! चलो एक बार फिर हम अपने गाँव रामपुर चलते हैं। वहाँ अभी भी तुम्हारा बहुत सारा सामान रखा हुआ है।”

दुनू भाए ओहिना एक दोसराकेँ अंकपाशमे भरने रहथि।



[पटना, 29 जनवरी 2026]

कैप्टन साहेबक शर्ट

अप्रैलमे फोनपर लवसँ गप्प भेल छल। ओ कहने छल जे एहि बेर 9 सितंबरकेँ अपन जन्मदिन पालमपुरेमे अहाँ सभक संग मनाएब। कान सुनलक, मोन तिरपित भेल आ आँखि भरि गेल हमर। मार्चमे फगुआमे आएल छल आब फेर सितंबरमे आओत। देखै छी सितंबरेमे वा नवंबर-दिसंबरमे लव केर बियाह कऽ देब।

डिंपल चीमा संस्कारी लड़की छथि। हमर विक्रम कोनो कम नहि! तेरह जम्मू-कश्मीर राइफल्समे लेफ्टिनेंट! डीएवी चंडीगढ़मे लगातार दू वर्ष बेस्ट कैडेट, गणतंत्र दिवस परेड 1994मे एनसीसी टुकड़ीक नेतृत्वकर्ता, एहन सटीक निशानेबाज जे एक हाथसँ गाड़ी चलबैत दोसर हाथसँ शिकारकेँ बेध सकैत छथि। एकदम निर्भीक निडर, सुच्चा देशभक्त, विलक्षण नेतृत्वकर्ता...।

फोनपर लव केर अएबाक बातसँ हमर काज किछु बढ़ि गेल। आरामकुर्सीक कपड़ा आ घरक परदा सब फाटि रहल अछि, सभकेँ बदलि देबाक अछि। साफ-सफाइ करएबाक अछि। घरमे कतहु-कतहु प्लास्टर झखरि गेल अछि, ओकरा ठीक कराएब। घरक रंग-रोगन करएबाक अछि। बरसातमे रस्ता आ नाली बजबजा जाइत अछि से पहिने ठीक करा लेबाक अछि। ओह! मोन पड़ल। रहमान ओतऽ जा शर्टक कपड़ा दऽ आएब। नाप ओकरा लग अछिए। जन्मदिनपर यैह शर्ट पहिरि लव केक काटत। व्यस्तता तऽ छल मुदा सिटीलाइट सिनेमासँ पहिने टेलरमास्टर रहमान लग जा कपड़ा दऽ अएलहुँ। रहमानसँ शर्ट शीघ्र सी देबाक अनुरोध कएलहुँ। बहुत व्यस्त रही लव केर जन्मदिनपर पार्टी करबाक रहए!

किछुए दिन बाद ज्ञात भेल जे कारगिल क्षेत्रमे पाकिस्तानी सब भारतीय भू-भागपर बंकर बना बैसल अछि। मइ मासक शुरूआतेमे विभिन्न ऑपरेशन शुरू भऽ गेल। नीचाँ भारतीय सेना आ ऊपर पाकिस्तानी। पाथरक एक टुकड़ो ऊपरसँ गुड़का देल जाइत छल तऽ ओ नीचाँ अबैत-अबैत भारी विध्वंसकारी भऽ

जाइत छल। लव केर तेरह जम्मू-कश्मीर राइफल्स केर तैनाती कारगिल क्षेत्रमे भेल छलै। एक जूनकेँ ओ सब कारगिल आबि गेल छल।

आब सदिखन ध्यान टीवी आ रेडियोपर रहए। समाचार सुनैत काल कान पथने रहैत रही। कारगिल युद्ध दिन-प्रतिदिन भयंकर भेल जा रहल छल। डिंपल बीच-बीचमे चंडीगढ़सँ आबि हमरा सभकेँ बोल-भरोस दैत छलीह। मुदा हुनको हाल अजीब छल।

डिंपल चीमा लव केर चंडीगढ़ विश्वविद्यालयक एमए अंग्रेजीमे सहपाठी रहथि। दुनूमे नेह केर आँकुर जनमि गेल छल। हमरो सभकेँ ई संबंध नीक लगैत छल। दुनू परिवार बियाह केर मोन बना नेने रही। चीमा दम्पतिकेँ सेहो ई संबंध स्वीकार्य छलनि।

राति टीवीपर लव केर नेतृत्वमे प्वाइंट 5140 फतह करबाक समाचार आ 'ये दिल माँगे मोर' कहैत लव केर फोटो आएल छल। शायद 21 जून छलै। लेफ्टिनेंटसँ कैप्टन आ लव यानी हमर विक्रम बत्रासँ शेरशाह बनबाक कथा सब आबि रहल छलै। शेरशाहक शौर्यसँ भारतीय सेनाक बढ़ैत मनोबल आ पाक सेनामे अबैत दहशत सभक कथासँ मोन उद्वेलित भऽ जाइत छल। डर पैसि जाइत छल। सूप सन करेज अवश्य हुअए मुदा अदंक तऽ पैसले रहए। पता नहि किएक एम्हर पूजा-पाठमे आस्था बहुत बढ़ि गेल रहए। अखबार, रेडियो आ टीवी छोड़ि कतहु जएबाक मोन नहि हुअए। राति-बिराति टेलिफोनक घंटी बाजए तऽ सूप सन करेज एकहि क्षणमे कंठगत प्राण बनि जाइत छल। ओहि बापक मन:स्थिति आन के अकानि सकैत अछि जेकर बेटा सीमापर तैनात अछि आ ओतऽ भयंकर युद्ध बजरल अछि। 29 जूनकेँ माएसँ गप्प भेल छलनि। हमरो कहने छल जे प्रो. एस के नैयरक लड़का 17 जाटक लेफ्टिनेंट अनुज नैयर एतहि छथि। ओ अक्सर कहैत छथि जे जाबत अनुज धरतीपर अछि अग्रज लवकेँ किछु भऽ नहि सकैत अछि। चिंता नहि करबाक छै। आश्चर्य तखन भेल जखन एक दिन प्रो. नैयर सेहो फोन कऽ कहलनि जे अनुज हुनका फोनपर कहने छल जे शेरशाह विक्रम कहैत छथि जे जाबत हम अग्रज जीवित छी हमर अनुजकेँ किछु नहि भऽ सकैत अछि। कारगिलक रणभूमिमे दुनू एक दोसराक संबल बनल छथि। दुनूक ई अभिनव संबंध मोनकेँ तोष देलक।

मुदा एक दिन... हँऽ आठ जुलाइक भोरे... मोन सहसा टुटि गेल। टीवीपर खबरि आबएसँ पहिने फोन आएल छल। दू टा सैन्य पदाधिकारी सेहो आबिकेँ कहलनि जे विक्रम असाधारण वीरता देखबैत वीरगति प्राप्त कएलनि। ओ देशक लेल सर्वोच्च बलिदान देलनि।

हमसब बेसुध भेल रही। तखने गेटपर ठक्-ठक् भेल। केबाड़ खोललहुँ तऽ डिंपल चीमा आ रहमान ठाढ़ रहथि। रहमानकेँ किछु नहि पता छल। ओ उत्साहपूर्वक शर्ट देलनि आ कहलनि जे बहुत दिनसँ तैयार राखल छल, अहाँक नहि अबैत देखि हम स्वयं शर्ट लऽ अएलहुँ। एहि क्रीम कलर केर शर्टक जेबीपर नील रंगक रेशमी धागासँ हम बाबूक नामक कशीदा अपना हाथसँ कएलहुँ। ई देखू कतेक खूबसूरत लगैत अछि। ई कहैत ओ पैकेटसँ शर्ट निकालि देलनि। साँचे क्रीम कलरपर नील रंगक रेशमी तागसँ लिखल नाम विक्रम बहुत चमकि रहल छलै। डिंपलक एकटक ध्यान ओहि नामपर गड़ल छलै। हमरा बकार लागल छल। किछु नहि बाजि सकलहुँ। तखने धड़फड़ाएल कमल गेटपर अएलीह– टीवीपर... कहैत बेहोश भऽ गेलीह। डिंपल पानि आनि छिच्चा देलनि। उठा-पुठाकेँ हुनका टीवीक सोझाँ दीवानपर सुता देलहुँ। लवक शहादत केर समाचार आबि रहल छल। सभक आँखि बरसि रहल छल। डिंपल ओहि शर्टकेँ अपन छातीसँ सटा अपन नोरसँ सिक्त करैत छलीह। केओ किछु बाजि नहि रहल छल। नि:शब्द!

किछु काल बाद रहमान जाए लगलाह तखन हम सिलाइक निमित्त किछु देबए चाहलहुँ मुदा ओ हमर हाथ पकड़ि लेलनि– अब नहीं हुजूर! आया तो था मैं उसी के लिए। जरूरत भी थी पर अब कुछ नहीं लूँगा। कुछ भी नहीं! बाबू हमारे देश के लिए शहीद हुआ है। अब कुछ नहीं ले सकता मैं। अब यह बाबू को मेरा सैल्यूट है! अपना ख्याल रखिए मास्साब! शहादत पर अश्क नहीं बहाए जाते! रश्क करते हैं! एतेक कहैत रहमान विदा भऽ गेलाह। समाचार पसरैत रहल आ हमर घर लोकसभसँ भरैत रहल। किछुए कालमे पूरा मोहल्ला फेर पूरा पालमपुर शहर हमरा ओतए जुमि गेल। कोना टेंट-शमियाना लागल, कुर्सी आएल, एतेक इंतजाम भेल हमरा किछु नहि पता! लागए जेना पूरा पालमपुर हमरा घरमे समा गेल हो।

दोसर दिन अंतिम यात्रामे पूरा पालमपुर अपन धरतीक लालकेँ अंतिम विदाइ देबाक लेल उमड़ि पड़ल छल। डिंपल चीमा बौक भेल एक कोनामे मिस्टर आ मिसेज चीमा संग ठाढ़ि छलीह। हम अपने बदहवास रही हुनका सभकेँ की कहिएनि, कोना सम्हारी! मंत्री, बड़का-बड़का हाकिम आ आमजन केर एहन सैलाब पालमपुर देखने नहि छल। भरल दुपहरिया जेना सूर्यास्त भऽ गेल हो! सर्वत्र अन्हारे अन्हार! लोक सभक कहब छल जे आइ धरि एहन शानदार अंतिम विदाइ पालमपुरमे कहियो किनको भेलो नहि छल। लव अक्सर कहैत छल जे या तऽ तिरंगा फहराकेँ आएब या तिरंगामे लपेटल आएब। मुदा

आएब अवश्य! ओ अपन वचन पूरा कएलनि मुदा...। कमल ई सब देखिकेँ तऽ खसिए पड़ल छलीह।

एकहि दिनमे अनायासे हम विशिष्ट बनि गेल रही। सर्वत्र लवे केर चर्च। शेरशाह विक्रम बत्राक पिता रूपमे हमर परिचिति भेल। हमर ई नव परिचय हमरो नीक लागए। मान-सम्मान आ पाइ-प्रतिष्ठा सभटा भेटल। 15 अगस्तकेँ महामहिम राष्ट्रपति के आर नारायणन् महोदय अपन हाथ जोड़ैत बेटाक परमवीर चक्र हमरा हाथमे देलनि। आँखि नोराएल अवश्य रहए मुदा करेजा सूप सन सेहो भेल रहए। कोन एहन समाचार पत्र-पत्रिका वा चैनल अछि जाहिमे हमर साक्षात्कार नहि छपल हो वा प्रसारित नहि भेल हो! कचोट जे जाहि बेटाक कारणेँ हम सेलिब्रिटी भेलहुँ वैह नहि रहल छल।

आठ मास बाद एकाएक हमरा लागल जे ओहि जगहपर जाइ जतए हमर लव देशक खातिर सर्वोच्च बलिदान देलनि। एकटा पत्र सेना मुख्यालयकेँ लिखलहुँ जे हम अपन पुत्रक प्रथम पुण्य-तिथिपर ओहि ठाम जाए चाहैत छी जतए हमर वीर पुत्र अपन बलिदान देने छल। जँ सुरक्षा वा अन्य कोनो कारणेँ ई अनुमति नहि देल जाइत अछि तखन हम अपन आवेदन बिनु कोनो प्रतिवादकेँ आपस लऽ लेब। हम मात्र ओहि जगहकेँ प्रणाम करए चाहैत छी जतए हमर बेटा विक्रम बत्रा वीरगति पओलनि।

जखन ई आवेदन मुख्यालय गेल तखन पत्र पढ़निहार पदाधिकारी तत्क्षण अनुमति देलनि। संचिकापर इहो लिखलनि जे जँ एहिमे आएल व्यय सरकार नहि वहन करत तऽ हम अपन वेतनसँ एकर भरपाइ करब।

भारतीय सेना हमरा सभक लेल विशेष व्यवस्था कएलक। जखन हम कारगिल जिलाक लेज क्षेत्रक प्वाइंट 4875 केर बेस कैम्पपर सेनाक वाहनसँ उतरलहुँ तखन सूबेदार मेजर रघुनाथ सिंह हमरा सैल्यूट कएलनि, फेर चरणस्पर्श कएलनि आ किछु फूल हमर पयरपर चढ़ा देलनि। हम हतप्रभ भऽ गेल रही। फेर ओ हिंदीमे बाजए लगलाह-

एहिठाम जतेक लोक उपस्थित छी ओहिमे एकमात्र हम एतऽ छी जे बत्रा साहेबक संग ओहि दिन कर्त्तव्यस्थ रही। प्वाइंट 4875 लऽग जीप नहि जा सकत। हमसब पैदल मार्च करी।

जीपसँ उतरि हमसब पैदल बढ़लहुँ। भरि रस्ता रघुनाथ सिंह हिंदीमे ओहि दिनक कथा कहैत रहलाह जकर भाव छल– हमसब बहुत पदाधिकारीकेँ देखने छी मुदा विक्रम सर सन किनको नहि देखल। सुच्चा कोहिनूर! ऑनली वन

पीस! एक जूनकेँ ओ एतऽ अएलाह हम तखनेसँ हुनक संग रही। ओ बेर-बेर कहथि जे हमर शहर पालमपुरक मेजर सौरभ कालियाक अपमान आ निरादर करएवला पाकिस्तानी सभकेँ छोड़ब नहि। हमसब तऽ पाकिस्तानपर आक्रमण नहि कएलहुँ, ओकर जमीन नहि हड़पलहुँ तखनो ओ सब हमर मातृभूमिपर किएक चढ़ल! अपन एक-एक इंच भूमिसँ एहि दुष्ट सभकेँ भगा देब हम। प्वाइंट 5140 फतह कएलाक बाद सीओ वाय के जोशी जखन हुनकासँ बात कएलनि तखन बत्रा साहेबक शब्द छल– ये दिल माँगे मोर सर!

ओहि दिन बोखार छलनि तथापि प्वाइंट 4875पर कब्जा करबाक लेल स्वयंकेँ प्रस्तुत कएलनि। तेरह जाटक लेफ्टिनेंट अनुज नैयरकेँ हृदयसँ अपन छोट भाए मानैत छलाह। बेर-बेर कहैत छलाह जे रणभूमि लेल प्रयाण करैत काल अनुज अपन मँगेतर सिमरन लेल तैयार कराओल सोना-हीराक औँठी अपन कमांडिंग ऑफिसरकेँ दऽकेँ आएल छल जे हम रणभूमिसँ आपस आएब तखन लऽ लेब आ सिमरनकेँ पहिराएब। जँ हम आपस नहि आबि सकी तखन ओ औँठी हमर परिवारकेँ पठा देब। शेरशाह अनुज सर केर बियाहमे भँगड़ा करबाक वचन देने रहथि। ओ अपन अनुजक शहादत केर प्रतिशोध लेल आतुर सुच्चा नर केसरी!

ओहि दिन दुश्मन एचएमजीसँ एक मिनटमे सौ बुलेट बरसा रहल छल। हमसब क्राउलिंग करैत बढ़ैत रही। आगि बरसा रहल ओहि बंकरसँ मात्र तीस फीट दूर एक चट्टानक अऽढ़मे रही। बिनु एहि बंकरकेँ नष्ट कएने प्वाइंट 4875पर कब्जा करब असंभव छल। अंतिम उपाय देखि हाथमे ग्रेनेड नेने हम स्वयंकेँ 'डेथ चार्ज' लेल प्रस्तुत कएने रही। विक्रम बत्रा हमरा रोकलनि– तुम्हारी बीबी है, बच्चे हैं, तुम रुको। इन दुष्टों ने मेरे छोटे भाई अनुज नैयर को मारा है, इनका हिसाब मैं खुद करूँगा। बस, तुम मुझे कवर फायर दो।

हम आश्चर्यचकित! आगू बढ़ि खतराक स्वयं सामना करब हुनक स्वभावमे छल। तखन ओ स्वयं युद्धमे पाँचटा दुश्मन संग ओझराएल छलाह। ग्रेनेड विस्फोटक आवाज सुनि पाँचूकेँ साफ करैत घायल भेल अपन कनीय लेफ्टिनेंट नवीन नागप्पा साहेब लऽग कुदिकेँ पहुँचल छलाह– चिंता मत करो। मैं आ गया हूँ! अब तुम नीचे अस्पताल जाओ। घायल नवीन सर रणभूमि छोड़िकेँ जाए नहि चाहैत छलाह। तखन जबर्दस्ती आदेश दैत हुनका नीचाँ पठओलनि आ स्वयं युद्धमे लागि गेलाह। मृत्युसँ हुनका कोनो भय नहि होइत छलनि। मृत्युक देवताकेँ जेना सदिखन ओ अपन जेबीमे रखने होथि!

आइ एक बेर फेर ओ स्वयं आगू बढ़ि गेलाह। हम कवर फायर दैत रही। ओ क्राउलिंग करैत पोस्टक लऽग जा ग्रेनेडक पिन घिचि पोस्टपर ग्रेनेड चला देलनि। पोस्ट उड़ि गेल। तेरह पाकिस्तानी जहन्नुम गेल। अनुज नैयर सर केर शहादतक प्रतिशोध लेलनि। पोस्टपर हमरा सभक कब्जा भेल। प्वाइंट 4875पर तिरंगा फहरा गेल। विक्रम खसल छलाह। दुनू हाथ लगा हम हुनका उठओलहुँ। विजयसँ गर्वोन्नत हुनक माथ हमर कोरामे छल। अपन जीवनदाताक ई दशा देखि हम व्याकुल भेल रही। रक्तरंजित हुनक देहमे बियालीस टा बुलेट धँसल छल जेना बियालीस टा पदक सुशोभित हो! तिरंगा दिशि तकैत कहुना हाथ उठा माथपर सटा जय हिन्द कहैत ओ अपन दुनू आँखि मुनि लेलनि। वैह ओ जगह अछि। एहि ठाम हुनक स्मारक लेल नाप-जोख भेल अछि।

रघुनाथ सिंह इशारा कएलनि। हम चुपचाप चलैत ओहि पवित्र स्थल लऽग बैसि गेलहुँ। दुनू हाथसँ ओहि पहाड़ी चट्टानक स्पर्श कएलहुँ। लागल जेना नेना बेटा लवकेँ अपन हाथमे नेने छी आओर ओ हमर कोरामे मंद-मंद मुस्की दऽ रहल अछि। हमर ध्यान तखन टूटल जखन लायजन ऑफिसर हमर बैग आ किछु फूल हमरा हाथमे देलनि। हम फूल चढ़ा अपन माथ सटा ओहि स्थलकेँ प्रणाम कएलहुँ। फेर पतरका बैगसँ शर्ट निकालि पैकिंग हटा शर्टक सभटा बटन खोलि ओहि जगहपर बिछा देलहुँ। जेना लवकेँ पहिरा रहल होइ! सभक आँखि नम छल। लायजन ऑफिसर केर प्रश्नवाचक आँखि देखि हमरा मुहसँ बहरा गेल– पिछले जन्म-दिन पर आनेवाला था। उसी के लिए रहमान से बनवाया था। उसने बड़े शौक से पॉकेट पर नीले रेशमी धागे से उसका नाम लिखा था– विक्रम! देखो आज भी कितना चमक रहा है उसका नाम!

सब भावुक भेल छल। किछु काल बाद जखन हम सब विदा होमऽ लगलहुँ तखन पता नहि हमरा की फुराएल जे रघुनाथकेँ कहलहुँ– आप चाहें तो वह शर्ट उठा सकते हैं। आप दोनों की कदकाठी समान ही है। आपको एकदम फिट आएगी। कम से कम एक बार अपने जन्म-दिन पर इसे पहनकर आप केक अवश्य काटें। लव अपने जन्म-दिन पर इसे पहनकर केक नहीं काट सका था। हाँ, यह अवश्य ध्यान रखेंगे कि इसे पहनने के बाद फूँक से मोमबत्ती नहीं बुझानी है। दीप का जलते रहना ही शुभ है, बुझना नहीं!

रघुनाथ सिंह विह्वल भऽ गेल। मुहसँ एतबे बहराएल– ए ग्रेट ऑनर फॉर मी सर! सच कहूँ तो यह जीवन तो कैप्टन विक्रम बत्रा साहेब का ही दिया हुआ है। अपने आराध्य कैप्टन की शर्ट पहनना मेरे लिए अत्यंत गौरव की बात है।

सूबेदार मेजर रघुनाथ सिंह ओहि स्थल आ ओहि स्थलपर चढ़ाओल गेल शर्टकेँ श्रद्धापूर्वक सैल्यूट कएलनि आ सम्मान सहित शर्ट उठा अपन माथसँ सटा लेलनि। हुनकर आँखि भरल छलनि।

* * * *

आइ सात जुलाइ अछि। विक्रम बत्राक पुण्यतिथि! पच्चीस वर्ष बिति गेल। एहि बीच पता नहि कतेक ठाम हुनक प्रतिमा स्थापित भेल। अनेक सड़क, चौक, स्थल, विद्यालय-महाविद्यालय, मेस, भवन इत्यादिक नाम विक्रम बत्राक नामपर राखल गेल। पी 4875 चोटीक नाम हिनके स्मृतिमे बत्रा टॉप भेल। अनेक परिवर्तन भेल मुदा डिंपलमे कोनो परिवर्तन नहि भेलनि। प्रत्येक वर्ष आजुक दिन ओ फोन अवश्य करैत छथि। पच्चीस वर्ष भऽ गेल लव केर महाप्रयाणक। हम आइ धरि ई नहि बुझि सकलहुँ जे डिंपल चीमा बियाह किएक नहि कएलनि। मात्र दू-चारि भेँट-घाँट केर एहन असरि कहियो देखने-सुनने नहि छलहुँ। चीमा साहेब आ हमसब बहुत प्रयास कएलहुँ मुदा ओ किनकोसँ बियाह करबाक लेल तैयारे नहि भेलीह। एतेक धरि जे हम लवक जौँआ भाए कुश (विशाल)सँ विवाह करबाक प्रस्ताव सेहो देलहुँ। कुश तऽ अनमन लवे जकाँ अछि तथापि डिंपल नहि माललनि। शायद जेहने लव अद्‌भुत तेहने हुनक प्रेम! डिंपल कहैत छथि जे हम चंडीगढ़क एक विद्यालयमे शिक्षिका छी। प्रत्येक साल कमसँ कम एक बच्चाकेँ विक्रम बत्रा सन देशभक्त अवश्य बना दैत छी। यैह हमर सार्थकता आ यैह हमर तपस्या!

ओ कहने छलीह जे पंचकूलाक नाडा साहेब गुरुद्वाराक चारि परिक्रमा हमसब संगे कएने रही। विक्रम हमर दुपट्टाक एक कोर अपन हाथसँ पकड़ने छलाह। परिक्रमा बाद ओ हमर कानमे कहलनि– कांग्रेचुलेशन मिसेज बत्रा! बियाह आओर केहन होइत छै! ओह! ने ओ घुरल आ ने ई प्रतीक्षा छोड़लनि! पता नहि दुनूक ई केहन अजगुत प्रेमकथा अछि! ओ कहैत छथि जे विक्रमक पोस्टिंग दूर बहुत दूर भगवान् लऽग छनि तथापि ओ सदिखन हमर संगे रहैत छथि। ओ गेला कतए जे हम दोसर बियाह करी! ओह... लियऽ आइ फेर हुनक फोन आबि रहल अछि। पहिने एहि अद्‌भुत तपस्विनीकेँ नमन कऽ ली! फेर कहियो किछु आर कहब! वीर पिता गिरधारी लाल बत्रा हमरा सभकेँ विदा करैत फोन कॉल उठा लेलनि।



[समदिया मिथिला, पटना दि. 07. 07. 2024]





मनोलिता प्रकाशन



डॉ. रंगनाथ दिवाकर

दरभंगा जिलाक गाम सुलतानपुर (कुशेश्वरस्थान)क निवासी डॉ. रंगनाथ दिवाकर बिहार प्रशासनिक सेवामे अनेक उच्च पद सभकें सुशोभित करैत अतिरिक्त सचिव रूपमे सेवानिवृत्त भेल छथि। डॉ. दिवाकर 'ब्रह्मभट्ट वैभव', 'सहदेव सुषमा : पं. सहदेव झा स्मृति ग्रंथ', 'मधुबनी दर्पण', 'विरासत मधुबनी', समस्तीपुर जिला गजेटियर 'समेटियर', 'विरासत मुजफ्फरपुर', श्री विजय ना. मिश्र 'प्रवासी साहित्यालंकार'क काव्यसंकलन 'प्रवासी प्रतिबिम्ब', 'भामती' आदिक संपादन कएने छथि। स्वतंत्र पोथीमे 'हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में मिथिला का योगदान', 'मिथिला गौरव प्रतीक कन्दर्पी', मैथिली कथासंग्रह 'भखैरत नील रंग', 'सुलतानपुर सौरभ', 'महाकविक महाप्रयाण', 'मिथिला मन्दार मञ्जरी', 'मिथिला पारिजात मञ्जरी', 'प्रवास का प्रथम प्रहर' प्रमुख अछि। साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित पंजाबी कथासंग्रह 'अमर कथा' (ले. गुलजार सिंह संधू)क हिनका द्वारा मैथिलीमे अनूदित पोथी साहित्य अकादेमीसँ प्रकाशित अछि। दिवाकरजी विशुद्ध मेधावादी छथि। विज्ञान प्रतिष्ठाक बाद स्नातक कला परीक्षामे विशिष्टता एवं स्नातकोत्तर हिन्दीमे प्रथम वर्गमे प्रथम स्थान प्राप्त कएलनि। मिथिला-मैथिली विषयक गंभीर शोधमे रुचि रखैत छथि एवं मिथिलाक इतिहास आ संस्कृति विषयक अनेक विवादास्पद घुरछीकें सफलतापूर्वक सोझरा देने छथि। इतिहास-संस्कृति विषयक गहन अध्ययन, सूक्ष्मताक आग्रह आ शोध केर वैज्ञानिक दृष्टि डॉ. दिवाकरकेँ विशिष्ट बनबैत अछि। मिथिला-मैथिलीक लेल सदिखन समर्पित रहैत छथि। कंदर्पीघाटमे मिथिला विजय स्तंभक निर्माण आ तद्विषयक वृत्तचित्र हिनक अमर कृति थिक। मिथिला विजय स्तंभ निर्माण लेल अपर ग्रियर्सन रूपमे समादृत छथि। डॉ. दिवाकर किरण पुरस्कार, केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' सम्मान, मिथिला गौरव, कालिदास सम्मान, कर्णश्री, मिथिला विभूति, मिथिला रत्न सहित अनेक सम्मान/पुरस्कारसँ अलंकृत छथि।

— दीप नारायण

संपर्क :

फ्लैट सं. 102, अनंत विकास अपार्टमेंट, वेदनगर, रुकनपुरा, नेहरू पथ, पटना- 800014

मोबाइल : +91 8709610336, इमेल : rangnath.chy@gmail.com



अनुप्रास प्रकाशन

मिथिला, मधुबनी (बिहार) 847 211

+91 88629 77228

anuprasprakashansamuh@gmail.com

मैथिली कथा-संग्रह

₹ 500



आवरण : अनुप्रास डिज़ाइन

www.anuprasprakashan.com